रंपा की कहानी

(The Rampa Story)

मैं दीप जलाता हूँ

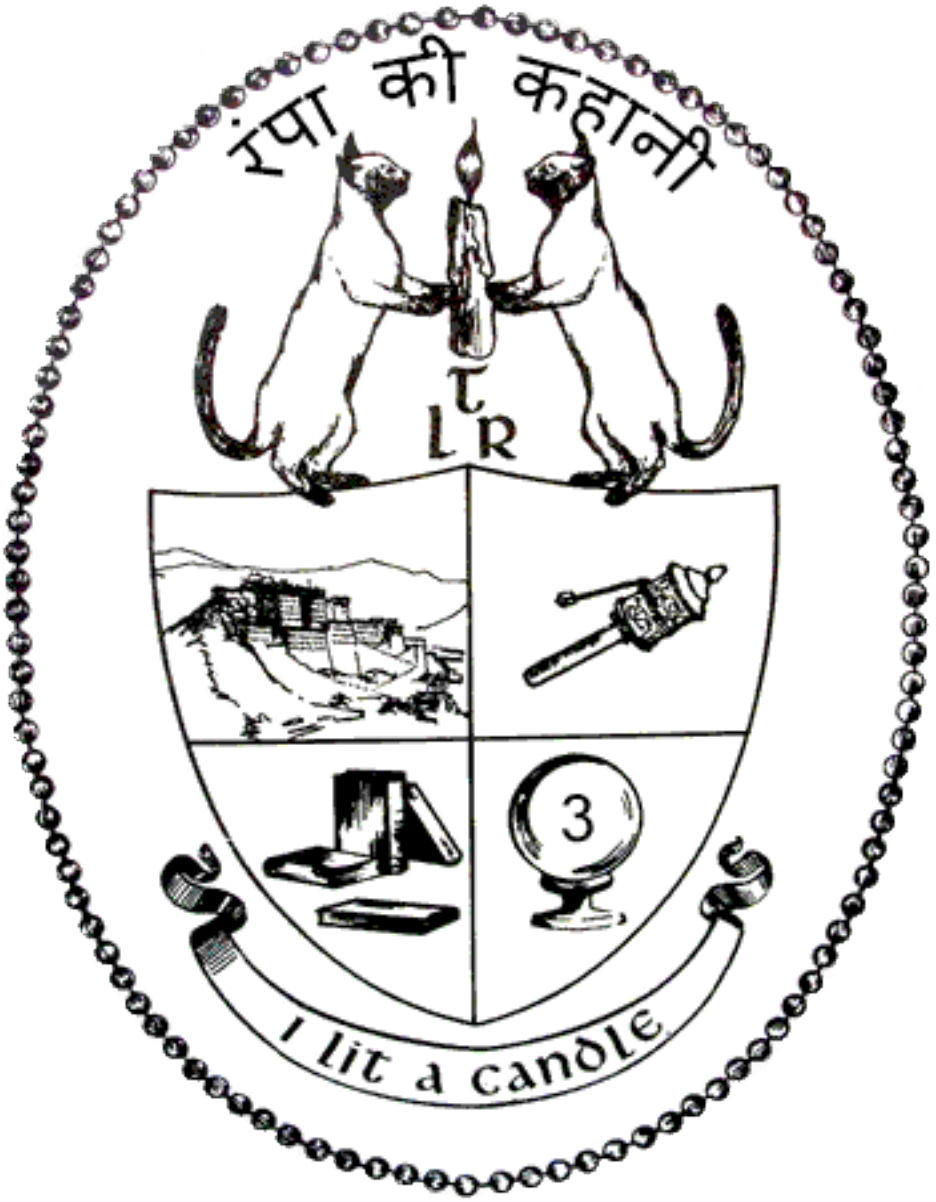

(I Lit a candle)

रंपा की कहानी
(The Rampa Story)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

प्रथम ई संस्करण 2016 – ई 1.00

प्राप्ति स्थल :
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	14
अध्याय तीन	:	32
अध्याय चार	:	47
अध्याय पॉच	:	65
अध्याय छैः	:	82
अध्याय सात	:	101
अध्याय आठ	:	117
अध्याय नौ		132
अध्याय दस	:	149
प्रकाशक की दयालुता	:	164

लेखक का प्राक्कथन

''कोई कटुता नहीं,'' प्रकाशक महोदय ने कहा।

''ठीक है,'' मैंने स्वयं विचार किया, ''परंतु मेरे अंदर कोई कटुता क्यों होनी चाहिए ? मैं मात्र अपना कार्य करने का प्रयास कर रहा हूँ– जैसा निर्देशित किया गया है, एक पुस्तक को लिखने का।''

''प्रेस (press) के खिलाफ कुछ भी नहीं!'' प्रकाशक महोदय ने कहा। ''कुछ भी नहीं!!''

''प्रिय, प्रिय,'' मैंने स्वयं से कहा ''वह मुझे क्या समझता है ?'' इसलिए ऐसा ही होगा। प्रेस के खिलाफ कुछ भी नहीं। आखिरकार, वे सोचते हैं कि, वे अपना काम कर रहे हैं, और यदि उन्हें गलत जानकारी दी जाती है, तो मैं मानता हूँ कि, उन्हें पूरी तरह उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। परंतु प्रेस के संबंध में मेरे विचार ? न, न, नहीं। विषय के बारे में और अधिक कुछ नहीं।

ये पुस्तक ''*तीसरी ऑख*,'' और ''*ल्हासा का डॉक्टर*'' के बाद में आती है। एकदम प्रारंभ में ही मैं आपको यह बताने जा रहा हूँ कि ये सत्य है, गल्प (fiction) नहीं। हर चीज, जो मैंने अपनी पहली दो पुस्तकों में लिखी है, सत्य है और मेरा खुद का, निजी अनुभव है। जो मैं अब लिखने जा रहा हूँ, वह मानव के व्यक्तित्व की जटिलता और उसके अहम् से सम्बंध रखता है, वह ज्ञान, जिसके विषय में हम सुदूर पूर्व (far east) के लोग, बखूबी जानते हैं।

तथापि, अग्रेषण में और अधिक नहीं। पुस्तक स्वयं में ही एक चीज है।

अनुवादक का निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक माननीय लोबसांग रम्पा की तृतीय कृति "The Rampa Story" का हिन्दी रूपांतरण है। पहली पुस्तक, ''तीसरी आँख'' उनके बचपन की दास्तान (लगभग चार से सोलह वर्ष की आयु तक) है, जबकि उनकी दूसरी पुस्तक ''ल्हासा का डॉक्टर'' उनकी किशोर एवं यौवन अवस्था (लगभग सोलह से पेंतीस वर्ष की आयु तक) की गाथा है। यह तीसरी पुस्तक ''रम्पा की कहानी'' उनके पश्चात्वर्ती जीवन की कहानी है, इस प्रकार इन तीन पुस्तकों में रम्पा की पूरी जीवन कथा समेटी गयी है। शेष पुस्तकों में गूढ़ रहस्य, धर्म, योग, आध्यात्म, समाज आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई है।

लेखक के अनुसार, इस पुस्तक को लिखने का उनका कोई विचार नहीं था, परन्तु उनके पारलौकिक साथियों द्वारा, इसमें विशेषरूप से परकाया प्रवेश की घटना को बताने के लिये उन पर, दबाव डाला गया। अतः बीमारी की अवस्था में भी उन्होंने यह पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में, उनकी इस पुस्तक को लिखे जाने के समय तक की, पूरी गाथा है। अधिकांश घटनायें, द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में है। अतः पुस्तक को आज के बजाय, लगभग सौ वर्ष पूर्व की परिस्थितियों एवं पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिये। आज का तिब्बत लगभग पूरी तरह बदल चुका है। चीन ने, वहाँ सड़कों का जाल बिछा दिया है, जिन पर हर समय सभी तरह के वाहन द्रुत गति से दौड़ते हैं। चीन ने अत्यधिक मात्रा में खनिजों का दोहन किया है। व्यापारिक गतिविधियों एवं पर्यटन सुविधाओं का पर्याप्त विकास हुआ है। तथापि, स्वतंत्र तिब्बत की माँग के समर्थन में आन्दोलन अभी थमे नहीं हैं, यदाकदा स्थानीय लोगों के विरोध और आत्मदाह के मामले भी सामने आते रहते हैं।

तिब्बत का अर्थ है हिमालय और हिमालय का अर्थ है तिब्बत। दोनों ही एक दूसरे के पर्याय और अनुपूरक हैं। अतः यहाँ हिमालय के संबंध में कुछ जानकारी देना समीचीन होगा। महाविस्फोट (Big Bang) के सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि का प्रारंभ लगभग 15–20 खरब वर्ष पहले महाशून्य से हुआ था। कणों के रूप में ऊर्जा से पदार्थ बने और वे धीमे–धीमे घनीभूत और ठण्डे होते गए। ब्रम्हाण्ड के अनेक स्थानों पर पदार्थ की धूल शेष स्थानों की तुलना में अधिक घनीभूत हो गई, इससे अनेक नीहारिकायें (Galaxies) और तारे (stars) उत्पन्न हुए। हमारी नीहारिका का नाम आकाशगंगा (milky way) है। हमारा सूर्य आकाश गंगा का एक तारा है। हमारा सौरमण्डल लगभग 2 खरब वर्ष पुराना है। यह सभी सूर्य धीमे–धीमे और ठण्डे हुए, तभी हमारे जलते हुए सूर्य के गोले में से कुछ टुकड़े गिर कर अलग हो गए, जो ग्रह (planets) बने और अपने–अपने भार के अनुसार (सबसे हल्का सबसे पास और सबसे बड़ा सबसे दूर), सूर्य की विभिन्न कक्षाओं में घूर्णन करते हुए, परिक्रमा करने लगे। पृथ्वी भी इन ग्रहों में से एक थी, जो अभी भी जलती हुई गैसों का गोला थी। धीमे–धीमे पृथ्वी ठण्डी हो कर ठोस बन गई और लगभग 6 अरब वर्ष पहले अस्तित्व में आई, परंतु अभी भी यह जीवन धारण करने के योग्य नहीं थी। ठण्डी होते होते, इसकी बाहरी पर्त जम कर ठोस हो गई, जबकि इसका क्रोड (core) अभी भी द्रव अवस्था में है। लगभग दो अरब वर्ष पहले, पृथ्वी पर जीवन प्रारंभ की परिस्थितियाँ बनीं, तब से अब तक, विभिन्न कारणों से अनगिनत बार, पृथ्वी आबाद और वीरान हो कर प्रलय को प्राप्त हो चुकी है। पृथ्वी पर अनेक हिमयुग (ice age) आ चुके हैं। खगोलशास्त्रियों (Astronomers) और भूगर्भ विज्ञानियों (Geologists) के अनुसार वर्तमान में पृथ्वी की सतह का ऊपर का औसतन लगभग 30 मील का हिस्सा ही पपड़ी के रूप में ठोस बना है। पृथ्वी के गर्भ में अभी भी, सभी पदार्थ, गर्म पिघले हुए द्रव के रूप में हैं। पृथ्वी की यह पपड़ी भी अविच्छिन्न (continuous) नहीं है, बल्कि अनेक प्लेटों, जिन्हें टेक्टोनिक प्लेट (tectonic plates) कहते हैं, के रूप में हैं, जो इस पिघले हुए क्रोड के ऊपर तैरती हैं, और समय–समय पर आपस में टकराती रहती हैं। इन प्लेटों के टकराने के फलस्वरूप भयंकर भूकम्प आते हैं, जिनमें अनेक भू भाग पृथ्वी के गर्त में समा जाते हैं, और

पृथ्वी के ऊपर अनेक नए भू भाग, महाद्वीप (continents) और पर्वतों (mountains) के रूप में उभर आते हैं।

हिमालय पर्वत, विश्व के नवीनतम पर्वतों में से एक है, जो लगभग 7 से 4 करोड़ वर्ष पूर्व, इंडो–ऑस्ट्रेलियाई टेक्टोनिक प्लेटों के टकराने के फलस्वरूप बना था। यही कारण है कि, यह एक कच्चा पहाड़ है, जहाँ ठोस चट्टानें कम और कच्ची मिट्टी अधिक होने के कारण, पूरे हिमालय क्षेत्र में वर्ष भर में भूस्वखलन (land slides) होते रहते हैं। हिमालय का क्षेत्र, अभी भी भूकम्प के अतिसंवेदनशील क्षेत्र में आता है, यहाँ यदा कदा भूकम्प आते ही रहते हैं।

हिमालय क्षेत्र में पृथ्वी की पपड़ी की मोटाई, लगभग 75 मील है जबकि हिमालय की उच्चतम चोटी, ऐवरेस्ट (everest) की ऊँचाई 29029 फीट या 5.6 मील है अर्थात् यहॉ पृथ्वी की ठोस पर्त की मोटाई लगभग 70 मील है। इसको समझने के लिए एक उदाहरण देखें।

मान लें पूरी तरह भरे हुए और लदे हुए दो ट्रक, एक दूसरे की तरफ अपनी पीठ किए खड़े हैं। अचानक ही उनके ड्राइवर, तेजी से उन्हें उल्टा चलाते हुए, एक दूसरे से टकरा देते हैं। स्पष्ट है कि, दोनों ट्रकों के पिछले हिस्से आपस में टकरा कर मलवे का ढ़ेर उत्पन्न करेंगे, जिसमें कुछ नीचे गिर जाएगा और शेष ढेर के रूप में ऊपर उठ जाएगा। ठीक वैसे ही, जब दो टेक्टोनिक प्लेटें आपस में टकराईं, तो कुछ मलवा पिघले हुए लावे के आंतरिक क्रोड में गिर गया, जबकि अन्य बड़ा भाग, जमीन के ऊपर ढेर के रूप में प्रकट हो गया। क्रोड में मलवा गिरने के कारण, पिघलता हुआ लावा, जहाँ से भी कमजोर स्थान मिला, वहीं से तेजी से उबलते हुए ज्वालामुखी के रूप में प्रवाहित हुआ। इस टक्कर की ऊर्जा का अनुमान लगाना सरल नहीं है। इस प्रकार से, जहाँ हिमालय उठा वह स्थान पृथ्वी से लगभग 5.6 मील ऊपर तथा 70 मील नीचे तक विस्तारित हो गया। फलतः हिलालय क्षेत्र में पृथ्वी की पपड़ी की मोटाई 75 मील हो गई। यह पूरी क्रिया पलक झपकते हुए हुई, जिसे लामा लोबसांग रम्पा ने, आकाशीय अभिलेखों के माध्यम से, जीवन्त प्रस्तुत किया है।

हमारा ब्रम्हाण्ड बाहर की ओर लगातार फैलता जा रहा है और एक अनुमान के अनुसार 50 खरब वर्षों तक विस्तारित होता रहेगा। तब इसमें इसकी विपरीत प्रक्रिया, संकुचन की प्रक्रिया, प्रारंभ होगी और ब्रम्हाण्ड की संपूर्ण ऊर्जा और द्रव्यमान, ऊर्जा के रूप में फिर से एक बिन्दु में समा जायेगा।

प्रारंभ में तिब्बत, बॉन (Bon) राजतंत्रीय व्यवस्था के अधीन था, बाद में बौद्धधर्म के प्रमुख दलाईलामा और पंचेन लामाओं की परंपरा एवं उनका प्रभुत्व स्थापित हुआ और ये धर्माचार्य ही, राज प्रमुख बन गये। भारत में अंग्रेजी राज्य के समय में, तिब्बत का स्वतंत्र अस्तित्व था। संपूर्ण विश्व से अलग–थलग तिब्बत, सदियों तक धार्मिक आस्थाओं एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का गढ़ बना रहा। कुछ समय पहले तक, तिब्बत के संबंध में, विश्व में जानकारी लगभग नगण्य थी। तिब्बत, एक शांत, हिमालय पर्वतीय क्षेत्र है, जिसमें अनगिनित गुफाऐं, कंदराऐं एवं सुरंगें हैं, जो इसे आध्यात्मिक साधनाओं के लिये एकदम उचित वातावरण प्रदान करतीं हैं। हिमालय का क्षेत्र, सभी प्रकार की एकांत आध्यात्मिक एवं तांत्रिक साधनाओं के लिये प्रसिद्ध रहा है। यहाँ हिन्दुओं और बौद्धों के अनेक प्रसिद्ध तीर्थ हैं। आज भी अनेक वैदिक संत, तिब्बत में साधना करते हैं अथवा करने की इच्छा रखते हैं। तंत्र ने इसको और अधिक रहस्यमय बना दिया है। संपूर्ण विश्व, तिब्बत के गूढ़ रहस्यों को जानने, समझने के लिये लालायित है।

प्रस्तुत पुस्तक लगभग 60 वर्ष पूर्व लिखी गई थी। जिसमें लेखक ने द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति और हरोशिमा पर परमाणु बम गिराये जाने से उत्पन्न भगदड़ और अव्यवस्था के बीच, उनके जापान से भागने के बाद की घटनाओं और रूस, पौलेण्ड, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैंड, आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड, कनाडा व अमेरिका आदि देशों की यात्राओं के संबंध में अपने अनुभव बताये हैं, जिसमें उन्हें अधिकतर ईर्ष्या, धोखा, अवमानना, विश्वासघात एवं देश से निष्कासन तक की सजा मिली।

तत्कालीन समाज के दुर्व्यवहार से, वे हर जगह आहत एवं पीड़ित होते रहे। इंग्लैण्ड में, स्थानीय निवासी साइरिल हैनरी होस्किन (Cyril Hennery Hoskin) (जन्म 1911), की काया में प्रवेश करने के बाद, उन्हें बेरोजगारी का दंश झेलना पड़ा। अंत में, अपने परलोक वासी गुरू लामा मिंग्यार डोंडुप एवं अन्य शुभेच्छुओं के सुझाव पर, उन्होंने पुस्तकें लिखना प्रारंभ किया। इस बीच, उन्हें फिर से तिब्बत की यात्रा करनी पड़ी। वहाँ उन्होंने साम्यवादी चीन के द्वारा स्थानीय तिब्बतियों, भिक्षु एवं भिक्षुणियों पर होने वाले अत्याचारों को भी देखा। अभी तक का इतिहास बताता है कि, प्रत्येक आक्रामक फौज एवं देश, सर्वप्रथम विजित देश की सभ्यता, प्रतिभा और संस्कृतियों के चिन्हों एवं धरोहरों का विनाश करता है। जर्मनी, जापान, चीन यहाँ तक कि, पाकिस्तान ने भी बांग्लादेश में यही किया था, ताकि स्थानीय, विशेषकर, देशभक्त जनता का, मनोबल तोड़ा जा सके और उस पर अपनी सभ्यता, धर्म और संस्कृति को थोपा जा सके। भारत में मुस्लिम आक्रामकों और बाद के शासकों, खास कर औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया था और हिन्दू मंदिरों को तोड़ कर मस्जिदें बनबाईं थीं और बड़े पैमाने पर कत्लेआम किया था।

लामा लोबसांग रम्पा ने दावा किया था कि, उन्होंने 1949 में परकाया प्रवेश (transmigration of soul) किया था। साइरिल होस्किन नाम का अंग्रेज, एक प्लम्बर का बेटा था, उसे दिये गये अतीन्द्रिय सुझावों के आधार पर, उसने 1948 में अपना नाम साइरिल होस्किन से बदल कर, डॉक्टर कार्ल कुआन सुओ (Dr. Carl Kuan Suo) रख लिया था तथा अपनी दाढ़ी बढ़ाई थी। परकाया प्रवेश का पूरा घटनाक्रम, इस पुस्तक में वर्णित है।

रम्पा की तीखी आलोचनाओं के बाद भी, उन्होंने टी. लोबसांग रम्पा नाम से किताबें लिखना जारी रखा। साथ ही वे अपने प्रत्येक दावे की सत्यता पर जोर देते रहे। उनके जीवनकाल में, उनकी तीखी अलोचनाऐं होती रहीं। उनकी मृत्यु के बाद, अनेक लेखकों ने उनकी कृतियों में से चुरा कर, अनेक पुस्तकें लिखीं। उनके द्वारा विकसित की गई तिब्बत की सकारात्मक छवि ने, तिब्बत के स्वतंत्रता के आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन पुस्तकों ने पश्चिम को, बौद्धधर्म से परिचित कराया है। ''मैं दीप जलाता हूँ'' रम्पा का लक्ष्य वाक्य रहा है।

लोबसांग रम्पा, अनेक विलक्षण गुणों के साथ, एक अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी थे। एक ऐसे तिब्बती, जिनका स्वयं का, तिब्बतियों से कोई संपर्क नहीं रहा, तिब्बतीय समुदाय ने भी इनके कार्यो के लिए कभी कृतज्ञता व्यक्त नहीं की। साइरिल होस्किन के पूर्व परिचितों ने, उसके प्रारंभिक जीवन के बारे में बताया था कि, वह चीन के बारे में, जहाँ वह कभी, बच्चे के रूप में ले जाया गया था, अनेक अजीब–अजीब कहानियाँ कहता था। वह गूढ़ रहस्यों में गहरी दिलचस्पी रखता था। अच्छा संवादकर्ता और जन्मपत्री बनाने में, तथा भविष्य कथन में माहिर था। उसने 1943–44 में मिस्टर बोक्सल को बताया था कि, वह चीनी वायुसेना में एक प्रशिक्षक रहा था और वायुयान दुर्घटना में, जब पैराशूट (parachutte) खुलने में असफल रहा, तो वह दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। साइरिल होस्किन ने, जिसकी मृत्यु जनवरी 1981 में, फुटहिल्स हॉस्पीटल कालगैर, केनेडा में हुई, लोबसांग रम्पा के छद्म नाम (psudo name) से 19 पुस्तकें लिखीं। रम्पा अथवा होस्किन की पत्नी सराह ने, अपने पति के बारे में तब कहा था कि, वह बाद में पूरी तरह बदल चुका था और उसमें तिब्बती काया का व्यक्तित्व विकसित हो गया था। उसे अपनी इस जीवन की कोई बात याद नहीं थी बदले में वह अपना जन्म तिब्बत में होना और तिब्बत के लामामठ में अपना पालन पोषण होना बताता था तथा युद्ध के अपने अनुभवों को बताता था। उसके सामान्य चेहरे मोहरे, रंग और व्यक्तित्व में उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये थे। 1964 में ''तीसरी आँख'' के अगले संस्करण में, उन्होंने ये कहा था कि इस सब पर जोर देने का मेरा उद्देश्य यही है कि, निकट भविष्य में मेरी तरह के अन्य व्यक्ति भी सामने आयेंगे अर्थात् अन्य लोग भी परकाया प्रवेश कर सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि उन्हें भी, मेरी तरह अपमान और प्रताड़ना झेलनी पड़े।

आस्ट्रिया निवासी हाइनरिक हैरर (Heinrick Herrer) ने आरोप लगाया था कि, रम्पा की पुस्तकों में अधिकांश भाग, उनकी पुस्तक ''तिब्बत में 7 वर्ष (Seven years in Tibet)" में से चुराया गया था और सभी कहानियॉ एवं घटनायें, उसके आसपास बुनी गईं थीं परंतु, 1997 में हैरर को प्रेस ने यह आरोप लगाते हुए नंगा कर दिया कि, वे पहले नाजी पार्टी के सदस्य रहे थे, जबकि, हैरर ने पहिले इस तथ्य को जानबूझ कर छिपाया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हैरर, ब्रिटेन के युद्धबंदी के रूप में, नजरबंदी केम्प से भाग कर, सात वर्ष तिब्बत में रहे थे। इसके ऊपर, बाद में ''तिब्बत में 7 वर्ष (Seven years in Tibet)" नाम से एक चलचित्र भी बनाया गया था। प्रेस के दबाव में आ कर दलाई लामा और उन्हें स्वयं ही इसकी पटकथा में परिवर्तन करना पड़ा था। इसके लिए हैरर ने खुले रूप से जनता से खेद भी प्रकट किया था।

लामा लोबसांग रम्पा, एक अच्छे फोटोग्राफर भी थे। उनके खींचे गये कई फोटोग्राफ, अति भव्य हैं। मशीनों को सुधारने में उन्हें विशेषज्ञता प्राप्त थी। वे किसी भी प्रकार की मशीन को सुधार सकते थे। वे एकान्तवासी प्रवृति के थे तथा प्रेस और मीडिया से हमेशा दूर रहते थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने अथवा उनकी पत्नी ने, केवल तीन पत्रकारों को साक्षात्कार दिया था। उनके स्वयं कोई संतान नहीं थी। उन्होंने श्रीमती शीलगाह राउस (Mrs. Shielgah Rouse) को दत्तक पुत्री के रूप में अपने साथ रखा, जो युवा अवस्था में अपने पति से अलग होने के बाद, उनसे मिली थी, और उनके सचिव का कार्य भी करती थी। स्यामी बिल्लियों से उन्हें विशेष लगाव था।

दृष्टव्य है कि, प्रस्तुत पुस्तक की घटनाऐं, एशिया, यूरोप, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीपों के इर्दगिर्द घूमतीं हैं। अतः इसमें उनके भौगोलिक ज्ञान के अतिरिक्त, भौतिक, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, पुरातत्व, इतिहास, प्राकृतिक घटनाओं (जैसे फराओ की कब्र, उत्तरी प्रकाश, आपेक्षतावाद, बिग बैंग, नाभिकीय विखंडन आदि) आदि से संबधित, अनेक जानकारियाँ, स्थान–स्थान पर दीं गईं हैं। एक औसत हिन्दी पाठक के लिये, उनको समझने में सरलता और सुविधा प्रदान करने के लिये, यथास्थान 108 टिप्पिणियाँ भी जोड़ी गयी हैं, ताकि उसकी उत्सुकता को शान्त किया जा सके और पुस्तक के मूलस्वरूप को बनाये रखते हुए, उसके धारा प्रवाह अध्ययन में रुकावट न पड़े।

आज पूरे विश्व में साक्षरता और जागरूकता बढ़ी है परन्तु, दुःख के साथ कहना पड़ता है कि, आम जनता में पुस्तकों के प्रति रुचि, शोचनीय स्तर तक घटी है। सम्भ्रान्त वर्ग के कुछ नवयुवक पाठक, अंग्रेजी की पुस्तकों को पढ़ना पसंद करते हैं, जबकि सामान्य मध्यवर्गीयजन, विशेषकर युवावर्ग, निरर्थक वार्तालाप, सिनेमा, टेलीविजन, अंतर्जाल (Internet), फेस बुक, ट्विटर, वीडियो गेम्स, मोबाइल फोन एवं स्मार्ट फोन, वाइक पर मटरगस्ती और आवारागर्दी आदि में ऐसा उलझा है कि उसको पुस्तकों के लिये फुर्सत ही नहीं है। मैं विश्व के बारे में तो नहीं कह सकता परंतु मेरा अनुभव है कि, मोबाइल फोन एवं स्मार्ट फोन ने, लगभग पूरे देश को झूठा बना दिया है। आदमी बैठा ग्वालियर में है और मोबाइल फोन पर वह खुद को इंदोर में बताता है, या छात्रा अपने पुरुष मित्र के साथ घूम रही है और वह स्वयं को कोचिंग में बताती है। खुलेपन ने नैतिक एवं सामाजिक पतन की दर को अत्यधिक तेज कर दिया है। धर्म के प्रति आस्था घटती जा रही है। ऐसे में कुछ अच्छी एवं सुरुचिपूर्ण पुस्तकों से कुछ आशा की जा सकती है। पुस्तकों के बढ़ते हुए मूल्य भी उनकी सहज उपलब्धि में बाधक हैं। यद्यपि अंतर्जाल पर अनेक उपयोगी पुस्तकें, निशुल्क अनुभारित (download) की जा सकती हैं।

अतः मैने इस विचार से प्रेरित हो कर, कुछ पुस्तकों को अँग्रेजी से हिंदी में अनुवादित करने का संकल्प किया है। मेरे द्वारा अनुवादित सभी पुस्तकें, अंतर्जाल पर निशुल्क उपलब्ध रहेंगीं। मुझे प्रसन्नता एवं संतुष्टि होगी यदि, पाठकगण इनसे लाभान्वित हो सकें। प्रस्तुत पुस्तक में मूल कलेवर को ज्यों का त्यों, अनूदित किया गया है, मात्र स्पष्टीकरण के रूप में, यथास्थान टिप्पिणियाँ जोड़ी गयीं हैं, आशा है ये पाठकों के ज्ञानबर्धन में उपयोगी सिद्ध होगीं।

इस रूपांतरण में मुझे अपने आध्यात्मिक गुरु श्री बी. एन. गच्छ से प्रोत्साहन एवं आर्शीवाद प्राप्त हुआ है तथा अपने मित्रों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, डॉ. बी. एन. शर्मा एवं डॉ. बी. एस. सिकरवार का भाव पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विशेष रूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्री राकेश गोयल, श्री प्रदीप सेन तथा कुमारी रागिनी मिश्रा, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं आभारी हूँ। मैं पुनः उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चित रूप से कुछ त्रुटियाँ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि, विद्वत पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि, उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र.,भारत
फोन (0751) 2433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

दिनांक : 01 जनवरी 2016

अध्याय एक

कठोर हिमालय की नुकीली चोटियाँ, तिब्बत के ज्वलंत बैंगनी रंग के सांयकालीन आकाश को गहराई तक भेदतीं हैं। शक्तिशाली पर्वत श्रंखलाओं के पीछे छिपा हुआ, डूबता सूरज, अपनी उच्चतम पराकाष्ठाओं को धता बताते हुए, चमकदार, आनंदमय, इन्द्रधनुषी रंगों को बर्फ के फैन के ऊपर, निरंतर बिखेर रहा था। स्फूर्तिदायक और लगभग असीम दृश्यता प्रदर्शित करती हुई हवा, कॉच की तरह एकदम साफ थी।

पहली नजर में, अलग–थलग, जमे हुए देहात, पूरी तरह से जीवन से वंचित थे। ऊँचाई पर गिरती हुई बर्फ की लंबी पताका के सिवाय, न तो कुछ चल रहा था, और न हीं कुछ हिल रहा था। ये मानते हुए कि, इस उदासीन पहाड़ी कचरे के बीच, कुछ जिंदा नहीं रह सकता, स्पष्टरूप से, स्वयं समय के प्रारंभ से, यहाँ कभी कोई जीवन नहीं था।

केवल तभी, जब कोई जानता हो, जब किसी को समय–समय पर दिखाया गया हो, कोई –परेशानी के साथ–कुछ हल्के संकेत पा सकता है, कि कभी यहाँ मानव रहा करते थे। मात्र परिचय ही, किसी के कदमों को, इस कठोर, छिपे हुए स्थान में पथ प्रदर्शन कर सकता है। केवल तभी कोई, छाया के पर्दे से ढ़की हुई, गहरी और धुंधली किसी गुफा के प्रवेशद्वार को, –गुफा–जो अनगिनत गुफाओं और इस पवित्र पर्वत श्रेणी में विस्तृत, उनके मधुमक्खी के छत्ते जैसे अनेक कक्षों की ओर जाने का गलियारा थी, को देख सकेगा।

भूतकाल में महीनों पहले, सर्वाधिक विश्वस्त लामा, निम्न श्रेणी के वाहकों का काम कर रहे थे, जो कष्टपूर्वक, पैर घसीट कर चलते हुए, उन पुरातन रहस्यों को ल्हासा से सैकड़ों मील दूर, जहाँ वे बर्बर, असभ्य, चीनियों और विश्वासघाती तिब्बती साम्यवादियों से, हमेशा के लिए सुरक्षित रह सकेंगे, ले जा रहे थे और यहॉ भी असीम परिश्रम और कष्टों के साथ, आदरणीय पर्वतों के दिलों में स्थापित करने के लिए, पिछले अवतारों की स्वर्ण प्रतिमायें लाईं गईं थीं। पवित्र वस्तुऐं और अधिकांश आदरणीय विद्वान पुजारियों के युगातीत लेखन, यहाँ सुरक्षित थे। पिछले कई वर्षो से, आने वाली चीनी घुसपैठ की पूरी जानकारी होते हुए, स्वामिभक्त मठाध्यक्ष, समय–समय पर, ये जाँचने के लिए कि, अत्यंत दूरियों पर स्थित, इन स्थानों पर, नये घरों में रहने के लिए, किसको जाना चाहिए, गुप्तरूप से, गुप्तसभा में मिलते रहे थे। एक के बाद एक, पुजारियों की जाँच पड़ताल की गई। उनके अभिलेखों को, बिना उनकी जानकारी में लाए हुए जाँचा गया, ताकि केवल सबसे अच्छे और अध्यात्मिकरूप से सबसे अधिक आगे बढ़े हुए ही, चुने जा सकें। ऐसे मनुष्य, जिनके प्रशिक्षण और आस्थाऐं इस प्रकार की थीं कि यदि, आवश्यकता हो तो, वे खराब से खराब प्रताड़नाओं के विरूद्ध, जिनको चीनी दे सकते थे, प्रमुख जानकारियों का रहस्य खोले बिना, टिके रह सकें।

इसलिए अंत में, ल्हासा पर साम्यवादी अतिक्रमण के साथ ही, वे अपने नये घर में आ चुके थे। युद्धसामग्री से लदा हुआ कोई भी वायुयान, इतनी ऊँचाई पर नहीं उड सकता था। खिसकती हुईं चट्टानों और दरारों से भरी और गहरी फैली हुई दरारों से, बड़े–बड़े पत्थर के खंडो को खिसकाती हुई इस बंजर जमीन पर, जिसकी जमीन मिट्टी से वंचित थी, किसी दुश्मन सेना की टुकड़ियाँ नहीं रह सकतीं थीं। इतनी ऊँची जमीन, ऑक्सीजन की इतनी कमी, कि केवल, मजबूत पहाड़ी लोग ही वहाँ सांस ले सकते थे। अंत में यहाँ, पर्वत के इस अभयारण्य में, शांति थी। शांति, जिसमें भविष्य को सुरक्षित करने का कार्य, प्राचीन ज्ञान को संरक्षित करने का कार्य, और उस समय के लिए तैयारी का कार्य, जब तिब्बत इन आक्रामकों से मुक्त होकर, फिर से ऊपर उठेगा, जारी था।

लाखों वर्ष पहले, ये ज्वालाओं का वमन करती हुईं, चटटानों की और लावा का विस्फोट करते हुए ज्वालामुखियों की, श्रंखला थी, जो युवा पृथ्वी के चेहरे को बदल रही थी। उस समय पृथ्वी अर्ध

प्लास्टिक जैसी लचीली थी और नवीन युग की प्रसव पीड़ा से हो कर गुजर रही थी। अनगिनत वर्षो के बाद, ये ज्वालाऐं बुझीं और आधी पिघली हुई चट्टानें ठंडी हुईं। लावा अंतिम बार बहा और पृथ्वी के गहरे आंतरिक भाग से निकले हुए गैस के फुब्बारों ने, अंदर के अवशेषों को निकाल कर, अनंत चैनल और सुरंगों के रूप में, जो खाली और नंगी थीं, खुली हवा में बाहर कर दिया था। इनमें से बहुत थोड़ी, चट्टानों के गिरने से बंद हो गई थीं, परंतु दूसरी, काँच की तरह कठोर और एक के बाद एक, पिघली हुई धातु की धारियों से युक्त, सही सलामत थीं और शुद्ध तथा चमकदार प्रकाश की कलियों के बीच में हो कर, कुछ दीवारों से पहाड़ी झरने फूटे।

शताब्दियों के बाद शताब्दियों तक, अलग–थलग और अकेली, जीवन से वंचित रहीं, ये सुरंगें और गुफाऐं, केवल आकाशीय (astral) यात्रा करने वाले लामाओं को ज्ञात थीं, जो कहीं भी यात्रा कर सकते थे और सब कुछ देख सकते थे। आकाशीययात्रा करने वालों ने, पूरे देश को खंगाल कर, ऐसे शरण स्थल को तलाश कर लिया था। अब तिब्बत के देश में, चुपके–चुपके आतंक के आने के साथ, पुराने गलियारे, कुलीन, अध्यात्मिक लोगों द्वारा आबाद हो गए थे, एक व्यक्ति भविष्य में, समय परिपक्व होने पर, उठ कर खड़ा होने के लिए तय किया गया था।

जब पहले से सावधानी पूर्वक चुने गए भिक्षुओं ने, उत्तर की तरफ, उन जीवंत चट्टानों में अपना घर तैयार करने के लिये रास्ता बनाया, तभी दूसरे जो ल्हासा में थे, अत्यंत अमूल्य चीजों को बांध रहे थे, और सहजरूप से वहाँ से छोड़ने को तैयार हो रहे थे। चुने गए लोगों में से, लामामठों और भिक्षुणियों के आश्रमों में से, एक छोटा समूह आ टपका। छोटे–छोटे समूहों में, अंधकार के आवरण में, उन्होंने एक दूरस्थ झील की यात्रा की और उसके किनारों पर डेरा डाल कर, दूसरों के आने का इंतजार किया।

'नये घर' में, ज्ञान को संरक्षित करने की पाठशाला, और नयाक्रम (order) स्थापित किया गया और इसके सौ वर्ष से अधिक आयु के बूढ़े, अकथनीय कष्टों को झेलने वाले प्रभारी मठाध्यक्ष ने, पर्वतों में स्थित इन गुफाओं के अंदर यात्रा की। उसके साथ देश के सर्वोच्च विद्वानों ने, दूरानुभूति (telepathy) प्राप्त लामाओं ने, अतीन्द्रियविज्ञानियों (clairvoyants) ने और महान स्मृति रखने वाले संतों ने, यात्राऐं कीं। धीमे–धीमे, कई महीनों तक, वे पर्वत श्रखंलाओं के बीच, अपने रास्ते पर ऊँचे, और ऊँचे (higher and higher), चलते गए। ऊँचाई बढ़ने के साथ–साथ, हवा विरली, और विरली, होती जाती थी। उनको धक्का दे कर दूर करने की धमकी देती हुई, शक्तिशाली चट्टानों के ऊपर बढ़ते हुए, एक मील ऊँचे दर्रो की शाश्वत हवाओं से अपनी पोशाकों को फाड़ते हुए, अपने बूढ़े शरीरों के द्वारा, जितना वे चल सकते थे, चलते थे। अधिकांशतः कई बार, एक दिन में एक मील ही हो पाता था। कई बार, उन्हें गहरी दरारों ने, एक लंबा और दुष्कर चक्कर लगाने के लिए मजबूर किया। लगभग एक सप्ताह के लिए, उन बूढ़े मठाध्यक्ष को, जबकि अनजान जड़ीबूटियाँ और तरल पदार्थ, उनके शरीर में जीवनदायी ऑक्सीजन को उड़ेलते हुए, उनके पीड़ित फैफड़ों को आसान कर रहे थे, मजबूती के साथ बंद किये हुए, याक के तंबू में रहना पड़ा। तब भी उन्होंने, अतिमानवीय धैर्य के साथ, इस भयावह यात्रा को जारी रखा।

अंत में वे अपने ठिकाने पर पहुँचे। उनका दायरा (band) काफी सीमित था, क्योंकि उनमें से अनेक, रास्ते में, बगल से, गिर गए थे। धीमे–धीमे, वे अपने बदले हुए जीवन के अभ्यस्त हो गए। लेखकों ने सावधानी से, अपने यात्रा वृतांतों को लिपिबद्ध किया, और गढ़ने वालों ने, धीमे–धीमे, पुस्तकों की हाथ की छपाई के लिए ब्लाक तैयार किए। तिब्बत और दूसरे देशों के भविष्य कथन करते हुए, अतीन्द्रिय विज्ञानियों ने, भविष्य में देखा।

ये आदमी, जो उच्चतम सीमा तक पवित्र थे, ब्रह्मांड, और आकाशीय अभिलेखों (akashic records) के संपर्क में थे, वे अभिलेख, जो हमें हर स्थान पर भूतकाल को, तात्कालिक वर्तमान को और

भविष्य की सभी संभावनाओं को बताते हैं। तिब्बत में दूसरों को संदेश भेजने में, हर स्थान पर, दूरानुभूति से दूसरे क्रम के अन्य लोगों से संपर्क बनाते हुए– तथा मेरे संपर्क में रहते हुए भी, दूरानुभूति वाले भी व्यस्त थे।

'लोबसांग। लोबसांग!' मुझे अपने दिवास्वप्न से वापस लाते हुए, विचार मेरे दिमाग में कौंधा। दूरानुभूति संदेश, मेरे लिए कुछ नहीं थे, वे मेरे लिए टेलीफोन की बातचीत की तुलना में अधिक सामान्य थे, परंतु ये बार–बार आ रहे थे। एक प्रकार से ये कुछ भिन्न था। पद्मासन की मुद्रा में बैठते हुए, अपने दिमाग को खुला रखते हुए और अपने शरीर को आराम में रखते हुए, जल्दी से, मैं शिथिल (relax) हुआ। उन दूरानुभूति संदेशों के प्रति, ग्रहणशील होते हुए, मैंने प्रतीक्षा की। कुछ समय के लिये वहाँ कुछ नहीं था, केवल हल्की सी जाँच पड़ताल, मानो कि, कोई मेरी आँखों से देख और झाँक रहा है। क्या देखते हुए ? दलदली डेट्रोइट (Detroit) नदी, डेट्रोइट शहर की गगनचुंबी ऊँची इमारतें। मेरे सामने टंगे हुए कलेंडर मे तारीख थी, 9 अप्रैल 1960। फिर–कुछ नहीं। अचानक, मानो कि 'कोई', किसी निर्णय पर पहुँच गया हो, आवाज फिर से आई।

''लोबसांग। तुम काफी कुछ झेल चुके हो। तुमने ठीक किया है, परंतु अभी आत्मसंतोष का समय नहीं है। अभी तुम्हारे करने के लिए काम बाकी है।'' कुछ समय के लिए विराम हुआ मानो कि, वक्ता को अप्रत्याशितरूप से हस्तक्षेप किया गया हो, और मैंने, दिल से दुखी हो कर और पूरी तरह डरे रहते हुए, प्रतीक्षा की। पिछले वर्षों के मध्य मुझे, भुतहा त्रस्त किए जाने का, अत्याचार किये जाने का, पर्याप्त से काफी अधिक परिवर्तन, पर्याप्त से अधिक मुसीबतें और यातनायें झेलनी पड़ीं थीं। जैसे ही मैंने प्रतीक्षा की, मैं पड़ौस के दूसरे लोगों के दूरानुभूति के क्षण भंगुर विचारों से घिर गया। एक लड़की, बस स्टॉप पर, मेरी खिड़की के नीचे, अधीरता पूर्वक अपने पैरों को पटक रही थी ''ओह! ये बस सेवा, दुनियाँ में सबसे खराब है। क्या यह कभी नहीं आयेगी ?'' या एक आदमी, जो अगले घर के दरवाजे पर एक पार्सल को बॉट रहा था : ''मुझे आश्चर्य होगा यदि मैं, अपने बॉस को वेतन में बढ़ोत्तरी के लिए कह सकूँ ? मिली (Millie) निश्चित रूप से पागल हो जायेगी, यदि मैं उसके लिए शीघ्र ही कुछ पैसा नहीं पा जाता!'' मैं ठीक वैसे ही जैसे कि, टेलीफोन पर प्रतीक्षा कर रहा एक व्यक्ति, जो फालतू में सोचता है, अलसाया सा हुआ आश्चर्य कर रहा था। 'मिली' कौन थी, हठी आंतरिक आवाज, फिर अंदर से आई।

''लोबसांग! हमारा निर्णय हो चुका है। तुम्हारा दुबारा लेखन करने का समय आ चुका है। ये अगली पुस्तक, एक महत्वपूर्ण कार्य होगी। तुमको इस एक मुद्दे पर जोर डालते हुए लिखना चाहिए, कि कोई व्यक्ति, किसी अन्य व्यक्ति की पूरी सहमति के साथ, उसके शरीर में जा सकता है।''

मैंने निराशा में शुरूआत की और दूरानुभूति संपर्क को लगभग तोड़ दिया। मैं, फिर से लिखूँ ? उसके बारे में। मैं ''विवादास्पद व्यक्ति'' था और मैं हर पल, ऐसा होने से घृणा करता था। मैं जानता था कि, जिसे मैं होने का दावा करता था, मैं वह सब कुछ था और यह कि, जो मैंने पहले लिखा था, वह परम सत्य था, परंतु अब ये उन भड़कीले समाचार माध्यमों की मूर्खता पूर्ण चटखारेबाजी से किस प्रकार की एक कहानी को बनाने में सहायक होगा,? ये मेरी पहुँच के बाहर था। इसने मुझे दिल से बहुत अधिक दुखी, और खाँसी की प्रतीक्षा करते हुए आदमी की भांति, दुविधा पूर्ण और स्तब्ध स्थिति में ला दिया।

''लोबसांग!'' दूरानुभूति की आवाज, अब विचारणीय कटुता से भर गयी थी। मेरे संभ्रमित (confused) मस्तिष्क में, कर्कश कड़वाहट, बिजली के झटके की भाँति थी। ''लोबसांग! तुम्हारी अपेक्षा हम, निर्णय करने की अधिक उन्नत अवस्था में हैं; तुम पश्चिम की मशक्कत में उलझे हुए हो। हम एक तरफ खड़े हो कर इसका मूल्यांकन कर सकते हैं। तुम्हारे पास केवल स्थानीय समाचार हैं, जबकि हमारे पास, पूरी दुनियाँ के।''

मैं, संदेश की निरंतरता की प्रतीक्षा करते हुए, स्वयं के साथ सहमत होते हुए, कि ''वे'' स्पष्टरूप से क्या सही था, यह जानते थे, नम्रता पूर्वक शांत रहा। कुछ अंतराल के बाद, आवाज दुबारा आई। ''तुम अन्याय पूर्वक, काफी कुछ झेल चुके हो, परंतु ये एक अच्छे निमित्त के लिए हुआ है। तुम्हारे पिछले कार्य ने बहुतों के लिए अच्छा किया है, परंतु तुम बीमार हो और अगली पुस्तक के विषय में तुम्हारा निर्णय त्रुटिपूर्ण और विकृत है।''

ज्यों ही मैंने यह सुना, मैं अपने युगों पुराने क्रिस्टल (crystal) को पाने के लिए पहुँचा और उसे अपने सामने, काले कपड़े के ऊपर पकड़ा। शीघ्र ही काँच बादलों से भर गया और दूध की तरह सफेद हो गया। पर्दों को खींचने की तरह से एक दरार उभरी, और भोर के प्रकाश को अंदर आने देने के लिए, सफेद बादल बगल में खिसक गये। जैसा मैंने सुना वैसा देखा। ऊँची–ऊँची चोटियों बाले हिमालय का दूरस्थ दृश्य, उनकी बर्फ से आच्छादित चोटियॉ। गिरने का इतना तीक्ष्ण और इतना वास्तविक अनुभव कि, मुझे अपना पेट अपने अंदर बढ़ता हुआ लगा। दृश्य परिक्षेत्र बड़ा होता जा रहा था, और तब गुफा, ज्ञान का नया घर। मैंने एक पूज्यनीय आचार्य, वास्तव में, एक बहुत पुराने प्रसिद्ध व्यक्ति, को याक के मुड़े हुए कंबल के ऊपर बैठे हुए देखा। यद्यपि, वह साधारण रूप से बदरंग, जीर्णशीर्ण पोशाक में, जो लगभग उतनी ही पुरानी लग रही थी, जितने कि वह थे, लपेटे हुए, वास्तव में वे एक उच्च मठाधीश थे। उनका ऊँचा गुंबद के आकार का सिर, एक पुराने चर्मपत्र (pachment) की तरह से जगमगाया, और उनके झुर्री पड़े बूढ़े हाथों की खाल, जो मुश्किल से ही हड्डियों को, जो उसे सहारा दे रही थी, ढक पा रही थी। वह मजबूत शक्ति के प्रभा मंडल, और अकथनीय धीरता के साथ, जो सत्य ज्ञान प्रदान करता है, एक सम्मानित व्यक्ति थे। उनके आसपास, एक वृत में, जिसके केन्द्र में वह बैठे हुए थे, उच्च कोटि के सात लामा बैठे हुए थे। वे ध्यान की मुद्रा में, अपनी हथेलियाँ ऊपर की ओर किये हुए बैठे थे और उनकी उंगलियाँ बंद करने के अविस्मरणीय सांकेतिक अंदाज में, एक दूसरे में गुथीं हुईं थीं। उनके सिर थोड़े से झुके हुए थे, सभी मेरी ओर देख रहे थे। मेरे क्रिस्टल में ऐसा लग रहा था, मानो मैं उन्हीं के साथ, किसी ज्वालामुखी के प्रकोष्ठ में हूँ, मानो कि मैं उनके साथ खड़ा था। हमने आपस में बातें कीं मानो कि, हम लगभग भौतिक संपर्क में हों।

''तुम काफी बूढ़े हो गये हो'' एक ने कहा।

''तुम्हारी पुस्तकों ने बहुतों के जीवन में आनन्द और प्रकाश ला दिया है, उन कुछ लोगों से, जो ईर्ष्यालु हैं और बुराई में व्यस्त हैं, निरुत्साहित न हो,'' दूसरे ने कहा।

''लोह अयस्क (iron ore) स्वयं असंवेदनशील होते हुए, आग की भट्टी में यातना झेलते हुए, सोच सकता है परन्तु जब उत्तम प्रकार की स्टील का पानीदार (tempered) ब्लेड, अपने पीछे की ओर मुड़ कर देखता है, तो वह अच्छी तरह समझता है,'' तीसरे ने कहा।

''हम समय और ऊर्जा व्यर्थ कर रहे हैं, बूढ़े सम्मानित पुरखे ने कहा। ''उसका दिल, उसके अन्दर बीमार है और वह दूसरे लोक की छाया में खड़ा है; हम न तो उसकी ताकत पर और न, हीं, उसके स्वास्थ्य पर, अधिक कराधान (overtax) कर सकते हैं, क्योंकि उसके समक्ष उसका कार्य स्पष्ट है।''

पुनः वहॉ शान्ति थी। इस बार, ये उपचारात्मक शांति थी, जबकि दूरानुभूति सम्पन्न लामाओं ने जीवन प्रदान करने वाली ऊर्जा मुझमें डाली, ऊर्जा जिससे मैं, कोरोनरी थ्रोम्बोसिस (coronary thrombosis) के दूसरे झटके के समय से ही बहुधा वंचित था। मेरे समक्ष चित्र, लगभग यथार्थता से अधिक चमकीला वह चित्र, मैं जिसका एक भाग प्रतीत होता था, चमक के साथ उभरा। तब उस वयोबृद्ध आदमी ने मेरी तरफ देखा और कहा। ''मेरे भाई,'' उसने कहा, जो वास्तव में, सम्मानजनक था, यद्यपि मैं भी पदानुसार, अपनी स्थिति में एक मठाध्यक्ष था। ''मेरे भाई, हमें सत्य को अनेक लोगों की जानकारी में लाना चाहिये कि, एक आत्मा अपने शरीर में से स्वेच्छा से निकल सकता है और दूसरे

आत्मा को उसमें आने की इजाजत दे सकता है और खाली किये गये शरीर में दुबारा से प्राण फूंक सकता है। इस ज्ञान को देना –ये तुम्हारा कार्य है।''

ये वास्तव में, एक झटका था। मेरा कार्य ? यद्यपि सूचनाओं को देना, मेरे भौतिक लाभों के लिये हो सकता था तथापि शांत रहने को प्रधानता देते हुए, मैंने कभी ऐसे मामलों को प्रचार नहीं देना चाहा था। मैं विश्वास करता था कि, गूढ़विज्ञान (occult) के प्रति अंधे, पश्चिमी विश्व के अधिकांश लोग, इस रहस्यमयी गूढ़ लोक को न जान कर, ठीक ही रहेंगे। इसलिये अनेक गूढ़विज्ञानी लोग, जिन्हें मैं मिला, वास्तव में, बहुत कम जानकारी रखते थे, और कम जानकारी होना, एक खतरनाक चीज है (नीम हकीम, खतरा ए जान)। मेरा अंतरचिंतन, मठाध्यक्ष के द्वारा, बीच में ही रोक दिया गया। ''जैसा तुम अच्छी तरह जानते हो, हम एक नये युग की दहलीज पर हैं, एक युग, जिसमें यह विचारा गया है कि, मनुष्य की बुराइयों का अधिक शोधन किया जायेगा और वह स्वयं के साथ, और दूसरों के साथ, शांतिपूर्ण ढंग से रहेगा। युद्ध जैसी किसी घटना के बिना, जनसंख्या स्थिर हो जायेगी, न बढ़ती और न घटती, क्योंकि बढ़ती हुयी आबादी वाला एक राष्ट्र, अपनी अधिक आबादी के कारण, अधिक जीवनयापन क्षेत्र प्राप्त करने की इच्छा के कारण, विचलित हो जाता है। हम, लोगों को बताऐंगे कि, किस प्रकार शरीर को, पुरानी पोशाक की तरह से, जिसका पहनने वाले के लिये अब कोई उपयोग नहीं रहा है, समाप्त किया जा सकता है, और किसी दूसरे को, जो किसी विशेष उद्देश्य के लिये, इस प्रकार के शरीर की आवश्यकता में है, दिया जा सकता है।''

मैंने अनमने मन से शुरूआत की। हॉ, मैं इसके बारे में सब जानता था, परन्तु मैंने इसके बारे में लिखने की अपेक्षा नहीं की थी। पूरे विचार ने मुझे आतंकित कर दिया।

बूढ़ा मठाध्यक्ष हल्के से मुस्काराया, जैसे ही उसने कहाः ''मैं देख रहा हूँ कि यह विचार, यह कार्य तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है, मेरे भाई। परन्तु, फिर भी पश्चिम में, जिसमें इसे ईसाई आस्था (Christian belief), कहा जाता है, (दूसरे के शरीर पर) कब्जा (possession) लेने के तमाम अभिलिखित उदाहरण मौजूद हैं।'' ऐसे अनेक प्रकरण बुरे अथवा काला जादू (black magic) माने जाते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण है और उन लोगों के रवैये को, जो इस विषय में अत्यन्त कम जानते हैं, प्रदर्शित करता है। तुम्हारा काम, इसे लिखने का होगा, ताकि, जिन लोगों के पास ऑखें हैं वे पढ़ें, और जो लोग ज्ञान के लिये प्रस्तुत हैं, वे जान सकें।''

''आत्महत्या,'' मैंने सोचा। ''लोग, ऋण या दुखों से छुटकारा पाने के लिये, अथवा किसी दूसरे का सहयोग करने के विचार से, शरीर को देने के लिये, आत्महत्या करने के लिये दौड़ेंगे।''

''नहीं, नहीं, मेरे भाई,'' बूढ़े मठाध्यक्ष ने कहा, ''तुम गलती पर हो। आत्महत्या के माध्यम से कोई अपने ऋणों से छुटकारा नहीं पा सकता है, और न, हीं, कोई किसी दूसरे के लिये, अपने शरीर को छोड़ सकता है, जब तक कि, इसकी माँग करने वाली, अत्यन्त विशिष्ट परिस्थितियाँ न हों। हमें नये युग की पूरी बेला की प्रतीक्षा करनी चाहिये। जब तक कि, उसको आवंटित किया गया जीवनकाल पूरा न हो जाये, कोई भी, अपने शरीर को उचित ढंग से नहीं त्याग सकता। अभी तक, केवल तभी, जब उच्च शक्तियॉ इसकी आज्ञा दें, ऐसा किया जा सकता है।''

मैंने अपने सामने वाले आदमियों की ओर, उनके सिर के चारों तरफ होते स्वर्णिम प्रकाश के खेल को, उनके प्रभा मंडलों में बुद्धि के विद्युत–नीले (electric blue) रंग को, और उनके रजत तन्तुओं (silver cord) से हो रही, प्रकाश की पारस्परिक क्रिया को देखा। एक चित्र, मनुष्यों की बुद्धि और शुद्धता के जीवन्त रंग में। इस दुनियाँ के परे हटे हुए, साधु स्वभाव वाले पवित्र मनुष्य। आत्मकेन्द्रित और आत्मविश्वस्त। ''उनके लिये ठीक है,'' मैं अपने ऊपर भुनभुनाया। ''उन्हें पश्चिमी जीवन की अप्रिय–उठापटक (rough and tumble) वाले जीवन से हो कर नहीं गुजरना पड़ा।'' दलदली डेट्रोइट नदी के पार, लहरों में, यातायात की आवाज आयी। वृहद् झील में, जल्दी आने वाले स्टीमर, मेरी

खिड़की से हो कर गुजरे, उनके आगे–आगे, गलती हुयी और टूटती हुई नदी की बर्फ। पश्चिमी जीवन ? शोर। शोर। रेडियो का चीखता–पुकारता शोरगुल और एक कार विक्रेता के बाद, दूसरे की आरोपित अच्छाईयॉ। यहाँ नये घर में शांति थी, आश्चर्य किये बिना, चिंतन के लिये शांति, किसी के काम करने के लिये शांति, जो केवल कुछ डॉलरों के लिये–यहॉ के समान– दूसरों से घायल होने जा रही थी।

''मेरे भाई,'' बूढ़े आदमी ने कहा। हम आक्रामित देश की उठा–पटक में, और जहॉ आतताई का विरोध किये जाने पर, धीमी प्रताड़ना के बाद, मृत्यु मिलती है, रहते हैं। हमारा खाना, जोखिम भरे पहाड़ी रास्तों पर, सौ मील से अधिक दूरी पर, जहॉ एक गलत कदम, या एक ढीला पत्थर, किसी को हजारों फुट नीचे, मरने के लिये लुढ़का सकता है, पैदल ले जाया जाता है। हम त्सम्पा (tsampa) के एक कटोरे भर पर जिन्दा रहते हैं। वह हमारे पूरे दिन के लिये काफी होता है। पीने के लिये, हमको पहाड़ी झरनों से पानी मिल जाता है। चाय हमारे लिये अनावश्यक विलासिता है, जिसके बिना, हमने काम चलाना सीख लिया है, क्योंकि उसका आनन्द लेना, जो दूसरों के लिये जोखिम पैदा करता है, वास्तव में, एक बुराई है। अपने क्रिस्टल में अधिक आशयपूर्ण दृष्टि से देखो, मेरे भाई, और हम तुम्हें आज का ल्हासा दिखाने का प्रयास करेंगे।''

मैं खिड़की के पास वाले अपने स्थान से उठा, और सुनिश्चित किया कि, मेरे कमरे के तीनों दरवाजे, सुरक्षापूर्ण तरीके से बंद हों। यहाँ, कनाडा की धड़कन की औरअधिक, शांतिपूर्ण गूंज और हलचल भरी, डेट्रोइट नदी के बगल से, लगातार चलने वाले परिवहन के शोर को, शांत करने का कोई तरीका नहीं था। मेरे और नदी के बीच, मेरे अधिक समीप, मुख्य सड़क थी, और रेल की पटरियों के छह पथ भी थे। शोर, –इसका कोई अंत नहीं था। अंतिम नजर के साथ, आधुनिक दृश्य, मेरे सामने, भगाम–भाग करते रहे, मैंने अपनी खिड़की की झिलमिलें (blinds) बंद कीं और खिड़की की ओर पीठ करके अपने स्थान पर बैठा।

मेरे सामने, क्रिस्टल की नब्ज, नीले प्रकाश के साथ, चल रही थी, प्रकाश जो बदल गया और जैसे ही मैं उसकी ओर मुड़ा, वह चक्कर खाने लगा। जैसे ही मैंने इसे ऊपर उठाया और ''संपर्क (rapport)'' स्थापित करने के लिये, दुबारा से, हल्के से, अपने सिर को छुआ, ये मेरी उंगलियों को गर्म प्रतीत हुआ, एक निश्चित संकेत कि, किसी बाहरी स्रोत के द्वारा इसमें काफी ऊर्जा भेजी जा रही थी।

बूढ़े मठाध्यक्ष का शुभेच्छायुक्त चेहरा, मेरे ऊपर दिखाई दिया और उनके चेहरे पर मुस्काराहट फैल गई, तब ऐसा लगा, मानो विस्फोट हुआ। चित्र खराब हो गया, बड़ी संख्या में असंबद्ध रंग और झूलते हुए झण्डे (दिखे)। सहसा ये ऐसा था, मानो किसी ने एक दरवाजे को, आकाश के एक दरवाजे को खोला हो, और मानो कि, मैं उस खुले दरवाजे के सामने खड़ा था। ''क्रिस्टल में देखने का'' सभी ज्ञान गायब हो गया। मैं वहॉ था।

हल्के से चमकते हुए शाम के सूर्य की रोशनी में, मेरे नीचे, मेरे ल्हासा में, हरी घाटी में हो कर, धीमे–धीमे चलती हुई प्रसन्नता की नदी के साथ, शक्तिशाली पर्वत श्रेणियों के बीच, संरक्षित मेरा घर घौंसले जैसा था। मैंने घर की याद की कड़वी टीस को, फिर से अनुभव किया। पश्चिमी जीवन की सभी घृणाऐं और परेशानियॉ, मेरे अंदर उमड़ पड़ीं, और ऐसा लगा कि, मेरा दिल टूट जायेगा। मातृभूमि के दर्शन ने, आनन्द और दुख, और कठोर प्रशिक्षण को, जिसमें हो कर मैं वहॉ गुजरा, पश्चिमी लोगों की समझदारी के कठोर पिछड़ेपन को, मेरी सभी भावनाओं को, आन्दोलित कर दिया।

परन्तु मैं वहॉ खुद के आनन्द के लिये नहीं था! धीमे से, मुझे लगा कि मैं, एक धीमे से उतरते हुए, नीचे आते हुए गुब्बारे में, जमीन से कुछ हजार फुट ऊपर और आसमान से नीचे उतारा गया हूँ। मैं विस्मय और आश्चर्य के साथ, डरा हुआ था। हवाई क्षेत्र ? ल्हासा के शहर के आसपास हवाई क्षेत्र थे! मुझे अधिकतर अपरिचित लगे, और जैसे ही मैंने स्वयं की ओर देखा, मैंने देखा कि, वहॉ पहाड़ियों की

श्रृखंलाओं के ऊपर से आती हुईं, और भारत की दिशा में गुम होती हुईं, दो नई सड़कें थीं। पहियेदार वाहन, यातायात धीमे–धीमे चल रहा था। उन लोगों के नियंत्रण में, जो मुझे यहॉ लाये थे, मैं और नीचे, और नीचे, उतरा और मैंने जमीन के अन्दर खुदाई होते हुए देखी, जहॉ गुलाम, हथियारबंद चीनियों के नियंत्रण में, नींव खोद रहे थे। आतंकों का आतंक! पोटाला के भव्य चरणों के ठीक नीचे, धूल भरी सड़कों के जाल द्वारा सेवित, गंदे झुग्गी–झोपड़ी वाले शहर का बेतरतीब विस्तार था। उस स्थान को फूहड़ गंदी हवा देते हुए, अनियमितरूप से भवनों के साथ तार जोड़े हुए थे। मैंने पोटाला पर नजर गढ़ा कर देखा, और – बुद्ध के पवित्र दॉत की कसम – महल को चीनी साम्यवादी नारों द्वारा, अपवित्र कर दिया गया था! एक दुखी, निराशापूर्ण, सिसकी के साथ, मैं दूसरी तरफ देखने को मुड़ा।

एक ट्रक सड़क के साथ घूमा, ठीक मुझ में हो कर गुजरा – क्योंकि मैं सूक्ष्मशरीर में था, और भूत के रूप में, अभौतिकरूप में, चीखता हुआ, कुछ दूर, कुछ गज दूर, जा कर रुक गया। उस बड़े ट्रक में से, चीखते पुकारते, लापरवाही से बर्दी पहने हुए चीनी सैनिक तथा उनके साथ पॉच भिक्षुओं को खींचते हुए उड़ेल दिया गया। गलियों के कोने पर लगे हुए सभी लाउडस्पीकर चीखने लगे और बेशर्म आवाज वाले आदेशों पर, मैदान, जहॉ पर मैं खड़ा हुआ था, जल्दी ही लोगों से भर गया। जल्दी से, क्योंकि, चीनी प्रेक्षक अपने कोड़ों और बोनटों से, उन लोगों को, जो (घरों में ही) रुके रहना चाहते थे, उकसा रहे थे। तिब्बती और चीनी उपनगरियों की अनिच्छुक भीड़, उदास और निर्बल दिखाई दी। वे निराशापूर्ण टालमटोल कर रहे थे, धूल के छोटे बादल उठे और शाम की हवाओं के द्वारा बहा दिये गये।

दुबले–पतले और खून के धब्बे लगे हुए पॉच भिक्षु, बेदर्दी से अपने घुटनों पर धकेले गये। उनमें से एक, जिसकी वॉयीं ऑख, अपने घेरे (eye ball) में से निकल गई थी और उसके गाल के ऊपर झूल रही थी, मुझे अच्छी तरह परिचित था; जब मैं वहॉ लामा था वह वहॉ बेदीसेवक (accolyte) था। जैसे ही, एक भवन से, जिसके ऊपर ''तिब्बती प्रशासन विभाग'' लिखा था, रूस की बनी हुई एक ''जीप'' सड़क पर दौड़ती हुई आई, उदास भीड़ शांत और स्थिर हो गयी। जैसे ही कार ने भीड़ का चक्कर लगाया और उस ट्रक के लगभग पच्चीस फीट पीछे रुकी, सब कुछ शांत और तनावपूर्ण हो गया।

संतरी उछल कर सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये, और एक स्वेच्छाचारी चीनी, अहंकार पूर्ण तरीके से कार में से निकला। जैसे–जैसे वह चला, एक सैनिक, तार को खोलता हुआ, जल्दी से उसकी तरफ आया। उस निरंकुश चीनी के सामने, उस सैनिक ने अभिवादन किया और एक माइक्रोफोन को पकड़ा। गर्वनर या प्रशासक अथवा जैसा भी उसने स्वयं को कहा हो, ने उपकरण में कुछ कहने से पहले, तिरस्कारपूर्वक अपने चारों ओर देखा। उसने कहा, इन पॉच प्रतिक्रियावादियों और इन क्रांतिकारी भिक्षुओं की मौत की सजा का साक्षी बनने के लिये, ''आपको यहॉ लाया गया है।'' कोई भी व्यक्ति, गौरवपूर्ण चीनी जनता, जो अध्यक्ष कामरेड माओ की अध्यक्षता के अन्तर्गत है, के रास्ते में नहीं आयेगा।'' वह मुड़ा, और ट्रक के ऊपर लगे ध्वनिविस्तारक (loudspeakers) बंद हो गये। गवर्नर ने एक सैनिक को, एक लम्बी और मुड़ी हुई तलवार से इशारा किया। वह पहले कैदी की ओर, जो उसके सामने घुटनों के बल बंधा हुआ था, आगे बढ़ा। एक क्षण के लिये वह, अपने अगूँठे के पोरुए के साथ, अपनी तलवार की धार की परीक्षा करते हुए, अपनी टॉगों को अलग–अलग रखते हुए खड़ा हुआ। संतुष्ट हो कर, उसने अपना स्वरूप बनाया, और धीमे से उस बंधे हुए आदमी की गर्दन को तलवार से छुआ। शाम की धूप में चकमती हुई तलवार को, उस चमकदार धार के ऊपर, उसके सिर से काफी ऊँचा उठाते हुए, वह नीचे लाया। वहॉ निश्तेज शोर हुआ, उसके बाद एक तीखी, 'चटकन' की क्षणिक आवाज हुई और उस आदमी का सिर, कंधों से कट कर उछला, उसके अन्दर से टपकते हुए चमकीले खून की धार बही, जो उस पतले आदमी के मरने के पहले धड़की, और धड़की। फड़कन, ने सिर रहित शरीर को धूल भरे मैदान पर गिरा दिया, गवर्नर ने उसके ऊपर थूका और हर्ष में चिल्लाया; ''साम्यवाद के सभी

शत्रु इसी प्रकार मारे जायेंगे!'' भिक्षु ने, जिसकी ऑख उसके गाल पर लटक रही थी, गर्व से अपना सिर उठाया और तेज आवाज में चिल्लाया; ''तिब्बत अमर रहे। बुद्ध के आशीर्वाद से, ये फिर से उठेगा।'' एक सैनिक अपनी बन्दूक के बोनट के साथ, उसकी तरफ दौड़ने वाला था, तब गवर्नर ने जल्दी से उसे रोका। अपना चेहरा गुस्से के साथ विरूपित करते हुए, वह चिल्लाया; ''तुमने भव्य चीनी जनता की बेइज्जती की ? इसके लिये, तुम धीमे–धीमे मरोगे!'' आदेशों को चिल्लाते हुए, वह सैनिकों की ओर मुड़ा। आदमी हर जगह जल्दी दौड़े। दो, एक समीप के भवन के परे दौड़े, और रस्सों के साथ दौड़ते हुए लौटे। दूसरे आदमियों ने, इस प्रक्रिया में, उस बंधे हुए भिक्षु के बंधन, उसकी बांहो और टॉगों को काटते हुए, गिरा दिये। गवर्नर ने और अधिक चीनियों को इस दृश्य का साक्षी बनने हेतु, वहाँ लाने के लिये, ऊपर–नीचे भागदौड़ की। ध्वनिविस्तारक (loudspeakers) चीखे, और फिर से चीखे, सैनिकों से भरे हुए ट्रक के ट्रक, तथा आदमी औरतों और बच्चों को, ''चीनी कॉमरेड के इस न्याय को देखने के लिये'' लाया गया। एक सैनिक ने लटकती हुई ऑखों को बाहर निकालते हुए और उसकी नाक को कुचलते हुए, बन्दूक के बट से, उस भिक्षु के चेहरे पर मारा। गवर्नर नजदीक ही निष्क्रिय खड़ा रहा। उसने पास खड़े हुए, अभी भी बंधे हुए, धूल भरी सड़क के ऊपर घुटनों के बल बंधे हुए, तीन शांत भिक्षुओं को देखा। ''उन्हें गोली मारो,'' उसने कहा, ''उन्हें गोली मारो, सिर के पीछे हो कर उनकी लाशों को लुढ़कने दो।'' सैनिक आगे बढ़ा और अपनी पिस्तौल निकाली। उसने एक भिक्षु के कान के ठीक पीछे रख कर घोड़ा दबा दिया। मृत आदमी, अपना मस्तिष्क रिसते हुए, जमीन पर आगे गिरा। एक काफी असंबद्ध सैनिक, दूसरे भिक्षु की ओर आया और तेजी से उसमें गोली मार दी। जब वह तीसरे की ओर बढ़ रहा था, एक नवयुवक सैनिक ने कहा, ''कॉमरेड मुझे करने दो क्योंकि मैंने अब तक किसी को नहीं मारा है।'' हॉ में सिर हिलाते हुए गोली मारने वाला, उस नवयुवक सैनिक को मौका देने के लिये, उत्सुकता के साथ कांपता हुआ, उसका स्थान लेने के लिये, अलग से एक तरफ हट गया। अपनी पिस्तौल को निकालते हुए, उसने तीसरे भिक्षु का निशाना लिया, अपनी ऑखे बंद कीं, और घोड़ा दबा दिया। गोली तेजी से आदमी के गालों में घुसी और एक तिब्बती दर्शक के पैर में टकराई। ''दुबारा कोशिश करो'', पहले सजा देने वाले ने कहा, ''और अपनी ऑखों को खुला रहने दो।'' जैसे ही उसने गवर्नर की तरफ देखा, जो उसे तिरस्कारपूर्ण ढंग से देख रहा था, डर और शर्म के मारे, अब तक उसका हाथ इतना अधिक कांप रहा था कि, वह बुरी तरह चूक गया था। ''अपनी पिस्तौल की नाल, उसके कान में रखो और तब गोली मारो,'' गवर्नर ने कहा। एक बार फिर, नौजवान सैनिक, उस मुल्जिम भिक्षु के बगल से, जंगली जानवर की तरह से टक्कर मारता हुआ आगे बढ़ा, अपनी बन्दूक की नली को उसके कान में रखा और घोड़ा दबा दिया। मरा हुआ भिक्षु, अपने साथियों के बगल से, आगे की तरफ गिर गया।

भीड़ बढ़ गई थी। जैसे ही मैंने अपने आसपास देखा, मैंने देखा कि, वह भिक्षु, जिसको मैं जानता था, अपनी बांई भुजा और बांई टॉग से, जीप से बांधा जा चुका था। उसकी दांई भुजा और दांई टॉग, ट्रक से बांध दीं गईं थीं। एक मुस्कराता हुआ चीनी सैनिक, जीप में प्रविष्ट हुआ और उसने इंजन को चालू किया। शायद, धीमे से, जितना धीमा वह कर सकता था, उसने गीयर डाले और आगे की तरफ चल दिया। भिक्षु की भुजा, एक कठोर लोहे के दण्ड की भांति सीधे खींच ली गई, एक झलकन हुई और वह पूरी तरह से कंधे से फाड़ दी गई। जीप चलती रही। एक तेज चटकन के साथ उसके कूल्हे की हड्डी टूट गई और उस आदमी की दांई टॉग, उसके शरीर से अलग हो गई। तब जीप, उस मरे हुए भिक्षु की खून बहाती हुई लाश को, उस पथरीली सड़क के ऊपर उछलते, टकराते हुए, रुकी और गवर्नर उसमें प्रविष्ट हुआ। सैनिक उस बड़े ट्रक के ऊपर चढ़ गये और एक खूनी से लथपथ भुजा और एक टॉग को पीछे खींचते हुए, उसे चला कर ले गये।

जैसे ही, बीमार सा, मैं मुड़ा, मैंने एक इमारत के पीछे से एक जनानी चीख सुनी, उसके

बाद, एक क्रूर हंसी। एक चीनी कसम, जब स्पष्ट रूप से औरत ने, अपने ऊपर उस जकड़ने वाले को, अपने दांतो से काटा और एक उबलती हुई चीख (उभरी), जब उसे बदले में घायल कर दिया गया।

मेरे ऊपर, रंगीन प्रकाश के सूक्ष्म छिद्रों (सितारों और ग्रहों) से, जो दूसरी दुनियाँ के थे, रात के आकाश का गहरा नीला रंग, उदारता पूर्वक छिड़का गया। मैं जानता था, उन (ग्रहों) में से अनेक, बसे हुए थे। मैंने आश्चर्य किया, कितने ही तो इस पृथ्वी के समान बड़े थे ? मेरे आसपास लाशें थीं, बिना दफनाईं हुईं लाशें। तिब्बत की ठंडी हवा में संरक्षित लाशें, जब तक कि, गिद्ध और दूसरे जंगली जानवर, उन्हें खा न जायें। इस कार्य को करने में सहायता देने के लिए, अब यहाँ कुत्ते बिल्कुल नहीं थे, क्योंकि, चीनियों ने उनको खाने के लिए मार डाला था। ल्हासा के मंदिरों की सुरक्षा करने के लिए, कोई बिल्लियाँ नहीं थीं क्योंकि, उन्हे भी मार दिया गया था। मृत्यु ? इन घुसपैंठिये साम्यवादियों के लिए, तिब्बतियों का जीवन, घास के एक तिनके को उखाड़ देने से अधिक मूल्य का नहीं था।

पोटाला, मेरे सामने मंडराता रहा। अब, तारों की धुंधली रोशनी में, छायाओं के साथ मिश्रित, चीनी भाषा में लिखे निर्मम नारे, नहीं देखे जा सकते थे। पवित्र कब्रों के ऊपर लगाई गई, एक खोज बत्ती (search light), ल्हासा की घाटी पर दुष्ट ऑख की तरह चमकती थी। चाकपोरी, मेरा चिकित्सिकीय स्कूल, बदसूरत और असहाय दिखा। इसकी चोटी के ऊपर से, अभद्र चीनी गानों की आवाजें आईं। कुछ समय के लिए, मैं गहरी निद्रा में रहा। एक आवाज ने, अप्रत्याशित रूप से कहा, ''मेरे भाई, अब तुम बाहर आओ, क्योंकि बहुत लंबे समय से तुम यहाँ अनुपस्थित रहे हो। जैसे ही तुम उठो, अपने भले के लिए सोचना।''

थिस्टल (thistle) के रेशमी परों की तरह से, आवारा हवाओं में हिलते–डुलते, धीमे से, मैं हवा में उठा। पहाड़ी चोटियों और घाटियों को, शुद्ध और चांदी की रोशनी से भरता हुआ चंद्रमा, अब उग चुका था। मैंने, भय से, बमबारी किये गए, बीरान पुरातन लामामठों को, (वहाँ के निवासियों) की देखभाल से वंचित किए हुए, मनुष्यों के पार्थिव समान को, पूरी तरह बिखरे हुए मलबे के साथ देखा। कुछ (जिन के हाथों में) प्रार्थनाचक्र (prayer wheels) जकड़े हुए, और कुछ जिन पर से, बम बिस्फोट के कारण, खून से सने मांस के द्वारा, धातु की खपच्चियों पर से, फटे हुए तार–तार किए हुए, कपड़े उतार दिए गए थे, कुरूप, भद्दे ढेरों के रूप में, शाश्वत शीत से संरक्षित, बिना दफनाए गए मुर्दे। मैंने, एक सही सलामत, पवित्र आकृति को देखा, मानो कि वह, मानवता की हत्यारी वृत्ति के ऊपर, करुणा के साथ टकटकी लगाये हुए हो।

तीखे, पथरीले ढालों (slopes) के ऊपर, जहाँ साधुओं की झोपड़ियाँ, पहाड़ों के बगल से, प्रेमपूर्ण आलिंगन में चिपकी हैं, मैंने झोपड़ियों के बाद–झोपडियाँ देखीं, जो अतिक्रमणकारियों के द्वारा लुटी हुईं थीं। अध्यात्मिक उन्नति के लिए, वर्षों के लिए, एकांत में, अंधकार में, कैद हुए साधु, तात्कालिक रूप से उसी क्षण अंधे हो गए, जब उनके प्रकोष्ठों में, सूर्य की रोशनी ने प्रवेश किया। लगभग बिना अपवाद के, साधु, अपने नष्ट हुए घर, जो उनके साथ ही फैला हुआ और बिस्तारित था, जो उनका आजीवन मित्र और विश्वस्त सेवक था, के बगल से मरे पड़े थे।

मैं और अधिक नहीं देख सका। नरसंहार ? अबोध लोगों की, रक्षा रहित भिक्षुओं की, संवेदनहीन हत्या,? क्या उपयोग था। मैं घूम गया और उनसे मिला, जो मुझे इस कब्रिस्तान से हटने के दिशा निर्देश दे रहे थे।

जीवन में मेरा कार्य, मुझे शुरू से ही मालूम था, मनुष्य के प्रभामंडल के संबंध में ही था, वे विकिरण, जो मनुष्य शरीर को पूरी तरह घेरे रहते हैं, और किसी दक्ष पुरुष को, उसके हिलते हुए रंग दिखाते हैं कि, कोई मनुष्य आदरणीय है या दूसरी तरह का। बीमार व्यक्ति और उसकी बीमारियों को प्रभामंडल के रंगों द्वारा देखा जा सकता हैं। प्रत्येक ने, कोहरे भरी रात में, सड़क की रोशनी के चारों ओर, प्रकाश का घेरा देखा होगा। कुछ लोगों ने, उच्च दाब बाले तारों से, निश्चित समय पर निकलता

हुआ, सुपरिचित, कोरोना विर्सजन "(corona discharge)" भी देखा होगा। मानवीय प्रभामंडल भी कुछ–कुछ वैसा ही है। ये आंतरिक जीवन बल (life force) को प्रदर्शित करता है। पुराने जमाने के चित्रकार, संतो के सिर के चारों ओर, तेजोमंडल (halo) या निम्बस (nimbus) का चित्रण करते थे। क्यों ? क्योंकि, वे उन लोगों के प्रभामंडल को देख सकते थे। मेरी पहली दो पुस्तकों के प्रकाशन के बाद से, पूरे विश्व से, मुझे लोगों ने लिखा है और उनमें से कुछ लोग प्रभामंडल को देख भी सकते हैं।

वर्षो पहले, डॉक्टर किलनेर (Dr. Kilner)[1] ने, लंदन के एक अस्पताल में शोध करते हुए पाया कि, कुछ निश्चित परिस्थितियों में वह प्रभामंडल को देख सकते थे। उन्होंने इस संबंध में एक किताब लिखी। चिकित्सा विज्ञान इस तरह की खोज के लिए प्रस्तुत नहीं था, और जो कुछ उन्होंने खोजा, उसको दबा दिया गया। मैं भी, अपने तरीके से, शोध कार्य कर रहा हूँ, और एक उपकरण को देख रहा हूँ, जो किसी भी चिकित्सक या वैज्ञानिक को, किसी का प्रभामंडल देखने के लिए, सक्षम बना देगा और वह 'असाध्य' बीमारियों का अल्ट्रासोनिक (ultrasonic) कंपनों से इलाज करेगा। पैसा, पैसा एक समस्या है। शोध कार्य हमेशा खर्चीला होता था!

और अब, मुझे आश्चर्य है कि, वे मुझे दूसरे की काया को लेने का कार्य, शरीरों के बदलने का कार्य, देना चाहते हैं।

मेरी खिड़की के बाहर, एक जबरदस्त टकराव हुआ, जिसने वास्तविक रूप में हमारे घर को हिला दिया। 'ओह' मैंने सोचा, ''रेल कर्मी दोबारा शंटिंग (shunting) कर रहे हैं। अभी काफी लंबे समय तक शांति नहीं होगी।'' नदी पर, भाड़े का एक बड़ा झील का स्टीमर, दुखमय तरीके से शोर कर रहा था– जैसे एक गाय अपने बछड़े के लिए रंभाती है वैसे ही– और (उसका) जवाब, दूर से किसी दूसरे जहाज की प्रतिध्वनि के रूप में आया।

'मेरे भाई!' आवाज दुवारा मेरे पास आई, और मैंने जल्दी से, क्रिस्टल पर, अपना ध्यान लगाया। बूढ़े आदमी, अभी भी वृताकार बैठे हुए थे और वह पूज्यनीय पुरखा (patriarch), केन्द्र में था। अब वे थके हुए, चुके हुए, लग रहे थे, शायद उनकी अवस्था का और अच्छी तरह बखान किया जा सकता है, क्योंकि उन्होंने इस बिना तैयारी के, इस तात्कालिक यात्रा को संभव बनाने के लिए, काफी शक्ति मुझे हस्तांतरित कर दी थी।

'मेरे भाई, तुमने हमारे देश की हालत को स्पष्ट रूप से देख लिया है। तुमने आक्रामक के कड़े हाथों को भी देख लिया है। तुम्हारा कार्य, तुम्हारे सामने दो कार्य स्पष्ट हैं और तुम दोनों में, हमारी व्यवस्था की भव्यता तक, सफल हो सकते हो।'

थका हुआ बूढ़ा आदमी, भयभीत दिखाई दिया। वह जानता था– जैसा मैं समझता हूँ कि, मैं सम्मान पूर्वक इस कार्य को मना कर सकता हूँ। एक खराब समूह के द्वारा फैलाई गईं, झुठलाई गईं कहानियों के माध्यम से, मुझे काफी हद तक गलत समझा गया था। फिर भी, मैं बहुत अच्छा अतीन्द्रियविज्ञानी था, बहुत अच्छा दूरानुभूति करने वाला। मेरे लिए सूक्ष्मशरीरी यात्राऐं चलने फिरने से अधिक आसान थीं। लेखन ? ठीक है, हाँ, लोग, जो मैं लिखता था उसको पढ़ सकते थे और यदि वे पूरे के ऊपर विश्वास नहीं कर सकते, तब वे लोग, जो पर्याप्त रूप से विकसित हैं, विश्वास कर ही सकते थे और सत्य को जान सकते थे।

---

1 अनुवादक की टिप्पिणी : डॉक्टर बॉल्टर जॉन किलनेर (1847–1920) थॉमस अस्पताल लंदन में एक चिकित्सीय इलेक्ट्रीशियन थे। वहाँ वे (1889 से –1893 तक) विद्युतीय चिकित्सा के प्रभारी रहे। बाद में उन्होंने निजी प्रेक्टिस भी की। उन्होंने अनेक विषयों के ऊपर शोधपत्र प्रकाशित किए परंतु आजकल उन्हें मानवीय वातावरण (human atmosphere) के अध्ययन के लिए, जो उन्होंने जीवन के अंतिम समय में किया, सबसे अधिक जाना जाता है। 1883 में उन्हें रॉयल कॉलेज आफ फिजीशियन्स, का सदस्य बनाया गया। अपने फालतू समय में वे शतरंज के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे।

1911 में किलनेर, मानवीय वातावरण या प्रभामंडल (human atmosphere or aura) के ऊपर, पश्चिमी विश्व में पहला शोधपत्र प्रकाशित किया। उसके अस्तित्व, प्रकृति और चिकित्सिकीय रोग निर्धारण (diagnosis) में, संभावित उपयोगों के संबंध में अध्ययन किये। उनके अनुसार, मानवीय ऊर्जा का क्षेत्र, उसके स्वास्थ्य और मनःस्थिति का संकेत होता है। किलनेर के समान ही अध्ययन, उनके पश्चातवर्ती हॉरोल्ड सेक्सटन बल्ड (Harold Sexton Burr) ने भी किया था। केलनेर का काम अर्द्धचालकों की तकनीक विकसित होने से पहले किया गया था और पूरी तरह से बोल्टमीटर और खुली आंखो पर आधारित था, जिन्हें प्रभामंडलीय सक्रियता के लिए प्रशिक्षित करना होता था। उन्होंने कल्पना की कि, शायद उनका अध्ययन, पराबैगनी विकरणो से संबंधित था और इसे विद्युत चुम्बकों द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता था।

'मेरे भाई,' बूढ़े आदमी ने नरमी से कहा, 'यद्यपि अविकसित, विश्वास करने का बहाना करते थे कि, आप गल्प कथाऐं लिखते हैं, सत्य का पर्याप्त भाग उनके अवचेतन में जायेगा और कौन जानता है ?– सत्य का एक छोटा बीज, उनके इसी अथवा आगामी जीवन में खिल उठे। जैसा कि भगवान बुद्ध ने, तीन रथों के दृष्टांत में, स्वयं कहा है, अंत ही साधनों को तर्कयुक्त बनाता है।'

तीन रथों का दृष्टांत! क्या जीवन्त स्मृति, जिसने मुझे वापस ला दिया। कितना स्पष्ट रूप से मैं चाकपोरी में मुझे पढ़ाते हुए, अपने प्रिय शिक्षक और मित्र, लामा मिंग्यार डोंडुप को याद करता हूँ।

एक बूढ़ा चिकित्सिकीय बौद्ध भिक्षु, एक बहुत बीमार औरत के डरों को, कुछ हानि रहित 'सफेद झूठ' के द्वारा सरल बनाने की कोशिश कर रहा था और मैं अनुभवहीन नौजवान, आत्मसंतुष्टि और आदर भाव के साथ, इस अचानक झटके को व्यक्त करते हुए आश्चर्य चकित हो रहा था कि, क्या किसी भिक्षु को इस आकस्मिकता में भी झूठ बोलना चाहिए। मेरे शिक्षक, यह कहते हुए मेरे साथ–साथ आए, ''अपने कमरे में चलें, लोबसांग! हम पवित्र ग्रंथों को, लाभ के साथ, देख सकते हैं।'' और जैसे ही, वह संतुष्टि के शुभेच्छापूर्ण गर्म प्रभामंडल के साथ मुड़े, मेरी ओर देखकर मुस्कराये, और पोटाला को अनदेखा करते हुए, मेरे साथ, दूरस्थित अपने कमरे की ओर चले।

''चाय और भारतीय केक, हॉ, हमें नाश्ता लेना चाहिए, लोबसांग, क्योंकि नाश्ते के साथ, तुम जानकारी को भी पचा सकते हो।'' भिक्षु–सेवक, जिसने हमें प्रवेश करते हुए देख लिया था, बिना बुलाये, सुन्दर पकवानों के साथ, जिन्हें मैं पसंद करता था और जो मुझे केवल मेरे शिक्षक के भले कार्यालयों से ही प्राप्त हो सकते थे, उन्हें लेकर उपस्थित हुआ।

कुछ समय के लिए हम बैठे और आराम से बातें करते रहे अथवा मैंने खाया और खाने के साथ बातें कीं। तब जैसे ही मैंने समाप्त किया, लब्ध प्रतिष्ठित लामा ने कहा : ''प्रत्येक नियम के अपवाद होते हैं, लोबसांग, और प्रत्येक सिक्के अथवा टोकन के दो फलक (पहलू) होते हैं। बुद्ध ने अपने मित्रों और शिष्यों को विस्तार से बताया था, और जो कुछ भी उन्होंने कहा, लिखा और संरक्षित किया गया। एक कहानी है, जो वर्तमान में ठीक–ठीक लागू होती है। मैं इसे तुम्हें बताऊँगा।'' उन्होने स्वयं को पुनः व्यवस्थित किया, अपने गले को साफ किया, और कहना जारी रखा :

'यह तीन रथों की कहानी है। इसे इसलिए ऐसा कहा जाता है क्योंकि उन दिनों के बच्चों में इनकी बहुत मांग रहती थी, ठीक वैसे ही, जैसे कि आजकल वैसाखियॉ (stilts) और भारतीय मीठे केक (मांग में) हैं। बुद्ध अपने अनुयाइयों में से एक, जिसका नाम सरीपुत्र था, के साथ बातें कर रहे थे। वे बड़े भारतीय पेड़ों में से एक, की छाया मे बैठ कर, सत्य और असत्य, और पहले वाले (सत्य) की अच्छाइयाँ, कई बार, बाद वाले (असत्य) की दयालुता के सामने, किस प्रकार हल्की पड़ जातीं हैं, के ऊपर चर्चा कर रहे थे।

बुद्ध ने कहा, '' सरीपुत्र, अब एक बड़े धनी आदमी के प्रकरण पर विचार करें, एक इतना धनी आदमी कि वह, अपने परिवार की प्रत्येक सनक को संतुष्ट कर सकता था। वह कई पुत्रों और एक बड़े मकान वाला बूढ़ा आदमी था। पुत्रों के जन्म से ही, उन्हें खतरों से बचाने के लिए, वह हर काम करता रहा। वे (पुत्र) खतरे को नहीं जानते थे और उन्होंने दुखों का अनुभव नहीं किया था। आदमी ने अपने घर और साम्राज्य को छोड़ा और व्यापार के सिलसिले में पड़ौस के गाँव को गया। जब वह वापस लौटा, उसने आकाश में धुंआ उठता हुआ देखा। उसने बहुत जल्दी की और जैसे ही अपने घर पहुॅचा, उसने पाया कि, उसमें आग लगी है। चारों दीवारों में आग लगी थी और छत जल रही थी। घर के अंदर, उसके बेटे अभी भी खेल रहे थे, क्योंकि वे खतरे को नहीं समझ सके। वे घर के बाहर आ सकते थे, परंतु वे दुख का अर्थ नहीं समझते थे, क्योंकि वे इसी प्रकार की सिरपरस्ती में पाले गए थे; वे आग के खतरे को नहीं समझते थे क्योंकि, उन्होने केवल रसोईघर में ही आग देखी थी।

''उस आदमी को बहुत अधिक चिन्ता थी, कि वह कैसे अकेला घर में जा सकता है और अपने

बच्चों को बचा सकता है? यदि वह प्रविष्ट हो चुका होता, तो शायद, वह उनमें से केवल एक को बाहर निकाल सकता था, दूसरे खेल रहे होते और इस को भी एक खेल ही समझ रहे होते। उनमें से कुछ, जो बहुत छोटे थे, आग की लपेटों में, घूम रहे होते, टहल रहे होते, क्योंकि उन्होंने डरना सीखा ही नहीं था। पिता दरवाजे पर गया और उनको पुकारते हुए कहा, ''बच्चो, बच्चो, बाहर आओ; तुरन्त यहॉ आओ।''

''परन्तु बच्चे, अपनी पिता की बात नहीं मानना चाह रहे थे, वे खेलना चाह रहे थे, वे बढ़ती हुई गर्मी के कारण, जिसे वे नहीं समझ रहे थे, अपने घर के मध्य में इकट्ठे होना चाह रहे थे। पिता ने सोचा – '' मैं अपने पुत्रों को ठीक से जानता हूँ, मैं, उनके चरित्रों के अंतर को, उनके स्वभाव के रंगों को, और उनको, एकदम सही समझता हूँ; मैं जानता हूँ कि, वे तभी बाहर आयेंगे, जब वे सोचें कि, बाहर कुछ लाभ है, यहॉ कोई नया खिलौना है।'' इसलिये वह पिछले दरवाजे की ओर गया और उसने जोर से पुकारा – ''बच्चो, बच्चो, बाहर आओ, तुरन्त बाहर आओ, मेरे पास तुम्हारे लिये खिलौने हैं, जो यहॉ दरवाजे के पास रखे हुए हैं। बैल के रथ, बकरी के रथ, और वायु के रथों का एक बेड़ा, क्योंकि, ये एक मृग द्वारा खींचा जाता है। शीघ्रता से आओ अन्यथा वे तुम्हें नहीं मिलेंगे।''

''बच्चे, आग से नहीं डरते हुए, जलती हुई छत और दीवारों के खतरे से नहीं डरते हुए, परन्तु इससे डरते हुए कि, यदि वे दौड़ कर नहीं आये तो उन्हें खिलौने नहीं मिलेंगे, और तेजी से खिलौनों को लेने के लिये, सबसे पहले लेने के लिये, और पहला चुनाव करने के लिये, उत्सुकता में, एक दूसरे के ऊपर छीनाझपटी करते हुए, वे दौड़ते हुए आये और जैसे ही आखिरी बच्चे ने, उस भवन को छोड़ा, वह जलती हुई छत, चिनगारियों और मलबे के झरने में गिर गई।

''बच्चों को खतरे का ख्याल नहीं था। वे उसके ऊपर पार कर गये, परन्तु एक बड़ी फरियाद की। ''पिताजी, पिताजी, वे खिलौने कहॉ है, जिनका आपने हमें वायदा किया ? वे तीन रथ कहॉ हैं, हम बहुत तेजी से दौड़ते हुए आये और वे यहॉ पर नहीं है। पिताजी आपने वायदा किया था।''

पिता, एक धनाढ्य आदमी, जिसके लिये मकान का नुकसान, कोई भारी झटका नहीं था, अब उसके पुत्र सुरक्षित थे, जल्दी से उनके पास गया और उनको खरीद कर खिलौने दिये। रथ, ये जानते हुए कि, इस युक्ति ने उसके पुत्रों का जीवन बचाया है।

बुद्ध सरीपुत्र की ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''अब सरीपुत्र, क्या ये युक्ति तर्कपूर्ण नहीं थी ? क्या उस आदमी ने भोले माध्यमों का उपयोग करते हुए, इसके अन्त को तर्कयुक्त बनाया ? बिना इस ज्ञान के, उसके पुत्र आग की लपटों में भस्म हो गये होते –

सरीपुत्र, बुद्ध की ओर बढ़ा और उसने कहा, ''हॉ, ओ स्वामी, भला अंत, माध्यमों को युक्तिसंगत बनाता है और अधिक भलाई ही लाता है।''

लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरी ओर देखते हुए मुस्कारायें और मेरी ओर देखते हुए कहा कि, तुम तीन दिनों के लिये, चाकपोरी के बाहर छोड़े गये थे, तुमने सोचा कि तुम्हें प्रवेश से रोका गया है, फिर भी, हम तुम्हारे ऊपर एक जॉच कर रहे थे, एक माध्यम, जो अंत में युक्तिसंगत हुआ, क्योंकि, तुमने भली भांति प्रगति की।''

''मैं भी, एक साधन, जो अंत में युक्तिसंगत होगा, का उपयोग कर रहा हूँ।'' मैं इसे लिख रहा हूँ, अपनी सत्य कहानी – 'तीसरी ऑख' और 'ल्हासा का डॉक्टर' भी एकदम सत्य हैं – इस हिसाब से कि, मैं बाद में अपने प्रभामण्डल के कार्य को जारी रख सकूँ। इसलिये अनेक लोगों ने मुझे लिख कर पूछा है, मैं क्यों लिखूँ और उन्हें उसका स्पष्टीकरण मिल जाये; मैं सत्य लिख रहा हूँ इस क्रम में कि पश्चिमी लोग, यह जान सकें कि, मनुष्य की आत्मा, इन स्पूतनिकों या सनसनाते हुए रॉकेटों की अपेक्षा अधिक महान है। अंत में, जैसाकि मैंने किया है, मनुष्य आकाशीय यात्राओं के द्वारा, दूसरे ग्रहों को जायेगा, परन्तु पश्चिमी मनुष्य, जब तक कि वह, अपने निजी लाभ, स्वयं की उन्नति और दूसरे साथियों

के अधिकारों पर ध्यान देने की बात ही नहीं सोचता है, ऐसे नहीं जायेगा। मैं ये सत्य लिख रहा हूँ ताकि मैं बाद में, मानव प्रभामण्डल के कार्य को आगे बढ़ा सकूँ। इसके ऊपर विचार करें (ये होगा), एक मरीज डॉक्टर के परामर्श कक्ष में आता है। डॉक्टर तमाम बातें पूछने की चिंता नहीं करता, वह मात्र एक विशेष कैमरा उठता है और उससे वह मरीज के प्रभामण्डल के फोटोग्राफ लेता है। एक मिनट या ऐसे ही किसी समय में, यह अतीन्द्रियज्ञान न रखने वाला चिकित्सक, अपने हाथ में मरीज के प्रभामण्डल का एक कलर फोटोग्राफ लाता है। वह इसका, इसकी धारियों और रंगों के भेदों का, अध्ययन करता है, ठीक वैसे ही, जैसेकि एक मनोचिकित्सक, किसी दिमागी बीमार मनुष्य की, अभिलिखित (recorded) मतिष्क तरंगों (brain waves)[2] का अध्ययन करता है।

एक सामान्य चिकित्सक, उस रंगीन फोटोग्राफ की, मानकों के साथ तुलना करके, पराश्रव्य (ultrasonic) इलाज का पूरा कोर्स लिखता है और रंगीन वर्णक्रम से उसका इलाज करता है, जो मरीज के प्रभामण्डल में दिखने वाली कमियों को ठीक करेगा। कैंसर ? इसका इलाज होगा। क्षयरोग (Tuberculosis or T. B., short for tubercle bacillus) ? इसका भी इलाज होगा। हास्यास्पद ? ठीक है, केवल कुछ समय पहले ही, रेडियो तरंगों का एटलांटिक के पार भेजा जाना ''हास्यास्पद'' होता था। ''सौ मील प्रति घंटा से अधिक गति से उड़ने के बारे में सोचना भी, ''हास्यास्पद'' था। तब उन्होंने कहा था, मनुष्य शरीर इस तनाव को झेल नहीं सकेगा। अंतरिक्ष में जाने के बारे में विचार करना भी ''हास्यास्पद'' था। बंदर पहले से ही वहॉ हैं। मेरा ये ''हास्यास्पद'' विचार। मैं इसे फलीभूत होते हुए देख चुका हूँ!

मुझे वर्तमान में वापस लाते हुए, बाहर से आने वाले शोर ने, मेरे कमरे को भेद दिया। शोर ? रेलों की शंटिंग (shunting), पड़ौस में सनसनाते हुए आग के इंजन की चीख, और स्थानीय मनोरंजन केन्द्रों की चमकती हुई रोशनियों के बीच, जल्दी करते हुए, जोर–जोर से बतियाते हुए लोग। मैं क्रिस्टल का उपयोग करूँगा और उन्हें यह बताऊँगा कि, जैसा वे कहते हैं, मैं वैसा ही करूँगा।''

मेरे अन्दर बढ़ता हुआ ''गर्म अहसास'' मुझे बताता है कि, ''वे'' पहले से ही इसे जानते हैं और खुश हैं। इसलियें जैसा निर्देशित किया गया था, यहॉ सत्य प्रस्तुत है, 'रम्पा की कहानी'।

---

2 अनुवादक की टिप्पिणी : मस्तिष्क मे होने वाली गतिविधियों को बताने के लिए मस्तिष्क तरंगो (brain waves) की आवृतियों का अध्ययन किया जाता है। मस्तिष्क तरंगे चार समूहों में विभाजित की गयीं हैं, जो अधिकांशतः मस्तिष्क की सक्रियता के स्तर को बताती हैं। पहला समूह बीटा तरंगो (beta waves) का कहलाता है, जिनकी आवृतियाँ, तेरह से पैतीस कंपन प्रति सेंकेण्ड (13-35 Hzs) की होती हैं। ये मस्तिष्क की सामान्य सक्रियता के साथ संबद्ध होती हैं, इसमें से ऊपरी सीमा की तरंगें, मस्तिष्क में उत्तेजना, तनाव अथवा क्रोध की स्थिति को बताती हैं, जिसमें मस्तिष्क की सोचने और तर्क करने की क्षमताऐं समाप्त हो जाती हैं। अल्फा तरंगें (alpha waves), 8–12 कंपन प्रति सेकेण्ड (8-12 Hzs), की होती हैं, जो आराम और शिथिलन की स्थिति प्रदर्शित करती हैं। अल्फा तरंगे कुछ सीखने और मस्तिष्क को केन्द्रित एवं फोकसित करने के लिए आदर्श होती है। तीसरा समूह थीटा तरंगों (theta waves), 4–7 हट्र्ज का होता है, जो मस्तिष्क की कल्पना शक्ति, स्मृति को प्राप्त करना और मस्तिष्क को आंतरिक रूप से केन्द्रित करने जैसी क्रियाओं को करने के लिए उत्तरदायी होता है। सामान्यतः ये स्थिति छोटे बच्चों, व्यवहार में परिवर्तन और नींद अथवा स्वप्न की स्थितियों में होती हैं। अंतिम समूह, जब कोई व्यक्ति, अत्यधिक गहरी निद्रा में होता है, अत्यधिक धीमी डेल्टा तरंगों (delta waves),(0.5-3 hzs) का होता है। सामान्य नियम ये है कि, मस्तिष्क तरंगो की आवृति जितनी नीची होगी, मनुष्य उतना ही अधिक आराम की स्थिति में होगा और ये आवृति जितनी अधिक होगी, वह,उतना ही सजग और उत्तेजित होगा

ये विभिन्न आवृतियॉं, मस्तिष्क में एकदम सही रासायनिक प्रतिउत्तरों (responses) का सृजन करती हैं। इन न्यूरो रसायनों (neuro chemicals) का स्राव विशेष प्रतिक्रियाऐं उत्पन्न करता है, जिससे भय, विषय वासना, हर्ष, विषाद, प्रेम आदि की भावनाऐं उत्पन्न होती हैं। इन सभी को और प्रतिभा/ विभिन्न भावनाओं को विशेष प्रकार के मस्तिष्क रसायनो के संयोग, से उत्पन्न किया जाता है। मस्तिष्क के इन स्रावों का एकदम सही मिश्रण, किन्ही सर्वोत्कृष्ट विशिष्ट उद्देश्यों के लिए, स्थितियों को उत्पन्न कर सकता है, जैसे कि अंधकार के प्रति भय अथवा अत्यधिक तीव्र ध्यान केन्द्रण।

अध्याय दो

इस शताब्दी के अंत तक, तिब्बत अनेक समस्याओं से घिरा हुआ था। ब्रिटेन, पूरे विश्व को चिल्ला कर यह बताते हुए, कि तिब्बत, रूस के साथ अधिक मैत्रीपूर्ण था, जो ब्रिटिश साम्राज्य के लिये अहितकर था, बड़ा हंगामा खड़ा कर रहा था। मास्को में, पूरे रूस का जार (Czar)[3], अपने महल के बडे–बड़े हॉलों में, जोर–शोर से शिकायत करते हुए चीख रहा था कि, तिब्बत, ब्रिटेन के साथ जरूरत से ज्यादा, मैत्रीपूर्ण होता जा रहा था। चीन के शाही न्यायालय ने, इस अभियोग की, कि तिब्बत, ब्रिटेन और रूस दोनों ही के साथ, अधिक मैत्रीपूर्ण हो रहा था और चीन के साथ पर्याप्त मित्रवत् नहीं था, दुबारा पुष्टि की।

ल्हासा में, विभिन्न राष्ट्रों के जासूसों के झुण्ड के झुण्ड, भिखारियों, भिक्षुओं, तीर्थयात्रियों, अथवा मिशनरियों के छद्मवेशों में, अथवा किन्ही अन्य तरीकों से, जो कुल मिला कर, तिब्बत में रहने का एक उचित बहाना प्रदान कर सकें, आ गये थे। विभिन्न जातियों के मिलजुले, छुटपुट भद्रपुरुष, अंधेरे के संदेहपूर्ण आवरण में, ये देखने के लिये कि, वे इस दुःख भरी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति से कैसे लाभ उठा सकते हैं, कुटिलता से मिले। महान तेहरवें, तेहरवें दलाईलामा[4], अवतार और अपने अधिकारों से सम्पन्न, एक महान राजपुरुष ने, अपने क्रोध का शमन और शांति का परिचालन करते हुए, तिब्बत को झगड़े से दूर बचा कर रखा। विश्व के अग्रणी राष्ट्रप्रमुखों के अमर मित्रता के नम्र संदेशों और ''सुरक्षा के'' अगंभीर प्रस्तावों ने, पवित्र हिमालय को पार किया।

मैं, इस अशांति और कष्ट के वातावरण में पैदा हुआ। जैसा रम्पा दादी मॉ ने सत्य ही कहा था, मैं दुख देने के लिये ही पैदा हुआ था और हमेशा ही कष्टों में रहा, और इनमें से मुश्किल से ही कोई, मेरा खुद का पैदा किया हुआ था। भविष्यदृष्टा और ज्योतिषियों ने ''बच्चे की'' प्रंशसा में जोर से कहा था कि, इसे अतीन्द्रियज्ञान और दूरानुभूति जन्म से ही उपहार के रूप में प्राप्त होंगी। ''असाधारण आत्मा,'' एक ने कहा। ''अपना नाम इतिहास में छोड़ जाने के लिये भाग्यशाली,'' दूसरे ने कहा। ''हमारे हितों के लिये एक महान प्रकाश,'' तीसरे ने कहा। और मैंने, अपनी आयु के प्रांरभ में, अपनी आवाज, दिल से, मूर्खतापूर्ण रूप से, एक बार दुबारा फिर पैदा होने के विरोध में उठाई। रिश्तेदार, जैसे ही मैं उनकी बोली को समझने में समर्थ हुआ, हर अवसर पर, मुझे उस शोर का, जो मैं करता था, ध्यान दिलाने का प्रयास करते थे; उन्होंने मुझे आनन्द के साथ कहा कि, मेरा स्वर अत्यन्त कठोर था, अत्यधिक बेसुरीली आवाज, जिसका सुनना उनके लिये दुर्भाग्यशाली था।

पिताजी, तिब्बत के अग्रगण्य लोगों में से एक थे। उच्चश्रेणी के एक भद्रपुरूष (noble man)[5],

---

3 अनुवादक की टिप्पिणी : जार एक उपाधि है, जो यूरोपीय गुलाम देश के राजाओ को या सर्वोच्च शासकों को दी जाती थी। रूसी साम्राज्य के शासक सी जार को, एकाधिकारी (arisocrat) नायक कहा जाता था। 1917 में रूस में खूनी क्रांति हुई, जिसने जार की सत्ता को हटा दिया और अंत में सोवियत संघ का उदय हुआ। प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) के संदर्भ में, भारी सैनिक सदमे के फलस्वरूप खूनी क्रांति हुई थी। लाल और श्वेत लोगो के बीच में, गृह युद्ध भड़क उठा और इस क्रांति ने सन् 1922 में सोवियत सामाजिक गणतंत्र (यू एस एस आर) के स्रजन का मार्ग प्रशस्त किया।

4 अनुवादक की टिप्पिणी : तिब्बती भाषा में, दलाई का अर्थ, सागर होता है और लामा का अर्थ, पंडित या ज्ञानी होता है। इसलिए दलाईलामा का अर्थ होता है ज्ञान का सागर। ये एक उपाधि है, जो धर्माचार्य और राजप्रमुख को दी जाती है। 1391 से प्रारंभ हो कर अब तक, चौदह दलाईलामा हो चुके हैं। वर्तमान में चौदहवें दलाईलामा, भारत में हिमांचल प्रदेश के धर्मशाला जिले में रहते है निष्कासित सरकार (Govt. in exile) के माध्यम से, तिब्बत का संचालन करते हैं। इससे पूर्व तेरहवें दलाईलामा, जिनका नाम त्थ्यूबतेन ज्ञात्सो थे, जिनका जन्म 1895 में और मृत्यु 1933 में हुई, का यहाँ उल्लेख किया गया है। इन दलाईलामा के शासन काल में, तिब्बत का सन् 1904 में ब्रिटेन के द्वारा और 1910 में चीन के द्वारा अतिक्रमण किया गया था। पहली बार चीन द्वारा तिब्बती अतिक्रमण के दौरान, ये तिब्बत से भाग कर भारत आ गये थे, जहां उन्होंने आधुनिक तकनीकों को देखा और ल्हासा में वापस लौटने के बाद, उनमें से कुछ एक सुधार जैसे कि बिजली घर बनाना, पोटाला महल में टेलीफोन का लगाया जाना और तिब्बत में पहले चार पहिया वाहन को रखना शामिल था। उन्होंने तिब्बत में पहली बार, स्वतंत्र पुलिस और तिब्बती फौज का गठन किया और उनके लिए आधुनिक परिवेश तय किया और उनके प्रशिक्षण के मानको को स्थापित किया तथा न्याय के तंत्र को भी सुधारा। तेरहवें दलाईलामा ने अनुभव किया कि, दुनियाँ में बने रहने के लिए, तिब्बतियों को बड़ी संख्या में शिक्षित करना पड़ेगा, इसलिए अपने शासनकाल में उन्होंने प्रखर बुद्धि वाले अनेक तिब्बती नौजबानों को भारत और इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा। उन्होंने तिब्बती डाक टिकिट की शुरूआत की।

5 अनुवादक की टिप्पिणी : तिब्बत में धनी और संभ्रांत नागरिकों और परिवारों का एक अलग वर्ग होता था, जिसे शासन द्वारा समर्थन प्राप्त था। शासन तिब्बत के नागरिको में से भद्र पुरूषों की घोषणा करता था। ये भद्र पुरूष एक बंद समाज की भांति, रिश्तेदारी में आपस में ही, विवाह संबंध करते थे। एक बार भद्र समाज में प्रवेश मिल जाने के बाद, पीढ़ियों तक, जब तक कि, किसी बड़े अपराध के कारण, उनसे ये रुतवा (status) वापस नहीं ले लिया जाये, पीढ़ियों तक चलता रहता था। छोटे से समाज में, आपस में ही विवाह संबंध करने के के कारण, इनमें बंशानुगत बीमारियाँ बहुत होतीं थीं और इनका जीवनकाल भी अपेक्षाकृत कम होता था। अतः इनकी संख्या घटती जाती थी, जिसे बनाये रखने के लिए, समय–समय पर नये लोगो का चयन, भद्र पुरूष के रूप में किया जाता था। नये दलाईलामा के परिवार के सदस्य, स्वतः ही भद्र पुरुषों में शामिल होते थे।

हमारे राष्ट्र के मामलों में उनका विशेष प्रभाव था। मॉ, भी, अपनी तरफ के परिवार के नीति संबंधी मामलों में, अपने अधिकारों का प्रयोग करतीं थीं। अब, पिछले सालों के ऊपर वापस देखते हुए, मैं ये सोचने के लिये विवश हूँ कि वे, लगभग इतने महत्वपूर्ण थे, जितना कि, मॉ सोचतीं थीं, और ये किसी प्रकार से निम्न क्रम नहीं था।

मेरे प्रारंभिक दिन, पोटाला के समीप, कलिंग चू (Kaling Chu) या प्रसन्नता की नदी के ठीक पार, अपने घर पर गुजरे। ''प्रसन्न'' क्योंकि, जैसे–जैसे ये, अनेक छोटी नदियों के ऊपर हल्की सी, दबी सी, हँसती हुई और शहर के मध्य में होकर घूमती हुई, कई नदियों को समेट कर चलती है, ये ल्हासा को जीवन प्रदान करती है। अच्छे नौकर–चाकरों से भरा हुआ हमारा घर, ठीक से लकड़ी का बना था, और मेरे मॉ–बाप राजकीय शान शौकत से रहते थे। मैं – ठीक है मुझे, अधिक कड़ाई के साथ, कठोर अनुशासन में रखा गया था। शताब्दी के पहले दशक में, चीनी अतिक्रमण के मध्य, पिताजी बुरी तरह कटु हो गये थे और मेरे ऊपर उनकी नाराजगी, तर्कहीन रूप से (irrationally) दिखाई देती थी। मॉ के पास, विश्व की दूसरी सामाजिक औरतों की तरह, बच्चों के लिये कोई समय नहीं था, उनकी देखभाल करना एक ऐसा कार्य था, जिससे कि, उनको किराये के नौकरों को थमाते हुए, यथासंभव तेजी से छुटकारा पाना था।

भाई पालजोर, हमारे साथ अधिक दिनों तक नहीं टिका; वह सातवें जन्मदिन से पहले ''स्वर्गीय क्षेत्रों'' और *शांति* को पधार गया। तब मैं चार वर्षो का था और उस समय से, पिताजी की मेरे प्रति नाराजगी, बढ़ती हुई दिखी। मेरे भाई के गुजरने के समय, बहन यशोधरा, छह साल की थी। हमने अपने भाई की क्षति के ऊपर नहीं, बल्कि उस बढ़े हुए अनुशासन के ऊपर शोक मनाया, जो उसके गुजरने के बाद (मेरे प्रति) शुरू हुआ।

अब मेरे परिवार के सभी लोग मर चुके हैं, वे चीनी साम्यवादियों द्वारा मार दिये गये हैं। मेरी बहन को, घुसपेठियों के आगे बढ़ने पर, प्रतिरोध करने के कारण, मेरे माता–पिता को जमींदार होने के कारण मार दिया गया। घर, जहॉ से मैं चौड़ी ऑखों से सुन्दर उद्यानों को देखा करता था, गुलामों के लिये शयनागारों (dormitories) के रूप में बदल दिया गया। घर के एक पक्ष में, महिला श्रमिक और उसके दांये पक्ष में पुरुष श्रमिक रहते हैं। सभी विवाहित हैं, और यदि पति और पत्नी ठीक से व्यवहार करें और दिये हुए काम के अपने हिस्से (quota) को पूरा करें, तो वे एक हफ्ते में एक बार, आधा घण्टे के लिये, एक दूसरे को मिल सकते हैं, जिसके बाद उनकी चिकित्सीय जॉच की जाती है।

परन्तु, मेरे बचपन के बहुत दूर के दिनों में, ये सारी चीजें भविष्य में थीं, कुछ चीज जिसका पता था कि यह होगी, परन्तु मृत्यु की तरह से, जो किसी जीवन का अंत नहीं है, अधिक नहीं थोपी जायेगी। भविष्य वक्ताओं ने, वास्तव में, इन घटनाओं की भविष्यवाणी की थी, परन्तु हम अपने दैनिक जीवन को, भविष्य की प्रति अन्जान रहते हुए, सुखदरूप से चला रहे थे।

जब मैं सात साल की उम्र का था उससे ठीक पहले, उस उम्र पर जब मेरे भाई ने अपने जीवन को त्याग दिया, एक बड़ी उत्सव दावत (party) हुई, जिसमें राजज्योतिषियों (state astrologers) ने अपनी कुण्डिलियों, चार्टो को देखा और ये निश्चित किया कि, मेरा भविष्य क्या होने वाला है ? हर कोई, जो कुछ भी था, वहॉ था। अनेक, उन्हें आने देने के लिये, नौकरों को घूस देते हुए, बिना बुलाये भी आ गये। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि, अपने बहुत बड़े मैदानों में, हमारे चलने फिरने के लिये भी, मुश्किल से ही, कोई जगह बची थी।

ज्योतिषी लोग गड़बड़ाये और लड़खड़ाये, जैसाकि पुजारी लोग, घोषणा करने के पहले, प्रभावशाली प्रदर्शन के लिये करते हैं और मुझे निष्पक्षता से यह कहना चाहिये कि, मेरे भविष्य के सर्वोत्कृष्ट बिन्दुओं की सही भविष्यवाणी के लिये, हर दुर्भाग्यशाली मामलों में, जो उन्होंने बताये, वे एकदम ठीक थे। तब उन्होंने मेरे माता–पिता को कहा कि, मुझे एक चिकित्सीय भिक्षु बनने के लिये,

चाकपोरी लामामठ में प्रविष्ट होना चाहिये।

मेरी निराशा बहुत बड़ी थी, क्योंकि मेरी भावना थी कि, मैं दुखों में अग्रणी रहूँगा। किसी ने मेरी नहीं सुनी, हालाँकि, मैं शीघ्र ही, केवल ये देखने के लिये कि, मैं चिकित्सिकीय भिक्षु होने के लिये आवश्यक सहनशक्ति रखता हूँ, तीन दिन और रात, लामामठ के दरवाजे के बाहर बैठने की, कठोर अग्निपरीक्षा से गुजरने वाला था। मैंने वह परीक्षा पास की, जो मेरी भौतिक सहनशक्ति की तुलना में, मेरे पिता के भय के प्रति, एक अच्छी श्रद्धाजंलि थी। चाकपोरी में प्रवेश करना सरलतम चरण था। हमारे दिन लम्बे थे, एक दिन, जो आधी रात से शुरू होता था और जिसमें हमें पूरी रात, बीच–बीच में होने वाली, और वैसे ही पूरे दिन चलने वाली प्रार्थनाओं में, शामिल होना पड़ता था, गुजारना एकदम कठिन होता था। हमें, सामान्य शैक्षणिक चीजें, हमारे धार्मिक कर्त्तव्य, अर्मूतभौतिकी की (metaphysical) दुनियाँ के मामले, चिकित्सीय संगीत, क्योंकि हमें चिकित्सिकीय भिक्षु बनना था, पढ़ाये गये थे। हमारे पूर्वी इलाज, इस तरह के थे जिसे कि, पश्चिमी चिकित्सिकीय चिंतन, अभी भी नहीं समझ सका है, अभी भी – पश्चिमी दवा निर्माता कम्पनियॉ, उन शक्तिशाली घटकों को, जो उन जड़ीबूटियों में पाये जाते हैं, जिनका हम उपयोग करते हैं, संश्लेषित करने का कड़ा प्रयत्न कर रहीं हैं। अब कृत्रिमरूप से प्रयोगशाला में तैयार किया गया, युगों पुराना पूर्वी इलाज, तब इसका एक अच्छा सुन्दर सा लगने वाला नाम होगा और इसे पश्चिमी उपलब्धि के रूप में महत्वपूर्ण ढंग से बखाना जायेगा। उन्नति ऐसी ही होती है।

जब मैं आठ साल की उम्र का था, मेरा एक ऑपरेशन किया गया था, जिसमें मेरी 'तीसरी ऑख', अतीन्द्रियज्ञान का विशेष अंग, जो अधिकांश मनुष्यों में मृतप्रायः रहता है, क्योंकि वे इसके अस्तित्व को नकार देते हैं, खोली गयी थी। इस ''ऑख'' के साथ देखते हुए, मैं मानव प्रभामण्डल में विभेद करने और अपने आसपास के लोगों के मंतव्य (intention) को समझने के लिये सक्षम हुआ। –ये, उन लोगों के खाली शब्दों को, जो अपने स्वार्थ लाभ के लिये, दोस्ती का बहाना करते हैं, फिर भी, वास्तव में, अपने हृदयों में अंधहत्या रखते हैं, सुनने में अधिकतम मनोरंजक लगने वाला था – और ये है! प्रभामण्डल, जो किसी भी व्यक्ति का पूरा का पूरा चिकित्सा–इतिहास बता सकता है। प्रभामण्डल से ये निश्चित करते हुए कि क्या कमी है और विशेष विकरणों के द्वारा उन कमियों को विस्थापित करते हुए, आदमी की विशेष बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।

चूंकि मेरे पास, सामान्य अतीन्द्रियशक्तियों से अधिक शक्तिशाली शक्तियॉ थीं, मुझे अक्सर अंतरतम (inmost), दलाईलामा के महान तेहरवें अवतार द्वारा, उन लोगों का प्रभामण्डल देखने के लिये, जो उनसे ''दोस्ती में'' मिलने आते थे, बुलाया जाता था। मेरे प्रिय शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, एक अत्यन्त सक्षम अतीन्द्रियज्ञानी ने मुझे भलीभाँति प्रशिक्षित किया था। उन्होंने मुझे आकाशीययात्राओं, जो अब मेरे लिये चलने से ज्यादा आसान हैं, के महानतम रहस्य सिखाये। लगभग हरेक, कोई चिन्ता नहीं वे अपने धर्म को क्या कहते हैं, ''आत्मा'' के ''दूसरे शरीर'' के अस्तित्व में विश्वास करते हैं अथवा वास्तव में, अनेक ''शरीर'' अथवा ''आवरण'' होते हैं, परन्तु उनकी सही संख्या का यहॉ कोई अर्थ नहीं है। हम विश्वास करते हैं – गोयाकि (rather), हम जानते हैं! – कि सामान्य भौतिक शरीर के बगल से लेटना संभव है (वह जो कपड़ों का समर्थन करता है।) और हम आकाशीयरूप में, इस पृथ्वी के परे भी, कहीं भी, यात्रा कर सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति आकाशीययात्रा करता है, वे भी, जो इसे पूरी तरह ''बकवास'' कहते हैं। ये उतना ही स्वाभाविक है, जितना कि सांस लेना। अधिकांश लोग, जब वे नींद में होते है, इसको करते हैं और इसलिये जब तक कि, उन्हें प्रशिक्षित नहीं किया गया हो, वे इसके बारे में कुछ नहीं जानते। कितने व्यक्ति सुबह आनन्दित होते है; ''ओह मुझे रात को आश्चर्यजनक स्वप्न दिखा, मैं अमुक–अमुक के साथ दिखाई पड़ा। हम साथ–साथ बहुत खुश थे और उसने कहा कि, वह लिख रही थी। वास्तव में, ये सब

अभी बहुत अनिश्चित है।'' और तब, सामान्यरूप से, केवल कुछ ही दिनों में, एक पत्र आ पहुँचता है, इसका स्पष्टीकरण यह है कि, दोनों में से एक व्यक्ति, आकाशीययात्रा से दूसरे के पास गया, क्योंकि वे प्रशिक्षित नहीं थे, ये एक ''स्वप्न'' बन गया। लगभग हर कोई, आकाशीय यात्रा कर सकता है। मरने वाले लोगों के, कितने ही अधिकृत मामले हैं, जो उन्हें अलविदा कहने के लिये, अपने प्रिय लोगों के स्वप्न में आये। ये फिर, एक आकाशीय यात्रा है। मरता हुआ व्यक्ति, दुनियॉ के बंधनों के ढीले होने के साथ ही, गुजरते में, अपने मित्र को आसानी से मिलता जाता है।

प्रशिक्षित व्यक्ति लेट सकता है और शिथिल हो सकता है और अहम् (Ego) अथवा दूसरे शरीर अथवा आत्मा के साथ के बंधनों को शिथिल कर सकता है, तुम इसे जो कहना चाहो कहो, ये एक ही चीज है। तब, जबकि ''रजत तन्तु (silver cord)'' के बीच केवल एक संबंध है, एक बंधे हुए गुब्बारे की तरह से, जो अपने सिरे पर बंधा रहता है, दूसरा शरीर हिल–डुल सकता है। जब आप प्रशिक्षित हो जाते हैं, पूरी सजगता के साथ, पूरी चेतना के साथ, जहॉ कहीं भी आप सोच सकते हैं, आप वहॉ जा सकते हैं। स्वप्न अवस्था वह है, जब कोई बिना इसे जाने हुए, आकाशीय यात्रा करता है और जब तक कोई प्रशिक्षित नहीं है, भ्रमित, गड़बड़ प्रभावों के साथ, वापस लौटता है; वहॉ ''रजत तन्तु'' के द्वारा प्राप्त किये गये प्रभावों की लगातार भीड़ होती है, जो स्वप्न देखने वालों को, अधिक, और अधिक, भ्रमित करती है। आकाशीय यात्राओं में तुम कहीं भी जा सकते हो, इस पृथ्वी की सीमाओं के बाहर भी, क्योंकि सूक्ष्मशरीर सांस नहीं लेता है और न हीं, ये खाता है। इसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति ''रजत तन्तु'' के द्वारा की जाती है, जो जीवन भर, इसे लगातार भौतिक शरीर के साथ जोड़े रखता है।

''रजततन्तु'' का ईसाई बाइबिल में जिक्र हुआ हैः ''रजततन्तु'' को कटने दो और 'स्वर्णिम कटोरे (Golden bowl)' को भी ध्वस्त होने दो।'' 'स्वर्णिम कटोरा,' अध्यात्मिकरूप से उन्नत व्यक्ति का प्रभामण्डल (halo) या सिर के चारों ओर का तेजोमण्डल (nimbus) होता है। जो अध्यात्मिकरूप से उन्नत नहीं हैं, उनका प्रभामण्डल एकदम अलग रंग का होता है। पुराने जमाने के कलाकार साधुओं के चित्रों के चारों ओर सुनहरे आभामण्डल का चित्रण करते थे, क्योंकि कलाकार, वास्तव में, उन आभामण्डलों को देख सकते थे, अन्यथा उन्होंने इसे चित्रित नहीं किया होता। तेजोमण्डल, वास्तव में, मानवीय प्रभामण्डल का एक बहुत छोटा भाग होता है, परन्तु इसे बहुत आसानी से देखा जा सकता है क्योंकि ये सामान्यतः, अपेक्षाकृत अधिक चमकीला होता है।

यदि वैज्ञानिक, सूक्ष्मशरीर की यात्रा और प्रभा मण्डल के संबंध में शोध कार्य करें तो उनके सनसनाते हुए रॉकेटों के बजाय, जो कई बार अपनी कक्षाओं में जाने में असफल रहते हैं, उन्हें आकाशीय यात्राओं की पूरी कुंजी मिल जायेगी। आकाशीय यात्राओं से वे दूसरे लोक को देख सकते हैं और उस यात्रा को भौतिक शरीर से करने के लिये, कैसे विमान की आवश्यकता होगी, उसका आविष्कार कर सकते हैं। चूँकि आकाशीय यात्राओं में एक बड़ी कमी यह है; कोई भी, अपने साथ में किसी पदार्थ सामिग्री को नहीं ले जा सकता है, और न हीं, किसी भौतिक सामग्री के साथ वापिस लौट सकता है। कोई भी अपने साथ केवल ज्ञान ला सकता है। इसलिये – इस अविश्वास पूर्ण विश्व को समझाने के लिये, वैज्ञानिकों को वहॉ से नमूने और फोटोग्राफ लाने के लिये, एक जहाज की आवश्यकता होगी, क्योंकि लोग तब तक किसी चीज के अस्तित्व में विश्वास नहीं सकते, जब तक कि वे, ये सिद्ध करने के लिये कि, कुल मिला कर ये संभव हो सकती है, उसे टुकड़ों में तोड़ न सकें।

मैं विशेषरूप से एक यात्रा को याद करता हूँ, जो कि, मैंने ब्रह्माण्ड में की थी। ये एकदम सत्य है, और जो भली भॉति उन्नत हैं, वे इसे ज्यों का त्यों ही समझ लेंगे। दूसरों के बारें में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे इसे तब समझेंगे, जब वे अध्यात्मिक परिपक्वता के उच्च स्तर पर पहुँचेंगे।

ये एक अनुभव है जो कुछ वर्षो पहले, जब मैं तिब्बत में रह कर चाकपोरी लामामठ में अध्ययन कर रहा था, हुआ। यद्यपि ये वर्षो पहले घटित हुआ था, इसकी याददाश्त मुझ में इतनी ताजा है मानो

कि, ये कल ही हुई थी।

मेरे शिक्षक लामा मिंग्यान डोंडुप, और उनका जिग्मे नाम का एक साथी लामा, जो वास्तव में, मेरा नजदीकी मित्र था, और मैं, तिब्बत में, ल्हासा में, लौह पहाड़ी के ऊपर, चाकपोरी की छत पर थे। वास्तव में, शून्य से चालीस डिग्री (सेंटीग्रड) नीचे, यह एक ठंडी रात्रि थी। जब हम चीत्कार करती हुई ठंडी छत पर खड़े थे, हवाओं ने हमारे ठिठरते हुए शरीरों को, हमारी पोशाकों को कस कर दबाया। हवा से दूर, हमारे बगल में, हमारी मज्जा (marrow) को एक दम जमा हुआ छोड़ते हुए, उतावली से हमको पर्वतों के किनारों की ओर खींचने की धमकी देते हुए, हमारी पोशाकें ऐसी फहरा रहीं थीं जैसे कि, प्रार्थना ध्वज।

अपने संतुलन को बनाये रखने के लिये, अपने शरीरों को हवा के विरुद्ध झुकाते हुए, हमने कुछ दूरी पर, ल्हासा शहर की धुंधली रोशनियों को देखा, जबकि हमारे दांई ओर कुछ हट कर, पोटाला की रोशनियॉ, इस दृश्य की रहस्यमयी हवा में, अपना योगदान कर रहीं थीं। सभी खिड़कियॉ, चमकते हुए मक्खन के दीपकों से, जो यद्यपि मोटी मजबूत दीवारों के द्वारा सुरक्षित भी थे, हवा के आमंत्रण पर, झूम और नाच रहे थे, सुज्जजित प्रतीत हुईं। तारों की धुंधली रोशनी में, पोटाला की स्वर्णिम छतें, चमकती हुईं, परावर्तन कर रही थीं, मानो चन्द्रमा स्वयं ही उतर आया हो और भव्य इमारतों के ऊपर, मकबरों में अपनी पराकाष्ठा के साथ खेल रहा हो।

परन्तु हम कटु शीत में कॉप रहे थे, कॉप रहे थे और अभिलाषा करते थे कि, अपने नीचे मंदिर में हम, सुंगधित अगरबत्तियों की हवाओं से गर्म हों। जैसे कि लामा मिंग्यार डोंडुप ने, रहस्यमय ढंग से इसे रखा था, हम छत पर विशेष उद्देश्य से थे। जब स्वयं को पर्वत की तरह स्थिर दिखाते हुए, वह हम दोनों के बीच में खड़े हुए, तब उन्होंने ऊपर की तरफ, बहुत दूरी पर, एक तारे की ओर इशारा किया – एक लाल दिखाई देने वाला विश्व, – और कहा, ''मेरे भाइयो, ये इस विशिष्ट तंत्र में सबसे पुरानों में से एक, जोरो (zhoro) तारा है, एक पुराना बूढ़ा ग्रह। अब ये अपने लम्बे जीवनकाल के अंत की तरफ बढ़ रहा है।''

अपनी पीठ को, काटती हुई हवा की तरफ करते हुए, वह हमारी तरफ मुड़े, और उन्होंने कहा, ''तुमने आकाशीय यात्राओं के संबंध में काफी अध्ययन कर लिया है। अब हम, साथ–साथ, इस ग्रह की ओर आकाशीय यात्रा करेंगे। हम अपने शरीरों को, इस हवा के द्वारा सफाई की गई छत के ऊपर, यहॉ छोड़ देंगे, और हम वायुमण्डल के परे, समय के भी परे, ऊपर चढ़ेंगे।''

ऐसा कहते हुए वे छत के आगे की तरफ, जहॉ छत के एक निकलते हुए छज्जे की, थोड़ी सी छाया थी, चले। वह लेट गये और हमें अपने बगल में लेटने के लिये कहा। हमने अपनी पोशाकों को अपने चारों ओर कस कर लपेट लिया और हरेक ने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया। हमारे ऊपर, पिन चुभी हुई छितरी हुयी रोशनियों से भरा हुआ, गहरे बैंगनी रंग का, स्वर्ग का खजाना था, रंगीन रोशनियॉ, क्योंकि सभी ग्रहों के, जब उन्हें तिब्बत की हवा में, साफ रात में देखा जाता है, प्रकाश भिन्न–भिन्न होते हैं। हमारे पास चीखने वाली हवा थी परन्तु, हमारा प्रशिक्षण कठोर रहा था और हम छत के ऊपर रहने की नहीं सोच सकते थे। हम जानते थे कि, यह कोई एक साधारण आकाशीय यात्रा नहीं थी, क्योंकि बहुधा हम अपने शरीरों को, खराब मौसमों में इस प्रकार खुला नहीं छोड़ते हैं। जब शरीर असुविधा में हो, तो आत्मा, दूर और तेजी से यात्रा करती है तथा चीजों को और अधिक विस्तार से याद रखती है। केवल विश्व के अन्दर होने वाली छोटी यात्राओं के लिये, किसी को शिथिल होने और शरीर को आरामदायक अवस्था में रखने की आवश्यकता होती है।

मेरे शिक्षक ने कहा, ''अब हम अपने हाथ आपस में पकड़ लें, और एक साथ शरीर के बाहर, इस पृथ्वी के बाहर निकलें, मेरे साथ रहो, हम बहुत दूर यात्रा करेंगे और आज रात को असामान्य अनुभव प्राप्त करेंगे।''

हम पीठ के बल लेटे और हमने आकाशीय यात्राओं के लिये मुक्त होने के लिये, मान्य तरीके से श्वसन किया। मैं चीखती हुई हवाओं के प्रति सचेत था, जो उन दूरस्थ प्रार्थना ध्वजों से, आ रहीं थीं, जो हमारे ऊपर, पगलाकर नाच रहे थे। तभी अचानक एक झटका लगा और मैं एकदम जमी हुई हवा के उंगलियों के काटने को, और अधिक महसूस नहीं कर सका। मैंने स्वयं को तैरते हुए पाया मानो कि, मेरे शरीर के ऊपर, समय अलग हो, सभी शांत था। लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने आकाशीयरूप में पहले से ही सीधे खड़े थे, और तब उन्होंने नीचे देखा, उन्होंने मेरे मित्र जिग्मे को भी शरीर छोड़ते हुए देखा। वह और मैं खड़े हुए और अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ, आपस में जुड़ने के लिये, कड़ी (chain) बनाई। ये कड़ी एक्टोप्लाज्म (ectoplasm)[6] कहलाती है और सूक्ष्मशरीरों से, विचारों के द्वारा निर्मित होती है। ये पदार्थ के रूप में होती है, जो आत्मा के प्रकाशन के लिये माध्यम प्रस्तुत करती है।

बंधन पूरा हुआ। हम रात के आकाश में ऊपर को उठे; मैंने हमेशा कौतूहल से, नीचे देखा। हमारे नीचे, प्रवाहित होती हुई, तैरती हुई, हमारी अंतहीन रजत तंतुऐं थीं, जो जीवन की अवधि में भौतिक और सूक्ष्मशरीरों को जोडती हैं। हम, और ऊपर की ओर, उडते चले गये। पृथ्वी दूर होती गई। हम पृथ्वी के पश्चिमी विश्व के कगार की ओर भेदते हुए, सूर्य के कोरोना (corona) को देख सकते थे; पश्चिमी विश्व, जिसमें हमने सूक्ष्मशरीर से इतनी अधिक यात्रायें कीं थीं। हम और ऊपर गये और सूर्य के प्रकाश में, दुनियाँ के एक हिस्से में, महाद्वीपों और समुद्रों की रूपरेखा, सीमा रेखा को देख सके। अपनी ऊँचाई से पृथ्वी, द्वितीया के चंद्रमा (crescent) की तरह, परन्तु, उत्तरीय ध्रुवों पर चमकते हुए, उत्तरी प्रकाश (northern lights) अथवा ऑरोरा बोरियालिस (Aurora borealis)[7] के साथ, दिख रही थी।

हम और तेजी से आगे चलते गये, जब तक कि, हमने प्रकाश की गति को पीछे नहीं छोड़ दिया क्योंकि हम, लगभग विचार की गति से, हमेशा आगे की ओर बढने वाले, देहमुक्त आत्मा थे। जैसे ही मैंने अपने सामने देखा, तो अपने ठीक सामने, एक बड़े और डरावने लाल ग्रह को देखा। हम गणना की दृष्टि से असंभव गति से, उसमें आगे की ओर गिरते जा रहे थे। यद्यपि, मुझे सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने का काफी अनुभव था, तथापि मुझे खतरे की घंटी बजी। लामा मिंग्यार डोंडुप, जो सूक्ष्मशरीर में थे दूरानुभूति से हँसे और उन्होंने कहा, ''ओ लोबसांग, यदि हमें उस ग्रह को टकराना होता, तो उससे न तो वह, और न ही हम, घायल होते। हमें इसमें से सीधे निकलना चाहिये, इसमें कोई बंधन नहीं है।''

अंत में, हमने स्वंय को लाल ग्रह के ऊपर तैरता हुआ पाया, एक पृथक्कृत दुनियॉ; लाल चट्टानें, ज्वारहीन लाल समुद्र में लाल रेत। जैसे ही हम इस विश्व की सतह पर, नीचे की तरफ बढ़े, हमने देखा, बड़े–बड़े केंकडे जैसे अजनबी प्राणी, समुद्र के पानी की कगार के साथ, आलस्यपूर्ण ढंग से घूम रहे थे। हम उस लाल चट्टानी समुद्रतट के ऊपर, खडे हुए और हमने उसके ज्वाररहित, मृत जैसे बदबूदार पानी को देखा। जैसे ही हमने देखा, गंदी सतह पर अनिच्छापूर्वक लहरें उठीं, और दुबारा लहरें उठीं। पूरी तरह हथियारों से सजा हुआ और ध्यान देने योग्य जोड़ों वाला, एक अजनबी प्राणी प्रकट हुआ, प्राणी भी लाल ही था। वह ऐसे कराहा, मानो थका हुआ हो और मर रहा हो, और उस ज्वारहीन

---

6 अनुवादक की टिप्पिणी : प्राणिविज्ञान की दृष्टि से, ectoplasm , cytoplasm की बाहरी दानेदार स्वतंत्र पर्त होती है परन्तु, मनोविज्ञान की दृष्टि से, ये एक ऐसा पदार्थ होता है, जिसमें से तंद्रा (trance) की अवस्था में, माध्यम के शरीर से, एक प्रकार के विकिरणों के निकलने की कल्पना की जाती है।

7 अनुवादक की टिप्पिणी : जब वायुमंडल के चुम्बकीय आवरण (magnetosphere) से निकलने वाले आवेशित कण, पृथ्वी के वातावरण के ऊपरी भाग में अणुओं से टकराते हैं, तो वे अतिरिक्त ऊर्जा का अवशोषण करते हैं जो प्रकाश के रूप में व्यक्त होती है। सूर्य में लगातार हाइड्रोजन और हीलियम का संगलन (fusion) होता रहता है, इसके परिणामस्वरूप प्रोटोनों तथा इलेट्रॉनों की बौछारें, तेजी से अंतरिक्ष में होती रहती हैं। कणों की इन तीव्र धाराओं को सौर तूफान (solar winds) कहा जाता है जब ये धाराऐं पृथ्वी के पास से गुजरती हैं तो पृथ्वी की चुम्बकीय बलरेखाऐं, इन कणों को उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों की ओर, जहाँ ये घनीभूत (converge) हो जाती हैं, खींच लेती हैं। जब ये कण आयनोस्फियर (ionosphere) में पहुँचते हैं, तो गैस के अणुओं से टकरा कर प्रकाश उत्सर्जित करते हैं, जिसका रंग उन गैसों की प्रकृति के ऊपर निर्भर करता है, परमाण्विक आक्सीजन से उत्सर्जित प्रकाश, हरे से गहरे लाल (greenish dark red) रंग का होता है। परमाण्विक नाइट्रोजन से नीला (blue) प्रकाश तथा आण्विक नाइट्रोजन से बैंगनी (purple) प्रकाश उत्सर्जित होता है। अनेक दूसरे रंग भी देखे जा सकते हैं। प्रकृति का ये अद्भुत एवं मोहक दृश्य, उत्तरी एवं दक्षिणी दोनो ध्रुवों पर दिखाई देता है। उत्तरी ध्रुव पर इसे अरोरा बोरियालिस (Aurora Borealis) अथवा उत्तरी प्रकाश (northern lights) एवं दक्षिणी ध्रुव पर इसे (southern lights) कहते हैं। उत्तरी प्रकाश (northern lights) सितम्बर अक्टूबर और मार्च अप्रैल महीनों में देखा जा सकता है।

समुद्र के एक किनारे से, लाल रेत के ऊपर पहुचते हुए, ये थम गया। हमारे सिरों के ऊपर छाया देता हुआ, एक मंदा सा लाल सूर्य उगा। कठोर और भड़कीली खूनी लाल रंग की छायायें। हमारे आस–पास केवल खोल वाले अजनबी जानवरों को छोड़ कर, जो जमीन पर अधमरे पड़े थे, कोई हलचल नहीं थी, जीवन का कोई चिन्ह नहीं। फिर भी मैं सूक्ष्मशरीर में था। जब उसने मेरी ओर टकटकी लगा कर देखा, मैं डर से कांप गया। एक लाल समुद्र, जिसके ऊपर मलमूत्र का बदबूदार, लाल तलछट तैर रहा था, लाल चट्टानें, लाल रेत, लाल खोल वाले प्राणी और सबके ऊपर, बुझे हुए आग के अंगारे की तरह से लाल सूर्य, एक अग्नि, जो शून्य में चिंगारी देने जैसा था।

लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''ये मरता हुआ लोक है। अब यहाँ घूर्णन (rotation) नहीं है। ये एक मरते हुए सूर्य का उपग्रह है, जो शीघ्र ही मरने वाला है, यह लोक ब्रम्हांड के समुद्र में नष्टप्रायः तैरता है, और इस प्रकार एक बौना तारा, विना प्रकाश के, बिना जीवन के, होने वाला है, एक बौना (dwarf) तारा, जो अंत में किसी दूसरे तारे से टकरायेगा, और उनसे एक दूसरा लोक जन्म लेगा। मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ क्योंकि, अभी भी यहॉ एक उच्चकोटि का जीवन अस्तित्व में है, ये जीवन, जो यहॉ शोधकार्य और अनुसंधान के लिये तथा इसी प्रकार की घटनाओं के लिये है। अपनी तरफ देखो।''

वह मुड़े और उन्होंने अपने दायें हाथ से, बहुत दूर की ओर इशारा किया, और हमने लाल आकाश मे पहुँचती हुईं, तीन बड़ी–बड़ी लाल मीनारें देखीं। उन मीनारों की सबसे ऊँची चोटी पर, तीन स्पष्ट चमकते हुए क्रिस्टल गोले चमक रहे थे और, पीली रोशनी से धड़क रहे थे मानो वे जीवित हों।

जैसे ही हम यहॉ आश्चर्य करते हुए खडे हुए, रोशनियों में से एक परिवर्तित हुई। गोलों में से एक, विद्युत–नीली (electric blue) रोशनी में बदल गया। लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''आओ, वे हमारा स्वागत कर रहे हैं। हमें जमीन पर उतरने दो, जहॉ वे भूमिगत प्रकोष्ठ बना कर रह रहे हैं।''

हम साथ–साथ, उस मीनार के आधार की तरफ चले, और तब, जब हम ढॉचे के नीचे खड़े हुए हमने देखा कि, वहॉ एक प्रवेशद्वार है, जो अजनबी धातु, जो चमकती है, के द्वारा अत्यधिक सुरक्षित है और उस लाल और बंध्या जमीन पर, पहचान के एक निशान (landmark) की तरह से खड़ा है। हम इसमें हो कर निकलें क्योंकि धातु, अथवा चट्टानें, इसमें से कोई भी, सूक्ष्मशरीर में बंधन नहीं हैं। हम इसमें से, लंबे मृत चट्टानों के लाल गलियारों में हो कर गुजरे और जब तक कि हम, चार्ट और नक्शों तथा अनोखी मशीनों और उपकरणों से घिरे हुए एक हॉल, एक बहुत बडे हॉल, में नहीं आ गये, चलते रहे। वहाँ बीच में एक लंबी मेज थी, जिस पर, नौ बहुत बूढ़े आदमी, सभी एक दूसरे से अलग–अलग, बैठे हुए थे। (उनमें से) एक लम्बा, पतला और नुकीले, शंक्वाकार (conical) सिर वाला था। फिर भी, दूसरा छोटा और देखने में बहुत ठोस था। इसमें से हर आदमी अलग था। हमें यह स्पष्ट था कि, हर आदमी अलग–अलग ग्रह का, अलग प्रजाति (species) का था। मानव ? ठीक, उनको बताने के लिये, उनका वर्णन करने के लिये, शायद सही शब्द, मानव श्रंखला (humanoid) ही होगा। वे सभी मानव थे परन्तु उनमें से कुछ, दूसरों की तुलना में अधिक मानवीय थे।

हम सावधान हो गये क्योंकि, सभी नौ, हमारी दिशा में ऑखें गढ़ा कर देख रहे थे। ''आह,'' एक ने दूरानुभूति से कहा, ''आप बहुत दूर से आये हुए आगन्तुक (visitors) हैं। हमने देखा, आप यहॉ हमारे शोध स्टेशन पर उतर रहे हैं, और हमने आपके स्वागत का प्रयास किया।''

''आदरणीय पिताओ,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, '' मैं आपके पास दो को लाया हूँ, जो लामापन (lamahood) की अवस्था में, ठीक अभी, प्रविष्ट हुए हैं और जो ज्ञान की खोज में विश्वसनीय विद्यार्थी हैं।''

''इनका, वास्तव में, स्वागत है,'' लंबे आदमी ने, जो उस समूहों का नेता लग रहा था, कहा। ''हम सहायता करने के लिये, कुछ भी करेंगे, जैसे हमने दूसरों के साथ, पहले भी तुम्हारी सहायता की थी।''

ये वास्तव में, मेरे लिये एक समाचार था क्योंकि, मुझे इस बात का कोई ख्याल भी नहीं था कि, मेरे शिक्षक इस प्रकार की आकाशीय यात्रायें, दिव्यलोकों के स्थानों में कर चुके हैं।

छोटा आदमी, मेरी ओर देख रहा था, और वह मुस्कुराया। उसने दूरानुभुति की सार्वभौमिक (universal) भाषा में कहा, ''नौजवानो, मैं देखता हूँ कि तुम, हमारे दिखने में अंतर होने में, महान कौतूहल कर रहे हो।''

''आदरणीय पिताजी,'' मैने उत्तर दिया, कुछ हद तक उस सुविधा से आतंकित, जिसके साथ उसने मेरे विचारों को, वे विचार, जिन्हें मैंने छिपाने की पूरी कोशिश की थी, पकड लिया था।'' ये वास्तव में एक तथ्य है, मैंने आपके आकारों की विषमता और आकृतियों के ऊपर आश्चर्य किया था, और मुझे ऐसा लगा कि, आप सभी पृथ्वी के आदमी नहीं हो सकते।''

''तुमने ठीक ही समझा है,'' छोटे आदमी ने कहा। ''हम सभी मानव हैं, परन्तु वातावरण के कारण, हमने अपनी आकृतियॉ और कुछ–कुछ अपना कद, बदल लिये हैं परन्तु क्या तुम अपने खुद के ग्रह के ऊपर यही चीज नहीं देख सकते हो कि, जहॉ तिब्बत के देश में कुछ भिक्षु हैं, जिन्हें तुम संतरी की तरह उपयोग में लाते हो, सात फुट लंबे होते है। फिर भी, उसी दुनियॉ के दूसरे देश में, ऐसे लोग भी हैं, जो इस कद के आधे ही हैं, और तुम उन्हे पिग्मी (pigmy) कहते हो। ये दोनों ही मानव हैं; दोनों ही, आकार में किसी फर्क के बावजूद, एक दूसरे साथ, एक दूसरे को पैदा कर सकते हैं। हम सभी कार्बनिक अणुओं के मानव है। यहॉ इस विशेष बृह्माण्ड में प्रत्येक चीज कार्बन और हाइड्रोजन के आधार अणुओं पर निर्भर करती है क्योंकि ये तुम्हारे ब्रह्माण्ड को बनाने वाली ईंटें हैं। हम, जिन्होंने अपनी इस नेवला (nebulae) की विशिष्ट शाखा में काफी दूर तक भ्रमण किया है, जानते हैं कि, दूसरे ब्रह्माण्डों में अलग ईंटें होती हैं; कुछ सिलीकोन (Silicon), जिप्सम (Gypsum)[8] का, कुछ दूसरी चीजों का उपयोग करती हैं परन्तु वे इस ब्रह्माण्ड के लोगों से भिन्न होते है, और हमें दुख के साथ ज्ञात हुआ है कि, हमारे विचार, सदैव, उनके साथ प्रेमपूर्ण नहीं होते।'

लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''मैं इन दो नौजवान लामाओं को यहॉ लाया हूँ, ताकि वे, एक तारे, जिसका पूरा वातावरण समाप्त हो गया हैं, और जिसमें उसके वातावरण की संपूर्ण ऑक्सीजन, धातुओं के साथ, उन्हें जलाने के लिए जुड़ गई है और हर चीज स्पर्शातीत (impalpable) धूल के रूप में अवकरित (reduce) हो गई हैं, के टूटने के, मृत्यु के चरणों को देख सकें।''

'ऐसा है,' लंबे आदमी ने कहा। हम इन नौजवानों को ये इंगित करना चाहेंगे कि, हर चीज जो पैदा हुई हैं सो मरेगी अवश्य। हर चीज केवल अपने नियत काल तक जिंदा रहती हैं, और ये जीवन काल, जीवन के मात्रकों की संख्या होती है। हर जीवित प्राणी में जीवन का मात्रक, उस प्राणी के दिल की एक धड़कन, के बराबर होता है। एक ग्रह का जीवन 2,70,00,00,000 धड़कनों के बराबर होता है। इसके बाद ग्रह मरता हैं, परंतु एक ग्रह की मृत्यु होने के बाद, दूसरे ग्रह उत्पन्न होते हैं। एक आदमी भी, 2,70,00,00,000 धड़कनों तक जिंदा रहता हैं, और इसी प्रकार सबसे नीची श्रेणी का कीट भी। एक कीट जो केवल 24 घंटे तक जिंदा रहता हैं, उतने बीच में 2,70,00,00,000 धड़कनें जी लेता है। ग्रहों में– यहॉ वास्तव में, थोड़ा सा बदलाव हो सकता है, परंतु एक ग्रह 27,000 वर्षों में एक धड़कन पूरी करता है, और उसके बाद, उसमें, जब वह अगली धड़कन के लिए तैयार होकर स्वयं को हिलाता है, उसके विश्व में, खलवली होती है। सभी जीवनों की, तब, वे कहते गये, अवधि एक समान होती है, परंतु कुछ प्राणी, दूसरों से अलग दरों पर, जीवित रहते हैं। पृथ्वी के ऊपर के प्राणी, हाथी, कछुआ, चींटी और कुत्ता, ये सभी धड़कनों की समान संख्या जीते हैं, परंतु उन सबकी हृदय की धड़कन, अलग–अलग गतियों से होती है, और इस प्रकार वे लंबे समय तक, या थोड़े समय तक, जीवित रहते हैं।'

जिग्मे और मैंने इसे अत्यधिक सम्मोहित करने वाला पाया, और हमें इसका इतना अधिक

8 अनुवादक की टिप्पिणी : यहॉ जिप्सम से लेखक का आशय कैल्शियम तत्व से है।

स्पष्टीकरण दिया गया कि, हमें अपनी मातृभूमि तिब्बत दिखाई देने लगी। हमने पोटाला में कछुए के संबंध में, जो कि बहुत अच्छे लंबे समय तक जिंदा रहता है, लंबे वर्षों तक जिंदा रहता है, और कीटों के बारे में, जो गर्मी की एक शाम तक ही जिंदा रह पाते हैं, सुना था। अब हमें उनका दृष्टिकोण, उनके तेजी से धड़कते हुए हृदय के साथ, जल्दी से समझ में आने लगा।

बोना आदमी, जो हमें अपनी तरफ देखता हुआ लग रहा था, काफी हद तक अनुमोदित करते हुए उसने कहा, ''हाँ केवल इतना ही नहीं कि, अनेक प्राणी, शरीर के विभिन्न कार्यों को निरूपित करते हैं। गाय, उदाहरण के लिए, जैसा कोई देख सकता हैं, मात्र चलती फिरती स्तन की ग्रंथियाँ हैं, जिराफ गर्दन हैं, कुत्ता– ठीक, प्रत्येक जानता है कि, कुत्ता हमेशा क्या सोचता है– खबरों के लिए, हमेशा हवा से हाँफता रहता है क्योंकि, उसकी नजर कमजोर होती है– इसीलिए कुत्ते को नाक के रूप में समझा जा सकता है। दूसरे प्राणी भी, अपनी शरीर रचना के अनुसार, विभिन्न अंगो के प्रति इसी प्रकार का जुड़ाव रखते हैं, चींटी खाने वाले दक्षिण अमेरिका के लोग, जीभ के रूप में देखे जा सकते हैं।

जैसा कोई आकाशीय यात्रा में करता है, कुछ समय के लिए हमने, अनेक नई–नई चीजों को सीखते हुए, विचार की गति से सीखते हुए, दूरानुभूति से बातें कीं। तब अंत में, लामा मिंग्यार डोंडुप ने खड़े होते हुए कहा कि, अब ये चलने का समय है।

जब हम पोटाला की सुनहरी छतों के ऊपर लौटे, हमारे नीचे सूर्य की कोहरे वाली धूप चमक रही थी। हमारे शरीर भारी और कठोर थे, अपने आधे जमे हुए जोड़ों के कारण, काम करने में कठिनाई आ रही थी। ''और इस प्रकार,'' हमने सोचा, जब हमने अपने पैरों पर ठोकर खाई, ''एक और अनुभव, एक और यात्रा समाप्त हुई। अब आगे क्या ?''

एक विज्ञान, जिसमें हम तिब्बतियों की विशेषज्ञता है, जड़ीबूटियों से स्वस्थ करना था। हमेशा से अभी तक, तिब्बत विदेशियों से बचा रहा है, और हमारे प्राणी जगत और वनस्पति जगत को विदेशियों द्वारा खोजा नहीं गया है। ऊँचे पठारों के ऊपर, अनेक पौधे उगते हैं। क्यूरारे (Curare)[9], और अभी ''ताजा खोजा गया'' मेसकालिन (mescalin)[10], उदाहरण के लिए, तिब्बत में शताब्दियों पहले ज्ञात थे। हम पश्चिमी विश्व की अनेक व्याधियों का इलाज कर सकते थे, परंतु पहले पश्चिमी विश्व के लोगों को, थोड़ा अधिक, विश्वास करना पड़ेगा। परंतु, अधिकांश पश्चिमी देशों के निवासी, एक तरह से पागल हैं, इसलिए क्यों चिंता करें।

हर वर्ष हमारे दल, जिन्होंने अपने अध्ययन में अच्छा किया है, जड़ीबूटियाँ इकट्ठी करने के अभियान में जाते थे। पौधे और पराग, जड़ें और बीज, सावधानीपूर्वक एकत्रित किये जाते, उनको संभाला जाता और उन्हें याक की खाल से बने हुए बोरों में भंडारित किया जाता था। मुझे ये काम अच्छा लगता था और मैंने इसे भलीभांति सीखा। अब मैं समझता हूँ कि, जड़ीबूटियाँ, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूँ, यहाँ प्राप्त नहीं की जा सकतीं हैं।

अंत में मुझे संक्षिप्त मृत्यु के उस उत्सव को स्वीकार करने के लिये ठीक समझा गया, जिसके बारे में मैंने 'तीसरी ऑख' में लिखा है। विशेष रस्मो–रिवाज से मुझे पोटाला के काफी नीचे, निस्पंद बात (cataleptic)[11] की मृत्यु की अवस्था में रखा गया, और मैने, आकाशीय अभिलेखों (akashic records) के साथ भूतकाल में यात्रा की। मैं पृथ्वी के देशों को भी गया। परंतु, तब मुझे जैसा लगा, वैसा मैं लिख रहा हूँ।

जीवंत चट्टानों के बीच, बर्फ सी जमी चट्टानों के सैकड़ों फुट नीचे, गलियारों में सीलन थी। स्वयं कब्रों के अंधकार के कारण सीलन और अंधेरा। मैं इसकी लंबाई में तैरता हुआ बढ़ता गया, जैसे

---

9 अनुवादक की टिप्पिणी : क्यूरारे, एक काला सा राल जैसा पदार्थ होता है, जिसे विशेषरूप से S Toxifera और upareira की मूल से निकाला जाता है। इसे दक्षिणी इंडियन अमेरिकन लोगों द्वारा जहर के रूप में तथा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के लिये उपयोग में लाया जाता है।

10 अनुवादक की टिप्पिणी : मेसकालिन, एक नशीली दवा है।

11 अनुवादक की टिप्पिणी : तंद्रा जैसी स्थिति, जिसमें ऐच्छिक क्रियाऐं और उत्तेजकों के प्रति प्रतिक्रियायें समाप्त हो जातीं हैं।

कि कालिमा में धुंआ, और कालेपन से बढ़ती हुई पहचान के साथ, मैंने पहले सड़ती हुईं वनस्पतियों, जो चट्टानों की दीवारों से चिपकीं हुईं थीं, की हरे रंग की स्फुरदीप्ति (phosphorescence) को अस्पष्टरूप से देखा। यदा–कदा, जहाँ वनस्पति अधिकांशतः सृजनात्मक थी और प्रकाश काफी चमकदार था, मैं सोने की पीली चमकती हुई धारी को, जो चट्टानी सुरंगों में लंबाई के साथ–साथ, दौड़ रही थी, पकड़ सका।

मैं समय की चेतना के बिना, किसी भी विचार के बिना, ध्वनिरहित रूप से आगे तैरता रहा, सिवाय इसके कि, मैं पृथ्वी के अंदर, औरअंदर भाग में, आगे, औरआगे जाऊँ क्योंकि, यह दिन, जो मेरे लिए क्षणिक था, वह एक दिन था, जब मैं, तीन दिन तक सूक्ष्मशरीर में रहने के बाद लौट रहा था। समय गुजरा और मैंने अपने आपको, कालिमा के साथ, एक कालिमा, जो आवाज पैदा करती हुई दिखती थी, एक कालिमा, जो कंपन करती हुई दिखती थी, गुप्त प्रकोष्ठ में गहरा, औरगहरा, बढ़ते हुए पाया।

अपनी कल्पना में, मैं अपने ऊपर के विश्व का, उस विश्व का, जिसमें मैं अब लौट रहा था, चित्र बना सकता था। मैं उन दृश्यों को, जो कि घने अंधकार के कारण छिपे हुए थे, देख सका। मंदिर में सुगंधित धुंए के बादलों की तरह से हवा में संतुलित होकर, मैंने प्रतीक्षा की।

धीमे–धीमे, इतना धीमे कि, ये कुछ ऐसा समय था, जिसे मैं नहीं समझ सका, नीचे गलियारे में एक आवाज आई, परंतु धीमे–धीमे तीव्रता फूलती और बढ़ती गई, मंदिरों की आवाज, चांदी की घंटियों की आवाज और पैरों के, चमड़े से ढके होने के कारण, दबी हुई हस–हस की आवाज आई। अंत में, काफी लंबे अंत में, सुरंगों की दीवारों के साथ हिलती हुई, चमकती हुई, एक भयानक रोशनी प्रकट हुई। ध्वनि अब तेज होती जा रही थी, मैंने प्रतीक्षा की।

धीमे–धीमे, ओह! इतना धीमे, इतना दुखदायी धीमे से, हिलती हुई आकृतियाँ सावधानीपूर्वक सुरंगों मे रेंगती हुईं, मेरी तरफ आईं। जैसे ही वे मेरे समीप आईं, मैंने देखा कि वे, ऊपर के मंदिर की, हवा में जलती हुईं, अमूल्य मशालों को ऊपर उठाये हुए, पीली पोशाक वाले भिक्षु थे। मशालें, जिनमें विरली राजन की लकड़ियाँ लगी थीं और साथ में अगरबत्तियॉ बंधी हुई थीं। एक चमकीली, धुंधली चमक, रोशनी हुई और इसने वनस्पति के अधिक मात्रा में सड़ने की गंध को वहा देने वाली और सुन्दर हवा की इत्र की गंध को आदरणीय बना दिया।

धीमे से पुजारियों ने, जमीन के नीचे के प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। प्रवेशद्वार के समीप और चट्टानी दरारों को टटोलते हुए, दो प्रत्येक दीवार की तरफ चले। तब, एक के बाद एक, टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपकों में जान उमड़ी। अब प्रकोष्ठ अधिक प्रकाशमान था और चूंकि मैंने तीन दिन से कुछ नहीं देखा था, मैं एक बार फिर अपनी ओर देख सकता था।

पुजारी मेरे चारों तरफ खड़े हुए, और उन्होंने मेरी तरफ नहीं देखा, वे प्रकोष्ठ के केन्द्र पर टिकते हुए, पत्थर की एक कब्र के पास खड़े हुए। जाप करने और चांदी की घंटियों की बजने की आवाज भी, निरंतर बढ़ती गयी। अंत में, एक बृद्ध आदमी के द्वारा दिये गये संकेत पर, छः भिक्षु रुके, और उन्होंने हाँफते और कराहते हुए, कफन के ढक्कन को उठाया। जब मैंने नीचे देखा, तो मैंने अपनी खुद की लाश को देखा, एक शरीर जो लामावर्ग के पुजारियों की पोशाक में लपेटा गया था। अब भिक्षु अधिक ऊॅची आवाज में जाप कर रहे थे और गा रहे थे; ''ओह पृथ्वी के चेहरे के ऊपर घूमती हुई, आगंतुक लामा की आत्मा, तीसरे दिन यहाँ वापस लौटो। तीसरा दिन आ चुका है और लगभग गुजर चुका है, पहली अगरबत्ती उस घूमने वाली लामा की आत्मा को याद दिलाने के लिए जलाई जाती है।''

एक भिक्षु, सामने खड़ा हुआ और उसने रंग में लाल और मीठी सुगंध वाली अगरबत्ती जलाई, उसने बक्से में से दूसरी निकाली और पुजारियों ने जपा;

''ओह घूमने वाले लामा की आत्मा, जल्दी करते हुए, लौट कर वापस हमारे पास आओ क्योंकि,

तुम्हारे जगने का समय पास आ गया है। दूसरी अगरबत्ती, तुम्हारी वापसी मे तेजी लाने के लिये जलाई जाती है।''

जैसे ही अकेले भिक्षु ने डिब्बे में से एक अगरबत्ती निकाली, पुजारी ने जपा;

''ओह घूमने वाले लामा की आत्मा, हम तुम्हारे पार्थिव शरीर में, फिर से जान डालने की और उसे पोषित करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम अपने रास्ते पर जल्दी करो क्योंकि समय कम हैं और तुम्हारी वापसी के साथ, तुम्हारी शिक्षा में एक और श्रेणी, जो तुमने उत्तीर्ण की है, जुड़ जायेगी। तीसरी अगरबत्ती, उस वापसी के बुलावे के लिए जलाई जाती है।''

जब धुंआ आलसपूर्ण तरीके से, मेरे सूक्ष्मशरीर को घेरते हुए, ऊपर की तरफ घुमड़ाया, मैं भय से कॉप गया। मैं, मानो अदृश्य हाथों में था, जो मुझे खींच रहे थे, मानो जीवनरहित शरीर में, उस ठंड में, मुझे बाध्य करते हुए, मुझे लपेटते हुए, हाथ नीचे की ओर खींचते हुए, मेरी रजततंतु को खींच रहे थे। मैंने मृत्यु की ठंडक को महसूस किया, मैंने अपनी भुजाओं मे कंपकपी महसूस की, मैंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि को मंद होते हुए देखा और तब तेजी से ली गई सांस ने मेरे शरीर को तड़का दिया, जो अनियंत्रितरूप से घबरा रहा था। उच्च पुजारी, उस पत्थर की कब्र में नीचे झुके, और मेरे कंधों को, मेरे सिर को उठाया और मेरे कस कर भिंचे हुए जबड़ों में कोई कड़वी चीज घुसा दी। 'आह!' मैंने सोचा, फिर से उसी तंग शरीर में वापस, उस तंग शरीर में वापस।

ऐसा लगा, मानो मेरी शिराओं में होकर, शिराऐं जो तीन दिन से निष्क्रिय हुईं पड़ीं थीं, आग मुझे अभिशप्त कर रही है। धीमे से, सरलता से, पुजारियों ने, मुझे सहारा देते हुए, मुझे उठाते हुए, मुझे अपने पैरों पर खड़ा करते हुए, पत्थर के प्रकोष्ठ में आसपास टहलाते हुए, मेरे सामने घुटनों के बल बैठे हुए, मेरे चरणों मे दण्डवत करते हुए, अपने मंत्रो को उच्चारित करते हुए, अपनी प्रार्थनाओं को कहते हुए और अपनी अगरबत्तियों को जलाते हुए, मुझे कब्र में से निकाला। उन्होंने बलपूर्वक, मेरे अंदर आहार घुसाया, मुझे धोया और सुखाया, और मेरी पोशाकें बदलीं।

शरीर में चेतना वापस आने के साथ, इन्ही कारणों से मेरे विचार, वापस पिछले तीन दिनों में घूमने लगे, जबकि इसी प्रकार की घटना पहले हो चुकी थी। तब मुझे पत्थर के इसी कफन में लिटाया गया था। एक–एक करके लामाओं ने मुझे देखा था। तब उन्होंने इस पत्थर के कफन के ऊपर ढक कर रखा था और अगरबत्तियॉ बुझाईं थीं। एक–एक करके, अपनी रोशनियों को अपने साथ लिए हुए, जब कि मैं ये जानते हुए भी कि, आगे क्या होने वाला है डरा हुआ, उस पत्थर की कब्र में थोड़ा सा डरा हुआ, अपने प्रशिक्षण के बावजूद भी डरा हुआ था, वे इस पत्थर के गलियारे से ऊपर चले गये थे। मैं लंबे समय तक मौत की खामोशी में, अंधेरे में रहा था। खामोशी ? नहीं, क्योंकि मेरे दृष्टिकोण प्रशिक्षित किए जा चुके थे और वे इतने सूक्ष्म थे कि मैं, जीवन के घटने को और उनकी सांस लेने को सुन सकता था, जैसे–जैसे वे दूर होते गए, मैं आवाजों को सुन सकता था। मैं उनके कदमों की आवाजों को, जो मंदी, औरमंदी होती जा रही थीं, और तब अंधकार की शांति, स्थिरता और रिक्तता को सुन सकता था।

मृत्यु स्वयं इससे अधिक खराब नहीं हो सकती, मैंने सोचा। मैं लेटने पर, जैसे–जैसे, ठंडा और ठंडा होता जा रहा था, समय अनंतरूप से रेंग रहा था। अचानक, जैसे सुनहरी ज्वाला में, विश्व में विस्फोट हुआ, और मैं शरीर की सीमाओं के बाहर निकल गया, और मैंने उस जमीन के नीचे के प्रकोष्ठ की, पत्थर की कब्र की, कालिमा को छोड़ दिया। महासागरों से बहुत ऊपर, ऊपरी गगनचुंबी हिमालय की जमीन, और शुद्ध ठंडी हवा में, बर्फ से बनी हुई जमीन, और बहुत दूर, पृथ्वी के सिरों से भी दूर, विचारों की गति से, मैंने अपना रास्ता, बलपूर्वक, जमीन के बीच से बनाया। ईथरी प्रेतात्मा की तरह से आकाश में, सूक्ष्मशरीर में, इस पृथ्वी के स्थानों और राजमहलों को देखते हुए, दूसरों को देखते हुए शिक्षा प्राप्त करते हुए, मैं अकेला घूमता रहा। बहुत अच्छी तरह गुप्त, तहखाने भी मेरे लिए सील बंद

नहीं थे, क्योंकि मैं दुनियाँ के मंत्रणा प्रकोष्ठों में, विचार की भांति प्रवेश करने के लिए मुक्त था। लगातार परिदृश्य में, सभी देशों के नेता लोग, मेरे सामने से गुजरे। उनके विचार मेरी जाँचती हुई आँखों के सामने नंगे थे।

''और अब,'' मेरे पैरों को लामाओं द्वारा, सहारा दिए जाते हुए, ठोकर खा कर, लड़खड़ाकर, चक्कर से आक्रांत होकर मैंने सोचा, '' अब, जो मैंने देखा, जो मैंने अनुभव किया है, मुझे ये सब बताना है, और तब ? शायद, शीघ्र ही मुझे इस प्रकार के दूसरे अनुभव में हो कर गुजरने का अवसर मिलेगा। उसके बाद, भविष्यकथन में कही हुई परेशानियों को झेलने के लिये, मुझे पश्चिमी देशों की यात्राओं पर जाना पड़ेगा।''

अपने पक्ष में अधिक प्रशिक्षण, और अत्यधिक परेशानियों के भी साथ, औरअधिक प्रशिक्षण, औरअधिक परेशानियों के लिये, मैं तिब्बत से अपनी यात्रा पर निकला। हिमालय को पार करने से पहले, जैसे ही मैंने मुड कर पीछे देखा, मैंने सूर्य की प्रारंभिक किरणों को, पर्वत श्रंखलाओं से झाँकते हुए, पवित्र भवनों की सुनहरी छतों को छूते हुए, और उनको सांस लेने में होने वाले आनंद, के दृश्यों में बदलते हुए देखा। ल्हासा की घाटी, अभी भी नींद में सोई हुई लगी, और प्रार्थनाध्वज भी, अपने डंडों पर आलस्यपूर्ण ढंग से, उनींदे से हिलते हुए प्रतीत हुए। जब मैं चुंगकिंग की तरफ मुड़ा, मैं किसी तरह मुश्किल से ही, पारगो कलिंग (Pargo kaling) के पास, याक के एक काफिले को, व्यापारियों को, मुझ जैसे जल्दी जगने वालों को, भारत की ओर यात्रा शुरू करने वालों को, देख सकता था।

हम, चीन से चाय की ईंटें लाने वाले, चाय जो त्संपा के साथ, तिब्बतियों के द्वारा खाये जाने वाले सहयोगी खाद्यों में से एक है, तिब्बत में चाय लाने वाले, व्यापारियों द्वारा रोंदे गये रास्ते पर चल कर, पर्वत श्रंखलाओं के ऊपर गये। 1927, यह वह समय था, जब हमने ल्हासा को छोड़ा और ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे, एक छोटे शहर चोतांग की तरफ अपना रुख किया। उसके बाद, हम निचले स्थानों में कांतिंग तक नीचे गये, वनस्पतियों से भरी घाटियों में, घने जंगलों में होकर, सांस लेने में तकलीफ उठाते हुए, आगे बढते गये। हम सभी केवल पन्द्रह हजार फुट या उससे अधिक ऊँचाई में सांस लेने के अभ्यस्त थे। निचले स्थान, हमारे फेंफडों पर दबाव बनाते हुए, हमें यह महसूस कराते हुए कि, हम हवा में डूब रहे हैं, अपने घने वातावरण के कारण, हम पर और हमारी आत्माओं पर दवाब बना रहे थे। हम दिन–प्रतिदिन, आगे चलते गये, जब तक कि एक हजार या उससे अधिक मील दूरी तक पहुँचने के बाद, चुगकिंग के चीनी शहर के बाहरी हिस्से में नहीं पहुँचे।

रात को साथ–साथ अपना शिविर बनाते हुए, हमारी अपनी रात, क्योंकि सुबह मेरे साथी लोग अपनी वापसी यात्रा पर, अपने प्रिय ल्हासा के लिये यात्रा शरू कर देगें, हम एक साथ शिविर में रहे, हमने दुःख के साथ बातें कीं। इसने काफी हद तक, मुझे परेशान किया कि, मुझे बचाने वाले मेरे साथी लोग, मुझे पहले से ही ऐसा समझ रहे थे, मानो कि, मैं इस दुनियाँ के लिये मरा हुआ आदमी हूँ, एक आदमी जो निचले स्थान के शहरों में रहता हुआ निंदनीय स्थिति में हो। और इसलिये सुबह मैं चुंगकिंग के विश्वविद्यालय में गया, एक विश्वविद्यालय, जहॉ लगभग सभी प्राध्याापक, स्टॉफ के लगभग सभी सदस्य, विद्यार्थियों की सफलता सुनिश्चित करने के लिये, कड़ा परिश्रम कर रहे थे, हर संभव तरीके से मदद कर रहे थे, और केवल एक अत्यंत अल्पसंख्यक (minority) समुदाय, निष्ठुर अथवा असहयोगी था, अथवा अज्ञात अनुभूति से पीड़ित था।

चुंगकिंग में, मैने एक शल्यचिकित्सक और डॉक्टर होने के लिये अध्ययन किया। मैंने वायुसेना में विमान चालक होने के लिये भी, अध्ययन किया, क्योंकि मेरे जीवन का खाका पहले से ही बना दिया गया था, अपने सूक्ष्मतम विस्तार में पहले से ही कह दिया गया था, और मैं इसे जानता था कि, ये सिद्ध होने वाला मामला है, मैं बाद में हवा में और चिकित्सा में बहुत कुछ करूगाँ। परन्तु, चुंगकिंग में अभी आने वाले युद्ध की मात्र सुबवुगाहट थी, और दिन प्रतिदिन, अपनी सामान्य प्रसन्नता का आनंद लेते हुए

और अपने सामान्य कार्यों को करते हुए, इसमें अधिकांश लोग, पुराने और नये शहर, जुड गये।

भौतिकरूप से, बड़े शहरों के लिये, ये मेरी पहली यात्रा थी। वास्तव में, ल्हासा के बाहर किसी दूसरे शहर के लिये, मेरी पहली यात्रा; यद्यपि मैं, सूक्ष्मशरीर में दुनियाँ के अधिकांश बड़े शहरों में घूम चुका था, जैसा कि कोई भी कर सकता है, यदि वह अभ्यास करे क्योंकि, इसमें कोई कठिनाई नहीं है, सूक्ष्मशरीर के संबंध में कुछ भी जादुई नहीं है। यह टहलने के समान आसान है, एक साईकल पर चढ़ने की तुलना में अधिक आसान, क्योंकि साईकल को, किसी को संतुलित करना पडता है; आकाशीय यात्रा में किसी को अपनी कुल क्षमताओं का उपयोग करना होता है, उन क्षमताओं का, जिन पर हमारा 'जन्म सिद्ध अधिकार' मिला होता है।

जब मैं चुगकिंग के विश्वविद्यालय में पढ़ ही रहा था मुझे ल्हासा में वापस बुलाया गया क्योंकि तेरहवें दलाई लामा, मरने वाले थे। मैं वहॉ पहुँचा और मैंने सभी रस्मो–रिवाज में भाग लिया, जो उनकी मृत्यु के बाद हुए, और तब ल्हासा में विभिन्न कार्यों को निपटाते हुए मैं ल्हासा से वापस लौटा। सर्वोच्च मठाधीश ताई शू (T'ai Shu) के साथ, बाद के साक्षात्कार में, मुझे चीनी वायुसेना में स्थायी नियुक्ति (commision) स्वीकार करने और शंघाई, एक स्थान जिसे मैं जानता था, जाने के लिये, फुसलाया गया, जहॉ मुझे जाना पड़ा यद्यपि, वहाँ मेरे लिये किसी प्रकार का आकर्षण नहीं था। इसलिये एक फिर मुझे, समूल उखाड दिया गया और मैंने दूसरे घर की ओर अपना रास्ता लिया। यहॉ 7 जुलाई 1947 को, जापानियों ने मार्कोपोलो पुल (Marcopolo Bridge)[12] के ऊपर एक घटना को अंजाम दिया। ये वास्तव में, चीन और जापान के बीच, युद्ध प्रांरभ होने का वास्तविक मुद्दा था और इसने हमारी चीजों को वास्तव में, और अधिक मुश्किल बना दिया। मुझे अपने अत्यधिक लाभप्रद, शंघाई में चिकित्सा अभ्यास को, छोड़ देना पड़ा और स्वयं को कुछ समय के लिये, शंघाई नगर परिषद की इच्छा पर छोड़ देना पड़ा, परन्तु इसके बाद मैंने अपना पूरा समय, चीनी सेना के लिये, करुणा उड़ानों पर लगाया। मैं और दूसरे लोग उन स्थानों के लिये उड़े, जहॉ शल्यक्रिया की अत्यधिक आवश्यकता थी। हम पुराने विमान

12 अनुवादक की टिप्पिणी : मार्कोपोलो सेतु (Morco Polo Bridge) की घटना, जिसे लोगाऊ सेतु (Logou Bridge) की घटना अथवा 7 जुलाई की घटना भी कहते हैं, वास्तव में चीनी सरकार की क्रांतिकारी सेना (The Republic of China's National revolutionary Army) और जापान की शाही सेना (Imperial Japanese Army) के बीच युद्ध था, जो दूसरे चीनी–जापानी युद्ध (second Sine-Cinese war) (1937 से 1945) के कारणों में से एक बना। मार्कोपोलो सेतु 11 मेहराबों वाला ग्रेनाईट का एक सेतु है। 1931 में मंचूरिया के अतिक्रमण के बाद से ही, जापान के शासक और चीन के शासन तंत्र के बीच तनाव बढ़ गया था, तथापि 1932 के अंत तक, जापानी फौज ने रेहे अथवा जेहोल (Rehe or jehol) राज्य को अतिक्रमित किया और 1933 में उसे अपने कठपुतली राज्य मंचूकुओ में मिला लिया।

7 सितम्बर 1901 को बोक्सर प्रोटोकाल (Boxer protocol) के अंतर्गत, चीन ने उन सभी राष्ट्रों को, जिनके दूतावास बीजिंग में थे, बीजिंग–तिआंजिन (Beijing-Tianjin) रेल पथ के 12 विशिष्ट स्थानों पर, अपने सुरक्षा गार्ड तैनात करने के अधिकार दे दिये थे। 15 जुलाई 1902 के अनुपूरक समझोते में यह अधिकार राजधानी और बंदरगाह के बीच, खुला संप्रेषण (communication) उपलब्ध कराने के लिये थे। इन बलों को चीन की सरकार को सूचित किये बिना, कार्यचाही करने की छूट थी। जापान ने, जुलाई 1937 तक, रेल मार्ग पर चीन में तैनात अपनी फौज को 7000–15000 तक बढ़ा लिया था। जापान का ये माल असबाब और सैन्यशक्ति, अन्य यूरोपीय ताकतों की तुलना में बहुत अधिक थी। इस समय तक, जापान की शाही सेना ने पहले से ही, बीजिंग और तिआंजिन के आसपास, हमले की तैयारियाँ शुरू कर दीं थीं। जापानी कमांडर बहाना खोजने की फिराक में थे। 7 जुलाई की रात को, फेंगताई (communication) में जापानी सेना ने सैन्य अभ्यास करने के क्रम में, चीनी सीमा को पार किया। जापानी सेना ने और वानपिंग (communication) शहर, जो बीजिंग से 10 मील दूर, दक्षिण–पश्चिम में चारदीवारी से घिरा हुआ था, में तैनात चीनी सेना ने किसी अज्ञात कारण से अचानक ही गोलेबारी शुरू कर दी। इस बीच, जापानियों का एक सैनिक गायब हो गया था, जापानियों ने उसे ढूढने के लिये चीनी सेना से अनुमति मागी, जिसको चीनी सेना ने मना कर दिया। बाद में देर रात, जापानी सेना ने वानपिंग की सुरक्षा दीवार को तोड़ कर, शहर में घुसने का प्रयास किया जिसे चीनी सेना द्वारा विफल कर दिया गया।

8 जुलाई को, प्रातः 2 बजे, चीन की सेना के कार्यकारी अधिकारी ने, जो प्रभारी कमाण्डर भी था, वानपिंग के मेयर, वांगलेंगजियाई को, जापानी शिविर में बातचीत (communication) करने के लिए, अकेला ही भेजा। यद्यपि ये निरर्थक सिद्ध हुआ और जापानियों ने इस पर बल दिया कि, उन्हें शहर में घटना की जांच करने के लिए जाने दिया जाए। सुबह 4 बजे के करीब, दोनों तरफ से फौजें इकट्ठा होना शुरू हो गईं। चीनियों ने भी अपने एक डिवीजन को उस क्षेत्र में तैनात कर दिया। लगभग एक घंटे बाद, जापानी सेना ने गोलीबाजी करना शुरू कर दिया और मार्कोपोलो ब्रिज, (जो बांनपिंग के दक्षिण–पश्चिम में 690 फुट लंबा एक पुल है, जिसके साथ रेल का पुल भी है), के ऊपर हमला कर दिया। लगभग 4:45 पर मेयर वानलेगजिाई, बानपिंग में वापस लौटे और उन्होंने जापानी सेनाओं के जमा होने की सूचना दी। पांच मिनट में गोले दाग दिये गये, और बीजिंग और तिआंजिन (Tianjin) के बीच युद्ध की शुरूआत हो गई। अगले दिन 8 जुलाई 1937 को, दूसरे चीनी–जापानी युद्ध की पूरी तरह से शुरूआत हो गई। कर्नल जी सिंगवेन (Ji singwen) लगभग 100 आदमियों के साथ, बचाव की लड़ाई लड़ रहा था, उसे अपने उच्चाधिकारियों से किसी भी कीमत पर, सेतु को बचाए रखने के आदेश मिले थे। भयानक युद्ध के बाद, और अधिक सेना के साथ, चीनियों को सेतु के ऊपर कब्जा बनाए रखने में सफलता मिली। इस बीच बीजिंग और चीनी राष्ट्रवादी शासन के बीच, जापानी विदेश सेवा के लोगों के सदस्यों के साथ, बातचीत शुरू हो गई। चीनी जनरल क्विन (Quin) के साथ, एक मौखिक राजीनामा तैयार हुआ, जिसके अनुसार जापानियों को माफी मांगनी पड़ेगी। जापानियों के द्वारा, चीनियों को लिखित माफीनामा दिया जायेगा और जो लोग इसके जिम्मेदार होंगे, उनको सजा दी जायेगी। जापानी गेरीसन तोपखाने (infantry) के बिग्रेड कमाण्डर, जनरल मासाकाजू काबाबे (Masakazu Kawabe) के द्वारा, अपने उच्च अधिकारियों के आदेशों के बावजूद, इस संधि को पूरी तरह से नकार दिया गया और उसने अगले तीन घंटों तक वानपिंग पर गोलाबारी जारी रखी। अगले दिन, 9 जुलाई को, जापानी सेना की दूसरी टुकड़ियों वहाँ आ कर शामिल हुई और चीनी रेजीमेन्ट ने अत्यधिक प्रतिरोध खड़ा किया। लांगफांग (Langfang) में, 25 जुलाई को, पूरे पैमाने पर युद्ध छिड़ गया। 27 जुलाई को जापानी सेनाओं के निवास पर खूनी आक्रमण किये जाने के बाद, अगले दिन, जनरल सुंग (sung) को हरा दिया गया और उसे योंगडिंग (Yongding) नदी के पार खदेड़ दिया गया। मार्कोपोलो ब्रिज की घटना के परिणाम स्वरूप, चीन और जापान के साम्राज्यों के बीच, बड़े स्तर पर लड़ाई हुई जिसमें बाइपिंग, तिआंजिन और शंघाई दोनों स्थानों पर युद्ध हुए। 1987 में सेतु का पुनर्निर्माण किया गया और जापानियों के विरूद्ध चीनी लड़ाई के स्मारक के रूप में यहाँ एक युद्ध संग्रहालय (Museum) बनाया गया।

में उडते थे, जिन्हें, वास्तव में, किसी दूसरे मतलब के लिये नाकाबिल घोषित किया जा चुका था, परन्तु, वह उनके लिये पर्याप्त अच्छा माना जाता था, जो युद्ध में नहीं लड रहे थे, जो केवल शरीरों को पैबंद लगा रहे थे।

गोलीबारी किये जाने के बाद, मुझे जापानियों के द्वारा पकड लिया गया, और मेरे साथ काफी खराब तरीके से व्यवहार किया गया। मैं एक चीनी की तरह से नहीं दिखता था, वे ठीक से यह नहीं जानते थे कि मैं कैसा दिखता हूँ, और इसलिये वे मेरी बर्दी के कारण, पद के कारण, मुझ से पूरी तरह असंतुष्ट थे।

मैं भाग जाने में सफल हुआ और अपने कार्य को जारी रखने की आशा में, वापस चीनी फौजों में जुड़ गया। अपने सक्रिय कर्तव्य पर लौटने से पहले, दृश्य परिर्वतन के लिये, मुझे पहले चुंगकिंग भेजा गया। तब चुगकिंग, जिसे मैं पहले से जानता था, पूरी तरह बदला हुआ एक अलग स्थान था। इमारतें नईं थीं, समझो कि, कुछ पुरानी इमारतों के सामने (fronts) नये हो गये थे क्योंकि पूर्व में, इस स्थान पर बमबारी हुई थी। स्थान अत्यधिक भीड़ भरा था और चीन के विभिन्न भागों के बड़े शहरों से, सब प्रकार के व्यापार, युद्ध, जो दूसरी जगहों पर भी छिड़ा हुआ था, के समय खाली कराये जाने से बचने की आशा में, चुंगकिंग में इकट्ठे हो गये थे।

बीमारी से कुछ उबरने के बाद, मुझे जनरल यो (General Yo) की कमाण्ड में, नीचे समुद्रतट पर भेजा गया। मुझे अस्पताल का प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, नियुक्त किया गया, परन्तु ''अस्पताल'' धान के कुछ खेतों का एकत्रीकरण मात्र था, जो पानी से पूरी तरह भरे हुए थे। जल्दी ही, जापानी वहॉ आये और उन्होंने हमें पकड लिया और उन सभी मरीजों को मार डाला, जो खड़े होने में अथवा चलने में असमर्थ थे। मुझे दुबारा पकड़ा गया और मेरे प्रति बहुत बुरी तरह से व्यवहार किया गया क्योंकि, जापानियों ने मुझे इस रूप में पहचान लिया था कि, मैं पहले भाग चुका था, और वे वास्तव में, उन लोगों को पंसद नहीं करते थे, जो भागे हुए हों।

कुछ समय बाद, मुझे जेल के प्रभारी चिकित्सा आधिकरी के रूप में भेजा गया, जो सभी राष्ट्रों की औरतों के लिये था। वहॉ जड़ीबूटियों में अपने विशिष्ट प्रशिक्षण के कारण, मैं शिविर के प्राकृतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने में, मरीजों का इलाज करने में, सक्षम था, जो अन्यथा किसी भी दूसरे प्रकार की दवाओं को लेने के लिये, मना कर चुके थे। जापानियों ने सोचा कि मैं, बंदियों के लिये बहुत अधिक, कर रहा था और उन्हें मरने नहीं दे रहा था, और इसलिये उन्होंने मुझे जापान के बंदी शिविर में भेज दिया, एक शिविर, जो उनके अनुसार आतंकवादियों के लिये था। मुझे जापानी समुद्र के तट पर से टूटे–फूटे जहाज में खदेडा गया और हमारे साथ, वास्तव में, बहुत बुरी तरह व्यवहार किया गया। मुझे बुरी तरह प्रताडित किया गया, और उनके द्वारा दीं गईं लगातार प्रताड़नाओं के कारण, मुझे निमोनिया हो गया। वे मुझे मरने नहीं देना चाहते थे, इसलिये उन्होंने अपने तरीके से देखभाल की और मेरा इलाज किया। जब मैं कुछ ठीक हो रहा था, मैने जापानियों को यह नहीं पता चलने दिया कि, मैंने कितना अच्छा स्वास्थ्य लाभ किया है;–पृथ्वी हिली; मैंने सोचा, कि ये एक भूकंप था, तब मैंने खिडकी के बाहर देखा और पाया कि, पूरा आकाश लाल हो गया था, और जापानी आतंकित होकर दौड़ रहे थे, ऐसा लगा मानो कि, सूर्य काला हो गया था। यद्यपि, मैं इसे नहीं जानता था, ये हीरोशिमा पर की गई परमाणु बमवर्षा थी, पहले बम का दिन 6 अगस्त 1945 था।

जापानियों के पास, मेरे लिये कोई समय नहीं था, मैने सोचा, उन्हें पूरा समय, खुद को देखने के लिये आवश्यक था, और इस प्रकार, मैं एक वर्दी को, एक टोपी को, और सेंडल के एक मजबूत जोड़े को, पाने में कामयाब हो सका। मैं, बिना संतरी वाले पतले से एक दरवाजे में से हो कर, लडखडाते हुए, खुली हवा में बाहर चला और समुद्रतट की ओर अपना रास्ता बनाया, जहॉ मुझे एक मछुआरी नाव मिल गई। स्पष्टरूप से, जैसे ही बम गिरा, आतंक के कारण उसका मालिक भाग गया था, क्योंकि वह

कहीं भी निगाह में नहीं आ रहा था। नाव अपने लंगरों पर, पूरी तरह अलसाई हुई नाच रही थी। उसकी तली में बासी मछलियों के कुछ टुकड़े पड़े थे, जिनमें से सड़ने की बदबू आना शुरू हो गया था। वहॉ पडौस में, एक छोड़ी हुई कट्टी (can) थी, जिसमें बदबूदार पानी भरा था। पीने लायक, परन्तु केवल ठीक था। मैंने नाव को तट पर पकडने वाली झीनी रस्सी को काट दिया और नाव को खींच दिया। कुछ घण्टों बाद जब मैंने पतवारों को ताना, हवा ने फटी हुईं पतवारों को भर दिया और तब नाव ने अज्ञात स्थान की ओर रुख किया। ये प्रयास मेरे लिये बहुत भारी था। मैं लगभग मरा हुआ, बेहोश सा, तली में लुढ़क गया।

बहुत समय बाद, कितनी देर, मैं नहीं जानता, उन मछलियों की सड़ी हुई अवस्था को देख कर, मै केवल यह निर्णय कर सकता हूॅ कि मैं, भोर के अंधेरे में जागा। नाव दौड रही थी, और छोटी–छोटी लहरें कमान को तोड़ रहीं थीं। मैं निमोनिया से बहुत बुरी तरह बीमार था, इसलिये पानी को उलीचने के लिये, मुझे अपने कंधों के बल लेटना पडा, मेरे शरीर का सारा निचला हिस्सा, बेकार, नमकीन पानी में था, जो लगभग पूरा का पूरा खंगालना था। दिन में, बाद के समय, सूर्य अंधा कर देने वाली शक्ति के साथ निकला। मैंने अनुभव किया मानो मेरे सिर में मेरा मस्तिष्क, उबल रहा है। मानो मेरी ऑखें जल कर बाहर निकलीं पड़ रहीं हैं। मैने महसूस किया मानो, मेरी जीभ बढ़ कर मेरी बाँह के आकार की हो गई थी। दर्द मेरे लिये बहुत अधिक था। मैंने अनुभव किया कि, मेरे फैंफडे फटे जा रहे थे, और मैं जानता था कि, एक बार फिर निमोनिया ने, मेरे दोनों फैंफडों पर आक्रमण कर दिया था। दिन की रोशनी मेरे सामने हल्की पड़ गई, और मैं फिर बकबास पानी में, अचेत होकर डूब गया।

समय का कोई मतलब नहीं था, समय लाल धब्बों की एक श्रंखला मात्र थी, जिसमें अंधेरे के कुछ चिन्ह लगे थे। मेरे अंदर दर्द बढ़ा और मैं जीवन और मृत्यु की सीमाओं के बीच उछलता रहा। सहसा वहॉ, एक जोर का झटका लगा, और नीचे नाव के पेंदें में कंकड़ों की मार पडी। मस्तूल हिला, मानो कि ये चटक जायेगा, और पगलायी सी तेज हवा में मस्तूल के चिथड़े उड़ गए, और अचेत मैं, नाव में नीचे की ओर, आगे की ओर, घूमती हुईं भवरों के बीच, बदबूदार पानी के बीच, फिसल गया।

''जी (Gee), नाव के तली में वहॉ चिपचिपा सा कुछ है, निश्चितरूप से मुझे कड़ा, कठोर सा दिखाई देता है। चेतनता की एक झलक के साथ, नकुआती हुई (nasal) आवाज उभरी। हिलने में असमर्थ, ये दिखाने में भी असमर्थ कि, मै अभी भी जिन्दा था, मैं वहॉ पड़ा रहा।

''तुम्हारे साथ क्या परेशानी है ? मुर्दे की तरह पड़े हो ? हमें नाव चाहिये, क्या हमें नहीं चाहिये ? अपना हाथ पकड़ाओ, हम उसे उठा कर बाहर फेंक देंगे।''

भारी कदम नाव के ऊपर नाचने लगे और उन्होंने मेरे सिर को कुचल देने की धमकी दी।

''आदमी, ओह आदमी !'' पहली आवाज ने कहा, ''वह बेचारा लड़का, वह निश्चित ही ठंड के अनावरण (exposure) से पिट गया है। हो सकता है, वह अभी सांस ले रहा हो, हेंक (Hank), तुम्हारा क्या विचार है।''

''ऑ, रुको वेलियाचिन (Bellyachin), वह पूरी तरह मर गया है। उसे उठा कर बाहर फेंक दो। हमारे पास बर्बाद करने के लिये, समय नहीं है।''

कठोर कड़े हाथों ने मुझे सिर और पैर से पकड़ा। मुझे एक बार, दो बार, झुलाया गया, और तब बाहर फेंक दिया गया और मैं उस कंकड और बालू वाले समुद्रतट पर, हड्डी तोडने वाली टक्कर के साथ, गिरने के लिये, नाव के एक किनारे से लटक गया। दोनों आदमी, एक बार भी पीछे देखे बिना, उतार–चढ़ाव में, धँसी हुई नाव के कारण, तनाव में रहे और उन्होंने, कराहते और बद्दुआयें देते हुए, छोटे पत्थरों और चट्टानों को एक तरफ फेंकते हुए, फंसी हुई नाव पर, मेहनत की। अंत में, नाव स्वतंत्र हुई और जाली के साथ चरमराती हुई, धीमे से, पानी में पीछे की तरफ तैर गयी। इस भगदड़ में, किसी कारण से, जिसका मुझे पता नहीं, दोनों आदमी, पागलों की तरह चीखते चिल्लाते, बेढंगे मार्गों की श्रंखला में

कहीं और चले गये।

सूर्य जलने लगा। बालू में मौजूद छोटे प्राणियों ने मुझे काटा, और मुझे उन दैत्यों की प्रताडना झेलनी पडी। धीमे–धीमे दिन बीतता गया, जब तक कि अंत में सूर्य डूब नहीं गया। पानी ने मेरे पैरों के ऊपर उछाल मारी और रेंग कर मेरे घुटनों तक आ गया। और ऊॅचा। मैं विलक्षण प्रयास के साथ, अपनी कोहनियों को रेत में घुसाते हुए, छटपटाते हुए, संघर्ष करते हुए, कुछ फुट रेंग कर चला। तब गुमनामी।

घण्टों बाद, और ये कुछ दिन भी हो सकते हैं, मैं सूर्य की किरणों को अपने ऊपर पडते हुए पा कर, जग गया। कॉपते हुए, मैंने अपना सिर घुमाया और चारों तरफ देखा। आसपडौस पूरी तरह से अपरिचित था। मैं चिघांड़ते हुए और चमकते हुए समुद्र से कुछ दूरी पर, एक कमरे वाली, एक छोटी झोंपड़ी में था। जैसे ही मैंने सिर घुमाया तो देखा कि एक बहुत बूढा, बौद्ध पुजारी, मेरी देखरेख कर रहा था। फर्श पर मेरे बगल में बैठा हुआ, वह मुस्कुराया और मेरी तरफ आया। हमने, रुकते–अटकते, और कुछ अधिक परेशानी के साथ बातचीत की। हमारी भाषायें समान थीं परन्तु एक नहीं, और काफी प्रयास के बाद, शब्दों को विस्थापित करते हुए और दोहराते हुए, हमने स्थिति पर विचार–विमर्श किया।

''कुछ समय के लिये'' पुजारी ने कहा, ''मुझे ज्ञात था कि, मेरे पास एक प्रतिष्ठित यात्री आयेगा, जिसके पास जीवन में करने के लिये महान कार्य है। मैं यद्यपि बूढ़ा था परन्तु, मैंने अपने जीवन को तब तक खींचा जब तक कि, मेरा कार्य पूरा न हो जाये।''

कमरा बहुत साधारण था एकदम साफ, और वह वृद्ध पुजारी, स्पष्टरूप से, भूखे मरने की कगार पर था। वह एकदम क्षीणकाय था और उसके हाथ, कमजोरी और आयु के कारण, काँप रहे थे। उसकी दुर्घटनाओं और आयु के प्रभावों से हल्की पड़ती पुरानी पोशाक, जहॉ उसने मरम्मत की थी, साफ, स्पष्ट टांकों (stitches) से सुधारी गई थी।

''हमने तुम्हें नाव से फेंके जाते हुए देख लिया था,'' उसने कहा, ''काफी समय तक, हमने सोचा तुम मुर्दा हो, लुटेरों और डाकुओं के कारण, हम तट तक नहीं पहुॅच सके। रात शुरू होते ही, गाँव के दो आदमी बाहर निकले और तुम्हें मेरे पास लाये। परन्तु यह पॉच दिन पहले हुआ था; तुम वास्तव में, बुरी तरह बीमार रहे हो। हम जानते है कि, तुम बहुत लंबी यात्रा करने के लिये जिंदा रहोगे और जीवन बहुत कठोर रहेगा।''

कठोर! मुझे हर आदमी, अक्सर यह क्यों कहता है कि, जीवन कठोर होगा ? क्या वे सोचते हैं कि, मैं इसे पंसद करता हूॅ ? निश्चितरूप से ये कठोर था, हमेशा रहा है, और मै कठोरता को उतना ही नापंसद करता हूॅ जितना कि, कोई और।

''ये नाजी है,'' पुजारी ने कहना जारी रखा। 'हम गाँव की बाहरी परिधि में हैं। जैसे ही तुम इस योग्य हो जाओ, तुमको यहाँ से जाना पड़ेगा क्योंकि, मेरी स्वयं की मृत्यु समीप ही है।''

दो दिन तक, अपनी शक्ति को प्राप्त करने के लिए, जीवन के सूत्रों को पुनः पकड़ने के लिए, मैं सावधानी से आसपड़ौस में घूमा–फिरा। मैं कमजोर था, भूखा था, और लगभग देखभाल के परे कि, मैं जिंदा हूॅ या मुर्दा। वृद्ध पुजारी के कुछ दोस्त, मुझे मिलने आये और उन्होंने सुझाव दिया कि, मुझे क्या करना चाहिए, और मुझे किस प्रकार यात्रा करनी चाहिए। तीसरी सुबह, जैसे ही मैं जगा, मैंने वृद्ध पुजारी को अपने बगल में, ठंडा और कठोर, लेटे हुए देखा। अंधेरे में ही, उसने अपने जीवन के ऊपर, अपनी पकड़ छोड़ दी थी। हमने एक कब्र खोदी और उसे दफना दिया। मैंने जो कुछ भी थोड़ा खाना बचा था, उसे एक कपड़े में लपेटा और मदद करने के लिए, एक मजबूत डंडा अपने साथ में ले कर चल दिया।

एक मील या ऐसा ही कुछ चलने पर, मैं बुरी तरह थक गया। मेरी टांगें कांपी और मेरा सिर, मेरी दृष्टि को धुंधला करते हुए, घूमता हुआ सा दिखाई दिया। कुछ समय के लिए, आसपास गुजरने

वाले राहगीरों की निगाह से बचा हुआ, मैं समुद्रतट के साथ वाली सड़क के बगल से पड़ा रहा क्योंकि, मुझे ये चेतावनी दी गई थी कि, अजनबियों के लिए, ये वास्तव में, खतरनाक जिला है। यहाँ, मुझे बताया गया था कि, कोई भी आदमी, यदि उसके हाव–भाव, हथियारबंद ठगों को, जो जिले को बड़े पैमाने पर आतंकित करते हुए घूमते थे, प्रसन्न न कर सके, अपने जीवन को गॅवा सकता है।

अंत में, मैंने अपनी यात्रा पुनः प्रारंभ की और उन्गी (Unggi)[13] की ओर अपनी राह पकड़ी। मेरे मुखबिरों ने मुझे स्पष्ट निर्देश दे दिए थे कि, रूसी क्षेत्र में सीमा को कैसे पार किया जाए। मेरी हालत खराब थी, जल्दी–जल्दी विश्रामों की आवश्यकता होती थी, और ऐसे ही एक मौके पर, मैं एक सड़क के किनारे, आलसी ढंग से, भारी यातायात को देखता हुआ बैठा था। मेरी निगाहें समूह से समूह तक फिरती रहीं जब तक कि मैं, भारी रूप से शस्त्रों से सुसज्जित और तीन बड़े–बड़े मास्टिफ (mastiff) कुत्तों के साथ, पाँच रूसी सैनिकों के समूह की ओर आकर्षित नहीं हुआ। किसी कारण से, उसी समय, सैनिकों मे से एक ने, मुझे देख लिया। अपने साथियों से बात करते हुए, उसने तीनों कुत्तों को जंजीर खोल कर, मुझ पर छोड़ दिया, जो अपनी गुर्राहट, चिड़चिड़ाहट, और गुलामी के पंजों की तीखी उत्तेजना के साथ, अत्यंत तेजी से मेरी तरफ आये। अपनी छोटी मशीनगनों के घोड़ों पर उंगली रखते हुए, सैनिक मेरी तरफ आगे बढ़े। जैसे ही कुत्ते आये, मैंने उनकी तरफ मित्रतापूर्ण विचार भेजे; जानवरों को मुझसे कोई डर अथवा मेरी नापसंदगी नहीं थी। अचानक ही वे पूंछों को हिलाते हुए, लार टपकाते हुए और चाटते हुए और दोस्ती से मुझे लगभग मारते हुए, क्योंकि मैं कमजोर था, मेरी ओर आए। एक तेज आदेश, और अब मेरे ऊपर खड़े हुए कुत्ते, सैनिकों के पैरों में दुबक गये। ''आह!'' प्रभारी नायक (corporal) ने कहा, 'आप यहीं के मूल निवासी और एक भले रूसी होने चाहिए, अन्यथा इन कुत्तों ने आपको टुकड़ों में फाड़ दिया होता। वे इसके लिए ही प्रशिक्षित हैं। थोड़ी देर देखो ओर तुम्हें पता चल जायेगा।'

अनिच्छित कुत्तों को, जो मेरे साथ रुकना चाहते थे, खींचते हुए, वे टहलते गए। कुछ मिनट बाद, कुत्ते अविलंबरूप से अपने पैरों पर उछल पड़े और तेजी से सड़क के किनारे झाड़–झंकार की ओर चल दिए। वहाँ से, अचानक झागदार बुलबुलों के साथ बंद हुईं, डराने वाली चीखें आईं। मेरे पीछे भागदौड़ हुई, और जैसे ही मैं घूमा, कलाई पर से कटा हुआ, खून में सना एक हाथ, मेरे पैरों पर गिरा, जबकि कुत्ता वहाँ अपनी दुम हिलाता हुआ खड़ा था।

''कॉमरेड, नायक ने, मंथर गति से चलते हुए कहा,' इसके लिये वास्तव में, तुम्हें सार्जेंट के प्रति वफादार होना चाहिए। हम अपने आधार, क्रासकीनो (Kraskino)[14] पर जा रहे हैं। तुम भी चल रहे हो, क्या तुम पाँच लाशों के साथ, वाहन पर सवारी करना चाहोगे ?''

''हाँ, कॉमरेड नायक, मैं आपके प्रति अति आभारी होऊँगा,'' मैंने जवाब दिया।

अपने बगल में, अपनी दुमों को हिलाते हुए कुत्तों के साथ, टहलते हुए, रास्ते में चलते हुए, उन्होंने मुझे ट्रेलर (trailor) जुड़े हुए, हाफ ट्रेक (half track)[15] वाहन पर, ले लिया। ट्रेलर के एक कोने में से, गंदे तरीके से छप–छप करती हुई, खून की एक पतली धार, जमीन पर बही। आकस्मिकरूप से वहाँ लगी लाशों के ढेर पर नजर डालते हुए, उसने उन मरते हुए लोगों के छुटपुट संघर्ष को, अधिक आशयपूर्ण तरीके से देखा। उसने अपनी रिवाल्बर खींचते हुए, उसके (तड़फती हुई

---

13 अनुवादक की टिप्पिणी : सनबोंग (Sonbong) काउंटी, जिसे पहले उन्गी के नाम से जाना जाता था, उत्तरी कोरिया के रासन (Rason) जिले का एक भाग है, जो उत्तरी कोरिया देश के, उत्तरी पूर्वी किनारे पर में स्थित है। ये टूमेन (Tuman) नदी के दक्षिण–पूर्व किनारे पर 16 मील दूर, रूस और चीन की सीमा पर है। यह उन्गी खाड़ी पर स्थित है, जो जापान सागर का एक विस्तार है। यहाँ यूरेनियम की एक खदान है। यहां 200 मेगावाट क्षमता का खनिज तेल से बिजली उत्पादन करने का प्लांट लगा है। कोरियन भाषा में सोनबोंग का अर्थ 'अग्रगामी सेन्य टुकड़ी' (vanguard) होता है।

14 अनुवादक की टिप्पिणी : रूस कें खासान्स्की (khasansky) जिले में, क्रासकीनो एक शहरी क्षेत्र है, जो व्लाडीबोस्टक से 175 मील दक्षिण की तरफ, पोसयट (Posyet) खाड़ी के किनारे पर और उत्तरी कोरिया की सीमा के समीप स्थित है। 2010 इसकी आबादी लगभग 3250 थी। यह 1990 में स्थापित किया गया था। 1936 में इसे वर्तमान नाम लेफ्टीनेन्ट मिखाली क्रासकिन, जो सीमा विवाद में शहीद हुए थे, के नाम पर क्रासकीनो रखा गया।

15 अनुवादक की टिप्पिणी : अर्द्ध पथ (half track), सेना द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला एक वाहन (आधी बॉडी का ट्रक) होता है, जसके मात्र पिछले दो पहिये ही गियर द्वारा चलते हैं।

लाश के) सिर में गोली मारी, और फिर से अपनी बंदूक को चमड़े के खोल में रख दिया और तब हाफ ट्रेक पर, बिना पीछे मुड़े और देखे, चल दिया।

मुझे हाफ ट्रेक में पीछे की सीट दी गई थी। सैनिक अच्छी मनःस्थिति में थे, शेखी बघारते हुए कि, जब वे अपने कर्तव्य पर थे, कभी भी किसी विदेशी ने सीमा को पार नहीं किया, मुझे यह बताते हुए कि योग्यता के लिए उनके प्लाटून को लाल सितारा पुरुष्कार मिला है। मैंने उन्हें बताया कि, मैं पहली बार, और ये आशा करते हुए कि, मुझे भाषा की कोई परेशानी नहीं होगी, महान शहर व्लाडीवोस्टक (Vladivostak) को देखने के लिए यात्रा पर था। ''ऑ!'' नायक ने ठहाका लगाया। ''इन कुत्तों को वहाँ विश्राम दिलाने के लिए ले जाते हुए, जो कि मानवरक्त के अत्यधिक आदी हो जाने के कारण, इतने खराब हो गए हैं कि, हम भी इन्हें संभाल नहीं सकते हैं, हमारा आपूर्ति करने वाला एक ट्रक, वहॉ जा रहा है। तुम इनके साथ रास्ते में रहो। हमारी तरफ से इनकी देखभाल करो और हम तुम्हें कल व्लाडी ले जायेंगे। तुमने हमें समझा, तुम इस जिले में हर जगह समझे जाओगे– ये मास्को नहीं है।''

इसलिए, साम्यवाद के कट्टर विरोधी मैंने, एक रात उन रूसी सीमागस्त के सैनिकों के अतिथि के रूप में गुजारी। शराब, औरतें और गाने मुझे प्रस्तावित किए गए, परंतु मैंने उम्र और खराब स्वास्थ्य की दुहाई दी। लंबे, काफी लंबे समय के लिए, उत्तम, सादा खाना मेरे अंदर रहते हुए, और बिना किसी असुविधा के, चेतना के साथ, मैं जमीन पर सो गया।

नायक, एक कोई दूसरी पदवीधारी, तीन कुत्ते और मैं, हम सभी सुबह व्लाडीबोस्टक को चले। और इस प्रकार, तीखे जानवरों के साथ अपनी मित्रता की बदौलत, मैं बिना किसी परेशानी के, बिना पैदल चले हुए, और अपने अंदर काफी खाना होते हुए, व्लाडीबोस्टक पहुँच गया।

अध्याय तीन

सड़क धूल और गड्ढों से भरी थी। जैसे–जैसे हम आगे चलते गए, हमें सशस्त्र ओवरसियरों के प्रभार में, गहरे–गहरे गड्ढों को, पत्थरों अथवा कोई भी चीज, जो हाथ में हो, से भरते हुए, औरतों के झुंड मिलते गए। जैसे–जैसे हम आगे बढ़े, मेरे साथ के सैनिकों ने जम्हाइयाँ लीं, फूहड़पन की फबतियाँ कसीं, और सुझाव देने वाले इशारे किए।

हम एक घनी आबादी वाले जिले से हो कर तब तक आगे गुजरे, जब तक कि हम उन मनहूस इमारतों की ओर नहीं आ गए, जो जेलें रहीं होंगीं। हाफ ट्रेक, तैयार किए गए प्रांगण में चलता गया। वहाँ कोई नजर नहीं आ रहा था। आदमी व्याकुलता से आसपास देख रहे थे। तब, ज्यों ही, चालक ने इंजन को बंद किया, हम तुरंत, आदमियों के शोर और कुत्तों के भौंकने की तीखी और ऊँची–ऊँची आवाजों से सावधान हो गए। हम, मैं सैनिकों के साथ, जल्दी से आवाज के स्रोत की तरफ गए। पत्थर की एक ऊँची दीवार में बने हुए खुले दरवाजे से गुजरने पर, हमने मजबूत, कठोर, कटीले तारों से घेरा हुआ, एक अहाता देखा, जिसमें लगभग पचास बड़े मास्टिफ (Mastiff) कुत्ते रखे हुए, लगे।

शीघ्र ही, अहाते के बाहर, सैनिकों की भीड़ के किनारे से, एक आदमी ने अपनी कहानी सुनाई। मानवीय खून के प्यासे कुत्ते, उनके नियंत्रण के बाहर हो गए हैं और उन्होंने अपने रखवालों में से दो को, मार कर खा डाला है। एक सहसा पदचाप, और जैसे ही भीड़ खिसकी और हिली, मैंने तीसरे आदमी को, कटीले दीवार के ऊपर चिपका हुआ देखा, तार से उसकी पकड़ छूटी और वह कुत्तों के ऊपर गिर गया। वहाँ एक भयावह चीख निकली, वास्तव में, खून जमा देने वाली एक आवाज, तब कुत्तों के कर्कश स्वर में गुर्राने की सामूहिक आवाज, और कुछ नहीं। नायक मेरी ओर मुड़ा, ''हे, तुम! कुत्तों को नियंत्रित कर सकते हो।'' तब अपने बगल में एक सैनिक की ओर मुड़ते हुए बोला, ''कॉमरेड, कप्तान को इस तरफ आने को कहो, और उन्हें बताओ कि यहॉ, हमारे पास, एक आदमी है, जो कुत्तों को नियंत्रित कर सकता है।'' ज्यों ही सैनिक जल्दी से मुड़ा, मैं उसी स्थान पर, डर के मारे, लगभग बेहोश हो गया। मैं ? हमेशा परेशानियों और खतरों के लिए मैं ही क्यों ? तब, जैसे ही मैंने कुत्तों की तरफ देखा, मैंने सोचा, ''क्यों नहीं ? ये जानवर, तिब्बती मास्टिफ कुत्तों की तरह से तीखे नहीं हैं, और ये सैनिक इन कुत्तों की ओर भय की बू से देखते हैं, इसलिए कुत्ते आक्रमण करते हैं।'' एक व्यग्र, गुस्से वाला दिखने वाला कप्तान, भीड़ में से निकला, जो आदर के साथ मेरे सामने खड़ा हुआ। मुझसे कुछ फुट दूर रुकते हुए, उसने मुझे नीचे से ऊपर तक देखा और एक अवज्ञापूर्वक हॅसी उड़ाने की मुद्रा, उसके चेहरे पर आई। 'चल हट (faugha)!, नायक, '' उसने दम्भपूर्ण ढंग से कहा, हमें यहाँ मिला क्या है ? एक अज्ञान, देशी पुजारी ?'' ''कॉमरेड कप्तान,'' नायक ने कहा,'' सीमांत के आरपार जाने वाले कगार से थोड़ा पहले, इस आदमी पर, हमारे कुत्तों ने आक्रमण नहीं किया और इसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे अहाते में अंदर भेजो, कॉमरेड कप्तान।''

कप्तान की त्योरी चढ़ गईं और उसने धूल में अपने पैर घिसे, और मेहनत से अपने नाखून चबाये। अंत में उसने ऊपर देखा। 'हॉ, मैं ऐसा करूँगा,' उसने कहा। ''मास्को ने कहा है कि, मुझे किसी और कुत्ते को गोली नहीं मारनी चाहिए, परंतु उन्होंने मुझे ये नहीं बताया कि, जब कुत्ते खून के प्यासे हों तो क्या किया जाए। ये आदमी, यदि यह मर जाता है, ठीक है, यह एक दुर्घटना थी। यदि यह जीवित रहता है, हॉलाकि, इसकी संभावना काफी कम हैं, तो हम इसे पुरुष्कृत करेंगे।'' और तब कुत्तों की ओर देखता हुआ और उन तीन रखवालों की हड्डियों की ओर झींकता हुआ, जिनको उन्होंने मार डाला था और खा गए थे, वह घूमा और थोड़ा दूर हटा। नायक की ओर घूरते हुए उसने कहा, ''इसे देखना नायक, और यदि ये सफल हो जाता है, तो तुम एक सार्जेट हो जाओगे।' इसके साथ ही वह तेजी से चलता बना।

थोड़े समय के लिए, नायक फटी हुई आँखों से खड़ा रह गया। ''मैं, एक सार्जेन्ट ? आदमी!'' मेरी ओर घूरते हुए उसने कहा, ''तुम कुत्तों को पालतू बना लो और 'सीमा सुरक्षा गश्तीदल' का हर आदमी तुम्हारा मित्र बन जायेगा। अंदर आओ।''

''ऐसा ही होगा,'' उसने उत्तर दिया, 'मेरे साथ अंदर आओ और हम उन्हें पालेंगे।'

हम मुड़े और हाफट्रेक के ट्रेलर में से बाहर निकले। मैंने तीन कुत्तों को दुलारा, उन्हें खुद को चाटने दिया, और उनकी गंध अपने ऊपर पड़ने दी। तब मुझसे बंधे हुए तीन कुत्तों के साथ और उन्हें धकेलते हुए, मैं अहाते के प्रतिबंधित प्रवेशद्वार में घुसा। यदि कोई कुत्ता भागता है, तो उस मामले में देखने के लिए, सशस्त्र प्रहरी मेरे पड़ौस में खड़े रहे। जल्दी ही दरवाजे को निरर्थकरूप से खोला गया, और मुझे मौटे तौर से अंदर धकेल दिया गया।

हर तरफ से कुत्ते मेरी तरफ दौड़े। रोचक ढंग से ''मेरे'' तीन दुलार किए हुए कुत्तों के जबड़ों ने, अधिकांश कुत्तों को मेरे बहुत नजदीक आने से निरुत्साहित किया, परंतु एक बहुत बड़ा, उग्र जानवर, स्पष्ट रूप से उस झुंड का नेता था, मेरे गले के ऊपर कातिलाना अंदाज में झपटा। मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार था और जैसे ही, मैं एक बगल को खिसका, मैंने उसके गले में जोर का झटका मारा, जूड़ो अथवा कराटे जैसा झटका, (अब लोग इसे ऐसा नाम देते हैं), जिसने उसे जमीन छूने से पहले ही मार दिया। लगभग उससे पहले, जब मैं रास्ते में से कूद कर बाहर हुआ, उसका हिलता हुआ शरीर, छींकते और झपटते और संघर्ष करते हुए कुत्तों के समूह से ढक गया। आवाजें वीभत्स थीं।

कुछ क्षणों के लिए बचाव रहित, बिना हथियारों के, कुत्तों के प्रति केवल दया और मित्रता के विचार को सोचते हुए, विचार के द्वारा उन्हें बताते हुए कि, मैं उनसे भयभीत नहीं था, कि मैं उनका स्वामी था, मैंने प्रतीक्षा की। तब वे पलटे, और मेरे अंदर एक क्षण के लिए घृणा का भाव आया, जब मैंने उस नंगे कंकाल को देखा, जो कुछ क्षणों पहले उनका नेता था। कुत्ते मेरी तरफ मुड़े। मैं जमीन पर बैठा और उनसे भी ऐसा ही करने की आशा की। वे मेरे सामने, आधे गोल घेरे में, पंजे फैलाते हुए, मुस्कुराते हुए, आराम से अपनी जीभों को निकाले हुए और पूंछ से अगल बगल में झाड़ते हुए, दुबक कर बैठ गये।

मैं खड़ा हुआ और सर्ज को अपनी तरफ बुलाया। अपना हाथ उसके सिर पर रखते हुए, मैंने जोर से कहा, ''सर्ज अबसे आगे तुम इन कुत्तों के नेता होगे, और तुम मेरी आज्ञा मानोगे और ये देखोगे कि, ये भी मेरी आज्ञा मानें।'' अहाते के बाहर से हर्षध्वनि की एक स्वच्छंद आवाज आई। मैं सैनिकों के बारे में पूरी तरह भूल चुका था! ज्योंही मैं मुड़ा, मैंने देखा कि वे मित्रता में अपने हाथ हिला रहे थे। कप्तान, उसका चेहरा उत्तेजना से भरा हुआ था, तारों के समीप आया और चिल्लाया, ''उन रखवालों की लाशों को अथवा उनके कंकालों को बाहर लाओ।'' खिन्न मन से, मैं पहली लाश की ओर गया, फाड़ा हुआ शरीर, छाती की हड्डियाँ मांस से रहित। मैंने उसे एक हाथ से लिया और खींचा, परंतु भुजा कंधे से अलग हो गई। तब मैंने, आदमी को, उसके अंतरंग पीछे घसीटते हुए, उसके सिर से खींचा। सभी डर के मारे तेजी से हांफ रहे थे, और मैंने देखा कि उस आदमी की भुजा को लिए हुए, सर्ज मेरे बगल में चल रहा था। परिश्रम पूर्वक, मैंने तीनों लाशों को, अथवा उनमें जो कुछ भी बचा था, हटाया। तब वास्तव में, थकान से पूरी तरह टूटा हुआ मैं, प्रवेशद्वार पर चढ़ा और बाहर निकल गया।

कप्तान मेरे सामने खड़ा हुआ, ''तुम में बदबू आ रही है!'' उसने कहा ''उन लाशों की गंदगी को साफ करके आओ। तुम इन कुत्तों की देखभाल करते हुए, यहाँ एक महीने तक रहोगे। एक महीने के बाद, वे अपने गश्त पर चले जायेंगे और तब तुम जा सकते हो। तुम्हें एक नायक का वेतन मिलेगा।'' अब वह नायक की तरफ मुड़ा और उसने कहा, 'जैसा मैंने वचन दिया था, तुम इसी क्षण से सार्जेन्ट हो।'' वह घूमा और स्पष्ट रूप से पूरे मामले पर काफी खुश होता हुआ, टहलता हुआ बाहर चला गया।

सार्जेन्ट ने मेरे ऊपर केन्द्रित किया। ''तुम जादूगर हो! मैं यह कभी नहीं भूलूंगा कि, तुमने उस

कुत्ते को कैसे मारा। कप्तान की एक पैर से दूसरे पैर तक उछलती हुई निगाह, जो इस पूरे मामले का फिल्मांकन कर रही थी, कभी नहीं भूलूंगा। तुमने स्वंय के लिए, एक काफी बड़ी चीज प्राप्त कर ली है। पिछली बार भी हमारे यहाँ कुत्तों का विद्रोह हुआ। हमने छः आदमी और चालीस कुत्ते खोये। मास्को कैप्टन की गर्दन पर भारी पड़ा। उसे बताया गया कि, यदि उसने इसी प्रकार औरअधिक कुत्ते गवांये तो क्या होगा। वह तुम्हें भली भांति व्यवहार करेगा। लेकिन आओ, जैसा कप्तान ने कहा, तुम में से बदबू आ रही है। पूरी गंदगी को धो डालो। मैं हमेशा अंडराई (Andrei) को कहता था कि, वह बहुत खाता है और दुर्गंध निकालता हैं, अब मैंने उसको टुकड़ों में देखा है और मैं जानता हूँ, मैं सही था।'' मैं बहुत थका हुआ था, इतना थका हुआ कि, इतना बीभत्स हास्य भी मुझे हिला नहीं सका।

आदमियों का एक समूह और नायक, भोजनालय के हॉल में, जोर से ठहाका लगा रहे थे, उन्होंने सार्जेन्ट को कुछ कहा। वह चीखा, और तेजी से मेरी ओर झपटा। ''कैसे! कैसे! कॉमरेड पुजारी,'' वह तेजी में बोलता गया, आँखें प्रसन्नता से भरीं हुईं। ''वे कहते हैं कि, तुम्हारे अंदर ऐन्ड्राई के अंदर का बहुत कुछ है, जो तुम्हारे बाहर दिखता है, और चूंकि वह मर चुका है, उसके सारे सामान को तुम्हें ले लेना चाहिए। उसका कोई रिश्तेदार नहीं है। जब तक तुम यहाँ रहोगे, हम तुम्हें कॉमरेड, कोरपोरल ऐन्ड्राई, कह कर बुलाने वाले हैं। अब तक जो कुछ उसका था, सो सब कुछ तुम्हारा है। जब मैंने इस अहाते में तुम्हारे ऊपर दाँव लगाये, तुमने मेरे लिए बहुत से रूबल जीते हैं। तुम मेरे दोस्त हो।''

सार्जेन्ट वोरिस दिल का एक बहुत अच्छा इंसान था। व्यवहार में अशिष्ट, रूखा, और बिना किसी शिक्षा का दिखावा करते हुए, अपनी पदोन्नति पाने के लिए, उसने अभी भी मुझसे काफी मित्रता प्रदर्शित की है – ''अन्यथा मैं अपने पूरे जीवन में नायक ही बना रहता,'' उसने कहा– और उसने मेरे लिए काफी बड़ी संख्या में रूबल जीते हैं। कई लोग यह कहते रहे हैं कि, मुझे कुत्तों के अहाते में जाने का अवसर नहीं मिला। बोरिस ने यह सुना और उसने कहा, 'मेरा आदमी भला है। जब हमने उसके ऊपर कुत्ते छोड़े, तो तुमने उसे देखा होता, वह नहीं हिला। प्रतिमा की तरह बैठ गया। कुत्तों ने सोचा वह उनमें से एक हैं। तुम देखोगे, वह उस भीड़ को सीधा कर लेगा। ''

''मैं इस पर शर्त लगाता हूँ, मोरिस ?'' एक आदमी चीखा।

''मैं तीन महीने का वेतन तुम्हें दूँगा,'' मोरिस ने कहा। सीधे परिणाम के रूप में, वह लगभग साढ़े तीन वर्षों का वेतन जीत चुका था और आभारी था।

उस रात, एक बहुत अच्छे, रात के खाने के बाद, क्योंकि सीमा के गश्ती लोग अच्छी तरह रह रहे थे, मैं कुत्तों के अहाते के बगल में, एक गर्म झोपड़े में सोया। सूखी एक्सपार्टो (exparto) घास से, गद्दा पूरी तरह भरा हुआ था और लोगों ने, मेरे लिए, नये कंबल प्राप्त कर लिए थे। मुझे उस प्रशिक्षण के लिए, जिसने मुझे जानवरों की प्रकृति को इतनी अच्छी तरह से सिखाया, मेरे पास, उसके प्रति पूरी तरह कृतज्ञ होने का प्रत्येक कारण था।

पहली ही रोशनी पर, मैं कपड़े पहन कर कुत्तों को देखने गया। मुझे यह बता दिया गया था कि, उनका खाना कहाँ रखा गया है, और मैंने देखा कि, अब उन्हें वास्तव में, बहुत अच्छा खाना दिया जा रहा है। पूंछें हिलाते हुए, वे मेरे आसपास इकट्ठे हो गये, और कभी–कभी उन्होंने अपने पैर के पंजों को उठाया, मेरे कंधों पर रखा। मैंने आसपास देखा, और ऐसे एक मौके पर, कप्तान वहाँ वास्तव में, तारों के बाहर देखता हुआ, खड़ा था। ''आह! पुजारी,'' उसने कहा, 'मैं केवल यह देखने के लिए यहाँ आया हूँ कि, यह कुत्ते इतने शांत क्यों हैं। रक्षक को बाहर खड़े रह कर, खाना अंदर फेंकते हुए, कुत्ते अपना हिस्सा पाने के लिए एक दूसरे को फाड़ खाते हुए, उनको खाना खिलाने का समय, पागलपन और लड़ाई का समय होता था। मैं तुमसे कोई प्रश्न नहीं पूछूँगा, पुजारी। चार से पाँच सप्ताह तक, जब तक ये सभी कुत्ते यहाँ से बाहर न चल जाऐं, अपने यहाँ रहने के लिए मुझे वचन दो, और

तब तुम उस स्थान और शहर को जा सकते हो, जहॉ जाना चाहते हो।

''कॉमरेड कप्तान,'' मैंने उत्तर दिया, ''जब तक कि, ये सारे कुत्ते यहाँ से नहीं चले जाते, तब तक मैं आपको यहाँ रहने का सहर्ष वचन देता हूँ, तभी मैं अपनी राह पर होऊँगा।''

''दूसरा काम, पुजारी,'' कप्तान ने कहा। अगले खाना खिलाने के समय, मैं अपना सिनेमा कैमरा लाऊँगा और एक फिल्म खींचूँगा ताकि, वरिष्ठ लोग यह देख सकें कि, हमने कुत्तों को, कैसे अपने बस में रखा। क्वार्टर मास्टर (quarter master) के पास जाओ और नायक की एक नई बर्दी ले लो, और यदि अहाते में अपनी मदद के लिए तुम किसी को उपयोगी समझते हो तो तुम उन्हें ले कर, पूरी तरह अहाते को साफ करा लो। यदि वे डरें तो तुम स्वयं उसे करो।'

'मैं इसे खुद ही करूँगा, कॉमरेड कप्तान,'' मैंने उत्तर दिया, ''तब कुत्ते परेशान नहीं होंगे।''

कप्तान ने रुखाई से सिर हिलाया, और चला गया, स्पष्ट रूप से एक बहुत प्रसन्न आदमी, जो यह बता सकता था कि, उसने किस प्रकार से खून के प्यासे कुत्तों की व्यवस्था की!

तीन दिन तक, मैं कुत्तों के अहाते से सौ गज से अधिक दूरी तक नहीं हिल सका। ये सभी आदमी ''प्रचंड रूप से प्रसन्न'' थे' और उन्होंने, ''उस हालत में कि, यदि वहाँ कोई जासूस छिपा होता'' झाड़ियों में गोलियाँ चलाने के लिए, कभी नहीं सोचा, जैसा उन्होंने कहा।

अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करते हुए, और उन आदमियों के साथ घुलते मिलते हुए, उन्हें जानते हुए, उनकी आदतों को जानते हुए, तीन दिन के लिए मैंने विश्राम किया। एन्ड्राई मेरे समान ही आकार का था, इसलिए उसके कपड़े मुझे ठीक–ठीक ही आ गए। उसकी हर चीज को धोना और दुबारा धोना पड़ा क्योंकि, वह सफाई के लिए उल्लेखनीय नहीं था। मुझसे बातचीत करने के प्रयास में, कप्तान कई बार मेरे पास आया, परंतु जब तक वह अभिरुचिपूर्ण और पर्याप्त मित्रतापूर्ण दिखाई दिया, मुझे सही ढंग से, साधारण पुजारी की अपनी भूमिका को याद रखना पड़ा, जो मात्र बौद्धधर्म के धर्मग्रन्थों और कुत्तों की समझ रखता है ! वह, यह कहते हुए धर्म की हँसी उड़ाता कि, मृत्यु के बाद जीवन नहीं हैं, फादर स्टालिन (Stalin)[16] के सिवाय, कोई ईश्वर नहीं है, कुछ नहीं। एक बेचारे पुजारी के रूप में, उस ज्ञान से अधिक नहीं, जिसे गाँव के पुजारी से रखे जाने की आशा की जाती है, मैं धर्मग्रंथों के उदाहरण देता।

ऐसे ही एक विचार विमर्श में, कुत्तों के अहाते के विरूद्ध झुका हुआ, घास के एक तिनके को आलस्यपूर्ण ढंग से चबाता हुआ, बोरिस उपस्थित था। 'सार्जेन्ट', कप्तान क्रोध में, विस्मय से, चिल्लाया। ''पुजारी, अपने छोटे गॉव से कभी बाहर नहीं गया है। उसे आसपास ले जाओ और शहर दिखाओ। उसे आरटेम (Artem) और राजडोलनोय (Rajdol'noye) के गश्त पर ले जाओ। उसे जीवन दिखाओ। यह सोचते हुए कि, यही जीवन है, वह केवल मृत्यु के बारे में जानता है।'' उसने जमीन पर थूका, एक प्रतिबंधित सिगरेट सुलगाई, और पीछे धकेल दिया।

''हॉ चले आओ पुजारी, तुम लंबे समय तक कुत्तों के साथ रहे हो, इसलिए तुम कुत्तों जैसे दिखने लगे हो। यद्यपि, मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि, अब तुम भली भांति दिखते हो, और तुमने मेरे लिए पैसे का ढेर जीता है, पुजारी, मैं इसके साथ हवा में उड़ूँगा, और मरने से पहले, मैं इसे पूरी तरह खर्च कर दूँगा।''

उसने एक कार की तरफ, मेरे रास्ते की अगुवाई की, अंदर बैठा, और मुझे भी ऐसा करने का इशारा किया, उसने इंजन को चालू किया, गियर–लीवर को चलाया, और मुझे क्लिच दे दिया। हम

---

16 अनुवादक की टिप्पिणी : जोसेफ स्टालिन(Joseph Stalin) (18 दिसम्बर 1878 – 5 मई 1953) रूस का नेता था। मध्य 1920 के दशक से अपनी मृत्यु के समय तक, 1953 तक, वह रूस की साम्यवादी पार्टी के केन्द्रीय समिति का सामान्य सचिव रहा था। वास्तव में, वह राज्य का प्रभावशाली अधिनायक था। स्टालिन 1917 में बोलशेविक (Bolshevik) क्रान्ति की व्यवस्था करने के लिए बनाई गई 7 सदस्यीय समिति के सदस्यों में से एक था, जिसने रूसी क्रान्ति में 1917 में भाग लिया। उसे 1922 में, पार्टी के केन्द्रीय समिति में सामान्य सचिव पद दिया गया। लेनिन (Lenin) की मृत्यु के बाद, 1924 से उसने रूस में प्रमुख भूमिका निभाई। वह 1941 के बाद सोबियत संघ का प्रमुख रहा। वह जोर्जियन राष्ट्रीयता का था। उसकी संतानों में से एक, श्वेतलाना स्टालिन ने, भारतीय तत्कालीन विदेश मंत्री दिनेश सिंह के साथ विवाह किया था और बाद में उन्हें छोड़ कर चली गयी।

ब्लाडीवोस्टक की गड्ढेदार सड़कों पर, तंग गलियों में हंगामा करते हुए, दूर तक गए। बंदरगाह के नीचे, काफी जहाज थे, लगभग इतने अधिक, जितने कि मैंने दुनियाँ में होने की सोची थी। 'देखो, पुजारी,' बोरिस ने कहा, उन जहाजों में पकड़ कर जब्त किया हुआ सामान है। माल जो अमरीका द्वारा दूसरे देशों को उधार भेजा जाता था। वे सोचते थे कि जापानियों ने उसे पा़ लिया परंतु हम माल को रेल (ट्रान्स साईवेरियन रेलवे)[17] से वापस मास्को भेजते हैं, जहाँ पार्टी के बॉस, जिसको वे अपनी पहली पसंद समझते हैं, ले लेते हैं। हम अपनी पहली पसंद लेते हैं क्योंकि, हमने बंदरगाह के साथ व्यवस्था की हुई है। हम उनके कामों पर अपनी ऑखें मूंद लेते हैं, जबकि वे हमारे कामों पर आँखें मूंद लेते हैं। क्या तुम्हारे पास कभी घड़ी थी, पुजारी ?

''नहीं,'' मैंने उत्तर दिया, ''मैंने अपने जीवन में बहुत थोड़ी ही देखी हैं। मैं सूर्य की स्थिति और छाया से समय ज्ञात करता हूँ।''

''तुम्हें एक घड़ी लेनी चाहिए, पुजारी'' बोरिस ने कार को तेज चलाया और शीघ्र ही हम बंदरगाह के किनारे लंगर डाले हुए, एक मालवाही जहाज के पास पहुॅचे। जहाज, लाल रंग की जंग के निशानों से भरा था और सूखे नमक की फुहारों से चिनगारियाँ उड़ा रहा था। गोल्डन हॉल के आसपास की यात्रा कठिन और बेकार रही थी। एक क्रेन अपनी लंबी भुजाओं से, विश्व के विभिन्न भागों से आई हुई उपज को उतार रही थी। आदमी इशारा करते हुए और माल के जालों (cargo nets) की खींचतान करते हुए, और जहाज को खींचने के मोटे–मोटे रस्सों को खींचते हुए, चीख रहे थे। अपने साथ मुझे खींचते हुए, बोरिस बाहर की तरफ कूदा और पागलपन की तेजी से, अभी भी मुझे पीछे की ओर खींचते हुए, पगडंडी की ओर भागा।

''हमें घड़ियाँ चाहिए, कप्तान,'' वह बर्दी पहने दिखने वाले आदमी से, जोर–जोर से बोला। 'कलाई के लिए घड़ियाँ।''

दूसरों की तुलना में अधिक अलंकृत बर्दी वाला एक व्यक्ति प्रकट हुआ और हमें अपने प्रकोष्ठ में आने का प्रस्ताव किया। घड़ियाँ, कप्तान,' बोरिस झुका। ''एक इसके लिए और दो मेरे लिए। तुम किनारे पर आना चाहते हो कप्तान ? समुद्रतट पर अच्छा समय है। जो तुम्हें पसंद हो, करो। लड़कियाँ, शराब पियो, हम हस्तक्षेप नहीं करते। हमें केवल घड़ियाँ चाहिए।''

कप्तान मुस्कुराया और उसने शराबें उड़ेलीं। बोरिस ने अपनी, आवाज के साथ पी ली और मेरी उसे दे दी। ''वह नहीं पीता कप्तान, वह एक पुजारी है, जो अब कुत्ते पालने वाला बन गया है, एक कुत्ते की अच्छी देखभाल करने वाला, बहुत अच्छा दोस्त,' बोरिस ने कहा।

कप्तान अपनी शायिका (bunk) के नीचे के स्थान में गया और उसने एक डिब्बे को खींचा। इसे खोलते हुए, उसने शायद एक दर्जन कलाई घड़ियाँ दिखाईं। जितना तेजी से आँख देख सकती है, उतने में ही बोरिस ने दो सोने की घड़ियाँ उठा लीं, और उनमें चाबी भरने की चिंता किए बिना, उसने दोनों हाथों में एक–एक पहन लीं। ''एक घड़ी तुम ले लो, पुजारी,'' बोरिस ने आदेश दिया।

मैं पहुॅचा और मैंने एक क्रोमियम की ली। ''यह ठीक है, पुजारी,'' कप्तान ने कहा। ''यह स्टेनलैस स्टील की है, जलरोधक ओमेगा, एक बहुत अच्छी घड़ी,

''धन्यवाद कप्तान,'' मैंने उत्तर दिया, ''यदि आपको कोई आपत्ति नहीं है तो मैं आपकी पसंद की एक लूँगा।''

---

17 अनुवादक की टिप्पिणी : ट्रान्स साइवेरियन रेलवे, मास्को से ले कर जापान के समुद्रतट तक, 9289 किलोमीटर लम्बा, सोबियत संघ का रेल पथ है। ये दुनियाँ में सबसे लम्बी रेल लाईन है, इसकी सम्पर्क लाईनें मंगोलिया, चीन और उत्तरी कोरिया तक जाती हैं। 1916 से इसे मास्को और व्लाडीवोस्टक के बीच बिछाया गया था और तब से लगातार विस्तारित होती रही है। ये सौ बड़े और छोटे शहरों को यूरोपीय और एशियन भाग से, जिसमें समय के साथ, रूस के क्षेत्र आते हैं, जोड़ती है और इसे आदि से अन्त तक यात्रा पूरी करने में 8 दिन का समय लगता है। रूसी, जापानी युद्ध (1904–05) में इसने सेन्य परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इकहेरी लाईन होने के कारण, रूस को इस युद्ध में मात खानी पड़ी थी। 1917 में रूसी क्रान्ति के बाद, यह रेलवे, परिवहन का जीवन्त क्रम है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय में, यूरोप में शक्ति युद्ध में आपूर्ति करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसने जर्मनी और जापान के बीच, एक आवश्यक कड़ी के रूप में कार्य किया। वर्तमान में, ये रूस के आवागमन का बहुत महत्वपूर्ण साधन है। रूस के आयात का लगभग 30 प्रतिशत, इस रेल से जाता है। इस रेलवे के द्वारा, मंगोलिया और साइवेरिया में होते हुये, बीजिंग (Biejing) से हामबर्ग (hamburg) तक का रास्ता 15 दिन में तय हो जाता है, जबकि जलमार्ग से, इससे 2 या 3 गुना तक अधिक समय लगता है।

''अब मैं समझा, तुम पागल हो पुजारी,'' बोरिस ने कहा, ''एक स्टील की घड़ी, जबकि तुम सोने की ले सकते हो ?''

मैं हंसा और मैंने उत्तर दिया, ''मेरे लिए स्टील की ही काफी अच्छी है, आप एक सार्जेन्ट हैं, परंतु मैं केवल एक बहुत अस्थाई नायक ही हूँ।''

जहाज से हम ट्रांस साईवेरियन रेल के माल उतारने वाले मालखाने में गए। कामगार समूह जहाजों से चुने गए सामानों को, ट्रकों में लादने में व्यस्त थे। यहाँ से ट्रक, कोई छः हजार मील दूर, मास्को जाते। जैसे ही हम यहॉ खड़े हुए, हमारी रेल बाहर निकल गई। रेल की एक बड़ी श्रंखला को खींचते हुए दो इंजन, हर इंजन के दोनों तरफ पॉच–पाँच पहिए। दैत्याकार चीजें, जो भलीभांति रखी गईं थीं और जो रेल के बेड़े द्वारा, लगभग जीवित प्राणियों की तरह, मानीं जातीं थीं।

बोरिस ने रेलवे लाइन के साथ–साथ गाड़ी चलाई। सशस्त्र आदमी, संतरी हर जगह थे, जो गुजरती हुई रेलों में छिप कर यात्रा करने वालों को, बाहरी व्यक्तियों को, जमीन के गड्ढों में से देख लेते थे।

''आप किसी अवैध व्यक्ति के, रेल पर चढ़े होने से, अत्यधिक डरे हुए दिखाई देते हैं,'' मैंने कहा, 'यह वह चीज है, जिसे मैं नहीं समझता। क्या नुकसान होगा यदि, आदमियों को रेल की सवारी कर लेने दी जाये ?

''पुजारी'' बोरिस ने जबाव दिया, ''तुम्हें जीवन का कोई ज्ञान नहीं है, कप्तान ने ठीक ही कहा था। पार्टी के दुश्मन, तोड़–फोड़ करने वाले, और पूंजीवादियों के जासूस, हमारे शहरों में चोरी करने की कोशिश करते हैं। कोई भी ईमानदार रूसी, इस प्रकार चलने की इच्छा नहीं करेगा, जब तक कि, सोवियत अधिकारी (commissar) द्वारा ऐसा करने के लिए निर्देशित न किया जाए।''

''परन्तु क्या काफी लोग यात्रा करने का प्रयास करते हैं ? जब आप उन्हें देख लेते हैं, तो उनके साथ क्या करते हैं ?''

''उनके साथ क्या करते हैं ? क्यों, वास्तव में, उन्हें गोली मारते हैं! यहॉ बहुत सारे चोरी–छिपे चलकर यात्रा करने वाले नहीं हैं, परन्तु कल मैं आर्टेम (Artem) जा रहा हूँ और तुम्हें मैं साथ ले जाऊँगा। वहॉ तुम देखोगे कि, हम ऐसे क्रान्तिकारी तत्वों के लोगों के साथ, किस प्रकार व्यवहार करते हैं। रेल का खेमा, जब वे उन्हें पकड़ लेता है, उसके हाथों को बॉधता है, उसकी गर्दन से रस्सा डालते हैं, और उन्हें दूर फेंक देते हैं। यद्यपि, इससे रेल का पथ गंदा (mess) हो जाता है, और भेड़ियों को प्रोत्साहित करता है।'' बोरिस चालक के सीट पर कंधे झुकाऐ बैठा था, उसकी ऑखें रेल की पटरियों पर, साथ–साथ चलते हुए, धीमे–धीमे लुढ़कने वाले, ठसाठस भरे हुए डिब्बों का जायजा ले रहीं थीं। मानो कि विद्युत से आवेशित, वह एकदम सीधा बैठा और ऐक्सीलेरेटर को ठीक नीचे दबाया। कार आगे उछली और रेल के शीर्ष (head) को पीछे छोड़ते हुए दौड़ी। ब्रेक को धम्म से बंद करते हुए, बोरिस बाहर कूदा, उसने अपनी सबमशीन गन (submachine gun) को पकड़ा और रेल कार (rail car) की बगल से छिप गया। धीमे से रेल रेंगी। मैंने रेल के दो डिब्बों के बीच, चढ़े हुए किसी की झलक देखी, और तब वहॉ सबमशीनगन की धड़ाधड़ हकलाहट हुई। लाश, रेल पथ के बीच, जमीन पर लुढ़क गई। ''उसे लाओ!'' बोरिस ने विजयी भाव से कहा, जैसे ही उसने, सावधानी से, बन्दूक की टक्कर से, दूसरे घाव को कुरेदा। ''अब तिरेपन हुए, पुजारी, राज्य के तिरपेन दुश्मनों को निपटा दिया गया।''

दिल से दुखी और इसके प्रदर्शन करने से डरा हुआ, मैं मुड़ा, क्योंकि, यदि वह जान जाता कि, मैं गॉव का पुजारी नहीं था, तो बोरिस ने उतनी ही आसानी से, मुझे भी गोली मार दी होती, जितनी आसानी से दूसरे आदमी को (मारी थी)।

रेल चलती गई और बोरिस उस छलनी की हुई, खून बहती हुई, लाश की ओर चला। अपने पैर से उसे पलटते हुए, उसने चेहरे को देखा, और कहा ''मैं इसे एक रेल कर्मी के रूप में जानता हूँ। उसे

चढ़ना नहीं चाहिये था। शायद मुझे उसके चेहरे को उड़ा देना चाहिये, ताकि कठिन प्रश्न न उठें।'' ऐसा कहते हुए, उसने अपनी बन्दूक की मक्खी (muzzle) को उस मरे हुए आदमी के चेहरे के पास रखा और घोड़ा दबा दिया। सिर रहित लाश को छोड़ते हुए, अब वह अपनी कार की तरफ लौटा और ड्राइव करके चला गया।

''मैं कभी रेल के ऊपर नहीं गया, बोरिस,'' मैंने कहा।

''ठीक है, उसने जबाब दिया, ''कल हम मालगाड़ी से आर्टेम जायेंगे और तब तुम आसपास देख सकते हो। वहॉ मेरे कुछ अच्छे मित्र हैं, मैं उन्हें मिलना (और बताना) चाहता हूॅ कि, अब मैं सार्जेंट हूॅ।''

अमेरिका से भेजे जाने वाले सामान को जप्त करके, जहाज से भेजने वाला ये विचार, मुझे लम्बे समय तक, अच्छा लगा। मैंने लुकाछिपी से जहाज पर जाने के संबंध में बोरिस को बताया।

''बोरिस,'' मैंने कहा, ''तुम अपना पूरा समय लोगों को सरहद पर रोकने में और ये सुनिश्चित करने में कि, रेल से कोई लुकाछिपी करके न जाये, लगाते हो। फिर भी ये सारे जहाज, कोई भी इनके ऊपर जा और रुक सकता है।''

बोरिस वापिस पीछे की ओर झुका और हँसी के साथ खिलखिलाया। ''पुजारी,'' उसने ठहाका लगाया, ''तुमको बुद्धू होना चाहिये! तटरक्षक, तट से एक मील पहले से, जहाज के ऊपर, चढ़ जाते हैं और वे बेड़े के सभी सदस्यों की जॉच करते हैं। तब वे छोटी जीवन रक्षक नावों को भी भूले बिना, सभी कुल्हाड़ों और खिड़कियों को सील बंद कर देते हैं, और उनके जोड़ों और दूसरे स्थानों पर साइनाइड गैस उड़ेल देते हैं। उनके पास प्रतिक्रियावादियों, जो इस बात को नहीं जानते हैं, से जब्त किये हुए बड़े–बड़े थैले होते हैं।''

मैंने, इस सवेंदनाहीन ढंग पर, जिसमें ये आदमी, इस सारे मामले को खेल की तरह लेते हैं, बहुत दुखी महसूस किया, और मैंने जल्दी से अपने मन को, जहाज पर लुकाछिपी करने की तरफ बदल दिया!

यहॉ मैं व्लाडीवोस्टक में था। परन्तु मुझे जीवन में सौपा गया कार्य मेरे पास था, और जैसा भविष्यकथन में कहा गया था कि, मुझे पहले अमेरिका जाना था, तब इग्लैण्ड और तब वापिस उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप। समस्या थी– दुनियॉ के इस हिस्से से, किस प्रकार बाहर निकला जाये। मैंने अधिक से अधिक, जितना संभव हो सके, ट्रांस साइबेरियन रेल के बारे में, पता लगाने का निश्चय किया, जहॉ जॉच पड़ताल समाप्त होती थी, और जो मॉस्को का अन्त होता था।

अगले दिन मैंने व्यायाम किया और कुत्तों को जल्दी खाना खिला दिया और उनके साथ भलीभांति व्यवस्थित होते हुए, मैं, बोरिस और तीन दूसरे संतरियों के साथ, यात्रा पर चला। हम लगभग पचास मील दूर, एक बाहरी चौकी पर गये, जहॉ इन तीन संतरियों से, दूसरे तीन को बदलना था। पूरे रास्ते, आदमी बतियाते रहे कि वे, अब तक कितने ''भगोड़ों'' को गोली से मार चुके हैं और मुझे कुछ लाभप्रद सूचना मिली। मैं उस स्थान को जान गया, जहॉ पर और अधिक जॉच पड़ताल नहीं होती थी, मैं जान गया कि यदि कोई सावधान है, तो वह बिना किसी तरह पकड़े गये, मास्को के बाहरी भागों में कैसे यात्रा कर सकता है।

पैसे की समस्या होने जा रहा थी, जिसे मैं देख सकता था। मैंने, दूसरे लोगों के बदले में कर्त्तव्य पर खड़ा होकर, उनकी बीमारियों का इलाज करते हुए, और उनमें से कुछ के भले कार्यालयों के माध्यमों से, खुद शहर की पार्टी के धनी सदस्यों का इलाज करते हुए, पैसा कमाया। दूसरों की तरह से, मैंने जहाजों पर जाने–आने की व्यवस्था की, और नई रेल में लदे हुए लूट के सामान में से, मैंने अपना हिस्सा लिया। मेरी सभी उदारता रूबल में बदल गई। मैं रूस को पार करने की योजना बना रहा था।

लगभग पॉच हफ्ते बाद, कप्तान ने मुझे बताया कि, कुत्ते अब अपने गस्ती थानों की तरफ वापस

जा रहे थे। एक नया अधिकारी आ रहा था और जब तक वह पहुँचे, उससे पहले मुझे छोड़ देना चाहिये। मैं कहाँ जा रहा था ? उसने पूछा। अब तक, अपने आदमी को जानते हुए, मैंने जबाव दिया, ''मैं व्लाडीवोस्टक ही में रहूँगा, कामरेड कप्तान, मुझे यहाँ पंसद है।''

उसका चेहरा डर से भर गया। ''तुमको जाना चाहिये, अभी इस जिले के बाहर निकलो। कल ही।

''परन्तु कामरेड कप्तान, मुझे कहीं नहीं जाना है, मेरे पास पैसा नहीं है,'' मैने उत्तर दिया।

''तुमको, खाना, कपड़े और रूबल मिल जायेंगे, और इस जिले के बाहर ले जाये जाओगे।''

''कामरेड कप्तान,'' मैंने दोहराया, ''मुझे जाने के लिये कोई स्थान नहीं है। मैंने यहाँ परिश्रम पूर्वक कार्य किया है, और मैं व्लाडीवोस्टक में रहना चाहता हूँ।''

कप्तान उतारू था। ''कल हम अपने आदमियों को, अपने क्षेत्र की आखिरी सीमाओं तक, वोरोसिलोव (Voroshilov) की सीमाओं तक, भेजेंगे। तुम्हें वहाँ ले जाया जायेगा और छोड़ दिया जायेगा। मैं, ये बताते हुए कि, तुमने हमारी मदद की है और तुम वहाँ हमारी इजाजत से गये हो, तुम्हें एक चिट्ठी दूँगा। तब वोरोसिलोव की पुलिस तुम्हें गिरफ्तार नहीं करेगी।''

जितना मैंने सोचा था, ये उससे कहीं अच्छा था। मैं वोरोसिलोव जाना चाहता था, क्योंकि यह वह स्थान था, जहाँ से मैं रेल पकड़ना चाहता था। मैं जानता था कि, यदि मैं शहर के दूसरी तरफ से रेल पर चढ़ूँ, तो मैं अच्छी तरह से सुरक्षित रहूँगा।

अगले दिन, दूसरे आदमियों के साथ, मैं तेजी से, सैनिकों ले जाने वाले और सड़क पर शोर मचाते हुए एक वाहन पर चढ़ कर, वोरोसिलोव के रास्ते पर, आगे की ओर चला। इस समय मैं कपड़ों का बढ़िया सूट पहने था, और मेरे सामान से भरा हुआ, पीठ का एक बड़ा थैला (rucksack) मेरे पास था। मेरे पास, भोजन से भरा हुआ, एक कंधे का थैला भी था। इससे मुझे ये याद करने का भी अवसर नहीं मिला कि कपड़े, जिन्हें मैं पहने था, वे जहाज पर चढ़ने वाले एक मरे हुए यात्री के थे।

''पुजारी, तुम नहीं जानते कि, तुम कहाँ जा रहे हो'' बोरिस ने कहा, ''परन्तु कप्तान ने कहा है कि, इसने इन कुत्तों को प्रशिक्षण दिया है, इसलिये तुम्हें जाना पड़ेगा। तुम आज रात, बाहर की चौकी पर सो सकते हो, और सुबह अपने रास्ते पर निकल जाना।''

उस रात मैं बैचेन था। मैं एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते–घूमते परेशान हो गया था और थक गया था। अपनी मृत्यु को कोहनी मारते हुए, थका हुआ परेशान, मैं। अपने परम शांतिपूर्ण जीवन के ढंग से विरोध करते हुए, ये, मात्र इन लोगों के साथ, जो इतने विदेशी थे, अकेला रहना भर नहीं था।

सुबह, एक अच्छे नाश्ते के बाद, मैंने बोरिस और दूसरों को अलबिदा कहा, अपना भार कंधे पर लादा, और चल दिया। वोरोसिलोव का चक्कर खाने के प्रयास में, मुख्य सड़क को बचाते हुए, मैंने मील के बाद मील, तय किये। मेरे पीछे तेजी से आने वाली कार की, एक तेज आवाज आई और तेजी से लगाये ब्रेकों की चीख गूँजी, और मैंने अपने आप को, एक सबमशीनगन की मक्खी के नीचे, देखे जाते हुए पाया।

''तुम कौन हो ? तुम कहाँ जा रहे हो ? त्योरी चढ़ा कर देखते हुए, एक कोरपोरल गुर्राया। ''मैं वोरोसिलोव के लिये अपने रास्ते पर हूँ।'' मैंने जबाव दिया। मेरे पास कामरेड कप्तान वेस्सिली (Vassily) का एक पत्र है।''

पढ़ने की व्यग्रता में, त्योरी चढ़ाते हुए, मुझसे पत्र छीनते हुए, उसने इसे फाड़ कर खोला। तब उसका चेहरा, चौड़ी मुस्कान के साथ खिल गया। ''हम अभी सार्जेंट बोरिस के पास से ही आये हैं,'' उसने कहा, ''अन्दर आओ, हम तुम्हें वोरोसिलोव ले चलेंगे और तुम जहाँ कहो, वहाँ तक छोड़ देंगे।''

ये एक परेशानी थी, मैं शहर को चुका देने की कोशिश कर रहा था ! परन्तु मैं गश्ती कार पर चढ़ गया और तेजी से वोरोसिलोव की ओर चला। मैं पुलिस मुख्यालय के समीप उतर गया और जैसे

ही कार गैरिज में तेजी से अन्दर गई, ये कोशिश करते हुए कि, रात होने से पहिले, अधिक से अधिक जितना चला जा सके, मैं होशियारी से साथ चला। मैंने रेल की पटरी के पास रुकने की योजना बनाई और रेल पर चढ़ने से पहिले ये निरीक्षण किया कि, रात और दिन को क्या होता है।

यात्री रेलें रोकी जातीं थीं और वोरोसिलोव पर उनकी जॉच होती थी परन्तु, मालगाड़ियॉ कुछ बाहर ही रोकी जातीं थीं, ताकि शायद, स्थानीय जनता ये न देख सके कि, लुकछिप कर चलने वाले कितने लोग मारे गये। मैं निगरानी करता रहा, और निगरानी करता रहा, और मैंने निश्चय किया कि, रेल जब चलने वाली हो, तभी मुझे उसमें अन्दर जाने की आशा करनी चाहिये।

दूसरे दिन की रात को, एक अधिक वांछित रेल रुकी। एक रेल, जिसमें मेरा अनुभव कहता था, कि उसमें, ''छुड़ाये गये (land-lease)[18]'' तमाम सामान लदे थे। ये चूकनी नहीं चाहिये, मैंने सोचा। मैंने रेल की पटरी के साथ, नीचे झाँकते हुए, ताला बंद किये हुए दरवाजों को परखते हुए, और जिनमें ताले नहीं लगे थे, उनको खोलते हुए, ज्यों हीं अपने आप को आराम दिया। हर जब–तब (every now and then), एक गोली दागी गई, उसके बाद, एक गिरती हुई लाश की धमाके की आवाज हुई। वहॉ, इस डर से कि वे रेल के पहियों से कट जायेंगे, कुत्ते उपयोग में नहीं लाये जाते थे। जितना गंदा हो सकता था, खुद को उतना गंदा बनाने के लिये, मैं धूल में लुढ़क गया।

रेल में झाँकते हुए, एक दूसरे के साथ जोर–जोर से चिल्लाते हुए, शक्तिशाली लेम्पों को चकमाते हुए, संतरी समीप आये। किसी ने भी रेल के पीछे देखने के लिये नहीं सोचा, और रेल ने उनके ध्यान को अपनी तरफ बनाये रखा। मैं उनके पीछे जमीन पर औंधा पड़ा हुआ था, मैंने सोचा ''मेरे कुत्ते, इसकी तुलना में अधिक कुशल होते। कुत्तों ने मुझे जल्दी ही पा लिया होता!''

आदमी अपनी जॉच पड़ताल से संतुष्ट हुए, चले गये। मैं पटरी के एक तरफ लुढ़क गया और रेल के डिब्बे के नीचे, पहियों के बीच, छलांग लगा दी। शीघ्र ही मैं, एक धुरे (axle) पर चढ़ गया और बाहर निकलते हुए एक रस्से को खींचा, जो मेरे पास पहिले से खींचने के लिये तैयार था। इसे दूसरी तरफ बांधते हुए, मैंने अपने आप को ऊपर की ओर खींचा और अपने आप को रेल के डिब्बे के फर्श की तली के साथ बांध दिया। यह एकमात्र स्थिति थी, जिसमें मैं जॉच–पड़ताल से बच सकता था। मैंने एक महीने पहिले से ही इसकी योजना बना ली थी। रेल झटके के साथ शुरू हुई, जिसने मुझे लगभग निकाल दिया और जैसी कि मुझे अपेक्षा थी, धुर–दण्डों में झांकते हुए सशस्त्र संतरियों के साथ, तेज रोशनी वाली एक जीप, बगल से दौड़ते हुए आयी। भिक्षुणियों के समुदाय के सामने एक नंगा आदमी जैसे महसूस करता, वैसे महसूस करते हुए, मैंने अपने आप को फर्श के करीब खींच लिया। जीप दौड़ती गई, मुड़ी और वापिस आयी, और मेरी नजर और जीवन से गुजर गई। रेल चलने लगी पॉच, छह मील तक, मैं अपनी कष्टदायी स्थिति में उसे कठोरता से पकड़े रहा, और इस बात से आश्वस्त हुआ कि, खतरा टल गया है। मैंने धीमे से, रस्से से खुद को ढीला किया और धुरों के ढक्कनों में से एक पर, अपने आप को संतुलित करने की व्यवस्था की।

थोड़े समय के लिये, जितना अच्छा हो सकता था, मैंने विश्राम किया। मेरे अन्दर ये अनुभव वापिस आने के साथ, और दुखती हुई भुजाओं के कारण, मैं तंग स्थिति में वापिस आ गया। तब सावधानीपूर्वक, धीमे से, मैंने स्वयं को, रेल के डिब्बे के आखिरी सिरे के साथ, लोहे की और छड़ों को पकड़ने की व्यवस्था की। शायद, लगभग आधे घण्टे तक, मैं डिब्बों के जोड़ पर बैठा, और तब अपने आप को झूलते हुए प्लेटफॉर्म की ओर खींचते हुए, मैं अंधा हो कर, छत के ऊपरी किनारे पर रेंग गया। अब तक तारों के प्रकाश को छोड़ कर, गहरा अंधेरा हो चुका था। चन्द्रमा अभी तक नहीं उगा था, और मैं जानता था कि इससे पहले कि, दबे पाँव चहलकदमी करने वाले, रेल के प्रहरी, साइबेरिया की

18 अनुवादक की टिप्पिणी : लेंड लीज (land-lease) की नीति 11 मार्च 1941 को अमरीका से स्वतंत्र फ्रांस, इंग्लैंड और चीन तथा बाद में सोबियत रूस और अन्य मित्र राष्ट्रों को खाद्यान, तेल और अन्य सामानों की आपूर्ति करने के लिए लागू की गई थी। 1941 से अगस्त 1945 तक, सामान्यतः, यह सहायता निशुल्क थी, यद्यपि, द्वितीय महायुद्ध के बाद, कुछ सामानों को अमेरिका को वापस कर दिया गया था। ये व्यवस्था सितम्बर 1945 में समाप्त हुई।

चॉदनी में मुझे देख पायें, मुझे मालगाड़ी के किसी डिब्बे (wagon) में अन्दर घुसने के लिये, तेजी से काम करना होगा। रस्से के एक सिरे से, मैंने अपने आप को छत से, और उसके दूसरे सिरे को, रेल की छत से बांध लिया, और रस्से की पकड़ का लाभ उठाते हुए, सावधानीपूर्वक, बगल से लुढ़क गया, रस्से को मैंने अच्छी तरह से पकड़ा। खुरदरे किनारों से रगड़ और उछाल खाते हुए, मैंने शीघ्र ही चाभी की सहायता से एक दरवाजे को खोलने की व्यवस्था की, जिसको मैंने व्लाडीबोस्टक में ही इस उद्देश्य से प्राप्त कर लिया था – एक ही चाभी पूरी ट्रेन के सभी तालों में लगती थी। दरवाजे को खिसकाना, काल्पनिक रूप से, कठिन प्रतीत हुआ क्योंकि, मैं एक लोलक (pendulum) की तरह से झूल रहा था, परन्तु चन्द्रमा की पहली किरणों के दिखने के साथ मुझे अधिक सहयोग मिला, दरवाजा खिसक कर खुल गया और बुरी तरह थका हुआ मैं अन्दर रेंग गया। रस्से के मुक्त सिरे को झुलाते हुए मैं कूदा, और उसे तब तक खींचा जब तक कि, उसकी पूरी लम्बाई मेरे हाथों में नहीं आ गई। अत्यधिक थकावट के साथ कांपते हुए, मैंने दरवाजा खिसकाया, बन्द किया और फर्श पर गिर गया।

दो या तीन दिन बाद, कोई भी इन परिस्थितियों में, समय का हिसाब लगाना भूल जाता है – मैंने अनुभव किया कि, रेल धीमी पड़ रही है। दरवाजे की तरफ जल्दी करते हुए, मैंने इसे खोला और एक झिरी में से बाहर झांका। यहॉ बर्फ के सिवाय, देखने को कुछ नहीं था, इसलिये मैं तेजी से दूसरी तरफ दौड़ा। रेल के प्रहरी, शरणार्थियों के समूह के साथ–साथ दौड़ रहे थे। स्पष्टरूप से, एक बड़ी तलाश चल रही थी। अपने सामान को पकड़ते हुए मैं बर्फ के अन्दर बगल से गिरा। मैंने, मरोड़ते और पेंतरेबाजी करते हुए, भ्रम पैदा करने के लिये, रेल के डिब्बो के पहियों के बीच में, बर्फ के ऊपर पड़ने वाले निशानों को पूरी तरह मिटा दिया। जबकि, मैं अभी भी, उनमें था। रेल ने चलना शुरू किया और मैंने निराशा जनक ढंग से, सबसे पड़ौस वाले ठण्डे संयोजक (coupling) को पकड़ लिया। महान सौभाग्य के द्वारा, मैंने अपनी भुजाओं को, एक के चारों तरफ घेरने की व्यवस्था कर पायी, और मैं वहॉ, पैर झूलते हुए, जब तक कि एक अचानक झटके ने, मेरे पैरों को ऊपर उठाने के लिये, ठीक से योग्य नहीं बना दिया, लटका रहा।

सीधे खड़े होते हुए मैंने पाया कि, मैं एक डिब्बे के अंत में था, जो कड़े जमे हुए तिरपाल (tarpauline) से ढका हुआ था। गांठे (knots), एकदम ठंडी ठोस बर्फ थीं, भारी तिरपाल, एक लोहे की चादर की तरह था। मैं बर्फ से ढके हुए संयोजकों के ऊपर हिलता हुआ, बर्फीली गांठों के साथ संघर्ष करता हुआ, खड़ा रहा। यह आशा करते हुए कि, वह कुछ नरम हो जायेंगीं, मैंने उनके ऊपर सांसें छोड़ीं परन्तु, मेरी सांस जम गई और उसने बर्फ को और मोटा, कर दिया। मैंने रस्से को पीछे की तरफ और दुबारा डिब्बे के बगल में, धातु के विरुद्ध, आगे की तरफ खींचा। जबकि अंधेरा घिर रहा था और मैं भरपूर प्रयास के साथ, तिरपाल के एक सिरे को, बलपूर्वक अलग करने के लिये और अन्दर रेंगने के लिये, अंतिम रूप से घिसता हुआ, फंसता हुआ निकला। जैसे ही मैं अन्दर फर्श पर गिरा, एक आदमी मेरे गले पर एक तीखे लोहे के टुकड़े का वार करते हुए, मेरे ऊपर उछल कर झपटा। जिन्दा रहने की भावना और अभ्यास मेरे बचाव में आये और शीघ्र ही, वह आदमी अपनी एक टूटी बॉह की देखभाल करता हुआ, दुखी हुआ। एक लोहे के डण्डे के साथ और दूसरा टूटी हुई दॉतेदार बोतल के साथ, दो दूसरे आदमी मेरी तरफ आये। वास्तव में, एक ने मेरे प्रशिक्षण के साथ, मुझे कोई बड़ी समस्या पैदा नहीं की, और वे शीघ्र ही शस्त्र विहीन कर दिये गये। यहॉ जंगल का कानून लागू था। सबसे शक्तिशाली मनुष्य, राजा था! अब चूंकि मैंने उन्हें पीटा था, वे मेरे गुलाम बन गये।

माल का डिब्बा, पूरी तरह अनाजों से लदा हुआ था, जिसको हमने जैसा था वैसा ही खाया। पीने के लिये, हमने इकट्ठी की हुई बर्फ, या बर्फ, जो हमने तिरपाल से तोड़ी थी, चूसी। हमें कोई गर्मी नहीं मिली क्योंकि यहॉ जलाने के लिये कुछ नहीं था और रेल के प्रहरियों ने धुंऐ को देख लिया होता। मैं सर्दी के साथ व्यवस्था कर पाया परन्तु वह आदमी जिसकी बॉहे टूट गई थीं, जम कर ठोस हो गया

और हमें उसे बगल से फेंक देना पड़ा।

साइबेरिया में पूरी बर्फ नहीं है, इसके कुछ हिस्से, केनेडा के रॉकी पर्वत (canadian rockies) की तरह से, पहाड़ियों से घिरे हुए हैं, और दूसरे कुछ हिस्से, आयरलैण्ड की तरह से, काफी हरे–भरे हैं। अब, यद्यपि हम बर्फ के कारण परेशानी में थे क्योंकि, ये मौसम, जिसमें हम यात्रा कर रहे थे, सबसे खराब मौसम था।

हमने देखा कि, अनाज ने हमको बुरी तरह परेशान कर दिया। ये पेट में पहुँच कर फूला और हमको भयानक दस्त लग गये, हमको इतना अधिक कमजोर बना दिया कि, हम मुश्किल से ये चिंता कर पाये कि, हम जिन्दा भी हैं या मर गये। अन्त में अतिसार (dysentery) कम हुआ, और हम भूखे मरने की तीखी टीस से परेशान हुए। मैंने अपने आप को, अपने रस्से की सहायता से, अपनी बगल के बल, नीचे कर लिया और धुरियों के डिब्बों में से ग्रीस (grease) को खुरच लिया। हमने उसे खाया, इस बीच, उबकाई भयानक रूप से जारी रही।

रेल, लम्बे समय तक चलती रही। बेकल झील (Baykal lake) के सिरे के आसपास, ऑम्स् (Omsk) की तरफ। यहॉ जैसा कि मैं जानता था, इसे दूसरी पटरी पर (shunt) किया जाना चाहिये था और दुबारा बनाया जाना था, अतः शहर पहुँचने से पहले, मुझे इसको छोड़ देना और दूसरी रेल पर कूदना चाहिये था, जो दुबारा बनाई जानी थी। रेलों को बदलने की पीड़ा और प्रयास, इन सारी चीजों को विस्तार में बताने की कोई तुक नहीं है, परन्तु, एक रूसी और एक चीनी के साथ, मैं मास्को जाने वाली एक तीव्रगामी मालगाड़ी पर चढ़ने में सफल हुआ।

रेल अच्छी हालत में थी, मेरी सावधानी पूर्वक सुरक्षित रखी गई चाभी ने मालगाड़ी के एक डिब्बे को खोला और हम, चन्द्र विहीन रात के अंधेरे में छिपे हुए, हाथ–पैरों के बल, कठिनाई से अन्दर चढ़ गये। डिब्बा पूरी तरह भरा हुआ था और हमें जबरदस्ती खुद को अन्दर घुसाना पड़ा। उसमें प्रकाश की कोई किरण नहीं थी और हमें भरे हुए सामान का कोई अन्दाज नहीं था। सुबह, एक सुखद आश्चर्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। हम भूखे मर रहे थे, और हमने देखा कि, वैगन के एक कोने में, रेड क्रॉस (red cross) के पार्सलों को जमा कर रखा गया है, जो स्पष्टरूप से, अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचे थे, परन्तु रूसियों द्वारा मुक्त करा लिये गये थे। अब हम ठीक से थे, चॉकलेट, डिब्बा बंद खाना, डिब्बा बंद दूध, हर चीज। एक पार्सल में, हमें धुंआ रहित ठोस ईंधन के साथ, एक छोटा स्टोव भी मिल गया।

माल की गांठों (bales) को जॉचते हुए, हमने उन्हें पूरी तरह से कपड़ों और दूसरे तमाम सामानों से भरा पाया, जो शंघाई की दुकानों से, भण्डारों से लूटे हुए हो सकते थे। कैमरा, द्विनेत्री (binocular), घड़ियॉ। हमने अपने आप को बढ़िया कपड़ों में सजा लिया, क्योंकि हम बहुत ही सदमे वाली स्थिति में थे। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी की थी। हमें बर्फ के ऊपर निर्भर रहना पड़ा, जिसे हम कगारों या ताकों के ऊपर से खुरच सकते थे।

चार हफ्तों और छह हजार मील चलने के बाद, मैंने व्लाडीवोस्टक छोड़ा, रेल, मॉस्को से कुछ तीस या चालीस मील दूर, नोजिंस्क (Noginsk) पहुँच रही थी। हम तीनों ने आपस में चर्चा की और ये निश्चय किया कि, जैसे ही ट्रेन के प्रहरी सक्रिय हों, –हमने उन्हें अपनी छतों के ऊपर चलते हुए सुन लिया था– हमें छोड़ देने की होशियारी करनी चाहिये। ये सुनिश्चित करने के लिये कि, हमारे बारे में कुछ भी संदेहास्पद न हो, हमने अत्यन्त सावधानी के साथ, एक–दूसरे का निरीक्षण किया, तब हमने खाने की बहुत अच्छी मात्रा और ''खजाना'' जिससे अदलाबदली की जा सके, उठा लिया। चीनी आदमी पहले गया, और जैसे ही हम फिसले, उसके बाद दरवाजा बंद हो गया, मैंने रायफल की गोली की आवाज सुनी। तीन या चार घण्टे के बाद, रूसी नीचे गिर गया, उसके आधे घण्टे के अंतराल के बाद, मैं उतरा। पूरी तरह निश्चिंत होते हुए, मैं अंधेरे में अपने रास्ते पर चला क्योंकि, मास्को का रहने वाला रूसी, जिसे साइबेरिया में देश निकाला दिया गया था, सावधानी से हमारे डिब्बे में था। सुबह तक,

मैंने अच्छे पच्चीस मील तय कर लिये थे और झील के शिविरों में सुधारी गईं मेरी टॉगें, मुझे बहुत बुरी तरह से परेशानी दे रहीं थीं।

खाने के एक स्थान में, मैंने, सीमावर्ती संतरियों के रूप में, नायक के रूप में, अपने कागज, दिखाये। ये एंडराई के थे! मुझे ये कहा गया था कि मैं, उसके सारे सामान को ले सकता हूँ और किसी ने भी उसमें ये जोड़ने का ख्याल नहीं किया था ''उसके परिचय पत्र और औपचारिक कागजों के अलावा।'' महिला वेटर्स ने शक की नजर से देखा और पुलिस के सिपाही को बुलाया, जो बाहर की ओर खड़ा था। वह अन्दर आया और उनमें काफी विचार–विमर्श हुआ। नहीं, मेरे पास खाने का राशनकार्ड नहीं था, मैंने इसे गलती से व्लाडीवोस्टक में छोड़ दिया था, व्लॉडीवोस्टक में संतरियों के लिये खाद्य नियमन (food regulations) लागू नहीं थे। पुलिसमेन ने मेरे कागजातों के ऊपर निगाह मारी और तब कहा, ''तुमको तब तक ब्लैकमार्केट में खाना पडेगा, जब तक कि तुम, खाद्य कार्यालय नहीं जाते और दूसरा कार्ड प्राप्त नहीं कर लेते। उन्हें पहले व्लाडीवोस्टक से सम्पर्क करना पड़ेगा।'' इसके साथ ही वह मुड़ा और बाहर चला गया। महिला वेटर ने अपने कंधे हिलाये। ''जो तुम चाहते हो वह लो, कॉमरेड ये तुम्हें औपचारिक मूल्य से पॉच गुना महँगा पड़ेगा।'' वह मेरे लिये, कुछ खट्टा–काला ब्रेड और कुछ अजीब सी दिखने वाली और खराब स्वाद वाली, चटनी लायी। वह मेरे ''पीने के'' इशारों को गलत समझी और मेरे लिये कुछ ऐसा सामान लाई, जिसे मुझे लगभग उसी समय, उसी स्थान पर, छोड़ना पड़ा। एक चुस्की ली और मैंने सोचा कि मुझे जहर दिया। एक चुस्की ही काफी थी परन्तु, महिला वेटर ने मुझसे पानी का भी पैसा ले लिया जबकि उसने उस विले पेय (vile brew) को सुड़क लिया था, जिसके लिये मैंने उसे इतना अधिक भुगतान किया था।

जैसे ही मैंने छोड़ा, पुलिसमैन मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। जब मैं आगे बढ़ा वह सीढ़ी पर गिर पड़ा। ''अपनी पीठ के ऊपर लदे झोले के साथ चलना, यह बहुत अनियमित है, कॉमरेड। मझे आश्चर्य होगा, यदि मैं तुमको, प्रश्न पूछे जाने के लिए, स्टेशन पर नहीं ले जाऊँ। कॉमरेड, क्या मुझे अपना कर्त्तव्य भुला देने के लिए, तुम्हारे पास एक और फालतू घड़ी है ?''

शांति से, मैंने अपनी जेब टटोली, और तब मैंने घड़ियों में से एक, उसे दे दी, जो मैंने रेल में से लीं थीं। पुलिस वाले ने उसे लिया, उस पर नजर मारी, और कहा, ''मास्को– सीधे आगे। मुख्य रास्ते को छोड़ देना और तुम एकदम ठीक हो जाओगे।'' तब वह मुडा और दूर चला गया।

मैं, उन पुलिसवालों से बचता हुआ, जो घड़ियाँ माँग सकते थे, एक अच्छा चेहरा बनाये हुए, बगल की सड़कों पर, पैर घसीट कर चलता रहा। अपने स्वंय के अनुभव से मुझे ऐसा लगा कि रूसी लोग घड़ियों के लिए मरणांतक इच्छा रखते हैं। उनमें से कई, समय तक नहीं बता सकते थे, परंतु यह तथ्य मात्र कि, उनके पास घड़ियाँ थीं, उन्हें अनजाने ढंग से संतुष्ट रखता हुआ दिखाई देता था। लड़खड़ाता हुआ एक क्षीणकाय मनुष्य, मेरे सामने अचानक हिला और सड़क के किनारे बने एक गटर में अपने मुँह के बल जा गिरा। राहगीरों ने उसकी तरफ एक नजर भी नहीं फिराई, परंतु अपने रास्ते पर चलते बने। जब एक बूढ़ा आदमी, ठीक मेरे पीछे बड़बड़ाया, मैंने ऐसा दिखाया मानो कि मैं, उसकी तरफ जा रहा हूँ, ''सावधान, कॉमरेड अनजान, यदि तुम उसके पास जाओगे तो पुलिस सोचेगी कि, तुम उसे लूट रहे हो। वैसे भी, वह मर गया है। भूखा मरना। ऐसा यहाँ प्रतिदिन, सैकड़ों के साथ होता है।''

धन्यवाद में सिर हिलाते हुए, मैं सीधा चलता चला गया। ''यह बहुत खतरनाक स्थान है,'' मैंने सोचा, ''हर एक आदमी का हाथ, अपने साथी के विरुद्ध होते हुए। ये इसलिए हो सकता है कि, उनको राह दिखाने के लिए, यहॉ धर्म नहीं है।''

उस रात, मैं एक नष्ट प्रायः गिरजाघर की, टूटी–फूटी दीवार के पीछे सोया। सोया, लगभग तीन सौ दूसरे लोगों के साथ। मेरी पीठ का थैला, मेरा तकिया था और रात में, मैंने किन्हीं छिप कर आने वाले हाथों को महसूस किया, जो उसके फीतों को खोलने की कोशिश कर रहे थे। एक होने वाले

चोर के गले के ऊपर, तेज मुक्के के प्रहार ने उसे हॉफता हुआ और पीछे की तरफ चलता कर दिया और मुझे आगे कोई परेशानी नहीं हुई।

चूंकि रूस में, सरकार ही कालेबाजार को चलाती है, प्रातःकाल, मैंने सरकारी कालेबाजार से खाना खरीदा, और तब मैं अपने रास्ते पर चलता रहा। रेल पर, रूसियों ने मुझे, पर्यटक दिखने के लिए और अपनी गर्दन में (रेल से लिया हुआ) एक कैमरा लटकाने के लिए बता दिया था। मेरे पास फिल्म नहीं थी, और उन दिनों, मैं कैमरे को, एक तरफ को दूसरी तरफ तक, मुश्किल से ही पहचानता था।

शीघ्र ही, मैंने स्वयं को मास्को के, कुछ अच्छे भाग में, वह भाग, जिसे एक सामान्य पर्यटक देखता है, क्योंकि सामान्य पर्यटक, ''मुख्य दृश्यों के पीछे'' नहीं देखता, –तंगहाली, गरीबी और मृत्यु, जो झुग्गी–झोपड़ियों की तरफ होती रहती है। मास्को नदी मेरे सामने थी, और कुछ समय के लिए, लालचौक में मुड़ने से पहले, मैं इसके किनारे–किनारे चलता रहा। क्रेमलिन (Kremlin) ने और लेनिन (Lenin) की कब्र ने, मुझे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं किया। मैं पोटाला की भव्य और चमकीली सुन्दरता का अभ्यस्त था। क्रेमलिन में प्रवेश के समीप, फूहड़, उदास, आदमियों का एक छोटा समूह, ऐसे दिखने वाले मानो कि, उन्हें पशुओं की तरह हाँक कर यहाँ लाया गया है, प्रतीक्षा कर रहा था। सपाटे से जाती हुई तीन बड़ी कारें भागती हुईं चौक के आरपार, निकल गईं और गलियों के चक्कर में गायब हो गईं। चूंकि, लोग मेरी दिशा में, निराशा से देख रहे थे, मैंने कैमरे को आधा उठाया। अचानक मैंने, अपने सिर में से एक भयानक दर्द उगता हुआ अनुभव किया। एक क्षण के लिए मुझे लगा कि, एक इमारत मेरे ऊपर गिर पड़ी। मैं जमीन पर गिरा, और कैमरा मेरे हाथों से गिर कर चूर–चूर हो गया।

ऊपर से देखने वाले संतरी मेरे सिर पर खड़े थे; उनमें से एक मुझे क्रमबद्ध तरीके से और भावना हीन रूप से, मुझे अपने पैरों पर खड़ा कराने के लिए, पसलियों में ठोकर मार रहा था। मैं आधा भौचक्का रह गया, मेरे लिए खड़ा रहना मुश्किल था, इसीलिए दो पुलिसवाले मुझ तक पहुँचे और उन्होंने मुझे करीब अपने पैरों पर घसीट दिया। उन्होंने मेरे ऊपर सवाल दागे, परंतु वह इतनी तेजी से और ''मॉस्को के लहजे'' में बोले कि, मैं एक शब्द भी नहीं समझ सका। अंत में, प्रश्न पूछने से थके हुए और कोई उत्तर न पाकर, वे मुझे अपने साथ, आगे लाल चौक ले गये। मेरे हर तरफ एक सिपाही, और एक मेरी रीढ़ की हड्डी पर दुखदायी तरीके से, बड़ी रिवोल्वर घुसाए हुए, एक सिपाही मेरे पीछे।

हम एक खराब दिखने वाली इमारत पर रुके, और तलघर के एक दरवाजे से प्रविष्ट हुए। मुझे पत्थर की सीढ़ियों के नीचे, एक छोटे कमरे में, बुरी तरह धक्का दिया गया– फैंक देना अधिक सही शब्द होगा। कमरे की दीवाल के पास खड़े हुए दो सशस्त्र सिपाहियों के साथ, एक अधिकारी मेज पर बैठा हुआ था। मुझे पकड़ने वाले पुलिस के सिपाहियों में से बरिष्ठ ने, उस अधिकारी को एक लंबा सा स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया और मेरा पिट्ठूबैग, उसकी बगल से फर्श पर रख दिया। अधिकारी ने कुछ लिखा, जो स्पष्टरूप से मेरी और मेरे सामान की रसीद थी, और तब पुलिस वाले मुड़े और मुझे छोड़ गए।

खराब तरीके से मुझे, एक काफी बड़े, दूसरे कमरे में धक्का दिया गया और मेरी दोनों तरफ को एक–एक सशस्त्र संतरी रखते हुए, एक बहुत बड़ी मेज के सामने, खड़ा रखा गया। कुछ समय बाद, तीन आदमी अंदर आये और मेज पर बैठे और उन्होंने मेरे पिट्ठू बैग के सामान को देखा। एक ने सहायक को बुलाने के लिए घंटी बजाई, और जब वह घुसा, रूखे निर्देश देते हुए, मेरा कैमरा उसे दे दिया। वह आदमी मुड़ा और सावधानी से उस अनाक्रामक कैमरे को ले जाते हुए चला गया, मानो कि ये शीघ्र ही फटने वाला एक बम हो।

वे मुझसे लगातार प्रश्न पूछते रहे, जिन्हें मैं नहीं समझ सका। अंत में, उन्होंने एक दुभाषिये (interpreter) को बुलाया और तब तक, जब तक कि उन्हें वह दुभाषिया मिल नहीं गया, जो मेरे साथ बातचीत कर सकता, दूसरों को बुलाया। मुझसे, मेरे कपड़े उतरवा लिए गये और एक डॉक्टर ने मेरा

परीक्षण किया। मेरे कपड़ों की पूरी सिलाईयाँ जाँचीं गईं और उनमें से कुछ, उधेड़ कर खोल दी गईं। अंत में, मेरे कपड़े, कम बटनों, और जूतों के फीतों के साथ, मुझ पर टाँग दिये गये। एक निर्देश पर सुरक्षा कर्मियों ने मुझे कमरे के बाहर खदेड़ दिया, और वह मुझे अपने कपड़े ले जाते हुए, गलियारे के पास चलता गया। अपने पैरों में नमदे वाले जूतों से, उन्होंने कोई आवाज नहीं की, न हीं उन्होंने आपस में या मुझसे कोई बातचीत की। जैसे ही हम शांत रूप से साथ चले, एक वास्तविक खून जमा देने वाली चीख उभरी और शांत हवा में, कांपती हुई गिर गई। मैं अनैच्छिक रूप से धीमा पड़ गया, और संतरी मेरे ऊपर, मेरे कंधों के ऊपर, इतने बल के साथ कूदा कि, मुझे लगा, उसने मेरी गर्दन को तोड़ दिया है।

अंत में, हम एक लाल दरवाजे पर रुके। एक संतरी ने उसका ताला खोला, और मुझे सिर के बल, पत्थर की तीन सीढ़ियों से नीचे गिरने के लिए, अंदर की ओर धक्का दिया। कोठरी बहुत अंधेरी और सीलन भरी थी। वहाँ फर्श पर दुर्गंधयुक्त चटाईयाँ पड़ीं हुईं थीं, जो लगभग पॉच फीट चौड़ी और बारह फीट लंबी थीं। इस बात पर आश्चर्य करते हुए कि, मानव समाज में, ऐसी खराब प्रकृति के लोग क्यों हैं, एक लंबे, अनिश्चित समय के लिए, भूखा, औरभूखा होते हुए, मैं वहाँ अंधेरे में ठहरा।

काफी लंबे अंतराल के बाद, कड़वी काली ब्रेड का एक बड़ा टुकड़ा और खारे पानी का एक छोटा जग, मुझे दिया गया। शांत संतरी ने, तब मुझे पानी पीने का संकेत किया। मैंने एक घूंट लिया और उसने वह पानी, मेरे होठों के नीचे से खींच लिया और फर्श पर लुढ़का दिया, और बाहर चला गया। दरवाजा वेआवाज बंद हुआ। सिवाय कभी–कभी डरावनी चीखों के, जिनको तेजी से और हिंसक तरीके से दबा दिया जाता था, वहाँ कोई ध्वनि नहीं थी। समय खिसकता गया। मैंने उस कड़वी काली ब्रेड को थोड़ा खाया। मैं भूखा था, मैं कुछ भी खा सकता था, परंतु यह ब्रेड बहुत डरावनी थी! ये इतनी बदबूदार थी मानो कि, इसे किसी मलकुंड में से निकाला गया हो।

एक लंबे समय बाद, इतने लंबा कि, भय के साथ मुझे लगा कि मैं, पूरी तरह भूल चुका था, सशस्त्र रक्षक, चुपके से मेरी कोठरी में आये। एक शब्द भी नहीं कहा गया; उन्होंने मुझे अपने साथ चलने का इशारा किया। कोई और चुनाव न होने के कारण मैंने ऐसा किया, और भ्रम बनाये रखने के क्रम में, मुझे यह प्रभाव देने के लिए कि, हम समय–समय पर, अपने कदमों को फिर से पहचान रहे थे, हम अंतहीन गलियारों में से हो कर आवारागर्दी करते रहे। अंत में, मुझे एक लंबे कमरे में ले जाया गया, जिसकी दीवार, एक सिरे पर चमकदार सफेद पोती गई थी। बुरी तरह से, संतरियों ने मेरी बाँहों को, मेरे पीछे बॉध दिया, और मुझे सफेद दीवार की तरफ मुख करते हुए घुमा दिया। लंबे क्षणों के लिए, कुछ नहीं हुआ, तब बहुत शक्तिशाली, अत्यधिक तीखी रोशनियाँ जलाईं गईं, ताकि दीवार से सफेद प्रकाश परावर्तित हो सके। मैंने महसूस किया मानो कि, मेरी आँखें बंद होने के बावजूद, मेरी आँखों के गोले झुलस गए हों। संतरी गहरे–गहरे रंगीन काँच के चश्मे लगाये हुए थे। रोशनी, लहरों के रूप में घट–बढ़ रही थी। प्रभाव ऐसा था मानो कि, मेरी आँखों में सुईयाँ चुभाई जा रहीं हों।

दरवाजा धीमे से खुला और बंद हो गया। कुर्सी के घसीटने की और कागजों के फड़फड़ाने की आवाजें हुईं। एक नीची आवाज का वार्तालाप, जिसे मैं समझ नहीं सका। तब बंदूक के बट की मार, मेरे कंधों के बीच पड़ी और प्रश्न पूछे जाना शुरू हुआ। मेरे पास कैमरा क्यों था, जिसमें कोई फिल्म नहीं थी ? मेरे पास व्लाडीवोस्टक में तैनात सीमांत संतरी के कागजात क्यों थे। कैसे ? क्यों ? कब ? घंटों के बाद घंटों तक, वही मूर्खता पूर्ण सवाल। मेरे सिर में फटते हुए, दर्द को देते हुए, रोशनी जलती गई। यदि मैं प्रश्न का उत्तर देने से मना करता, तो बंदूक के बट से ठोका जाता। प्रत्येक दो घंटे के बाद, केवल कुछ क्षणों का स्थगन दिया जाता, जबकि संतरी और प्रश्न पूछने वाले, नये लोगों द्वारा बदले जाते; क्योंकि संतरी भी, उन तीखी रोशनियों से, बुरी तरह थक जाते थे।

जो अंतहीन घंटे प्रतीत हुए, उनके बाद, परंतु जो वास्तव में, छः से अधिक नहीं हो सकते थे, मैं

जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़ा। सुरक्षा कर्मियों ने पूरी तरह से भावनाहीन हो कर, अपने नुकीले बोनटों से, मुझे कोंचना शुरू किया। मेरे लिये, पीछे बंधे हुए हाथों के साथ अपने पैरों पर संघर्ष करना, काफी मुश्किल था, परंतु मैंने बार–बार किया। जब मैं बेहोश हो गया तो गंदे तालाब के पानी की बाल्टियॉ मेरे ऊपर फैंकी गईं। घंटों–घंटों तक प्रश्न पूछना जारी रहा। मेरी टांगे सूजने लगीं। चूंकि शरीर के तरल नीचे की ओर बह गए थे, मेरे घुटने, मेरी जांघों की तुलना में अधिक मोटे हो गए थे और मांस पानी से पूरी तरह भरा हुआ था।

हमेशा वही प्रश्न, हमेशा वही नृशंसता। साठ घंटों तक खड़े रहना। सत्तर घंटों तक। अब दुनियाँ एक लाल बाड़ (red fence) थी, मैं अपने पैरों पर सब कुछ था, मगर मरा हुआ। कोई खाना नहीं, कोई आराम नहीं, कोई मोहलत नहीं। केवल कुछ नींद रोकने वाली दवाईयाँ मेरे मुँह में जबरदस्ती पिलाईं जातीं, प्रश्न। प्रश्न। प्रश्न। बहत्तर घंटे, और मैं आगे नहीं सुन सका, आगे नहीं देख सका। प्रश्न, रोशनियाँ, दर्द, सब मंद पड़ गया और तब पूरी तरह कालापन छा गया।

तब अर्निदिष्ट (unspecified) समय व्यतीत हुआ, और मुझे, अपनी ठंडी और सपाट पीठ पर, दर्द भरी चेतना पुनः प्राप्त हुई। दुर्गंधयुक्त कोठरी के गीले फर्श पर चलना कष्टदायक था, मेरा मांस लिजलिजा अनुभव कर रहा था और मेरी रीढ़ की हड्डी तथा मेरी पीठ ने महसूस किया मानो कि, मेरी रीढ़ की हड्डी टूटे हुए काँच से बनी थी। वहाँ यह दिखाने के लिए कोई आवाज नहीं थी कि, दूसरे लोग जिंदा थे, रात को दिन से अलग करने के लिए, रोशनी की कोई झलक नहीं थी। कुछ नहीं, परंतु अनंतकाल का एक दर्द, भूख और प्यास। अंत में, जैसे ही संतरी ने, खाने की एक प्लेट, खराब तरीके से, फर्श पर धकेली, प्रकाश की एक किरण खनकी। इसके बगल से, पानी की एक कट्टी, फूहड़पन से छलकाई गई। दरवाजा बंद और एक बार फिर, मैं अंधकार में, अपने विचारों में।

काफी बाद में, संतरी दुबारा आये, और मुझे घसीटा गया– मैं प्रश्न पूछने वाले कमरे के लिए चल नहीं सका। वहॉ मुझे बैठना पड़ा और अपना पूरा जीवन वृतांत लिखना पड़ा। पाँच दिन तक वही चीज हुई। मुझे एक कमरे में ले जाया गया, मुझे पेंसिल का एक ठूंठ और एक कागज दिया गया और अपने संबंध में हर चीज लिखने के लिए कहा गया। धीमे–धीमे स्वास्थ्य सुधरते हुए, तीन हफ्तों के लिए मैं अपनी कोठरी में ही रहा।

एक बार फिर, मुझे कमरे में ले जाया गया, जहाँ मैं तीन उच्चाधिकारियों के समक्ष खड़ा हुआ। एक ने, दूसरों की तरफ देखा। उसने अपने हाथ के कागज की तरफ देखा, और बताया कि, किसी निश्चित प्रभावशाली व्यक्ति ने, अनुशंसा की हैं कि, मैंने व्लॉडीवोस्टक में लोगों की मदद की है। किसी ने प्रमाणित किया है कि, मैंने उसकी लड़की की, जापानी युद्धबंदियों के शिविर में से भगाने में मदद की थी।

''तुमको छोड़ दिया जायेगा,'' अधिकारी ने कहा, ''और तुमको पौलेंड में स्त्रीज (Stryj) ले जाया जायेगा। हम एक आदमियों की एक टुकड़ी वहॉ भेज रहे हैं। तुम उनके साथ जाओगे।''

कोठरी में वापस। इस बार पहले से अच्छी– अब तक, मुझे यात्रा योग्य बनाने के लिए, मेरी ताकत काफी बढ़ गई थी। अंत में मैं, लुबियान्का (Lubianka) जेल, मास्को के द्वार से, पश्चिम की ओर अपने रास्ते पर जाने के लिये बाहर निकला।

अध्याय चार

लुबियांका के बाहर चार सैनिक प्रतीक्षा कर रहे थे। जेल के संतरी ने, जिसने मुझे खुले दरवाजे से धक्का मारा था एक कागज अपने वरिष्ठ सैनिक, नायक को दिया। ''यहाँ हस्ताक्षर करें, कामरेड, ये कहने को केवल आपकी प्राप्ति रसीद है, देश से निष्कासित एक व्यक्ति की।''हिचकिचाते हुए अपना नाम घसीटने से पहले, नायक ने अनिश्चयपूर्वक अपना सिर खुजलाया, पेंसिल को मुँह में डाला और अपनी हथेली को अपने पेंट की टांगों के ऊपर घिसा। जेल का संतरी बिना कुछ शब्द कहे वापस मुड़ गया, और लुबियांका का दरवाजा पटाक से बंद हो गया – सौभाग्यवश इस बार मैं इसके बाहर था।

नायक ने मेरी ओर त्योरियाँ चढ़ा कर देखा। ''अब तुम्हारे माध्यम से मुझे कागज पर हस्ताक्षर करने पड़े। केवल लेनिन ही जानता है, क्या होगा, मैं खुद भी लुबियांका में समाप्त हो सकता हूँ। आओ, चलते रहो!

नायक ने मेरे सामने अपना स्थान ग्रहण किया, और उसके दोनों तरफ एक–एक सैनिक था। मुझे मॉस्को की गलियों में होकर रेल्वे स्टेशन तक चलाया गया। मेरे पास ले जाने को कुछ नहीं था प्रत्येक चीज जो मेरी थी वह मेरे ऊपर थी, मेरे कपड़ों का सूट। कपड़ों के अलावा जो मैं वास्तव में पहने हुए था, रूसियों ने मेरी घड़ी, हर चीज, मेरा पीठ का बैग रख लिया था। और ये कपड़े ? भारी जूते, जिनमें लकड़ी के तले लगे हुए थे, पेंटें और एक जैकिट। इसके अलावा कुछ नहीं। कोई अंडरवियर नहीं, कोई पैसा नहीं, कोई खाना नहीं। कुछ नहीं। हाँ, कुछ था! मेरी जेब में एक कागज था यह बताते हुए कि, मुझे रूस से निष्कासित किया गया है और मैं रूस के कब्जे वाले जर्मनी के हिस्से में हो कर, जाने के लिए स्वतंत्र था, जहाँ मुझे निकटतम पुलिस थाने को इसकी सूचना देनी चाहिए।

हम मॉस्को रेल स्टेशन पर बैठे और हमने कड़कती सर्दी में प्रतीक्षा की। एक के बाद एक सिपाही चलते चले गए और लौटे, जिससे कि, दूसरा जा सके। मैं पत्थर के प्लेटफार्म पर बैठा था और कांप रहा था। मैं भूखा था। मैं कमजोर और बीमार हो गया था। अंत में काफी देर बाद एक सार्जेन्ट और लगभग सौ आदमी प्रकट हुए। सार्जेंट ने प्लेटफार्म के नीचे मार्च किया और मेरी तरफ एक निगाह मारी।

''क्या तुम उसे मरने देना चाहते हो ?'' वह नायक पर जोर से चिल्लाया। ''हमें उसे लो (Lwow) पर जिन्दा सौंपना है। देखो कि वह खाता है, गाड़ी जाने से पहले हमारे पास छः घण्टे हैं।''

नायक और एक साधारण सैनिक, दोनों ने मेरी एक–एक बांह पकड़ी और मुझे अपने पैरों पर घसीटा। सार्जेंट ने मेरे चेहरे को देखा और कहा, ''हूँ...। कोई बुरी तरह का आदमी नहीं है। देखो, तुम हमें कोई कष्ट मत दो और हम तुम्हें नहीं देंगे।'' उसने मेरे कागजों की तरफ, जिनको नायक लिए हुए था, देखा। ये निश्चित करते हुए कि, उसके आदमियों में से कोई भी इसे सुन पाने की दूरी में नहीं था, ''मेरा भाई लुबियांका में था,'' उसने कहा। ''उसने कुछ भी नहीं किया। उन्होंने उसे साइबेरिया भेज दिया। अब मैं तुम्हें खिलाने के लिए ले जाऊँगा। अच्छी तरह खा लो, क्योंकि हमारे लो पहुँचने के बाद, तुम खुद अपने लिए (उत्तरदायी) हो जाओगे।'' वह मुड़ कर गया और दो नायकों को बुला लाया। ''इसकी देखभाल करो, देखो कि, ये पूरा खाना और पानी, जो भी ये चाहता है पा जाए, इसको हमें, अच्छी हालत में छोड़ कर जाना है वरना कमीसार हमसे कहेगा कि, हम कैदियों को मार देते हैं।

असहाय सा हो कर, मैं दोनों नायकों के बीच, साथ में चला। स्टेशन के बाहर, खाने के एक छोटे से स्थान पर, वरिष्ठ नायक ने, बंदगोभी के सूप के बड़े कटोरों के लिए, और काली डबलरोटी की पट्टियों के लिए, आदेश दिया परंतु, खाना बदबूदार और सड़ा हुआ था, परंतु मैंने उसे अंदर करने की व्यवस्था की, क्योंकि मैं काफी भूखा था। मैंने उस सूप के बारे में सोचा, जो मुझे जापान के बंदी शिविरों में मिलता था, जिसमें जापानियों के थूके हुए, निकाले हुए, टुकड़े पड़े रहते थे, और वह खाना जिसे वह

छोड़ देते थे, एकत्रित करके उससे बंदियों के लिए सूप बना दिया जाता था।

अपने अंदर खाना होने के साथ, हम (स्थान) छोड़ने के लिए तैयार थे। एक नायक ने और एक ब्रेड और प्रावदा[19] की तीन प्रतियों का आदेश दिया। पहले ये सुनिश्चित करते हुए कि, हम इस प्रक्रिया में, स्टालिन के किसी चित्र का अनादर न करें, हमने ब्रेड को कागजों में लपेटा, और तब स्टेशन पर वापस लौटे।

प्रतीक्षा करना भयानक था। पत्थर के प्लेटफार्म पर कड़कती ठंड में छः घण्टे बैठना। अंत में हमें एक पुरानी मरियल सी, भीड भरी रेल के अंदर खदेड़ दिया गया, और कीव (Kiev)[20] की तरफ भेज दिया गया। उस रात को मुझे, खर्राटे भरते दो रूसी सैनिकों के बीच टिक कर सोना पड़ा। वहाँ हम में से किसी के लेटने की जगह नहीं थी, हम एकदम बुरी तरह जमे हुए थे। कड़ी लकड़ी की बैंचें बहुत दुखदाई थीं, और मेरी इच्छा थी कि मैं जमीन पर, फर्श पर बैठ पाता। हर बार, मैं जैसे ही सोने को हुआ, ऐसा लगा कि, रेल ने झटका खाया, वह चरमराने वाली आवाज के साथ रुकी। अगली रात को काफी देर तक, कुछ चार सौ अस्सी मील की दूरी तक यात्रा करने के बाद, हम कीव के द्वितीय श्रेणी के स्टेशन पर उतार लिए गए। वहाँ काफी शोर शराबा और चीख भरी आवाजें थीं, और हम रात काटने के लिए स्थानीय बैरकों में जाने के लिए चले। धक्का देकर, मुझे एक कोठरी में डाल दिया गया और एक कमीसार (commissar)[21] और उसके सहायकों के प्रवेश करने के बाद, मैं कई घण्टों के बाद, नींद से उठा। उन्होंने मुझसे सवाल पूछे, अंतहीन सवाल, और वे लगभग दो या ढाई घण्टे बाद, फिर बाहर चले गए।

सोने की कोशिश करते हुए, कुछ समय के लिए मैं उछला और मुड़ा। जबरदस्त हाथों ने चीखते हुए, मेरे गाल पर तमाचा मारा, ''उठो, उठो क्या तुम मर गए हो ? ये खाना है। जल्दी करो – तुम्हारे पास, चलने से पहले, केवल कुछ मिनिट हैं।''

खाना ? बंदगोभी का औरज्यादा सूप, औरअधिक कड़वी काली ब्रेड और पीने के लिए पानी। मैंने माल को जल्दी से गटक लिया और ये डरता रहा कि, मुझे खाना खत्म करने से पहले ही जाना पड़ सकता है। उसे गटक लिया और प्रतीक्षा की। घण्टों प्रतीक्षा की। उस शाम को देर में, दो सैनिक पुलिस के सिपाही प्रविष्ट हुए, मुझसे दुबारा, सवाल पूछे, एक बार और, मेरी उंगलियों की छाप लीं और कहा, ''हम विलंब से हैं। अब तुम्हारे पास खाना खाने के लिए समय नहीं है। रेल के स्टेशन पर, तुम्हें कुछ चीज मिल सकती हैं।''

सैनिकों को ले जाने वाले तीन वाहन, बैरकों के बाहर, प्रतीक्षा कर रहे थे। चालीस सैनिक और मैं, अविश्वसनीय रूप से एक में ठूंस–ठूंस कर भर दिए गए, और बाकी बचे दूसरे, दो वाहनों पर चढ़ गए और हम, खतरनाक सड़क पर हिचकोले खाते हुए, स्टेशन के लिए विदा हुए। इतना अधिक फंसे हुए कि, मैं मुश्किल से ही सांस ले पा रहा था। हमारे सैनिक वाहन का ड्रायवर, बाकी दोनों वाहनों को काफी पीछे छोड़ देने के लिए पागल लगता था। उसने गाड़ी को ऐसे चलाया मानो कि, साम्यवाद के

---

19 अनुवादक की टिप्पिणी : 'प्रावदा,' का अर्थ है ''सत्य''। ये रूसी समाजवादी पार्टी का आधिकारिक एवं लगभग 1 करोड़ 10 लाख प्रसार संख्या वाला सर्वाधिक प्रभावशाली समाचार पत्र, था। इसका प्रकाशन 1912 में रूसी साम्राज्य में प्रारंभ हुआ और यह अक्टूबर क्रांति के दौरान, रूस में सर्वाधिक शक्तिशाली हो कर उभरा। 1912 से 1991 तक यह रूस की साम्यवादी पार्टी का मुखपत्र रहा था। सोवियत संघ के विघटन के बाद,, राष्ट्रपति बोरिस येलत्सिन द्वारा इसे 'प्रावदा इंटरनेशनल' नाम के एक निजी व्यापारिक संस्थान को बेच दिया गया। इसके संवाददाताओं, कर्मचारियों एवं मालिकों के बीच झगड़े के कारण, अब इसके दो भाग हो गये। वर्तमाान में, रूस की साम्यवादी पार्टी इसका मुद्रित संस्करण प्रकाशित करती है, जबकि ऑन लाइन संस्करण Pravda. ru निजी व्यापारिक संस्थान द्वारा प्रकाशित किया जाता है। वर्तमाान में, इसे रूसी, अंग्रेजी, इटेलियन, और पुर्तगाली भाषाओं में भी प्रकाशित किया जाता है।

20 अनुवादक की टिप्पिणी : कीव (Kiev), उक्रेन (Ukraine) की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है जो डिनिपर (Dnieper) नदी के किनारे पर स्थित है, जिसकी आवादी लगभग 30 लाख है अर्थात् ये यूरोप महाद्वीप का आठवां सबसे बड़ा शहर है। कीव, पूर्वी यूरोप का महत्वपूर्ण औद्योगिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक केन्द्र है। यहाँ की सार्वजनिक यातायात साधन प्रणाली और अन्य आवश्यक जमीनी सुविधाऐं बहुत अच्छी तरह से विकसित है, जिसमें कीव मेट्रो भी शामिल है। सन् 1240 में मंगोलियन अतिक्रमण की अवधि में इसे पूरी तरह से नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया था।

21 अनुवादक की टिप्पिणी : कमीसार (commisar) शब्द, विशेषरूप से रूसी साम्यवादी राजनैतिक अधिकारियों के लिये तथा कमिसरी शब्द, रूसी प्रशासनिक अधिकारियों के लिये उपयोग में लाया जाता था। आजकल सभी साम्यवादी देशों में इनके लिये कमीसार शब्द ही उपयोग में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त, जनता के कमीसार तथा सेना के कमीसार भी होते हैं। यहाँ कमीसार का आशय, सेना के कमीसार से है, जो सेना के क्षेत्रीय कार्यालय का प्रमुख होता है। सन् 1943 से कमीसार की तीन श्रेणियाँ, 1,2,3 बना दी गयीं थीं, 1975 के बाद से इनको तदनुसार (corresponding) जनरल के पदों से विस्थापित कर दिया गया है।

सभी शैतान उसके पीछे पड़े हों। सबके सब खड़े हुए हम, पीछे के हिस्से में हिलते और झटके खाते हुए, क्योंकि पीछे बैठने की जगह नहीं थी। हमने चाल के पागलपन में, सड़क के सभी रहस्य खोल दिए, उसमें जल्दी–जल्दी लगाए गए ब्रेकों की बहुत कर्णभेदी चीखें थीं, और वाहन बगल से सरकते गए। जब हम पत्थर की एक मोटी दीवार के साथ घिसे गए, मेरे सामने की बगल (side), चिंगारियों के फुब्बारे के रूप में पैदा हुई रगड़ के कारण, उखड़ गयी। चीख–पुकार और कसमें, तथा खून का एक पक्का समुद्र, और मैंने स्वयं को हवा में उड़ता हुआ पाया। उड़ते हुए, मैं अपने नीचे, उस टूटे हुए वाहन को, अब तेजी से आग की लपटों में जलता हुआ देख सकता था। गिरने और तेजी से टकराने का एक अहसास, और एकदम अंधेरा।

''लोबसांग! एक अति प्रिय आवाज ने कहा, मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डौंडुप की आवाज। ''तुम बहुत बीमार हो, लोबसांग, तुम्हारा शरीर जमीन पर शांत पड़ा है, परंतु हम तुम्हें यहाँ, आकाशीय स्थिति में, विश्व के परे देख रहे हैं। हम तुम्हें मदद करने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि पृथ्वी पर अभी तुम्हारा काम पूरा नहीं हुआ है।''

मिंग्यार डौंडुप ? हास्यास्पद! वह पहले ही धोखेबाज साम्यवादियों के द्वारा, जब वे तिब्बत में, एक शांतिपूर्ण स्थिति की व्यवस्था करने की कोशिश कर रहे थे, मारे जा चुके हैं। जब उनके ऊपर पीठ पीछे से हमला किया गया था, मैंने उनके भयानक घावों को देखा है। परंतु वास्तव में, जब वह स्वर्गीय क्षेत्रों को चले गए थे, तब से मैंने उन्हें कई बार देखा है।

प्रकाश ने मेरी बंद आँखों को घायल किया। मैंने सोचा कि, मैं अभी भी दुबारा, लुबियंका (Lubianka) जेल में दीवार के सामने खड़ा हूँ, और वे सैनिक मुझे कंधों से पकड़ेंगे और बंदूकों के बटों से मारेंगे। परंतु ये प्रकाश दूसरी तरह का था, इसने मेरी ऑखों को घायल नहीं किया; ये विचारों का एक संयोग हो सकता है, मैंने आलस्यपूर्ण तरीके से सोचा।

''लोबसांग, अपनी ऑखें खोलो और मुझे देखो!'' मेरे शिक्षक की दयापूर्ण, दयालु आवाज ने मुझे गरमा दिया और मेरी आत्मा में से, आनंद का एक अनुभव मुझे प्रेषित किया। मैंने अपनी ऑखें खोलीं और अपने आसपास देखा। मैंने लामा को अपने ऊपर झुकते हुए देखा। वह पहले से अच्छे दिखाई दे रहे थे, जब मैंने उन्हें कभी पृथ्वी पर देखा था। उनका चेहरा आयु से अप्रभावित दिखाई दिया, बिना किसी चिन्ह के, जो पृथ्वी के लोगों में होते हैं, उनका प्रभामंडल शुद्धतम रंगों का था। उनकी केसरिया पोशाक, पृथ्वी के किसी पदार्थ की नहीं थी, ये निश्चित रूप से चमक रही थी मानो कि अपने खुद के जीवन से व्याप्त हो। वह मेरे ऊपर मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''मेरे बेचारे लोबसांग, आदमी के प्रति आदमी की अमानवीयता वास्तव में, तुम्हारे मामले में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुई है, क्योंकि तुम कई बार ऐसी परिस्थितियों में होते हुए जिन्दा रहे हो, जिसमें कई दूसरे लोग, कई बार मर चुके होते'' तुम यहॉ थोड़ा आराम करने के लिए हो लोबसांग। यहॉ हम, जिसे हम सुनहरे प्रकाश का देश कहते हैं, में पुनर्जन्म लेने की स्थिति से हटे हुए हैं, परे हैं। यहाँ हम, केवल वही नहीं, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं वल्कि विभिन्न लोकों के लोगों को मदद करने के लिए काम करते हैं। तुम्हारी आत्मा घिस गई है और तुम्हारा शरीर टूट–फूट गया है। हमें तुम्हारा सुधार करना होगा, लोबसांग, क्योंकि काम को पूरा किया जाना है, और तुम्हारे बदले में कोई दूसरा आदमी, इस काम को करने के लिए (उपलब्ध) नहीं है।''

मैंने खुद के आसपास देखा और देखा कि, मैं अस्पताल जैसे लगने वाले स्थान में था। जहाँ से मैं, लेटे–लेटे, थोड़ी दूरी पर स्थित पूरी सुंदर उद्यान भूमि को तथा चरते हुए या खेलते हुए जानवरों को देख सकता था। वहाँ हिरण और सिंह थे और ये सभी जानवर, पृथ्वी पर, एक स्थान पर नहीं रह सकते थे, ये सभी दोस्त थे और सबके सब एक ही परिवार के सदस्य जैसे दिखते थे।

एक कर्कश जिंह्वा ने मेरे सीधे हाथ को चाटा, जो बिस्तर के बगल से ढीले ढीले लटक रही थी। जब मैंने देखा, मैंने अपने पहले मित्रों में से एक, चाकपोरी की एक बड़ी संतरी बिल्ली, शा–लू

(Sha-lu) को देखा, उसने मुझे आँख मारी, और जब उसने कहा, ''आह मेरे दोस्त लोबसांग, मैं तुम्हें इस थोड़ी सी देर के लिए भी, दुबारा देखकर प्रसन्न हूँ, मैंने महसूस किया कि, मेरे पूरे शरीर के अंदर रोमांच शुरू हुआ। यहाँ से छोड़ कर जाने के बाद, तुम थोड़े समय के लिए पृथ्वी पर वापस लौटोगे और तब कुछ थोड़े से कम सालों में, हमेशा–हमेशा के लिए, तुम हमारे पास लौट आओगे।''

बातें करने वाली बिल्ली ? दूरानुभूति से सम्पन्न बिल्ली बात करती है और पूरी तरह समझती है, ये मैं अच्छी तरह जानता था, परंतु ये बिल्ली वास्तव में, शब्द बोलती थी, मात्र दूरानुभूतिक संदेश नहीं। जोर की दबी–दबी हंसी ने, मुझे अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डौंडुप को देखने के लिए बाध्य किया। वह खुद ही आनंदित हो रहे थे, वास्तव में – मेरी कीमत पर, मैंने अपनी खोपड़ी को फिर से चुभता हुआ महसूस किया; शा–लू अपने पीछे की टांगों पर बिस्तर के सहारे खड़ा हुआ था, उसकी कोहनियाँ मेरे बगल में टिकी हुईं थीं। उसने और लामा ने, मेरी तरफ और फिर, एक दूसरे की तरफ, देखा। दोनों दबी–दबी हंसी हंसने लगे, और मैं शपथ खाता हूँ, दोनों दबी–दबी हँसी हँसने लगे।

''लोबसांग मेरे शिक्षक ने कहा,'' तुम जानते हो कि, मृत्यु कुछ नहीं होती है, तुम जानते हो कि, तथाकथित ''मृत्यु'' से पृथ्वी को छोड़ देने के बाद, आत्मा उस तल पर पहुँचती है, जहाँ शरीर के दुबारा जन्म लेने के पहले, जो उसको दूसरे पाठों को सीखने के लिये और अपने आपको ऊपर की तरफ उन्नति करने के लिए, सीखने का अवसर प्रदान करता है, वह कुछ समय के लिए, विश्राम करती है। यहॉ हम उस तल पर हैं, जहाँ से पुनर्जन्म नहीं होता। जैसा तुम हमें अभी देख रहे हो, हम सामंजस्य में, शांति में, और इस क्षमता के साथ कि, जिसे तुम ''अतिविशिष्ट आकाशीय गमन'' कहते हो, हम किसी भी समय, कहीं भी, जा सकते हैं, रहते हैं। यहाँ पशु और मानव, और दूसरी प्रजातियाँ भी, एक दूसरे के साथ, दूरानुभूति से बातचीत करते हैं। जब हम नजदीक होते हैं, तब बोली का, और जब हम दूर होते हैं तो दूरानुभूति का, उपयोग करते हैं।''

कहीं दूर, मुझे एक मृदु संगीत सुनाई दे रहा था, संगीत जिसे मैं समझ सकता था। चाकपोरी में, मेरे संगीत शिक्षक ने, मेरी गाने की या संगीत बजाने की इस असफलता पर आँसू बहाए थे। उनके दिल अब प्रसन्न हो गए होंगे, मैंने सोचा, यदि वे मुझे इस संगीत का आनंद लेते हुए देख सकें। आकाश के चमकदार रंगों के पार, संगीत मानो कि, समूह में लहरा रहा था। चटकदार आकाश में मानो कि, संगीत के साथ, रंग मंडरा और लहरा रहे थे। यहाँ, इस भव्य परिदृश्य में हरे, औरज्यादा हरे थे, और पानी, औरज्यादा नीला। यहाँ कोई भी पेड़, बीमारी के कारण गांठदार या मुड़ा हुआ नहीं था, और कोई पत्ती उनसे अभिशप्त नहीं थी। यहॉ केवल पूर्णता थी। पूर्णता ? तो मैं यहाँ क्या कर रहा था ? जैसा कि मैं अच्छी तरह जानता था, पीड़ित मैं, इस पूर्णता से काफी दूर था।

''तुमने अच्छी लड़ाई लड़ी है, लोबसांग, और तुम यहाँ रात्रि के अंधकार के साथ, छुट्टी के लिए और साहस बढ़ाए जाने के लिए (उपस्थित) हो।'' मेरे शिक्षक आशीर्वाद देते हुए मुस्कुराये, जब उन्होंने ऐसा कहा।

मैं पीठ पर लेटा और तब डरते हुए शुरू हुआ, ''मेरा शरीर, मेरी पृथ्वी का शरीर कहाँ है ?''

''रुको, लोबसांग, रुको,'' लामा ने जवाब दिया। ''आराम करो और जब तुम्हारी ताकत काफी बढ़ जाएगी, हम तुम्हें और अधिक दिखायेंगे।

धीमे–धीमे, कमरे की रोशनी, सुनहरी पीले से, शांतिपूर्ण नीली बैंगनी बाड़ (haze) की तरफ मंद हुई। मैंने, एक ठंडे, शक्तिशाली हाथ को अपने माथे पर, और एक मुलायम बालों भरे जबड़े को अपने दांए हाथ की हथेली में, टिका हुआ महसूस किया, और मुझे इससे अधिक कुछ नहीं मालूम।

मैंने स्वप्न देखा कि, मैं पुनः पृथ्वी पर हूँ, मैंने नीचे की ओर भावना हीन टकटकी लगाई, जबकि, जली हुई लाशों और उनके टुकड़ों को खींचते हुए रूसी सैनिक, उस खराब से सैनिक वाहन की ओर बढ़े। ऊपर देखते हुए, मैंने एक आदमी को और एक बिन्दु को देखा। और जैसा मैंने देखा,

उसके हावभाव के उत्तर में, सिर ऊपर की तरफ मुड़े गए थे। वहाँ मेरा शरीर, एक ऊँची दीवार के तरफ, लड़खड़ाता हुआ पड़ा था। मैंने देखा कि, जब मेरा शरीर उस दीवार पर से हटाया जा रहा था और उसे एक एम्बुलेंस में रखा जा रहा था, मेरे मुँह और नकुओं से खून बह रहा था। जैसे ही कार अस्पताल की तरफ चली, मैं ऊपर उछला और मैंने सब कुछ देखा। मेरा रजत–तंतु सही सलामत था, मैंने जॉचा; ये घाटी में सुबह के नीले कुहासे की तरह से, चमक रहा था।

विशेषरूप से सावधान न रहते हुए, रूसी नौकरों ने स्ट्रेचर को खींचा। धक्का देते हुए, वे उसे शल्य चिकित्सा कक्ष में ले गए और उन्होंने मेरे शरीर को, मेज के ऊपर लुढ़का दिया। नर्सों ने मेरे खून के धब्बे लगे कपड़ों को काटा और उन्हें कचरे की एक टोकरी में फैंक दिया। एक एक्सरे इकाई ने मेरे फोटोग्राफ लिए और मैंने देखा कि, मेरी पसलियों की तीन हड्डियाँ टूट गईं हैं और उनमें से एक, मेरे बांए फेफड़े में छेद करती हुई, अंदर घुस गई है। मेरी बांई भुजा, दो स्थानों पर टूटी थी और मेरी वायीं टाँग फिर से घुटनों और टखनों पर टूट गई थी। सैनिकों के बोनट के टूटे हुए सिरे, एक प्रमुख धमनी को थोड़ा चुकाते हुए, मेरे बांए कंधें में अंदर घुस गए थे। ये आश्चर्य करते हुए कि, प्रारंभ कहाँ से किया जाए, महिला शल्य चिकित्सक ने जोर से आह भरी। मैंने खुद को, ऑपरेशन की मेज के ऊपर, तैरता हुआ, घूमता हुआ, जॉचता हुआ महसूस किया, कि क्या उनकी दक्षता मुझे संभालने के लिए, पर्याप्त होगी। मेरे रजत तंतु के ऊपर एक हल्का सा खिंचाव प्रतीत हुआ, और मैंने अपने आपको छत के नीचे तैरता हुआ पाया। वार्ड में से गुजरते हुए, मैंने दूसरे मरीजों को, अपने बिस्तरों में और ऊपर देखा। ब्रह्माण्ड में बाहर की ओर, असीम प्रारंभ की ओर, आकाशीय यात्रा से परे, ईथर के स्तर में, स्तर के बाद स्तर, जब तक कि मैं, ''उस स्वर्णिम प्रकाश के देश में'' दुबारा नहीं पहुँच गया, मैं और दूर तक, ऊपर चलता चला गया।

मैंने उस बैंगनी कुहांसे में आरपार झाँकना प्रारंभ किया। ''वह लौट आया है,'' एक नरम आवाज ने कहा और तब कुहासे ने पीछे हटते हुए, मुझे उस भव्य प्रकाश की ओर, फिर से रास्ता देना शुरू किया। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डौंडुप, नीचे देखते हुए मेरे बगल में खड़े थे। हल्के से दुलार करते हुए, शा–लू मेरे बिस्तर के बगल में लेटा हुआ था। दो दूसरे उच्च व्यक्तित्व कमरे में थे। जब मैंने उन्हें देखा, वे खिड़की से बाहर की ओर, अपने से कई फीट नीचे चलने वाले लोगों को, सावधानीपूर्वक देख रहे थे।

मेरे धक रह जाने पर, वे आश्चर्य के साथ मुड़े और मेरे ऊपर मुस्कराये। ''तुम इतने अधिक बीमार रहे हो,'' एक ने कहा, ''हमको डर था कि तुम्हारा शरीर ये सब नहीं झेल पाएगा।''

दूसरे ने, जिसे मैं, उसकी असाधारण स्थिति, जो उसने पृथ्वी पर बना रखी थी, के बावजूद अच्छी तरह जानता था, मेरे हाथों को अपने हाथों के बीच लिया। ''तुमने बहुत ज्यादा झेला है, लोबसांग। तुम्हारे लिए, संसार बहुत अधिक निर्दयी रहा है। तुमने इसके ऊपर बातचीत की और महसूस किया कि, तुम अपने आपको इससे हटा लेना चाहते हो। यदि तुम इसमें जारी रखो तो तुम्हारे लिए और अधिक परेशानियाँ होंगी। तुम अपने शरीर को अभी त्याग सकते हो और हमेशा के लिए यहाँ रह सकते हो। क्या तुम ऐसा करना चाहोगे ?''

मेरा दिल, मेरे अंदर उछल कूद करने लगा। कुल मिला कर, मेरी तकलीफों के बाद शांति। पीड़ा, परंतु जिसे, केवल मेरे कठिन और विशेष प्रशिक्षण के कारण झेलना अन्यथा मेरे जीवन का काफी पहले अंत हो गया होता। विशेष प्रशिक्षण। हाँ, किसके लिए ? ताकि मैं दूसरे लोगों का प्रभामंडल देख सकूँ, ताकि मैं, प्रभामंडल के शोधकार्यों की दिशा में, विचारों को प्रभावित कर सकूँ। और यदि मैंने छोड़ दिया तो– इस काम को कौन जारी रखेगा ? ''दुनियाँ तुम्हारे लिए बहुत निर्दयी रही है। यदि तुम अभी छोड़ दो, तो तुम्हारी कोई बदनामी नहीं होगी।'' मुझे यहाँ सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिए। दूसरों से कोई बदनामी नहीं–, परंतु पूरी शाश्वतता में हो कर, मुझे अपनी अंतरात्मा के साथ जिन्दा रहना

पड़ेगा। जीवन क्या था ? केवल कुछ वर्षों के लिए कष्ट, कुछ परेशानियों के केवल अगले कुछ वर्ष, कठोरता के कुछ और साल, यातना, गलतफहमियॉ, तब, बशर्ते मैं यह सब कर पाया, जो मैं कर सकता था, मेरी अंतरात्मा हमेशा के लिए शांति में रहेगी।

''आदरणीय श्रीमान्,'' मैंने जवाब दिया, ''आपने मुझे चुनाव का अवसर दिया है, जब तक मेरा शरीर साथ देता है, मैं तब तक सेवा करूँगा। इस समय ये बहुत कमजोर हो गया है'' मैंने जोड़ा। अनुमोदन की आनंदमयी मुस्कानों ने, इकट्ठे हुए लोगों के बीच शालू ने, जोर से दुलार किया और मुझे प्यार से खेलते हुए कोमल सा काटा।

''इन कठोरताओं के बीच, तुम्हारा पृथ्वी का शरीर, जैसा तुम कहते हो, शोचनीय अवस्था में है, प्रबुद्ध आदमी ने कहा। ''तुम अंतिम निर्णय लो, उससे पहले हमें, तुमको यह बता देना चाहिए कि, इंग्लेंड के देश में हमने एक शरीर को ढूंढ़ लिया है, जिसका मालिक उसे छोड़ने के लिए बहुत उत्सुक है। आधाररूप से उसका प्रभामंडल, तुम्हारे जैसा है। बाद में, यदि हालातों को ऐसी आवश्यकता हुई, तुम उसके शरीर में प्रवेश कर सकते हो।''

मैं लगभग डर के मारे बिस्तर से गिर गया। मैं किसी दूसरे के शरीर को लूँ ? मेरे शिक्षक हँसे, ''लोबसांग, तुम्हारा सारा प्रशिक्षण अब कहॉ गया ? ये ठीक दूसरे की पोशाक लेने जैसा है, और सात साल गुजर जाने के बाद, शरीर तुम्हारा हो जायेगा, ठीक उसी गूथ के निशान के साथ, जिसके साथ तुम इतने अधिक संलग्न हो, उसका एक–एक अणु तुम्हारा होगा। पहली नजर में, ये थोड़ा अजनबी लगेगा, जैसे कि तुम्हें पहली बार, पश्चिमी कपड़े पहनने में लगा था। लोबसांग, मैं इसे अच्छी तरह याद रखता हूँ।

विद्वान आदमी दुबारा फिर से बोला, ''मेरे लोबसांग, ये तुम्हारा अपना चुनाव होगा। तुम अपनी स्पष्ट चेतना के साथ, अपने शरीर को छोड़ सकते हो और यहॉ रह सकते हो परन्तु, यदि तुम पृथ्वी पर लौटते हो, क्योंकि शरीरों को बदलने का समय अभी आया नहीं है, इससे पहले कि तुम निर्णय करो, मैं तुम्हे बता दूँ कि यदि तुम लौटते हो, तुम परेशानियों में वापिस लौटोगे। गलतफहमियाँ और अविश्वास, वास्तविक घृणा, क्योंकि बुराइयों का बल, उस सबको रोकता है, जो मानव के आत्मिक विकास के लिये अच्छा है। तुम्हारे आसपास बुराइयों का बल होगा, जिसके साथ संतुष्ट रहना होगा।''

''मेरा मन बन गया है,'' मैंने जबाव दिया। ''आपने मुझे मेरा चुनाव दिया है। मैं तब तक इसे जारी रखूँगा जब तक कि, मेरा काम नहीं हो जाता है, और यदि मुझे दूसरा शरीर लेना ही पड़ा, तो मैं ऐसा भी करूँगा।''

गंभीर नींद ने मेरे ऊपर आक्रमण किया। मेरे पूरे प्रयास के बावजूद, मेरी ऑखें बंद हो गईं। दृश्य हल्का पड़ गया और मैं बेहोश हो गया।

दुनियाँ मुझे घूमती नजर आई। मेरे कानों में जोर–जोर की आवाजें, और आवाजों की घट बढ़ आयी। किसी तरीके से, जिसकी मैं व्याख्या नहीं कर सकता, मैंने स्वयं को बांधा हुआ महसूस किया। क्या मैं फिर से जेल में था ? क्या मुझे जापानियों ने पकड़ लिया ? क्या रूस में हो कर मेरी यात्रा स्वप्न थी ? क्या मैं वास्तव में ''स्वर्णिम प्रकाश के देश को'' गया था ?

''वह आ रहा है, किसी भौंथरी आवाज ने कहा, ''ऐ उठो जगो!'' किसी ने चिल्ला कर मेरे कान में कहा। उनींदेपन से, मैंने अपनी दुखती ऑखों को खोला। एक रूसी औरत त्यौरियाँ चढ़ा कर मुझे घूर रही थी। उसके बगल से, एक मोटी महिला चिकित्सक, पथराई हुई निगाह से, वार्ड में घूम रही थी। वार्ड ? दूसरे शायद चालीस या पचास लोगों के बीच, मैं एक वार्ड में था। तभी दर्द शुरू हुआ। मेरा शरीर, जलते हुए दर्द के साथ, जिन्दा हो गया। सॉस लेना कठिन था। मैं चल नहीं सका।

''ओह वह कर लेगा,'' पथरीले चेहरे वाली डॉक्टर ने कहा जैसे ही वह, और देखभाल करने वाली नर्स, बोली और चली गई। अपने बांई ओर दर्द रहने के कारण, मैं हॉफते हुए, तेजी से छोटी

सांस लेते हुए, लेटा रहा। यहॉ कोई दर्द निवारक दवाऐं नहीं थीं। यहॉ हर कोई अपनी इच्छानुसार, जिन्दा रहता है या मर जाता है। यहाँ कोई किसी दूसरे की सहानुभूति, या पीड़ा से किसी प्रकार आराम, न तो उम्मीद करता है और न ही पा सकता है।

मोटी नर्सें, अपने वजन के कारण, पैर घसीटती हुईं, बिस्तर को हिलाती और कुचलती हुईं चल रहीं थीं। हर सुबह, दूसरों की दूसरी आवश्यकताओं के लिये, पट्टियों को फाडती हुई और उन्हें दूसरों से बदलती हुई संवेदनाहीन उंगुलियॉ। किसी को उन बीमारों के अच्छे कार्यो के ऊपर निर्भर रहना होता था, जो सहयोगी और इच्छुक हों।

मैं वहॉ, मेडीकल स्टाफ और नर्सो के द्वारा लगभग उपेक्षित, जब वे मेरी आवश्यकताओं के ऊपर ध्यान नहीं करते या नहीं कर सकते, मैं दूसरे बीमारों से जो मदद पा सकता था, उसे पाते हुए और पीड़ा झेलते हुए, दो हफ्तों तक पड़ा रहा। दो हफ्तों की समाप्ति पर, वह पत्थर जैसे चेहरे वाली डॉक्टर, उस मोटी नर्स के साथ आयी। उन्होंने मेरे वाऐं हाथ और बांई टांग के प्लास्टर को, भद्दे तरीके से तोड़ा। मैंने इससे पहले, किसी बीमार का, ऐसा इलाज होते हुए नहीं देखा था, और जब मैंने गिरने के चिन्ह प्रदर्शित किये, तो बलवान निष्ठावान नर्स ने मेरी खराब वायीं बाँह को सहारा दिया।

अगले सप्ताह मैं, आसपास, मरीजों की जितनी अच्छी मदद सकता था करते हुए, लंगड़ाता हुआ चला। मुझे, कुल मिला कर एक कम्बल पहनना पड़ता था और मुझे आश्चर्य था कि, मुझे कपड़े कैसे मिलेंगे। मेरे अस्पताल में रुकने के बाईसवें दिन, वार्ड में पुलिस के दो सिपाही आये। मेरे कम्बल को उघाड़ते हुए उन्होंने कपड़ों का सूट मेरी तरफ फेंका, और जोर से चिल्लाये, ''जल्दी करो, तुम देश से निष्कासित होने जा रहे हो। तुमको तीन हफ्ते पहले चले जाना चाहिये था।''

''परन्तु मैं कैसे जा सकता था, जबकि मैं बेहोश था और मेरी इसमें कोई गलती नहीं थी ?'' मैंने बहस की। इसका उत्तर, चेहरे पर केवल एक तमाचा था। पुलिस के दूसरे सिपाही ने अपने खोल में से रिवॉल्वर को, दिखाते हुए ढीला किया। उन्होंने मुझे सीढ़ियों पर जल्दी से ढकेला और राजनैतिक कमीसार, के कार्यालय में ले गये।

''जब तुमको दाखिल किया गया था, तब तुमने हमें नहीं बताया था कि, तुमको देश से निष्कासित कर दिया गया है,'' उसने गुस्से से कहा। ''तुमने बहानेवाजी से इलाज कराया है और तुमको इसका खर्चा देना होगा।''

''कॉमरेड कमीसार,'' मैंने जबाव दिया, ''मुझे यहॉ बेहाशी में लाया गया था, और मेरे सभी जख्म रूसी सैनिक के गलत गाड़ी चलाने के कारण हुए थे। मैंने इसके माध्यम से, काफी नुकसान और बहुत दर्द झेला है।''

कमीसार ने विचारमग्न होकर अपनी ठोढ़ी को ठोका। ''हुम्मममम....,'' उसने कहा, ''यदि तुम बेहोश थे, तो तुम इस सब को कैसे जानते हो ? मैं इस मामले को देखूँगा।'' वह पुलिस के सिपाही की ओर मुड़ा और उससे कहा, ''इसे ले जाओ और अपने पुलिस थाने में, कोठरी में रखो जब तक कि, तुम मुझे सुन न लो।''

एक बार फिर, मुझे गिरफ्तार किये गये आदमी की तरह से, भीड़ भरी गलियों में से हो कर ले जाया गया। पुलिस थाने में एक बार फिर मेरी उॅगलियों की छापें लीं गईं और मुझे जमीन के नीचे, काफी गहराई में बनी, कोठरी में ले जाया गया। लम्बे समय तक कुछ नहीं हुआ, और तब एक संतरी मेरे लिये बन्दगोभी का सूप, काली ब्रेड और कुछ बाजूफल के बीजों से बनी संश्लेषित कॉफी (synthetic acorn coffee) लाया। गलियारे में पूरे समय के लिये, बत्ती जली हुई रखी गई, और रात को, किसी भी प्रकार, दिन से अलग कहने का, और घण्टों के गुजर जाने का पता करने का, कोई तरीका नहीं था। अंत में, मुझे एक कमरे में ले जाया गया, जहॉ एक कठोर आदमी ने अपने कागजों को टटोला और अपने चश्मे में से हो कर मुझे घूरा।

''तुम्हें दोषी पाया गया है,'' उसने कहा, ''जब तुम्हें देश से बाहर निकालने की सजा सुना दी गई थी, तुम्हें उसके बाद भी रूस में रहने का दोषी पाया गया है। सत्य है, तुम एक दुर्घटना में फंस गये थे, जो तुम्हारी खुद की, की हुई नहीं थी परन्तु, जैसे ही तुम होश में आये, तुमको तुरन्त हॉस्पीटल के कमीसार का ध्यान, अपनी स्थिति के ऊपर, आकर्षित करना चाहिये था। तुम्हारे इलाज में, रूस को बहुत खर्च करना पड़ा है,'' वह कहता गया, ''परन्तु रूस दयालु है। तुम, अपने इलाज में खर्च होने वाले भुगतान में मदद करने के लिये, पौलेंड की सड़कों पर, बारह महीनों के लिये काम करोगे।''

''परन्तु आपको मुझे भुगतान करना चाहिये,'' मैंने गर्म हो कर उत्तर दिया। रूसी सैनिक की गलती की वजह से, मैं बुरी तरह घायल हुआ।''

''सैनिक अपना बचाव करने के लिये यहॉ मौजूद नहीं है। वह घायल नहीं हुआ था, इसलिये हमने उसे गोली मार दी। तुम्हारी सजा बरकरार है। कल तुमको पौलेण्ड ले जाया जायेगा, जहॉ तुम सड़कों पर काम करोगे।'' संतरी ने अभद्र तरीके से मेरी बॉह पकड़ी और वह मुझे फिर से, कोठरी की तरफ वापिस ले चला।

अगले दिन, मैं और, हमारी कोठरी में से दूसरे दो आदमी लिये गये और उन्हें रेल्वे स्टेशन की तरफ ले जाया गया। कुछ समय के लिये हम, हथियारबंद पुलिस के साथ में, खड़े हुए। तब सैनिकों की एक टुकड़ी दिखी, और हमारा पुलिस का प्रभारी, उनके सार्जन्ट प्रभारी के पास गया और हस्ताक्षर करने के लिये उसे एक फॉर्म दिया। एक बार फिर, हम रूसी सेना के कब्जे में थे!

दूसरा लम्बा इंतजार, और काफी लम्बे समय के बाद, हमें एक रेल की तरफ भेजा गया, जो अंत में हमको पौलेण्ड में लो (Lwow) को ले जाती।

लो (Lwow) एक नीरस स्थान था। देहात, इधर–उधर तेल के कुओं से भरा हुआ था, युद्ध के भारी यातायात के कारण, सड़क भयानक थी। आदमी और औरतें, पत्थर तोड़ते हुए, और गड्ढों को भरते हुए, भूखे मरने वाली खुराक पर, शरीर और आत्मा को एक साथ रखने का प्रयास करते हुए, सड़कों पर काम कर रहे थे। दो आदमी, जिन्होंने मेरे साथ कीव (Kiev) से यात्रा की थी, वे एकदम असमान (dissimilar) थे। जैकब एक गंदे दिमाग वाला आदमी था, जो तुरुप के पत्ते के रूप में, किसी कहानी के साथ, संतरियों की तरफ दौड़ा। जोसेफ एकदम अलग था और उस पर, ''अपना भार उठाने के लिये'' विश्वास किया जा सकता था। चूंकि मेरी टॉगें खराब थीं और मैं लम्बे समय तक, खड़ा नहीं रह सकता था, मुझे सड़कों के किनारे बैठ कर, पत्थर तोड़ने का काम दिया गया। स्पष्टरूप से, यह विचार नहीं किया गया कि, मेरी खराब बांई भुजा और मात्र ठीक हुई छाती की हड्डियॉ और फेफड़े, किसी प्रकार की कमजोरी भी हो सकते हैं। एक महिने के लिये, केवल खाने के लिये गुलामी करते हुए, मैं इससे चिपका रहा। औरतें, जो यहॉ काम करती थीं, उन्हें भी हर घन गज (cubic yard) पत्थर तोड़ने के लिये दो जलोटी[22] दिये जाते थे। महीने के अंत में, खून की खॉसी करते हुए, मैं थकने के कारण बेहोश होकर गिर पड़ा। जब मैं, सड़क के किनारे पड़ा था, संतरी के आदेशों की अवलेहना करते हुए, जोसेफ मेरी मदद के लिये आया। सैनिकों में से एक ने, अपनी रायफल उठायी और गोली चलाई, जो सौभाग्यवश किसी महत्वपूर्ण अंग को चुकाते हुए (missing), जोसेफ के गले में लगी। हम साथ–साथ, सड़क के किनारे पड़े रहे, जब तक कि एक किसान, अपनी घोड़ा गाड़ी में, पास नहीं आया। गार्ड ने उसको रोका और हम उसके लदे हुए सामान के ऊपर उठा कर फेंक दिये गये। संतरी कूद कर उसके बगल में पहुॅचा, और हम लड़खड़ाते हुए, लुढ़कते हुए, जेल के अस्पताल की तरफ चले। कई हफ्तों तक, मैं एक लकड़ी के ठूंठों पर पड़ा रहा, जिन्होंने मेरे बिस्तर का काम किया। तब जेल के डॉक्टर ने कहा कि, मुझे बाहर जाना पड़ेगा। मैं मर रहा था, उसने कहा, और यदि उस महीने में कैदियों में से कोई और मरा, तो वह परेशानी में फंस जायेगा, वह अपने कोटे को पूरा कर चुका था!

22 अनुवादक की टिप्पिणी : पोलेंड की मुद्रा; जिसका 1 जनवरी 1995 को विमुद्रीकरण किया गया। 10,000 पुरानी ज्लोटी (PLZ) एक नई ज्लोटी (PLN) के बराबर हुईं।

अस्पताल की मेरी कोठरी में असामान्य विचार विमर्श हुआ। जेल के संचालक, डॉक्टर, और एक वरिष्ठ संतरी। ''तुमको इस्ट्रीज्य (Stryj)[23] जाना पड़ेगा,'' गवर्नर ने कहा। ''चीजें उतनी कठोर नहीं हैं और देश अधिक स्वास्थ्यकर है।''

''परन्तु गवर्नर,'' मैंने जबाव दिया, ''मैं क्यों जाऊँ ? मैं जेल में बिना किसी अपराध के बंद हूँ, मैंने बिल्कुल कोई गलत काम नहीं किया है। मैं क्यों जाऊँ ? और इस संबंध में चुप रहूँ ? मैं हरेक को बताऊँगा और मिलूँगा, कि इस सबकी व्यवस्था कैसे की गई थी ?''

काफी चीख पुकार हुई, काफी कहा–सुनी, झगड़ा; और अंत में, मैं जेल का बंदी, एक हल के साथ प्रस्तुत हुआ। ''गवर्नर,'' मैंने कहा, ''आप खुद को बचाने के लिये, मुझे बाहर करना चाहते हैं। मैं दूसरी जेल को नहीं भेजा जाऊँगा और चुप रहूँगा। यदि आप मुझे चुप रखना चाहते हैं, तो मुझे और जोसेफ कोचिनो (Jozef Kochino) को इस्ट्रिज के लिये, स्वतंत्र आदमी के रूप में, साथ जाने दीजिये। हमें कपड़े दीजिये कि, हम अच्छे दिख सकें। हमें थोड़ा पैसा दीजिये कि, हम थोड़ा खाना खरीद सकें। हम चुप रहेंगे और ठीक अभी कारपेंथियन[24] के ऊपर चले जायेंगे।''

गवर्नर गरजा और भुनभनाया, और सभी आदमी मेरी कोठरी से बाहर दौड़े। अगले दिन गवर्नर फिर वापिस आया और उसने बताया कि, उसने मेरे कागजों को देख लिया है और कहा कि, ''मैं एक आदरणीय आदमी'' था, जैसा उसने कहा, ''जो अन्याय पूर्वक जेल में रखा गया है।'' जैसा मैंने कहा, वह वैसा ही करेगा।

एक हफ्ते तक कुछ नहीं हुआ और अधिक कुछ नहीं कहा गया था। ऑठवे दिन के सुबह तीन बजे, एक संतरी मेरी कोठरी में आया, उसने मुझे बुरी तरह से जगाया, और मुझे कहा कि, मुझे कार्यालय में बुलाया गया है। मैंने जल्दी से कपड़े पहने और संतरी के पीछे–पीछे कार्यालय गया। उसने दरवाजा खोला और मुझे अन्दर ढकेल दिया। एक संतरी, कपड़ों के दो ढेरों और रूसी सैनिकों के, दो डिब्बों के साथ, अन्दर बैठा था। खाना एक मेज पर था, उसने मुझे चुप रहने और अपने पास आने का इशारा किया।

''तुम इस्ट्रीज को ले जाये जा रहे हो,'' उसने फुसफुसा कर कहा। ''जब तुम वहॉ पहुँचो, संतरी से, – वहॉ केवल एक ही होगा – थोड़ा और आगे ले जाने के लिये कहना। यदि तुम उसे एक शांत सड़क पर ले जा सको, उसके ऊपर हमला करना, उसको काबू में कर लेना, उसको बांध लेना और उसे सड़क के किनारे पर छोड़ देना। बीमारी में, तुमने मेरी सहायता की है, इसलिये मैं तुम्हें बताऊँगा कि, एक भगोड़े के रूप में, वहॉ तुम्हें गोली मारने की योजना है।''

दरवाजा खुला और जोसेफ अन्दर आया। ''अब अपना नाश्ता करो,'' संतरी ने कहा, ''और जल्दी करो। तुम्हारे रास्ते पर तुमको मदद करने के लिये, यहॉ थोड़ा सा धन है।'' फिर भी यह काफी अच्छा पैसा था। मैं षड़यंत्र को भॉप सका। जेल का गवर्नर ये कहने जा रहा था कि, हमने उसे लूट लिया और भाग गये।

नाश्ता अपने अन्दर जाने के साथ, हम चार पहिये वाली, जीप की तरह की, एक कार में बाहर गये। पुलिस का एक अच्छा ड्रायवर, सीट पर बैठा, उसके बगल में रिवॉल्वर थी। रुखाई से, उसने हमें अन्दर आने का इशारा किया। वह क्लच पर बैठा और खुले दरवाजे से बाहर कूदा। अपने रास्ते पर पैंतीस मील, अर्थात् – स्ट्राइज से पॉच मील पहले, – मैंने सोचा कि, अब ये काम करने का मौका है। मैं जल्दी से पहुँचा और दूसरे हाथ से स्टीयरिंग को अपने हाथ में लेते हुए, संतरी की नाक के नीचे, जूडो का हल्का सा धक्का दिया। त्वरक (accelerator) पर पैर का दबाव बना, संतरी लुढ़क गया। जल्दी से मैंने गाड़ी का स्विच बंद किया और गाड़ी को, सड़क के एक बगल की ओर, ले गया। जोसेफ

23 अनुवादक की टिप्पिणी : (Stryi), जो पूर्वी पोलेंड में, लुबनिन (Lubnin) के पास है।

24 अनुवादक की टिप्पिणी : कारपेंथियन, मध्य और पूर्व यूरोप में, चाप की शक्ल में फैली हुई, लगभग 1500 किलोमीटर लम्बी, एक पर्वत श्रंखला है, जो स्कंडेनेवियन पर्वत श्रंखला (1500 किलोमीटर लम्बी) के बाद, उसे यूरोप में, द्वितीय सबसे लम्बी पर्वत श्रंखला, बनाती है। इस क्षेत्र में भूरे भालू, भेड़िये, साबर, वनविलाव बहुतायत से मिलते हैं।

खुले मुँह से, ये सब देख रहा था। जल्दी से, मैंने उसे षड़यंत्र के बारे में बताया।

''जल्दी, जोसेफ,'' मैंने कहा। ''अपने कपड़ों को उतार लो और इसके पहन लो। तुम्हें गार्ड बनना पड़ेगा।''

''लेकिन लोबसांग,'' जोसेफ ऊँची आवाज में रोने लगा, ''मैं गाड़ी नहीं चला सकता, और तुम रूसी जैसे नहीं लगते हो।''

हमने संतरी को रास्ते से हटा कर, अलग धकेल दिया और जब तक कि हम एक गड्ढे भरी पतली सड़क पर नहीं पहुँच गये, मैं ड्राइवर की सीट पर बैठा, और इंजन को शुरू किया। हम रास्ते पर थोड़ा और आगे बढ़े और रुक गये। संतरी अब कॉप रहा था, इसलिये हमने उसे चेताया। मैंने बन्दूक को उसके बगल से पकड़ा।

''संतरी,'' मैं जितना तेजी से चिल्ला सकता था, उतना तेजी से चिल्लाया, ''यदि तुम अपने जीवन का कोई मूल्य समझते हो, तो जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो। तुम हमें स्ट्रीज के बाहरी हिस्से की तरफ ले चलोगे, स्कोल्ये (Skol'ye) की तरफ। वहॉ हम तुम्हें जाने देंगे।''

''जो तुम कहोगे, मैं वह कुछ भी करूँगा,'' संतरी रिरराया, परन्तु यदि तुम सीमा को पार करना चाहते हो, तो मुझे भी अपने साथ ले चलो, नहीं तो मुझे गोली मार दी जावेगी।''

जोसेफ, सावधानी पूर्वक बन्दूक की देखभाल करता हुआ, और पीछे बैठे संतरी की गर्दन के ऊपर ध्यान करता हुआ, जीप के पिछले भाग में बैठा। मैं ड्राइवर के साथ बैठा, मानो कि यदि उसने, सड़क से बगल से ले जाने वाली मेरी चाल को, अजमाने की, या गाड़ी की चाभियों को दूर फेंकने की, कोशिश की। हम मुख्य सड़कों को छोड़ते हुए, तेजी से आगे गये। हम जैसे – जैसे कारपेंथियन पर्वत श्रेणियों में अन्दर गये, देहात का इलाका, अधिक पर्वतीय होता गया। हमें छिपने के अच्छे स्थान देते हुए, पेड़ घने होते गये। हम अपनी टॉगों की सीधा करने के लिये एक माफिक स्थान पर रुके। जो कुछ भी हमारे पास था, हमने संतरी के साथ आपस में बांटते हुए, कुछ खाना खाया। वेल्के–बेरेजनी (Vel'ke-Berezni) पर पेट्रोल लगभग समाप्त हो गया, हम रुके और हमने जीप को छिपा दिया। संतरी को अपने बीच में रखते हुए, हम छिप कर आगे बढ़े। ये सीमान्त प्रदेश था और हमें सावधान रहना था। कोई भी, जिसके पास पर्याप्त कारण हो, किसी भी देश की सीमा को पार कर सकता है। इसमें मात्र थोड़ी चालाकी और उद्यम की आवश्यकता होती है। मुझे कभी भी, किसी देश के सीमा को अवैध रूप से पार करने में, हल्की सी भी, वास्तविक परेशानी नहीं हुई। मुझे परेशानियॉ तब हुईं, जब मेरे पास, उसे लाल फीताशाही का लक्ष्य बनाने के लिये, सही वैधानिक पारपत्र (passport) था। पासपोर्ट मात्र असुविधाजनक होता है। किसी भोलेभाले यात्री को, उसे लालफीताशाही का मजाक बना देने का कारण होता है। किसी भी व्यक्ति के लिये, पारपत्र की कमी, सीमाओं को पार करने के लिये, कोई अड़चन नहीं है। तथापि, किसी भी हानि रहित यात्री को परेशान करने के लिये, पासपोर्ट होना आवश्यक होता है और अप्रसन्न अधिकारियों के झुण्ड को, बहुधा, काफी कार्य प्रदान करता है। ये 'सीमाओं को किस प्रकार अवैध रूप से पार किया जाय' विषय पर कोई निबंध नहीं है, इसलिये मैं यह कहना चाहूँगा कि, बिना किसी परेशानी के, हम तीनों चेकोस्लोवाकिया (Czechoslovakia) में घुस गये। संतरी अपने रास्ते पर गया, और हम अपने रास्ते पर चले।

''मेरा घर लेवाइस (Levice) में है,'' जोसेफ ने कहा, ''मैं घर जाना चाहता हूँ। तुम जितना चाहो, मेरे साथ रुक सकते हो।''

हमने, साथ–साथ पैदल चलते हुए, लिफ्ट लेते हुए, और रेलों पर चढ़ते हुए, कोसाइस (Kosice), त्स्वोलेन (Zvolen), और लेवाइस के लिये अपना रास्ता लिया। जोसेफ, देश को अच्छी तरह जानता था। आलू या चुकन्दर या अन्य चीजें, जो खाई जा सकती हों, कहॉ से ली जायें, इसे वह अच्छी तरह से जानता था।

अंत में काफी समय के बाद, हम लेवाइस में एक पतली गली में, एक छोटे घर की ओर चले। जोसेफ ने थपकी दी, और कोई उत्तर नहीं मिला, दुबारा फिर से थपथपाया। एक गहरी सावधानी के साथ, पर्दे को एक इंच या ऐसा ही कुछ, एक बगल से खींचा गया। निगरानी करने वाले ने देखा और वह जोसेफ को पहचान गया। दरवाजा फटाक से खुला और वह अन्दर खींच लिया गया। मेरे सामने, दरवाजा छपाक से बंद हो गया। मैं ऊपर, नीचे, बाहर, चलता–फिरता रहा। अंत में दरवाजा फिर खुला और मेरे विचार से जितना संभव होता, जोसेफ उससे भी अधिक परेशानी में दिखता हुआ, आया।

''मेरी मॉ तुम्हे अन्दर नहीं रख सकती,'' उसने कहा। ''वह कहती है कि यहॉ, यहॉ आसपास, हद से ज्यादा जासूस हैं और यदि हमने किसी दूसरे को अन्दर लिया, तो हम सभी गिरफ्तार हो जायेंगे। मुझे बहुत खेद है।'' इसके साथ उसका चेहरा शर्म से झुका और वह मुड़ कर अपने घर में चला गया, मुड़ कर दोबारा घुस गया।

लम्बे क्षणों तक, मैं स्तब्ध खड़ा रहा। मैं ही जोसेफ को जेल से बाहर से निकालने के लिये उत्तरदायी रहा था, मैंने उसे गोली खाने से बचाया। मेरे प्रयास उसको यहॉ लाये थे और अब वह बदल गया और उसने मुझे, जैसा मैं कर सकता हूँ, अच्छे से अच्छा करने के लिये, स्वयं को व्यवस्थित करने के लिये छोड़ दिया। दुखी हो कर मैं मुड़ा और गली में नीचे की तरफ, और आगे लम्बी सड़क तक, अपना रास्ता फिर से पहचाना, बनाया। कोई पैसा नहीं, खाना नहीं, भाषा की कोई समझ नहीं। मैं, एक आदमी, जिसे मैं ''मित्र'' कहता था, की धोखेबाजी पर दुखी हुआ, अंधा हो कर चलता गया।

घण्टों के बाद घण्टे, मैं राष्ट्रीय पथ के साथ–साथ नाचता रहा। गुजरने वाली कारों ने मेरे ऊपर निगाह नहीं फेरी। मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिये, तमाम लोग वहॉ सड़क पर चल रहे थे। कुछ मील पहले, मैंने कुछ अधसड़े आलुओं को उठा कर, जिसे एक किसान ने अपने सूअरों के लिये डाल दिया था, अपनी भूख को, कुछ शांत किया था। पानी पीना कोई समस्या नहीं थी क्योंकि, वहॉ काफी झरने थे। काफी पहले ही मैंने ये सीख लिया था कि, झरने और नाले सुरक्षित होते हैं, परन्तु नदियॉ प्रदूषित होती हैं।

मुझसे काफी आगे, सीधी सड़क पर, मैंने एक भारी चीज देखी। दूरी से, ये एक पुलिस का ट्रक या सड़क की रुकावट दिखाई दी। कई मिनटों तक, मैं सड़क के बगल में निगरानी करता हुआ बैठा रहा। पुलिस अथवा सैनिकों का, कोई चिन्ह नहीं था। इसलिये, इस सम्बंध में काफी सावधान रहते हुए, मैंने अपनी यात्रा दोबारा शुरू की। जैसे ही मैं करीब आया, मैंने देखा कि एक आदमी इंजन के साथ कुछ करने की कोशिश कर रहा था। उसने मेरे पहुॅचने पर मुझे देखा और कुछ कहा, जो मैं समझ नहीं सका। उसने इसे दूसरी भाषा में फिर दोहराया, और तब फिर कुछ और अन्य भाषा में। अन्त में, मैं मोटे तौर पर ये समझ पाया कि, वह क्या कह रहा है। इंजन रुक गया था और वह इसे चालू नहीं कर सका था, क्या मैं मोटर के बारे में कुछ जानता हूँ ? मैंने देखा, उसके साथ कुछ छेड़खानी की। इस संबंध में, कुछ बिन्दुओं पर देखा, और स्टार्टर को चलाने की कोशिश की। पेट्रोल काफी था। तारों को नीचे की तरफ देखने पर मैंने देखा कि एक स्थान पर, प्रज्वलन (ignition) को काटते हुए, रोधन (insulation) जल गया था, जब कार ने सड़क पर एक बम्पर से टकरा कर उछाल मारी और उसने नंगे तारों को आपस में मिला दिया था। मेरे पास कोई रोधक फीता (insulating tape) या औजार नहीं था, परन्तु तारों को कपड़े की पट्टियों में लपेटना और उन्हें सुरक्षित बांध देना, यह मात्र कुछ ही क्षणों का काम था। इंजन चालू हुआ और ढंग से दुलारने लगा। ''यहॉ कुछ खराब है,'' मैंने सोचा। ''किसान की पुरानी कार में, ये इंजन बहुत अच्छा चल रहा है।''

आदमी प्रसन्नता के साथ, ऊपर–नीचे उछलकूद कर रहा था। 'ब्रावा–ब्रावा (brava-brava)। वह प्रसन्नता से (उछलकूद में) जारी रहा। ''तुमने मुझे बचा लिया है!'' मैंने उसे कुछ परेशानी के साथ देखा, मैंने उसे कैसे बचाया, उसकी कार को चालू करके ? उसने मेरी ओर सावधानी से देखा।

''मैंने तुम्हें पहले देखा है,'' उसने कहा। ''और तुम दूसरे आदमी के साथ, लेवाइस में ह्रोन नदी के पुल (the river Hron bridge) को पार कर रहे थे।''

''हॉ'', मैंने जवाब दिया, और अब मैं अपने रास्ते पर अकेला हूँ।''

उसने मुझे अपनी कार में आने का इशारा किया। जब वह साथ में बैठ कर कार चला रहा था, जो कुछ हुआ था, मैंने सब कुछ उसे बता दिया। उसके प्रभामंडल से मैं देख सका कि, वह विश्वास करने योग्य और सदाशयपूर्ण व्यक्ति था।

''युद्ध ने मेरे धंधे को चौपट कर दिया, उसने कहा,'' और मुझे अपना, और अपने परिवार का, पेट पालना है। तुम कारों को अच्छी तरह जानते हो और मैं एक ड्राईवर का उपयोग कर सकता हूँ, जो सड़क पर कभी फंसे नहीं। हम खाने के सामान और सुविधा के कुछ सामान, एक देश से दूसरे देश को ले जाते हैं, जो कुछ तुम्हें करना होगा, वह है कार को चलाना और उसकी देखभाल करना।''

मैंने अत्यंत संदेहास्पद दृष्टि से देखा। तस्करी ? मैंने इसे अपने जीवन में कभी नहीं किया। आदमी ने मेरी तरफ देखा और कहा, ''कोई मादक पदार्थ नहीं, कोई हथियार नहीं, हानि पहुँचाने वाली कोई चीज नहीं। जिंदा रखने के लिए खाना, और औरतों की सुख–सुविधा के थोड़े से सामान, उन्हें प्रसन्न रखने के लिए।'

ये मुझे विशिष्ट प्रतीत हुआ, चैकोस्लोवाकिया एक ऐसा देश नहीं लगता था, जो खाने और विलासिता के सामानों का निर्यात करना झेल सके। मैंने ऐसा कहा, और आदमी ने जवाब दिया, 'तुम एकदम सही हो, ये सब दूसरे देशों से आता हैं, हम इसे, मात्र आगे बढ़ा देते हैं। रूसी लोग, इसे कब्जे में लिए गए आदमियों से चुराते हैं, उनके सारे सामान को जब्त कर लेते हैं। वे सभी कीमती सामानों को रेलों पर चढ़ा देते हैं और माल से भरे सभी भार (loads), वापस पार्टी के सभी ऊँचे नेताओं को भेज देते हैं। हम केवल उन रेलों से ही छेड़छाड़ करते हैं, जिनमें से अधिकांश में अच्छा खाना, जिसे हम दूसरे देशों को भेज सकें, जो इसकी आवश्यकता में हैं, होता है। सभी सीमांत सुरक्षा प्रहरी इसमें शामिल हैं। तुम्हें केवल मेरे बगल से बैठ कर गाड़ी चलानी पड़ेगी।'

'ठीक हैं, मैंने कहा, 'मुझे इस ट्रक के अंदर दिखाओ, यदि इसमें कोई मादक पदार्थ जैसा कुछ भी नहीं है, तो जहाँ तुम जाना चाहोगे, मैं तुम्हारी इच्छा से ड्राइव करके ले चलूँगा।

वह हॅसा और उसने कहा, 'पीछे आओ। तुम जितना देखना चाहते हो देखो। मेरा नियमित ड्राईवर बीमार है, और मैंने सोचा था कि, मैं इस कार की खुद ही व्यवस्था कर सकता हूँ। मैं नहीं कर सकता क्योंकि, मैं मशीनी चीजों के बारे में कुछ नहीं जानता हूँ। जब युद्ध ने मुझे काम से अलग कर दिया, उससे पहले मैं वियना (Vienna)[25] में, एक सुप्रसिद्ध वकील था।'' मैंने उथल–पुथल करते हुए, सामान को देखा और पीछे से बाहर आ गया। जैसा उसने कहा, वहाँ केवल खाना और थोड़ी सी रेशम की चीजें थीं, जिन्हें केवल औरतें पहनती हैं। ''मैं संतुष्ट हुआ,'' मैंने कहा, ''मैं तुम्हें चला कर ले जाऊँगा।''

उसने मुझे ड्राईवर की सीट की ओर इशारा किया और हम अपनी यात्रा पर चल दिए, जो मुझे ब्राटिसलावा (Bratislava) में हो कर आस्ट्रिया (Austria) में ले गई, वियना और क्लागेनफर्ट (Klagenfurt) में होते हुए, अंत में इटली में, जहाँ पर बेरोना में यात्रा समाप्त हुई। सीमांत प्रहरियों ने

25 अनुवादक की टिप्पिणी : वियना (Vienna), आस्ट्रिया की राजधानी तथा एक बड़ा शहर, एवं आस्ट्रिया के नौ राज्यों में से एक राज्य है। ये शहर, आस्ट्रिया के पूर्वी भाग में, चैकोस्लोवाकिया तथा हंगरी की सीमाओं के निकट स्थित है। 18 लाख आबादी वाला यह शहर, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक यह, विश्व भर में जर्मन भाषा भाषी सबसे बड़ा शहर था। आज विश्व भर के जर्मन भाषा भाषी शहरों में, बर्लिन के बाद इसका नम्बर दूसरा आता है। वियना, संयुक्त राष्ट्र (UNO) तथा तेल उत्पादक एवं निर्यातक देश (OPEC) जैसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की मेजवानी करता है। 2001 में इसे, यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत के रूप में मान्यता दी गयी है। संगीत का नगर ''(city of music)'' कहे जाने के साथ–साथ, विश्व के प्रथम मनोविश्लेषक (Psychoanalyst)- सिगमंड फ्राइड (Sigmund Freud) का जन्म स्थान होने के कारण, इसे ''स्वप्नों का नगर (the city of dreams)'' भी कहा जाता है। वियना को, विश्व भर में उसके उच्च जीवनस्तर के लिये जाना जाता है, जिसके लिये, 2005 में बंकोवर (Vancouver) के साथ–साथ, (tie) इसे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था। संयुक्त राष्ट्र बसाहट (UN habitat) द्वारा 2012–2013 में इसे विश्व का सर्वाधिक संपन्न (most prosperous) शहर के रूप में वर्गीकृत किया गया। 2005 से 2010 की अवधि में यहाँ, अनेक अंर्तराष्ट्रीय संगठनों एवं सम्मेलनों का आयोजन किया गया। यहाँ लगभग 37 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते है।,

हमें रोका, सामान के निरीक्षण का दिखावा किया, और जब उनके हाथ में हमने एक छोटा पैकेट थमाया, हमें चलता कर दिया। एक बार, हमारे सामने दौड़ती हुई पुलिस की एक गाड़ी, अचानक रुकी, और मुझे वास्तव में, जोर लगाकर ब्रेक लगाना पड़ा। पुलिस के दो सिपाही, रिवोल्वर खींचते हुए हमारी तरफ दौड़े। तब उन निश्चित कागजों के दिखा देने पर वे, स्तब्ध होते दिखते हुए और बहुत क्षमा मांगते हुए, खेद प्रकट करते हुए, वापस लौट गए। मेरा नया मालिक मुझसे बहुत अधिक प्रसन्न दिखाई दिया। ''मैं तुम्हें एक व्यक्ति के संपर्क में लाऊँगा, जो स्विटजरलैंड (Switzerland) में, लोसान (Laussane) में ट्रक चलाता हैं'' उसने कहा, ''और यदि वह मेरी तरह से संतुष्ट हुआ, वह तुम्हें किसी और के पास, लुडबिगसाफेन (Ludwigshafen), जर्मनी (Germany) में भेज देगा।''

जब हमारा सामान उतारा जा रहा था और दूसरा सामान लादा जा रहा था, मैंने एक हफ्ते के लिए, वेनिस (Vanice) में आराम किया। हम इतने थका देने वाले ड्राईव के बाद, आराम चाहते थे। वेनिस मेरे लिए एक खतरनाक स्थान था। मैं इतनी नीची जगह में, सांस लेने में दिक्कत महसूस कर रहा था। मुझे ऐसा लगा कि, ये स्थान मानो खुला सीवर हो।

हम एक दूसरे ट्रक में, वेनिस से पेदुआ (Padua), बाईसेन्जा (Viceæa), और वेरोना (Verona[26]) गये। सभी अधिकारियों के मध्य, हमको जनता का शुभचिंतक माना गया, और मैंने आश्चर्य किया कि मेरा मालिक, वास्तव में कौन है। उसके प्रभामंडल से, और प्रभामंडल झूठ नहीं बोलता, ये स्पष्ट था कि, वह एक भला आदमी था। चूंकि मैं इसमें वास्तव में, कोई रुचि नहीं रखता था, मैंने कोई पूछताछ नहीं की। मैं कुल मिला कर, जीवन में अपने कार्य की तरफ, चलते रहना चाहता था। जैसा मैं जानता था कि, जब तक मैं, एक देश से दूसरे देश तक, उछल–कूद की इस जिंदगी से मुक्त, कहीं स्थाई नहीं हो जाता, मेरा कार्य तब तक शुरू नहीं हो सकता था।

बेरोना होटल में, मेरा मालिक मेरे कमरे में आया। ''मेरे पास एक आदमी है, मैं उसे, तुमसे मिलाना चाहता हूँ। वह आज शाम को यहाँ आने वाला है। आह, लोबसांग, तुम अच्छे रहोगे, यदि तुम अपनी दाढ़ी को मूड कर साफ कर दो। अमरिकी लोग दाढ़ियों को नापसंद करते दिखते हैं, और ये आदमी अमेरिकी है, जो ट्रकों और कारों को सुधार कर दुबारा बनाता है और उन्हें एक देश से दूसरे देश में चलाता है। ये कैसा रहा ?'

''श्रीमान्, मैंने जबाव दिया,'' यदि अमेरिकी या कोई भी दूसरा, मेरी दाढ़ी को नापसंद करता है, तो उन्हें अपनी नापसंद पर चलते रहना पड़ेगा। मेरी जबड़े की हड्डियाँ, जापानी जूतों के द्वारा कुचल दी गईं थीं, और मैं अपनी चोटों को छिपाने के लिए दाढ़ी रखता हूँ।''

मेरे मालिक ने, एक लंबे समय तक, मुझसे बात की और जब हम चलें, उससे पहले, उसने मुझे, ये कहते हुए कि, मैंने अपनी तरफ का व्यवहार, अच्छी तरह रखा है और वह अपनी तरफ के व्यवहार को रखेगा, काफी संतुष्टिकारक रकम दी।

अपने मोटे होठों के बीच में एक बड़ा सा सिगार घुमाते हुए, अमेरिकी एक मांसल (flashy) व्यक्ति था। उसके दांत उतारतापूर्वक सोने से मढ़े गए थे, और उसके कपड़े वास्तव में, उसके भड़कीले पन से प्रभावित थे। उसके सामने नाचती हुई, कृत्रिमरूप से भूरे बालों वाली एक औरत, जिसके कपड़े मुश्किल से ही, उसकी शरीर रचना के उन भागों को, जिन्हें पश्चिमी लोग, ढके जाने की मांग करते हैं,

---

26 अनुवादक की टिप्पिणी : वेरोना इटली के उत्तरी भाग में है, जिसकी आवादी लगभग तीन लाख है। ये अपनी कला की विरासत, अनेक वार्षिक मेले, प्रदर्शन, ओपेरा आदि के कारण, उत्तरी इटली के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। ऐरेना (Arena), यहाँ का प्राचीन एम्फीथ्रियेटर है, जिसे रोम के नागरिकों द्वारा बनाया गया था। ऐरोना का हवाई अड्डा, उसके दक्षिण पश्चिमी भाग में, लगभग पांच किलोमीटर दूर है। शेक्सपियर (Shakespeare) के तीन नाटकों; रोमियो एण्ड जूलियट (Romeo and Juliot), दि टू जेंटलमेंट ऑफ वेरोना (The two gentlemen of Verona) और टेमिंग ऑफ दि श्रू (The taming of the Shrew) की पृष्ठभूमि वेरोना ही है। वेरोना के शहरी आकार और वास्तुकला के लिए, यूनेस्को (UNESCO) द्वारा, शहर को विश्व विरासत (World heritage) में सम्मिलित किया गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, इटली, नाटो (NATO) संगठन में सम्मिलित हुआ, इससे, लौह पर्दे (iron curtain) के समीप में होने के कारण, वेरोना को अधिक महत्व मिला। शहर, (South European Allied Terrestial Forces, SETAF) का मुख्यालय बना और शीत युद्ध के पूरे काल में, यहाँ सैनिक गतिविधियाँ, विशेष रूप से अमरीकन, शक्तिशाली रूप से चलतीं रहीं, जो पिछले कुछ समय से काफी घटी हैं। अब वेरोना, अपने इतिहास, अपनी अर्थव्यवस्था और पर्यटकों के आकर्षण के कारण, एक महत्वपूर्ण और गतिशील नगर है।

ढक पा रहे थे।

जैसे ही उसने मेरी तरफ देखा, ''कहिए, उसने किलकारी भरी। क्या वह भोला नहीं है ? क्या वह एक गुड्डा नहीं है?'

''आह! बकवास बंद करो, बेबी,'' उस आदमी ने कहा, जो उसको आमदनी कराता था। ''भागो, टहलने जाओ। हमें काम करना है।'' मुँह फुलाते हुए और ठनठनाते हुए, जिसने उसकी हर चीज को खतरनाक तरीके से हिला दिया, उसने अपने झीने कपड़ों के ऊपर बहुत भारी दबाब डाला, ''बेबी'' शराब की तलाश में, कमरे के बाहर चली गयी।

''हमारे पास एक सजी–धजी मर्सडीज (Mecedes) बाहर है,'' अमेरिकी ने कहा। ''इसके लिए यहॉ कोई बिक्री नहीं है, ये दूसरे देश से बहुत अच्छी रकम लायेगी। ये मूसो के बड़े लोगों (Musso's big shots) में से एक की हुआ करती थी। हमने इसे ठीक किया और इसके ऊपर रंग रोगन करा दिया। जर्मनी में कार्लस्रूह (Karlsruhe)[27] में मेरे बहुत अच्छे संपर्क हैं, यदि मैं इसे वहाँ भेज सकूँ तो यह मेरी जेब भर देगी।''

''तुम इसे खुद चला कर क्यों नहीं ले जाते ?'' मैंने पूछा। ''मैं स्विट्जरलैंड अथवा जर्मनी को जानता नहीं हूँ।''

'' जी (Gee), मैं इसे चलाऊँ ? मैं कई बार ऐसा कर चुका हूँ, सीमान्त के सभी प्रहरी मुझे जानते हैं।''

''तो तुम मुझे पकड़वाना चाहते हो, मैंने जवाब दिया।'' 'मैं बहुत दूर से, बहुत खतरे उठाता हुआ यहाँ आया हूँ, नहीं, मैं इस काम को नहीं करना चाहता।''

''ओह, आदमी तुम्हारे लिए ये काम आसान है, तुम ईमानदार दिखते हो और मैं तुम्हें, ये कहते हुए कि, ये तुम्हारी कार है और तुम एक पर्यटक हो, कागजात दे सकता हूँ। निश्चितरूप से, मैं तुम्हें ये कागजात दे सकता हूँ।'' उसने एक बड़े ब्रीफकेस में, जिसे वह लिए हुए था, झांका और उसने कागजों और प्रपत्रों (forms) का एक बड़ा पुलिंदा, मेरी तरफ धकेला। वैसे ही आलस्यपूर्ण ढंग से, मैंने उन पर नजर मारी। मैंने देखा कि वे, पानी के जहाज के इंजीनियर आदमी के संबंध में थे, पानी के जहाज के इंजीनियर के। उसका यूनियन कार्ड और सब कुछ वहाँ था। पानी के जहाज का इंजीनियर! यदि मैं उन कागजों को पा जाऊँ, तो मैं पानी के जहाज के ऊपर जा सकता हूँ। चुंगकिंग में, मैंने चिकित्सा और शल्य चिकित्सा के साथ इंजीनियरिंग भी पढ़ी थी; मेरे पास, इंजीनियरिंग में बी. एस–सी. की उपाधि (degree) भी थी। मैं पूरी तरह से अर्हता प्राप्त (qualified), एक विमान चालक भी था। मेरा दिमाग दौड़ने लगा। ''ठीक है, मुझे इसमे कोई उत्सुकता भी नहीं है'' मैंने कहा। ''अत्यधिक जोखिम भरा। इन कागजों पर मेरा फोटो नहीं लगा है। मैं कैसे जान सकता हूँ कि, वास्तविक मालिक, किसी गलत समय पर, सामने नहीं आ खड़ा होगा ?''

''आदमी मर चुका है, मर गया और दफना दिया गया। वह अत्यधिक शराब पिये हुए था और एक फियेट को बहुत तेजी से चला रहा था। अनुमान है, उसे नींद आ गई; कैसे भी, उसने स्वयं को सीमेंट–कंक्रीट के एक पुल के बगल से छितरा दिया। हमने उसके बारे में सुना और उसके कागजात उठा लिये।''

''और यदि मैं सहमत होऊँ, तो तुम मुझे क्या दोगे, और क्या मैं इन कागजों को अपने पास रख सकता हूँ ? ये मुझे एटलांटिक महासागर के पार जाने में सहायक होंगे।''

---

27 अनुवादक की टिप्पिणी : कार्लस्रूह, राईन नदी के किनारे स्थित, दक्षिण पश्चिम जर्मनी का, दूसरा सबसे बड़ा शहर है। कार्लस्रूह का महल 1715 में बनाया गया था। ये जर्मनी का सबसे गर्म और सबसे अधिक समय तक चमकते सूर्य वाला शहर है। शहर में दो वानस्पतिक उद्यान हैं। कार्लस्रूह को जर्मनी की इंटरनेट राजधानी कहा जाता है क्योंकि, कार्लस्रूह विश्वविद्यालय ने 1990 के बाद तक ये सेवायें प्रदान की थीं। कार्लस्रूह, मशहूर शोध एवं अध्ययन केन्द्र है। कार्लस्रूह इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के पुस्तकालय ने सबसे पहले इंटरनेट साईट का विकास किया, जिसमें विश्व भर के शोधकर्ताओं को, निःशुल्क पुस्तकालयीन सुविधायें, विश्व भर में, उपलब्ध करायीं जाती हैं। प्रारम्भ से ही यहॉ यहूदी लोग बसे हुये थे। आजकल यहूदी समुदाय के लगभग 900 सदस्य यहाँ रहते हैं।

''निश्चित ही, दोस्त, निश्चित ही। मैं तुम्हें ढाई सौ बक[28] और सारे खर्चे दूँगा, और तुम सभी कागजों को अपने पास रखना। उसके बदले में, हम तुम्हारा फोटो इन कागजों पर लगा देंगे। मेरे संपर्क हैं। मैं इसे वास्तविक रूप से सही कर दूँगा''

''बहुत ठीक,'' मैंने जबाव दिया, ''मैं तुम्हारे लिए, कार को कार्लस्रूह तक ले जाऊँगा।''

लड़की को भी अपने साथ ले जाओ, ये तुम्हारा साथ देगी और ये मेरे बालों से बाहर निकल जायेगी (पल्लू छोड़ देगी)। मेरे पास एक नई वाली, लाइन में तैयार खड़ी है।

कुछ क्षणों के लिए, भौचक्का हो कर, मैंने उसे देखा। स्पष्टतः, उसने मेरे हावभाव को गलत समझा। ''ओह, पक्का, वह किसी भी चीज के लिए खेल है। तुम्हें बहुत मजा आयेगा।

''नहीं! मैं आश्चर्य से चिल्लाया, 'मैं औरत को अपने साथ नहीं ले जाऊँगा। मैं उसके साथ, उसी कार में नहीं रुकूँगा। यदि तुम मेरे ऊपर अविश्वास करते हो, तो हम इसे यहीं समाप्त करते हैं, अथवा तुम एक आदमी को अथवा दो आदमियों को, साथ भेज सकते हो, परंतु किसी औरत को नहीं।''

''वह अपनी कुर्सी पर पीछे को झुका और अपने मुँह को चौड़ा सा खोलते हुए, जोर से चिल्लाया; सोने के (दांतों के) प्रदर्शन ने मुझे, तिब्बत के मंदिरों में सोने की चीजों को, प्रदर्शन के लिए, रखे जाने का ध्यान दिला दिया। उसकी सिगार जमीन पर गिर गई और कुछ चिंगारी निकालती हुई, बुझ गई। ''ये छोकरी,'' जब वह अंतिम रूप से बोला, उसने कहा, ''ये मुझे एक हफ्ते में पाँच सौ बक की पड़ती है। मैं तुम्हें, इसे तुम्हें देना प्रस्तावित कर रहा हूँ और तुम मना कर रहे हो। ठीक है।''

कागजात दो दिन बाद तैयार हो गये। मेरा फोटो चिपका दिया गया, और मित्रवत् अधिकारियों ने, सावधानीपूर्वक, उन कागजों की जॉच की और जैसा आवश्यक था, उन पर अपने कार्यालय की मुहर लगा दी। इटली की धूप में, सूर्य की रोशनी में, महान मर्सडीज चमक रही थी। मैंने हमेशा की तरह से, ईधन, तेल और पानी की पड़ताल की, अंदर बैठा और इंजन को चालू किया। ज्योंही, मैंने गाड़ी को चला कर हटाया, अमरीकी ने मुझे मैत्रीपूर्ण विदाई दी।

स्विस सीमा पर, अधिकारियों ने बहुत सावधानीपूर्वक, कागजों की, जिन्हें मैंने प्रस्तुत किया था, जाँच की। तब उन्होंने अपना ध्यान, कार की तरफ लगाया। ये निश्चित करने के लिए कि, उसमें कोई नकली विभाजन तो नहीं था, ईधन के टैंक में जाँच की, उसकी बॉडी को ठोकते हुए, ये निश्चित करते हुए, कि उसके धात्विक पैनलों के बीच, कुछ छिपाया नहीं गया था, जाँच की। दो संतरियों ने डैश बोर्ड के नीचे, नीचे देखा और इंजन को भी देखा। ज्योंही, उन्होंने मुझे जाने की इजाजत दी, मैं आगे चल दिया। मेरे पीछे जोर से चीख कर पुकारने की आवाजें आईं। शीघ्र ही मैंने ब्रेक लगाया। एक गार्ड हाँफता हुआ, मेरे पास आया, क्या तुम एक आदमी को मार्टिग्नी (Martigny)[29] ले जाओगे ? उसने पूछा। ''गोया कि, वह जल्दी में है और किसी आकस्मिकता के मामले में उसे जाना है।''

''हॉ, मैंने उत्तर दिया, 'मैं उसे ले जाऊँगा, यदि वह अभी तैयार है,'' गार्ड ने इशारा किया, और सीमा कार्यालय में से, एक आदमी जल्दी से निकला। उसने मुझे नमन किया और मेरे बगल से कार में बैठा। उसके प्रभामंडल से मैंने देखा कि, वह एक शंकालु अधिकारी था और वह स्पष्टरूप से आश्चर्य कर रहा था कि, बिना किसी महिला मित्र के, मैं अकेला क्यों गाड़ी चला रहा हूँ। वह बहुत बातूनी था, परंतु उसने प्रश्न पूछने के साथ, मेरे लिए काफी समय छोड़ दिया। प्रश्न, जिनका मैं उत्तर दे सकता था। कोई महिला नहीं, श्रीमान् ?' उसने कहा, ''परंतु कितना आसमान्य (unusual) है। शायद तुम्हारी

---

28 अनुवादक की टिप्पिणी : बक एक सामान्य नाम है जो विदेशी मुद्रा विनिमय व्यापारियों के बीच काम में लाया जाता है। गाली के रूप में, इसे जापानी येन के लियें, उपयोग किया जाता है परन्तु ये अधिकारिक रूप से अमरीका के डॉलर के बराबर है जो विश्व की एक बड़ी मुद्रा है।

29 अनुवादक की टिप्पिणी : मार्टिगिनी फ्रेंच भाषा भाषी जिले की राजधानी है, जो स्विट्जरलैंण्ड में है। यहाँ से इटली, फ्रांस और स्विट्जरलैण्ड को जोड़ने के लिये सड़कें मिलती हैं। इसकी आबादी लगभग 20 हजार है। अधिकांश लोग (85 प्रतिशत) फ्रांसीसी भाषा बोलने वाले लोग हैं, जबकि पुर्तगाली और इटेलियन बोलने वाले क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर आते हैं। केवल बहुत थोड़े लोग जर्मन बोलते हैं। यहाँ महिलाओं की संख्या पुरूषों की संख्या से अधिक (51.3 प्रतिशत) है।

रोम के लोगों ने मार्टिगिनी में अनेक पुरातत्व अवशेष छोड़े हैं। शहर अपने एम्फीथियेटर के लिये जाना जाता है, जो 1978 में पुर्नस्थापित किया गया था, इसमें बसन्त के अन्त में गायों की लड़ाई का आयोजन किया जाता है। शहर में अंगूर के बागान और फूलों के बगीचे बहुतायत में हैं। 77.2 प्रतिशत लोग रोमन कैथोलिक हैं।

कुछ दूसरी रुचियाँ हैं ?''

मैं हँसा और मैंने कहा, ''तुम लोग केवल यौन की बात करते हो, तुम सोचते हो कि, जो आदमी अकेला यात्रा कर रहा है, वह सनकी है, कोई ऐसा, जिसके ऊपर तुम्हें शंका करनी चाहिए। मैं एक पर्यटक हूँ, मैं दृश्यों का अवलोकन कर रहा हूँ। मैं औरतों को तो कहीं भी देख सकता हूँ।''

अपनी ऑखों में कुछ समझदारी के साथ, उसने मेरी ओर देखा और मैंने कहा, ''मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊँगा, जो मैं जानता हूँ। ये सत्य है। ये 'ईडन के बाग (Garden of Eden)' की कहानी की, दूसरी व्याख्या है।'' ''महान धर्मों के पूरे इतिहास में कुछ कहानियाँ हैं, जिनके ऊपर कुछ लोग विश्वास करते हैं, परंतु दूसरे कुछ, जिनकी शायद बड़ी गहरी अंतर्दृष्टि है, उसको एक किम्बदंती (legend) ही समझते हैं, जैसे कि किम्बदंतियाँ, कुछ जानकारियों को छिपाने के लिए, बनाई जाती हैं, जो किसी मनुष्य के सामने प्रकट नहीं होनी चाहिए, क्योंकि उन हाथों में ऐसा ज्ञान खतरनाक हो सकता है।

ऐसी ही कहानी अथवा किम्बदंती, ईडन के बाग में, आदम (Adam) और एव (Eve) की है, जहाँ एव–एक सर्प से ललचा गई थी और जिसमें उसने ज्ञान के वृक्ष से तोड़ कर फल खा लिया था, और सर्प के द्वारा ललचाये जाने पर, और ज्ञान के वृक्ष के खाये जाने पर, उन्होंने एक दूसरे पर नजर गढ़ा कर देखा और देखा कि, वे नंगे थे। इस छिपे हुए ज्ञान को पाने के बाद, उन्हें ईडन के बाग में रहने से मना कर दिया गया।

''वास्तव में, ईडन का बाग, अज्ञान का एक अच्छा देश है, जिसमें कोई किसी चीज से डरता नहीं, क्योंकि कोई समझता ही नहीं है, जिसमें कोई एक, अपने सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए, एक बन्दगोभी (की भाँति) है परंतु तब यहाँ, इस कहानी की, एक अधिक शाश्वत व्याख्या है।

''आदमी और औरत, केवल कंकाल के ऊपर थोपे हुए, मांस चढ़े, दृव्यमान प्रोटोप्लाज्म के पिंड नहीं हैं। आदमी, उसकी तुलना में काफी ऊँची चीज है, या हो सकता है। यहाँ इस पृथ्वी पर, हम अपने अधिस्वयं (Overself) या आत्मा के हाथों की कठपुतलियॉ हैं, वह आत्मा, जो अस्थाईरूप से सूक्ष्मशरीर में रहती है और जो इस मांसल शरीर के माध्यम से, अनुभव प्राप्त करती है जो कि, सूक्ष्मशरीर के हाथों में एक उपकरण, कठपुतली मात्र है।

'जीवतत्वविज्ञानी (Physiologists) और दूसरे लोग, मनुष्य के शरीर की चीर–फाड़ कर चुके हैं, और उन्होंने हर चीज को मांस और हड्डियों तक समेट कर रख दिया है। वे इस हड्डी, और उस हड्डी के ऊपर विचार कर सकते हैं, वे विभिन्न अंगों के ऊपर विचार कर सकते हैं, परंतु ये सब भौतिक चीजें हैं। अभी तक, उन्होंने दूसरी अमूर्त, अस्पष्ट, रहस्यपूर्ण चीजों को; वे चीजें, जिनको भारतीय, चीनी, और तिब्बती लोग, ईसाई धर्म के आने के शताब्दियों पहले से, शताब्दियों से जानते थे, खोजे नहीं हैं, और न हीं खोजने का प्रयत्न किया है।

'वास्तव में, रीढ़ की हड्डी (spine) एक बहुत महत्वपूर्ण संरचना हैं। इसमें स्नायुनाड़ी (spinal cord) रहती है, जिसके बिना किसी को भी लकवा मार सकता है, जिसके बिना कोई भी मानव के रूप में बेकार है, परंतु रीढ़ की हड्डी, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। स्नायु नाड़ी के ठीक बीच में, स्नायु तंतु (cord) एक नली है, जो दूसरे आयाम तक विस्तारित होती है। ये वह नली है, जिसके ऊपर शक्ति, जिसे कुण्डलिनी कहते हैं, जब जगाई जाती है, यात्रा करती है। रीढ़ की हड्डी के आधार में, जिसे पूर्वी लोग, 'सर्प की आग (serpent fire)' कहते हैं, होती है। ये अपने आप में जीवन का मूल आधार है।

'एक औसत पश्चिमी आदमी के लिए, उपयोग में न आने के कारण, लगभग लकवा हुई अवस्था में, ये शक्ति निष्क्रिय रहती है, सोती रहती है। वास्तव में, ये कुंडली मारे हुए एक सर्प की भाँति, स्नायु तंतु के आधार में रहती है, एक अत्यधिक शक्तिशाली सर्प, परंतु जो, विभिन्न कारणों से, अपने कुछ समय के लिए, अपनी कुंडली में से निकल नहीं निकल सकता। यह मिथिक आकृति, सर्प की कुंडली कहलाती

हैं, और जगाये हुए पूर्वी लोगों में, ये सर्प की शक्ति, रीढ़ की नाड़ी में होते हुए, ऊपर की ओर सीधे मस्तिष्क तक उठती है और उसके भी आगे आकाश में जाती है। जब ये ऊपर उठती है, तो इसकी उत्पादक शक्तियाँ, चक्रों अथवा शक्ति के केन्द्रों में से प्रत्येक को, जैसे कि नाभि (umbilicus), गला, और दूसरे अन्य भागों को, सक्रिय कर देती है। जब ये केन्द्र जग जाते हैं, व्यक्ति और अधिक जीवंत, शक्तिशाली और प्रभावशाली हो जाता है।

'सर्प की शक्ति पर पूरे नियंत्रण के साथ, कोई भी व्यक्ति, लगभग कुछ भी प्राप्त कर सकता है। कोई पहाड़ों पर चढ़ सकता है अथवा पानी पर चल सकता है अथवा हवा में ऊँचा उठ सकता है अथवा अपने आपको, जमीन के अंदर सीलबंद किए गए प्रकोष्ठ में, दफनवा सकता है, जिसमें से वह किसी विशेष समय के बाद, जिंदा निकलता है।

'इस तरह, हम इस किम्बदंती में पाते हैं कि, एव एक सर्प के द्वारा ललचाई गई थी। दूसरे शब्दों में, एव कुण्डलिनी के बारे में जान गई थी। वह अपनी रीढ़ के मूलाधार में कुंडली मारी हुई शक्ति को मुक्त करने में सफल हुई, जो सुष्मना नाड़ी में होती हुई, ऊपर उठी और जिसने मस्तिष्क को जगा दिया और उसे ज्ञान प्रदान किया। इस प्रकार, इस कहानी में ये कहा जा सकता हैं कि, उसने ज्ञान के वृक्ष से फल, अथवा उस पेड़ के फल को खा लिया। उसके पास ये ज्ञान था और उसके साथ वह आदम के विचारों को और इरादों को, उसके प्रभामंडल को, देख सकती थी और आदम भी, एव के द्वारा ललचाया गया, उसने अपनी कुंडलिनी को जाग्रत किया और वह एव को उस रूप में देख सका, जैसी वह थी।

सत्य ये हैं कि, दोनों ने एक दूसरे के प्रभामंडलों को देखा, और एक दूसरे के नंगे सूक्ष्मशरीर को देखते ही, जो मनुष्य शरीर के कपड़े उतार देने के बाद की शक्ल है, वह दूसरों के विचारों, अपनी इच्छाओं और अपने पूरे ज्ञान को, देख सका, जो कि, आदम और एव के उन्नयन (evolution) के पहले नहीं होना चाहिए था। (अर्थात् जब तक मनुष्य का पूर्णतः उन्नयन नहीं हो जाता तब तक उसकी कुण्डलिनी जाग्रत नहीं हो सकती)

'पुराने पुजारी जानते थे कि, कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में प्रभामंडल को देखा जा सकता है, वे जानते थे कि, कुंडलिनी को यौन के द्वारा जगाया जा सकता है। इसलिए पुराने दिनों में पुजारी पढ़ाते थे कि, यौन पापपूर्ण था, कि यौन सभी बुराईयों की जड़ था, और चूंकि एव ने आदम को ललचाया, यौन, विश्व के पतन का कारण बना। उन्होंने इसे सिखाया क्योंकि, कई बार, जैसाकि मैं कह चुका हूँ, यौन, कुंडलिनी में, जो अधिकांश लोगों में सुषुम्ना के मूल में, निष्क्रिय पड़ी रहती है, उथल–पुथल कर सकता है।

''कुंडलिनी शक्ति सर्पिलाकार में नीचे पड़ी रहती है, एक अत्यंत शक्तिशाली शक्ति। यह घड़ी की स्प्रिंग की तरह से लिपटी रहती है। जैसे घड़ी का एक स्प्रिंग, अचानक ही खोला जाए, तो वह खराबी पैदा कर सकता है या स्वयं खराब हो सकता है। यह विशिष्ट शक्ति सुषुम्ना के मूल में स्थित रहती है, इसका एक भाग, वास्तव में, पुनरुत्पादन अंगों (organs of reproduction) के अंदर होता है। पूर्व के लोग इसे पहचानते हैं; कुछ निश्चित हिन्दू, यौन को अपने धार्मिक उत्सवों में उपयोग में लाते हैं और वे विशिष्ट परिणामों को प्राप्त करने के लिए, विभिन्न प्रकार की यौन मुद्रायें, तथा यौन अभिव्यक्ति (manifestation) के दूसरे प्रकारों का उपयोग करते हैं, और इससे उन्हें परिणाम प्राप्त हो जाते हैं। पुरातन काल में, शताब्दियों–शताब्दियों पहले, यौन की पूजा होती थी। वे लिंग की पूजा करते थे। मंदिरों में निश्चित उत्सव होते थे, जिनमें कुंडलिनी शक्ति को जगाया जाता था, जिससे किसी को अतीन्द्रिय ज्ञान, दूरानुभूति और अनेक अन्य शाश्वत शक्तियाँ प्राप्त हो जातीं थीं।

''यौन को ठीक से, एक निश्चित तरीके से, प्रेम में उपयोग किया जाए तो किसी के कंपन जग (rise) सकते हैं। इसे, पूर्व के लोग, कमल के फूल का खिलना, और ब्रह्मलोक को पहुँचना कहते हैं।

इससे कुंडलिनी ऊपर उठती है और कुछ निश्चित केन्द्रों को जगा देती है परंतु यौन और कुंडलिनी का कभी भी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। किसी को भी, एक दूसरे का अनुपूरक और पूरक होना चाहिए। वे धर्म, जो ये कहते हैं कि पति और पत्नी के बीच यौन व्यापार नहीं होना चाहिए, दुःखदरूप से गलत हैं। ईसाई मत की कई, और कई, शाखाओं में संदेहास्पदरूप से इसकी वकालत की गई है। रोमन कैथोलिक, सत्य के अधिक नजदीक हैं, जब वे पति और पत्नी को यौन का अनुभव प्राप्त करने के लिए कहते हैं, परंतु कैथोलिक, ये नहीं जानते हुए, अंधे हो कर इसकी वकालत करते हैं, और ये विश्वास करते हुए कि, ये केवल मात्र, बच्चों के प्रजनन के लिए है, जो यौन का मुख्य उद्देश्य नहीं है, यद्यपि अधिकांश लोग इसमें विश्वास करते हैं।

''तब, ये धर्म, जो यह कहते हैं कि, किसी को यौन का अनुभव नहीं होना चाहिए वास्तव में, व्यक्ति विशेष के उन्नयन को और संपूर्ण प्रजाति के उन्नयन को भी दबा रहे हैं। ये इस प्रकार कार्य करता है : चुंबकत्व में कोई, पदार्थ के सभी अणुओं को एक दिशा में व्यवस्थित (align) करते हुए, शक्तिशाली चुंबक प्राप्त करता है। सामान्यतः लोहे के एक टुकड़े में, उदाहरण के लिए, सभी अणु बेतरतीब रूप से किसी भी दिशा में, एक अनुशासनहींन भीड़ के रूप में होते हैं। ये बेतरतीब रूप से जमे रहते हैं, परंतु जब, एक निश्चित बल, (लोहे के मामले में, एक चुंबकन बल) लगाया जाता है, सभी अणु एक ही दिशा में व्यवस्थित हो जाते हैं, इस प्रकार कोई, चुंबकत्व की प्रबल शक्ति प्राप्त कर सकता है, जिसके बिना न तो रेडियो बनता और न विद्युत उत्पन्न होती, जिसके बिना न तो सड़क होती और न रेल यातायात होता अथवा वायुयात्रा संभव होती।

''मनुष्यों में, जब कुंडलिनी को जगाया जाता है, जब सर्प की अग्नि जिंदा हो जाती है, जब शरीर के सभी अणु एक ही दिशा में व्यवस्थित हो जाते हैं क्योंकि, कुंडलिनी शक्ति जग रही होती है, सभी अणुओं को उस दिशा में खींच लेती है। तब मनुष्य का शरीर, जीवन से और स्वास्थ्य से, जीवंत हो जाता है। यह ज्ञान में भी शक्तिशाली हो जाता है, यह सब कुछ देख सकता है।

''कुंडलिनी को पूरी तरह से जाग्रत करने के विभिन्न तरीके हैं, परंतु ये सिवाय उनके, जो पूरी तरह से उन्नयन को प्राप्त हो चुके हैं, किसी अन्य के द्वारा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि, जाग्रत होने के बाद, ये दूसरों के ऊपर हावी होने की, अत्यंत प्रबल शक्ति प्रदान करती है, और इस शक्ति का दुरुपयोग किया जा सकता है तथा बुराई के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। परंतु, एक वैवाहिक युग्म के बीच, प्रेम से, और कुछ केन्द्रों को जाग्रत करके, कुंडलिनी को आंशिक रूप से जाग्रत किया जा सकता है। परमानंद (ecstasy) की अवस्था में, शरीर के अणु, इस प्रकार व्यवस्थित हो जाते हैं कि, उनमें से बहुत से, एक ही दिशा में स्थिर रहते हैं। इस प्रकार, ये लोग महान गतिशील, शक्तिशाली लोग बन जाते हैं।

''जब सभी प्रकार की मिथ्या–विनम्रता (false modesty) और यौन के संबंध में गलत शिक्षा हटा दी जाती है, तो एक बार फिर, मनुष्य ऊँचाई तक उठ सकता है, एक बार फिर, मनुष्य सितारों तक जाने वाले यात्री के रूप में, अपना स्थान प्राप्त कर सकता है।''

अध्याय पाँच

उछलती हुई शक्ति के साथ कार चलती रही, कि किसी भी पर्वतीय दर्रे ने उसे रोक नहीं पाया और न ही अटका पाया। मेरा यात्री, कभी–कभी, केवल असाधारण सौन्दर्य के स्थानों के दिखने पर पूछते हुए, शांति से मेरे बगल में बैठा था। हम मार्टिग्नी के वातावरण में पहुँचे और उसने कहा। ''आप जैसे चतुर आदमी के रूप में, आपने अनुमान कर लिया होगा कि, मैं एक शासकीय अधिकारी हूँ। क्या आप मेरे साथ, रात्रि भोज पर साथ दे कर, अनुग्रहीत करेंगे ?

''मुझे प्रसन्नता होगी श्रीमान्, मैंने जवाब दिया।'' मैंने शुरू में, रुकने से पहले, एग्ले (Aigle)[30] तक जाने का विचार बनाया था, परंतु इसके बजाय में, अब मैं इस शहर में रुकूँगा।''

जब तक कि हम एक बहुत अच्छे होटल तक नहीं पहुँच गए, हम चलते गए, वह मुझे दिशा निर्देश करते गए। मेरा असबाब अंदर ले जाया गया, मैंने कार को चला कर गैरिज में रखा और उसकी साफ–सफाई के लिए निर्देश दिए।

रात्रि का खाना बहुत ही आनंददायक था, मेरे पूर्व के यात्री और अब मेजबान, एक बहुत ही मजेदार संवादपटु, व्यक्ति थे। अब वह मेरे बारे में, अपने प्रारंभिक संदेह से उबर चुके थे। एक पुराना तिब्बती सिद्धांत कि, ''जो जितना ज्यादा सुनता है, उतना ही ज्यादा सीखता है,'' मैंने उन्हें पूरी तरह बात करने दिया। उन्होंने कस्टम के मामलों पर बातचीत की, और मुझे एक ताजे मामले में बताया, जिसमें एक मूल्यवान कार में झूठे पैनल लगे थे, जिनमें मादक पदार्थ रखे गए थे। ''मैं एक साधारण पर्यटक हूँ,'' मैंने कहा, ''और मादक पदार्थ, जीवन में मेरी एक बड़ी नापसंद है। क्या आप मेरी कार की परीक्षा करेंगे कि, क्या इसके अंदर कोई झूठा पैनल लगा है ? आपने मुझे अभी एक मामले के बारे में बताया है, जिसमें इनको मालिक की जानकारी के बिना लगाया गया था।'' मेरे बार–बार जोर देने पर, कार को चला कर स्थानीय पुलिस मुख्यालय पर ले जाया गया और पूरी रात के लिए, उनको परीक्षा करने के लिए छोड़ दिया। सुबह मुझे एक पुराने और विश्वस्त मित्र की तरह अभिवादन किया गया। उन्होंने कार के प्रत्येक इंच की परीक्षा की थी और उसे पूरी तरह भोली (innocent) बताया था। मैंने पाया, स्विस पुलिस, सौहार्दपूर्ण, मिलनसार और एक पर्यटक को मदद करने के लिए हमेशा तैयार थी।

अपने विचारों के साथ, इस पर विचार करते हुए कि, भविष्य के गर्त में मेरे लिए क्या भरा है, मैं अकेला चलता गया। मेरे दुख और यातनायें, जिन्हें मैं जानता था, क्योंकि हर भविष्यवक्ता ने इस बात की ठोक बजा कर चेतावनी दी थी; मेरे पीछे, लगेज के विभाग में, मेरे पास एक आदमी का सामान था, कागज थे, जिन्हें मैंने ले लिया था। उसके कोई ज्ञात रिश्तेदार नहीं थे, मेरे समान, वह भी इस दुनियाँ में अकेला ही दिखाई पड़ता था। उसकी या अब मेरी पेटियों में, जहाजरानी अभियांत्रिकी (marine engineering) की कुछ किताबें थीं। मैंने कार को रोका और नियम पुस्तिका (manual) को बाहर ले लिया। जैसे–जैसे मैंने गाड़ी चलाई, मैने विभिन्न नियमों को, जिन्हें जहाजी अभियंता के रूप में, मुझे जानना चाहिए था, गा कर याद कर लिया। मैंने एक भिन्न पंक्ति (line) का पानी का जहाज प्राप्त करने की योजना बनाई; विसर्जन पुस्तिका मुझे यह बताती थी कि, पहचाने जाने के डर की वजह से, मुझे किस लाइन के जहाज को छोड़ना है।

मेरे नीचे, मीलों निकलते चले गए। ऐग्ले, लोसाने, और सीमा के पार, जर्मनी में। जर्मनी के सीमा सुरक्षा प्रहरी बड़े ठोस थे, उन्होंने हर चीज की जाँच की, इंजन और टायर के नंबर भी। वे पूरी तरह से हंसी मजाक विहीन, रूखे और कठोर थे।

---

30 अनुवादक की टिप्पिणी : एग्ले स्विट्रजरलैण्ड का एक जिला है। शहर में लगभग 9600 की आबादी है, जिसमें से 37 प्रतिशत विदेशी हैं, ये रोन घाटी के पूर्वी किनारे पर है। खुदाई में मिले मिट्टी के बर्तनों और गढ़े हुये सामानों से ज्ञात हुआ है कि ये कास्य युग, की सभ्यता वाला स्थान है अपने स्थिति और इटली से सड़क सम्पर्क होने के कारण, ये अत्यन्त महत्वपूर्ण शहर है, इसके अधिकांश लोग (80 प्रतिशत) फ्रांसीसी भाषा बोलते हैं।

मैं लगातार (on and on), चलाता गया। कार्लश्रूह पर, मैं उस पते पर गया, जो मुझे दिया गया था और ये कहा गया था कि, वह आदमी, जो तुमसे मिलने वाला है, वह लुडविगशाफेन (Ludwigshafen) में रहता है। इसलिए मैंने लुडविगशाफेन तक गाड़ी चलाई और वहाँ, मैंने उस अमरीकी को, एक सबसे अच्छे होटल में पाया। ''ओह, जी दोस्त (Gee Bud),'' उसने कहा, ''मैं इस कार को पहाड़ की सड़कों के ऊपर नहीं ले जा सकता हूँ, मेरी नाड़ियाँ खराब हो गई हैं।'' मैंने ''अनुमान किया,'' बहुत अधिक शराब पीता है।'' मैंने भी ऐसा अनुमान किया। होटल में उसका कमरा बार की लड़कियों के साथ पूरी तरह, बार की तरह से, ध्यान देने योग्य खराब, था। उसे, मुझे कुछ और दिखाना था और, जो कुछ मैंने इटली में छोड़ा था, उससे अधिक ही दिखाया। उसके दिमाग में केवल तीन ही विचार थे, जर्मन–मार्क, शराब, और यौन, इसी क्रम में। अमरीकन, कार की हालत से बहुत अधिक प्रसन्न हुआ, कोई खरोंच नहीं और दाग–धब्बों रहित, एकदम साफ। उसने प्रशंसा में, इसे अमरीकन डालर की भारी भेंट के रूप में, चिन्हित किया।

तीन महीने तक, मैंने उसके लिए काम किया, भारी–भारी ट्रकों को, चला कर विभिन्न शहरों तक ले जाना और कारों को वापस लाना, जो दुबारा से सुधारी और बनाई जायेंगीं। मैं नहीं जानता था, कि ये सब किस सम्बंध में था, मैं अभी भी नहीं जानता, परंतु मुझे अच्छा भुगतान किया जाता था, और मुझे जहाजी अभियांत्रिकी की पुस्तकें पढ़ने के लिए काफी समय मिल जाता था। विभिन्न शहरों में, मैंने स्थानीय अजायबघरों को देखा और ध्यान से सभी जहाजी प्रादर्शों (models), और जहाजी इंजनों के प्रादर्शों की जाँच की।

तीन महीने बाद, वह अमरीकी, उस बेचारे छोटे कमरे की तरफ आया, जिसको मैंने किराये पर लिया था, और मेरे बिस्तर पर पसर गया। उस स्थान पर, बदबूदार सिगार बहुत अधिक बदबू देती हुई थी। ''जी, दोस्त,'' उसने कहा ''क्या पक्का है कि, तुम आरामतलबी में नहीं पड़ते हो। अमरीका की जेल की एक कोठरी, इससे अधिक आरामदेह होती है। मेरे पास, तुम्हारे लिए एक काम है, एक बड़ा काम। तुम्हें चाहिए ?''

''यदि यह मुझे ले हाव्रे (Le Havre)[31] या शेरवर्ग (Cherbourg)[32] के समुद्र के पास ले जाए,'' मैंने कहा। ठीक है, ये तुम्हें वेरडन (Verdun)[33] ले जायेगा और ये पूरी तरह वैध है। मेरे पास, बड़े–बड़े पहियों की, एक गाड़ी (Rig) है, कैटरपिलर (caterpillar)[34] की जितनी टॉगें होती हैं, उससे अधिक पहियों वाली। चलाने के लिए, ये एकदम पागल चीज है। इसमें (कमाने के लिये) काफी डॉलर हैं।

''मुझे इसके बारे में बताओ,'' मैंने उत्तर दिया। ''मैंने तुम्हें बताया था कि, मैं कोई भी चीज चला सकता हूँ। क्या तुम्हारे पास, फ्रांस में प्रवेश करने के लिए कागजात हैं ?''

''यप,'' उसने कहा। ''मैं तीन महीने से उन्हें पाने का इंतजार कर रहा हूँ। हम तुम्हें प्रतीक्षा में रख रहे हैं और कुछ जेब खर्च कमाने दे रहे हैं। यद्यपि, अनुमान लगाओ कि, मैंने तुम्हारे बारे में, इस जैसी खराब जगह में रहने के सॅबंध में कभी सोचा भी नहीं था।

वह उठा और मुझे अपने पीछे बाहर आने का इशारा किया। गर्लफ्रेण्ड के साथ, दरवाजे पर

---

31 अनुवादक की टिप्पिणी : ले हाव्रे (Le Harve) फ्रांस एक का बड़ा शहर है जो इंग्लिश चैनल के तट पर और साईन (Seine) नदी के दांये किनारे पर है। इसका बन्दरगाह, मारसेली के बाद, फ्रांस में दूसरे स्थान पर है। ले हाव्रे का शाब्दिक अर्थ होता है, 'बन्दरगाह का नगर' और इसके बन्दरगाह को किंग फ्रांकोइस प्रथम (king Francois I) ने 1570 में बनाया था। ले हाव्रे में मानवों की उपस्थिति, 4 लाख वर्ष पहले से मानी जाती है। इसका वातावरण, सामान्य समुद्री वातावरण है। यहाँ निरन्तर तीखी हवायें चलती रहती हैं। हवा या तूफान न आने वाले दिन गिने चुने ही होते हैं। 16 अक्टूबर 1987 को हवाओं की गति, सर्वाधिक 180 किलोमीटर प्रतिघंटा नापी गई थी। यहाँ ले हाव्रे ऑक्टेबिले नाम का हवाई हड्डा है, जो शहर के पांच किलोमीटर उत्तर में है। यहाँ 1894 से 1997 तक ट्रामें चलती थीं, जिन्हें अभी पुनर्जीवित किया गया है। 13 किलोमीटर लम्बे नये ट्राम तन्त्र में, जो 12 दिसम्बर 1912 को शुरू किया गया था, 23 स्टेशन हैं।

32 अनुवादक की टिप्पिणी : शेरवर्ग (Cherburgh) शहर, फ्रांस के उत्तर पश्चिमी हिस्से में है। इसमें लगभग 40 हजार लोग रहते हैं। बुधवार 10 अप्रेल 1912 को टाईटेनिक नामक जहाज, जो बाद में दुर्घटनाग्रस्त हुआ, इंग्लिश चैनल को पार करते हुए, यहाँ आया था। यह भी बन्दरगाह का शहर है।

33 अनुवादक की टिप्पिणी : वेरडून (Verdun) फ्रांस का शहर और उसके मेयूस (Meuse) प्रान्त की राजधानी है। इसकी आबादी लगभग 20 हजार और क्षेत्रफल लगभग 31 वर्ग किलोमीटर है। ये शहर बादामों के लिये प्रसिद्ध है। इसने अनेक युद्ध देखे हैं। ये प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों में भी अछूता नहीं रहा।

34 अनुवादक की टिप्पिणी : तितली अथवा मॉथ के लार्वा को कैटरपिलर कहा जाता है। अधिकांश कैटरपिलर शाकभक्षी होते हैं परन्तु सभी नहीं। कुछ कीटभक्षी कैटरपिलर भी होते हैं। इनका रंग अधिकांशतः उन पौधों के रंगों के साथ मेल खाता है, जिन्हें ये खाते हैं। इनका आकार एक मिलीमीटर से लेकर 75 मिलीमीटर तक हो सकता है। इनके बाल जहरीले होते हैं और मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होते हैं। इनकी बहुत सारी टांगें होती हैं और ये रेंग कर चलने वाला जीव होता है।

उसकी कार तैयार थी। ''तुम चलाओ,'' खुद उस महिला के साथ पीछे बैठते हुए, उसने कहा। मैं तुम्हें दिशा बताऊँगा।'' हम वहाँ, लुडविगसाफेन (Ludwigshafen)[35] के बाहर की तरफ, जो एक त्यागा हुआ वायुक्षेत्र लगता था, रुके। वहाँ, एक बड़े सायेबान के नीचे, एक अनोखी मशीन थी, जिसको मैंने पहले कभी नहीं देखा था। जिसमें मुख्यरूप से पीले रंग के गर्डर थे, जो आठ फुट वाले पहियों की पूरी श्रृंखला के ऊपर, जमाये हुए थे। हास्यास्पदरूप से, जमीन से काफी ऊपर, काँच का एक केबिन था। मशीन के पीछे की तरफ, एक छोटे गर्डरों के जाल की, जमी हुई श्रृंखला, और बड़े–बड़े स्टील के बेलचे थे। डरते–डरते मैं उसकी सीट पर चढ़ा। ''कहो'', अमरीकन ने कहा, ''क्या अब तुम्हें हैण्डबुक नहीं चाहिए ?'' वह पहुँचा, और इसके कार्यकलाप से संबंधित एक पुस्तिका मुझे दी। ''मेरे पास एक नया लड़का है, ''उसने कहा, ''जिसे मैं, गली में से कूड़ा उठाने वाले एक ट्रक पर भेजता था। उसने पुस्तक नहीं पढ़ी और जब वह अपने ठिकाने पर पहुँचा, उसने पाया कि, वृक्ष हर समय, पूरी तरह से जमीन की सफाई करते रहे हैं और वह पूरी तरह भुगत चुके हैं। तुमको मैं, यहाँ से ले कर बेडरोल तक, सड़क को इस तरह से तोड़ने देते हुए, नहीं चाहता।''

किताब में उंगलियाँ चलाते हुए, मैंने शीघ्र ही इंजन को चालू कर दिया। उसने उड़ान भरते हुए जहाज की तरह से, हंगामा किया। डरते–डरते, मैंने क्लच को डाला और विशालकाय (mammoth) मशीन, परेशानी बढ़ाते हुए, सायवान में से निकल कर, एक रन वे के ऊपर चल दी। मैंने, उसका अभ्यस्त हो जाने के लिये, मशीन के नियंत्रणों पर पकड़ बनाने के लिये, उसे कई बार ऊपर नीचे चलाया, और जब मैं सायबान में जाने के लिए वापस मुड़ा, एक जर्मन पुलिस कार, चल कर सामने आई। एक पुलिस मेन बाहर निकला। घटिया सा दिखने वाला वह आदमी, ऐसा लगा मानो, उसने अभी–अभी गैस्टापो (Gestapo)[36] के बिल्ले को लगाया है। ''तुम उसे बिना किसी सहायक के चला रहे हो,'' वह गुर्राया।

''सहायक ?'' मैंने सोचा, ''क्या वह सोचता है कि, मुझे एक रखवाले की जरूरत है ?'' मैंने उसे एक तरफ से, बगल से चलाया। ''ठीक है, तुम्हें क्या परेशानी है ?'' मैं जोर से चीखा। ''ये एक निजी संपत्ति है। भाग जाओ'' मेरे पूरे आश्चर्य के साथ, उसने ऐसा किया। वह अपनी कार में बैठा और उसे मैदान के बाहर चला दिया।

अमरीकन चल कर उसके पास गया। ''तुम्हें क्या काट रहा है, दोस्त ?'' उसने कहा।

मैं तुम्हें यह बताने के लिए आया हूँ कि, वह मशीन, सड़क पर केवल तभी चल सकती है जबकि, उसके साथ, ओवरटेक करने वाले वाहनों की, पीछे की तरफ से निगरानी करने के लिए, एक सहायक हो। उसे केवल जब तक कि, तुम्हारे आगे और पीछे, एक–एक पुलिस कार हो, रात के वक्त ही चलाया जा सकता है। एक क्षण के लिए मैंने सोचा कि, वह ये कहने आ रहा है ''जय, हिटलर,'' तब वह मुड़ा, अपनी कार में बैठा, और चला गया।

''जी'' अमरीकन ने कहा। ''ये निश्चित रूप से मुर्गों की लड़ाई को हरा देता है। ये निश्चित रूप से ऐसा करता है। मैं एक जर्मन, जिसका नाम लुडविग है, जो ..... को जानता हूँ।

''मेरे लिये नहीं,'' मैं उग्रता से चिल्लाया। ''कोई जर्मन नहीं, वे मुझे हद से ज्यादा उबाऊ लगते हैं।''

''ठीक है, दोस्त, ठीक है। जर्मनी का रहने वाला कोई नहीं। अधिक परेशान न हो, चिढ़ो मत। मेरे पास एक फ्रांसीसी है, जिसे तुम पसंद करोगे। मार्सेल। आओ। हम उसे देखने जायेंगे।'' मैंने मशीन को सायबान में खड़ा कर दिया, और उसकी तरफ, ये देखने के लिये कि, हर चीज बन्द कर दी गयी

---

35 अनुवादक की टिप्पिणी : लुडविगशाफेन (Ludwigshafen) जर्मनी का एक शहर है जो राईन (Rein) नदी के किनारे पर मानहाईन के एकदम सामने है। आजकल ये एक औद्यौगिक शहर के रूप में जाना जाता है। यहां बी.ए.एस.एफ. नाम का अंर्तराष्ट्रीय स्तर का रासायनिक कारखाना है। ईसा पूर्व एक शताब्दी में रोमन लोगों ने इस क्षेत्र के ऊपर अपना अधिकार कर लिया था। इसकी वर्तमान आबादी लगभग 2 लाख है।

36 अनुवादक की टिप्पिणी : गैस्टापो, नाजी जर्मनी तथा जर्मनी द्वारा कब्जाए गये यूरोप में कार्यरत गुप्त, जर्मन पुलिस का नाम है, जिसका गठन 1933 में किया गया था।

है, देखा और दरवाजे का ताला बंद करते हुए, टहलते हुए, बाहर निकल गया। ''क्या तुम कभी उद्विग्न नहीं होते हो ?'' अमरीकी ने कहा। अनुमान है, तुम हमारे लिये गाड़ी अच्छी चलाओगे।

मार्सेल को शराब की दुकान से बाहर खींचना पड़ा। पहली नजर से देखने पर, मैंने सोचा कि, उसका चेहरा घोड़े की टापों से कुचला गया है। दूसरी नजर से देखने पर, मैं इस बात से कायल हुआ कि, यदि उसका चेहरा, वाकई घोड़े की टापों से कुचला गया होता, तो अधिक अच्छा होता। मार्सेल भद्दा था। कष्टप्रद रूप से भद्दा, परन्तु उसमें ऐसा कुछ था कि, मैं उसे देखना पसंद करने लगा। कुछ समय के लिये, शर्तों पर चर्चा करते हुए, वह मशीन पर बैठा, तब मैं मशीन को चलाने के लिये उस पर लौटा और इस प्रकार उसका अभ्यस्त हो गया। जैसे ही मैं, भदभदाते हुए रास्ते पर चला, मैंने एक सुधारी हुई, पुरानी कार को चलाए जाते हुए देखा। मार्सेल व्यग्रतापूर्वक हाथ हिलाते हुए, कूद कर बाहर आ गया। मैंने आराम से मशीन को उसके बगल से स्थिर खड़ा कर दिया। ''मेरे पास है, मेरे पास है'' वह उत्तेजित होकर चिल्लाया। काफी इशारेबाजी के साथ, वह अपनी कार की तरफ मुड़ा और उसके लगभग नीची छत वाले दरवाजे से अपना सिर फोड़ लिया। अपने सिर को सहलाते हुए और बड़बड़ाते हुए, छोटी कार के निर्माताओं के विरुद्ध डरावनी लानत भेजते हुए, उसने पिछली सीट के सामान को उलट–पुलट कर डाला और एक बड़े पार्सल के साथ बाहर आया। ''इंटरकाम,'' वह जोर से चिल्लाया। वह हमेशा ही चीख कर बात करता है, भले ही वह मुझसे कुछ इंच दूरी पर ही हो। ''इंटरकॉम, हम बात करते हैं, हॉ ? तुम वहॉ, मैं यहाँ, बीच में तार है, हम हर समय बात करते हैं। ठीक है ?'' अपनी आवाज की बुलंदी पर से चीखते हुए, तारों और औजारों को सब जगह खींचते हुए, वह अर्थमूवर (earthmover) पर कूद पड़ा। ''तुमको हेंडसेट चाहिए, नहीं ?'' वह झल्लाया। ''क्या तुम मुझे इतना अच्छा सुन सकते हो। मुझे। मेरे पास माईक है।'' वह उपद्रव से उबर रहा था, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि, इंटरकॉम की आवश्यकता नहीं थी। उसकी आवाज, अच्छे तरीके से, शक्तिशाली इंजन की फटफटाहट से ऊँची थी।

मैंने, मोड़ों पर अभ्यास करते हुए, और चीजों का अभ्यस्त होते हुए, (मशीन को) और आगे चलाया। मार्सेल, गाटरों (girders) के तारों को मरोड़ते हुए, फुदकते और बतियाते हुए, मशीन के सामने से पीछे तक चला। मेरी ''कॉलिंग टावर'' तक आते हुए, उसने एक भुजा से, खुली खिड़की के ऊपर धक्का मारा, मुझे कंधे पर जोर से थपथपाया, और चीखा, ''हेंडसेट, तुम उसे अपने ऊपर पहन लो, हाँ ? तुम इतना अच्छा सुन सकते हो। रुको – मैं वापस जाता हूँ'' वह मशीन के दूर के पिछले हिस्से में, गाटरों के साथ–साथ, भाग गया उसने सस्ती शराब उड़ेली, और चिल्लाते हुए माइक्रोफोन में कहा। ''क्या तुम्हें ठीक सुनाई देता है ? हॉ ? मैं आता हूँ। अपने इस उल्लास में, वह भूल गया था कि, मेरे पास भी एक माईक्रोफोन है। लगभग इससे पहले कि, मैं अपने औजारों को इकट्ठा कर पाता, वह खिड़की पर जोर की चोट मारते हुए, वापस आ गया। ''अच्छा ? अच्छा ? तुम अच्छा सुन लेते हो ?''

''कहिये,'' अमेरिकी ने कहा, ''तुम लोग आज रात की छुट्टी रखो, सभी कागजात यहॉ हैं, मार्सेल जानता ही कि, रास्ते में फ्रांक कमाने के अवसरों को भुनाते हुए, तुम्हें कैसे पेरिस ले जाया जाये, तुमको जान कर अच्छा लगेगा। अमेरिकन, मेरे जीवन से चला गया। शायद वह इसे पढ़ेगा और मेरे प्रकाशक के माध्यम से, फिर से मेरे सम्पर्क में आयेगा। मैं अपने एकांत कमरे में चला गया। मार्सेल नाश्ते के लिये स्थानीय जगह पर गया। बाकी पूरे दिन के लिये मैं सोया।

अंधेरा होने के साथ, मैंने खाना खाया और सायवान में से गाड़ी को बाहर निकाला। मेरा लगेज अब न्यूनतम तक घट चुका था। मैंने उसे अपनी सीट के पीछे की जगह में रख दिया। इंजन शुरू हुआ दबाव संतोषजनक थे, ईंधन के नाप का पाठ्यांक पूरा था। हेडलाइट सामान्यरूप से काम कर रही थी। मैंने धीमे–धीमे चलाते हुए, मशीन को खुले में ला कर खड़ा कर दिया और उसे गरम करने के लिये, रास्ते पर थोड़ा चलाया। चन्द्रमा ऊँचा, और ऊँचा उठता चला गया। मार्शल का कहीं नामोनिशान नहीं

था। इंजन के बंद करने के बाद, मैं बाहर निकला और आसपास घूमा। बहुत देर बाद, एक कार मैदान में आयी, और मार्सेल बाहर निकला। ''दल (party),'' वह जोर से चिल्लाया। ''अलबिला दल। अब हम चलते हैं, हॉ?''

चिढ़ कर, मैंने इंजन को दुबारा शुरू कर दिया, तेज रोशनी को जला दिया और चल कर बाहर सड़क पर आया। मार्सेल इतना ज्यादा जोर से बोल रहा था कि, मैंने ईयरफोन अपनी गर्दन में डाल लिये और उनके बारे में पूरी तरह से भूल गया। आगे, मीलों दूर पर, जर्मन पुलिस की एक कार, मेरे सामने आकर रुक गई। ''तुम्हारे चेहरे पर नींद लग रही है। किसी आदमी के पीछे बिना निगाह रखे हुए, गाड़ी को चलाने में, तुम नियमों का उल्लंघन कर रहे हो। '' मार्सेल समेटता हुआ आया, ''मैं ? नींद में ? तुम सीधा नहीं देख रहे हो, सिपाही, क्योंकि मैं आराम से बैठा हूँ और तुम दखलन्दाजी कर रहे हो। सिपाही और नजदीक आया और मेरी सांस को सावधानी से सूँघा। ''नहीं ये साधु है,'' मार्सेल ने कहा। ''ये शराब नहीं पीता। न हीं, औरतें,'' उसने बाद के विचार के रूप में कहा।

''तुम्हारे कागजात,'' सिपाही ने कहा। उसने, कोई बहाना ढूढ़ने के लिये, मुझे परेशान करने के लिये, उन्हें सावधानीपूर्वक जॉचा। तब उसने मेरे, अमेरिकी जहाजी अभियन्ता होने के, कागजात देखे। ''ऐसा। तो तुम अमेरिकी हो ? ठीक है, तुम्हारे रास्ते पर, हम तुम्हारे वाणिज्यदूत के साथ, कोई परेशानी नहीं चाहते।'' कागजों को वापिस करते हुए, मानो कि वे ब्रेक के कारण, दूषित हो गये हों, वह वापिस अपनी कार में बैठा और तेजी से चला गया। मार्सेल को यह बताते हुए कि, मैंने उसके बारे में क्या सोचा, मैंने उसको अपनी सीट पर भेज दिया, और हम, पच्चीस मील प्रति घण्टा की गति से, गति जिस पर हमे चलने के निर्देश दिये गये थे, पूरी रात भर चलते रहे। फ्रांस की सत्तर मील दूर (स्थित) सीमा, हमको अनन्त दूरी पर प्रतीत हुई। हम, सारब्रुकेन (Saarbrucken)[37] के ठीक पहिले रुके, हमने सड़क को छोड़ दिया ताकि, परिवहन में बाधा नहीं पड़े, और पूरा दिन वहॉ गुजारने की तैयारी की। खाने के बाद, मैंने अपने कागजात लिये और सीमा के पार जाने के आदेश लेने के लिये, मैं स्थानीय पुलिस चौकी पर गया। मोटर साइकिल पर सवार एक सिपाही आगे और एक पीछे, हम बगल की सड़कों पर रेंगते रहे, जब तक कि हम सीमा शुल्क की चौकी पर नहीं पहुँच गये।

मार्सेल अपने मूल में, अपने फ्रांसिसी हम वतन लोगों के साथ, बातचीत कर रहा था। मैंने पाया कि, वह और कस्टम का एक आदमी, जिसे हमें ''प्रतिरोध'' में मिल चुके थे हमने लगभग अकेले ही, रण जीत लिया! हमारे कागजात की जॉच होने के साथ ही, हमें फ्रांस के क्षेत्र में जाने की इजाजत दे दी गई। सीमा शुल्क के मित्रवत् आदमी ने, मार्सेल को पूरे दिन अपने साथ रखा, और मैं मशीन के गाटरों के बगल से लुढ़क गया और सो गया।

बहुत बहुत बाद, वास्तव में, दुनियॉ के हिसाब से मरा हुआ मार्सेल, दो फ्रांसिसी सिपाहियों के प्रभार में आया। मुझे ऑख मारते हुए, उन्होंने उसे, उसकी सीट पर बांध दिया, और प्रसन्नता से, मुझे मेरे रास्ते पर विदाई दी। मैं अंधेरे में शोर मचाता हुआ, आगे चला। एक ताकतवर मशीन मेरे नीचे थी, और मेरे पीछे था एक शराबी ''नजरिया''। पूरे समय मैंने, किसी के चहलकदमी करने की या पुलिस कारों की दबे पॉव जाने की सावधानी पूर्वक निगरानी की। एक सिपाही तेजी से गुजरता हुआ आया, उसने अपनी खिड़की में से झुक कर बाहर की तरफ देखा, मार्सल की तरफ एक उपहासपूर्ण (derisory) भंगिमा बनाई, अभिवादन में अपने हाथ को हिलाया और तेजी से निकल गया।

मैट्ज (Metz) मेरे काफी पीछे होते हुए, और मार्सेल में जीवन का कोई चिन्ह नहीं होते हुए, भी मैंने उसे सड़क के बगल की ओर खींचा, बाहर निकला और उसे देखने के लिये चला। वह गहरी नींद में था, कितने ही गहरे दचके, उसको जगा नहीं सके थे, इसलिये मैं फिर आगे चला। भोर होने वाला

37 अनुवादक की टिप्पिणी : सारब्रूकेन जर्मनी के सारलैण्ड प्रान्त की राजधानी है। ये फ्रांसिसी सीमा के समीप स्थित है। 1909 में इसे तीन क्षेत्रों को मिला कर बनाया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध में इसके ऊपर बहुत भारी बमबारी हुई थी।

था। मैं वेरडून (Verdun)[38] की गलियों में हो कर चला और, एक बड़ी कार के खड़े करने की जगह (car park) पर पहुॅचा, जो मेरा लक्ष्य था।

''लोबसांग'', पीछे से किसी ने उनींदी आवाज में कहा। ''यदि तुमने अभी (चलना) शुरू नहीं किया तो हमें देर हो जायेगी।''

''देर ?'' मैंने कहा। ''हम वेरडून में हैं,''

वहॉ एकदम मृत शांति थी। तब एक विस्फोट, ''वेरडून?''

''सुनो मार्सेल,'' मैंने कहा। तुम मेरे पास बुरी तरह पिये हुए और असहाय स्थिति में लाये गये थे। तुमको तुम्हारी सीट से बांध दिया गया था। और पूरा काम मुझे करना पड़ा, मुझे अपना रास्ता खुद पता करना पड़ा। अब तुम चलते बनो और मेरे लिये नाश्ता लाओ। चलते बनो।'' कड़ा दण्ड पा कर मार्सेल लड़खड़ाया, अंत में नाश्ते के साथ लौटने के लिये, गली के नीचे की तरफ गया।

पॉच घण्टों के बाद, एक छोटा सांवला आदमी, एक पुरानी रेनोल्ट (Renault) कार को चलाता हुआ आया। हम दोनों के बीच में कोई बात नहीं हुई; खरोंच देखने के लिये, और कोई भी चीज देखने के लिये, जिसके संबंध में वह शिकायत कर सके, सावधानी से उसका निरीक्षण करते हुए, वह अर्थमूवर की तरफ आया। उसकी मोटी भोंहें, उसके नाक के सेतु के ऊपर, एक डंडे की तरह मिल रहीं थीं, नाक, जो किसी समय तोड़ी गई थी और दुबारा बुरी तरह बनाई गई थी। अंत में, वह हमारे पास आया। ''तुम में से ड्राइवर कौन है?''

''मैं हूॅ,'' मैने कहा।

''तुम इसको, मेट्ज को वापिस ले जाओगे'' उसने कहा।

''नहीं,'' मेरा उत्तर था, ''मुझे यहॉ लाने का भुगतान किया है। सभी कागजात यहॉ के लिये बनाये गये हैं। मेरा काम इसके साथ पूरा हुआ।''

उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया, और मेरी बेचैनी के अनुसार, उसने अपनी जेब में से, एक कमानीदार चाकू निकाला। मैं उसे आसानी से, हथियार विहीन करने में समर्थ था, चाकू मेरे कंधे की तरफ आया, और वह संवाला आदमी, अपनी पीठ के बल लम्ब लेट पड़ा था। मेरे आश्चर्य के लिये, ज्यों ही मैंने अपने आसपास देखा, मैंने देखा कि, कामगारों की एक बहुत बड़ी भीड़, आ पहुॅची है। ''इसने बॉस को गिरा दिया।'' एक ने कहा; ''इसने ऐसा किया होगा, दूसरा आश्चर्य से बड़बड़ाया। हिंसक रूप से वह सॉवला आदमी, एक रबर की उछलती हुई गोली की तरह से, जमीन से उठ कर खड़ा हो गया। कार्यशाला (workshop) में दौड़ कर घुसते हुए, उसने एक लोहे का डण्डा उठा लिया, उसके एक सिरे पर जबड़ा बना था। वह डण्डा, बंद पेटियों को खोलने के लिये, काम में लाया जाता था। दौड़ते हुए, कसम खाते हुए, मेरे गले को फाड़ने की कोशिश में, वह मेरे ऊपर टूट पड़ा, मैं अपने घुटनों के बल गिर गया और उसके घुटनों पर पकड़ कर दबा दिया। वह पूरी तरह डर कर चीखा, और अपनी बांई टॉग तुड़वाते हुए, जमींन पर गिर गया। लोहे के डण्डे ने, उसके नाड़ी रहित हाथ को छोड़ दिया और वह जमीन पर फिसल गया, और कहीं धातु से टकराया।

''ठीक है बॉस,'' ज्यों ही मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ, मैंने कहा। तुम मेरे बॉस नहीं हो, ऐ! अब तुम ठीक से माफी मांगो या मैं तुम्हें और अधिक अच्छी से पीट दूॅ। तुमने मेरी हत्या करने की कोशिश की थी।''

''डॉक्टर बुलाओ, डॉक्टर बुलाओ,'' वह घुरघुराया, ''मैं मर रहा हूॅ।''

''पहले माफी मांगो,'' मैंने तीखे स्वर में कहा, ''या तुमको उठाने वालों की जरूरत होगी।''

---

38 अनुवादक की टिप्पिणी : वेरडून (Verdun) नगर मेयूस (Meuse) नदी के किनारे पर बसा हुआ, उत्तर–पूर्वी फ्रांस का एक छोटा शहर है, जिसकी आबादी 80 हजार के लगभग है, जो अपने 1792 और 1916 के युद्धों के लिये प्रसिद्ध है। चौथी शताब्दी से यह वेरडून के विशप की पीठ (seat) रही है। प्रथम विश्वयुद्ध (21 फरबरी 1916– 20 दिसम्बर 1916) में यहाँ जर्मन और फ्रांसीसी फौजें आमने सामने लड़ीं थीं,, जिसमें फ्रांस विजयी हुआ था। 12 वीं शताब्दी के बाद से, जब इन्हें फ्रांसीसी राजकुमारों के बपतिस्में के अवसर पर, जनता में बांटा गया था, यह नगर चीनी चढ़े बादामों (sugared almonds) के लिये प्रसिद्ध रहा है। खाद्य प्रसंस्करण (food processing) और रासायनिक उद्योग (chemical industry) प्रमुख हैं। यहाँ लगभग 5 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं।

''यहॉ क्या हो रहा है? ए ? ये क्या है ? दो फ्रॉसीसी पुलिस वालों ने भीड़ में धक्का देते हुए, बॉस की तरफ जमीन पर देखा, और बहुत ही खिलखिला कर हँसे। ''कैसे ?, कैसे ?'' एक गुर्राया। ''और इस तरह, आखिर में, उसे एक अच्छा आदमी मिल ही गया। ये इसी लायक है क्योंकि, ये हमें परेशान करता था।'' पुलिस के सिपाही ने मेरी ओर आदर भाव से देखा, और तब मेरे कागजातों को देखने के लिये मॉगा। आसपास खड़े तमाशबीन लोगों से सूचनाऐं प्राप्त करके, और इस बिन्दु पर संतुष्ट होते हुए, वे मुड़े और आगे चले गये। भूतपूर्व बॉस ने माफी मांगी, उसकी ऑखों में, शर्मिंदिगी के ऑसू थे, तब मैं उसके बगल से घुटनों पर बैठ गया, उसकी टॉग को ठीक से बैठाया, और पेटी बाँधने की तख्ती से दो बोर्ड ले कर, उनको खपच्चियों के रूप में कस कर बांध दिया। मोर्सेल गायब हो गया था। वह इस संकट से और मेरे जीवन से भी भाग गया था।

मेरे दो सूटकेट भारी थे, उन्हें अर्थमूवर से लेते हुए, मैं अपनी यात्रा के दूसरे चरण पर, बाहर गली में चला। मेरे पास कोई काम नहीं था और मैं किसी को जानता भी नहीं था। मार्सेल, अपना भेजा 'शराब में डाले हुए अचार में, एक टूटी हुई बॉसुरी' सिद्ध हुआ। वरडून ने उस क्षण मुझे आकर्षित नहीं किया। एक गुजरने वाला, उसके बाद दूसरा गुजरने वाला, मैं दिशाओं के पूछने के लिये रुका कि, मैं रेल के स्टेशन कैसे जॉऊ, जिससे कि मैं अपने सूटकेस, वहॉ जमा करा सकूँ। हर आदमी यह सोचता हुआ दिखाई देता था कि, मैं एक धनवान होऊँगा। बजाय रेल्वे स्टेशन पूछने के, युद्ध के मैदान को देखते हुए, मैं चला परन्तु अंत में, मुझे स्टेशन की दिशा प्राप्त करने में सफलता मिल गयी। बहुधा आराम करता हुआ, सुस्ताता हुआ और आश्चर्य करता हुआ कि, मैं क्या–क्या फेंक सकता हूँ, जिससे मेरा वजन हल्का हो जाये, मैं रियू पॉइनकेयर (Rue Poincare)[39] के साथ–साथ चला। किताबें, नहीं छोड़ सकता था, मुझे उन्हें बहुत संभाल कर रखना था, व्यापारिक जहाजरानी (merchant navy) की बर्दियॉ ? निश्चित ही, एक आवश्यकता है। अनिश्चितरूप से, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि, मेरे पास केवल अत्यावश्यक सामान ही है। मैं शेवर्ट (Chevert) स्थान तक पैर घसीटते हुए चला, सीधे हाथ की ओर मुड़ते हुए मैं, क्वाइ डे ला रिपब्लिक (Quai de la republic) पहुँचा। मेयूज (Meuse) नदी के ऊपर ट्रेफिक को देखते हुए, और जहाजों के प्रति आश्चर्य करते हुए, मैंने थोड़ी देर आराम करने का निश्चय किया। एक बड़ी सिट्रोजन, (Citrogen)[40] धीमे से मेरी तरफ खिसकी, धीमी पड़ी और अंत में मेरे पास रुक गयी। एक लम्बे, काले बाल वाले आदमी ने कुछ क्षणों के लिये, मेरी ओर देखा और तब वह बाहर चला गया। मेरी ओर चलते हुए उसने कहा, तुम वही आदमी हो, जिसने ''बॉस को पीटने के कारण, हमारा सम्मान दिलाया है ?''

''मैं हूँ'' मैंने जबाव दिया। क्या वह कुछ और चाहता है ?''

आदमी हँसा और उसने उत्तर दिया, ''सालों से, उसने जिले को आतंकित कर रखा है, पुलिस भी उससे डरती थी। उसने युद्ध में कुछ बड़े काम किये थे, ऐसा वह कहता है। क्या तुम्हें कोई काम चाहिये ?'' मैंने, जबाव देने से पहले, सावधानी से उस आदमी को देखा। हॉ, मैं चाहता हूँ। मैंने उत्तर दिया, यदि ये पूरी तरह कानून सम्मत हो।

''जो काम मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ, वह काफी वैधानिक है।'' वह रुका और मेरी तरफ देख कर मुस्कारायाा। ''तुम देखो, मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ। मार्सेल को तुम्हें यहॉ लाने को कहा गया था, परन्तु वह भाग गया। मैं तब से तुम्हारी सभी यात्राओं के बारे में, और तुम्हारी रूसी यात्रा के बारे में जानता हूँ। मार्सेल ने तुम्हें अमेरिकन से मिला हुआ, एक पत्र दिया था और तब मुझसे से भाग गया जैसा उसने तुमसे कहा।'' क्या जाल है, मैंने सोचा। तथापि, मैंने अपने आप को साँत्वना दी। ये यूरोपीय लोग, हम पूर्वी लोगों के अपेक्षा, चीजों को कुछ भिन्न तरीके से ही करते हैं।

---

39 अनुवादक की टिप्पिणी : रयू पाइनकेयर (Rue pinecare), मॉट्रियल, जो कनाड़ा अमरीका सीमा पर है, का एक इलाका है।

40 अनुवादक की टिप्पिणी : सिट्रोजन (Citrogen), कार का एक ब्राण्ड है, जिसे फ्रांस की एक कम्पनी बनाती है, जिसे 1919 में एंडेरे सिट्रोजन नामक फ्रांसीसी ने स्थापित किया था। ये लगभग तेरह लाख कारें प्रतिवर्ष बनाती है।

आदमी ने मुझे इशारा किया। ''अपनी पेटियों को कार में रखो और मैं तुम्हें दोपहर का खाना खिलाने ले जाऊँगा ताकि हम बात कर सकें।'' ये वास्तव में, काम की चीज थी। कम से कम, मैं उन दोनों भयानक पेटियों से, थोड़े समय के लिये, हाथ में से हटा देने के लिये मुक्त, हो जाऊँगा। खुशी से मैंने उन दोनों को लगेज के विभाग में रख दिया और उसके बगल से बैठ गया। वह कार को सबसे अच्छे होटल कोकहार्डी (Coq Hardi) की ओर चला कर ले गया, जहॉ स्पष्टरूप से, वह बहुत अच्छी तरह से परिचित था। मेरे विस्मय और आनंद के साथ, उसने मेरी सभी सामान्य आवश्यकताओं को, नाश्ते के समय आने वाली, मेरी अपेक्षाओं के अनुसार पूरा किया।

''यहॉ, दो बूढ़ी महिलायें है, एक चौरासी साल की और दूसरी उन्यासी साल की,'' उसने मुझे चारों तरफ ध्यान से देखते हुए कहा। ''वे दोनों, उनमें से एक, अपने पुत्र के पास, जो पेरिस में रहता है, जाना चाहती है। उन्होंने दो भंयकर युद्ध देखे हैं और वे डाकुओं से बहुत डरीं हुईं हैं – बूढ़े लोगों में इस तरह के डर होते ही हैं, – अतः उन्हें एक सक्षम आदमी चाहिये, जो उनकी रक्षा कर सके। वे अच्छा भुगतान कर सकतीं हैं।

औरतें ? बूढ़ी औरतें ? जवानों से तो अच्छी हीं हैं। मैंने सोचा, परन्तु फिर मैंने इस विचार को अधिक पसंद नहीं किया। तब मैंने अपनी भारी पेटियों के बारे में सोचा। विचार किया कि, मैं पेरिस कैसे जा रहा था। ''ये समझदार बूढ़ी औरतें हैं,'' उस आदमी ने कहा। ''उनमें एक ही खराबी है। तुम पैंतीस मील प्रति घण्टा से अधिक नहीं चलोगे।'' ध्यानपूर्वक, मैंने बड़े कमरे में, सरसरी नजर से देखा। दो बूढ़ी औरतें, तीन मेजों के बाद बैठीं हुईं थीं। ''बुद्ध का पवित्र दॉत,'' मैंने अपने आप से कहा। ''मैं किसके लिये आया था ?'' मेरी ऑखों के सामने, उन दोनों सूटकेसों के चित्र आ गये। भारी पेटियॉ, पेटियॉ जिन्हें मैं हल्का नहीं कर सकता, पैसा और वह भी अच्छा पैसा, मुझे ये आसान लगा। मैं जब अमेरिका में एक रोजगार की तलाश में रहूँगा। मैंने खिन्नतापूर्वक आह भरी और कहा, ''वे अच्छा पैसा देंगी, तुमने कहा। और कार के बारे में क्या ? मैं वापस इस रास्ते पर आने वाला नहीं हूँ।''

''हॉ, मेरे दोस्त, वे बहुत अच्छा पैसा देगीं। काउंटेस (Countess)[41] एक धनाड्य महिला है। कार ? वह अपने लड़के को उपहार में देने के लिये, एक नई कार ले रही है। आओ उसने मिलो।'' वह उठा और दोनों बूढ़ी औरतों की ओर चला। उसने इतना नीचे झुकते हुए, मेरा परिचय कराया कि, उसने मुझे ल्हासा में, पवित्र रास्तों के तीर्थ यात्रियों की याद दिला दी, काउंटेस ने अपने नाचघर के कॉच में हो कर, दंभ भरी दृष्टि से, मेरी ओर देखा।

''और इस प्रकार, तुम अपने आप को, हमें ठीक से सुरक्षित कार में चला कर ले जाने की, क्षमता रखते हो, मेरे आदमी ?''

मैंने भी उसकी तरफ उतनी ही अवज्ञा के साथ देखा और जबाव दिया। ''श्रीमती जी, मैं आपका आदमी नहीं हूँ। जहॉ तक सुरक्षा का सवाल है, मेरा जीवन, मेरे लिये उतना ही मूल्यवान है, जितना आपका, स्पष्टरूप से, आपके लिये है। मुझे आपसे, ड्राइविंग के संबंध में बात करने को कहा गया है, परन्तु मैं स्वीकार करता हूँ कि, मेरे भी कुछ सवाल हैं कुछ संदेह हैं।''

लम्बे क्षणों के लिये, उसने ठण्डे हो कर मेरी ओर देखा, तब उसके जबड़ों की पथरीली दृढ़ता कुछ ढीली पड़ी, और वह एक जनानी हॅसी में फूट पड़ी। ''आह!'' वह आश्चर्यचकित हो कर बोली, ''मैं थोड़ी, आत्मा को पसँद करती हूँ। वह इन दिनों में इतनी विरली हो गई है। हम कब चलना शुरू कर सकते हैं ?''

''हमने अभी तक शर्तो के ऊपर विचार नहीं किया, और न हीं, मैंने आपकी कार देखी है। यदि मैं राजी हूँ, आप कब जाना चाहती हैं ? और आप मुझसे गाड़ी क्यों चलवाना चाहती हैं? निश्चितरूप से यहॉ फ्रांसीसी आदमियों की बाढ़ होगी, जो यहॉ गाड़ी चलाना चाहेंगे ?''

41 अनुवादक की टिप्पिणी : अमीर की स्त्री, कुलीन स्त्री, बेगम, काउंटेस

शर्तें, जो उसने रखीं, बहुत अच्छी थीं, जो कारण उसने दिये, वह भी अच्छे थे।'' मैं भी एक बहादुर आदमी को प्राथमिकता देती हूँ, एक आत्मा वाला आदमी, एक जिसने स्थानों और जीवन को देखा हो। हम कब चल रहे हैं ? जितना जल्दी तुम तैयार हो।''

मैंने उन्हें दो दिन दिये, और तब हमने एक आरामदेह फियेट कार में यात्रा शुरू की। हमने लगभग अस्सी मील दूर, राईम्स (Reims) जाने वाली सड़क पर चलना शुरू किया और तब हमने वहाँ रात गुजारी। सुस्ती से, तीस से पेंतीस मील प्रति घण्टा की गति पर, मुझे अगल–बगल से देहात देखने का और अपने विचारों को इकटठा करने का काफी समय मिला, जिन्हें मेरी यात्राओं के कारण, अभी तक पकड़ने का मुश्किल से ही समय मिल पाया था। अगले दिन, हमने दोपहर को शुरू किया और पेरिस में चाय के समय पर पहुँचे। उपनगर में, उसके पुत्र के घर पर, मैंने कार को गेरेज में खड़ा किया और फिर, अपने दोनों सूटकेसों के साथ में, चलना शुरू किया। उस रात को मैं, पेरिस के सस्ते से विश्राम गृह में सोया। अगले दिन, मैंने किसी चीज के बारे में देखा, जो मुझे शेरबर्ग या ले हाव्रे ले जा सके।

कार के व्यापारी मेरी पहली पसंद थे। क्या कोई आदमी कार को शेरबर्ग (Cherbourg) या ले हाव्रे (Le Havre)" जाना चाहता है ? मैं थका हुआ, एक व्यापारी से दूसरे व्यापारी तक, मीलों तक चला। नहीं, नहीं, कोई मेरी सेवाओं को नहीं चाहता। दिन के अंत में, फिर उस सस्ते से छोटे विश्राम गृह में वापिस गया और एक कष्ट के दृश्य को देखा। एक आदमी सिपाहियों द्वारा ले जाया जा रहा था और दूसरे ने शिकायत की थी। एक टूटी हुई साइकिल, अगला पहिया पूरी तरह मरोड़ा हुआ, सड़क के किनारे पड़ा हुआ था। आदमी, जो काम से घर वापिस आ रहा था, ने अपने कंधे पर मुड़ कर पीछे की ओर देखा, तभी उसका अगला पहिया, एक नाली में फंस गया, और वह उछल कर हैण्डिल के ऊपर गिर गया। उसके दांये टखने में, बुरी तरह मोच आ गई थी। ''मेरी नौकरी चली जायेगी, मेरा रोजगार चला जा जायेगा,'' वह दुख मना रहा था। ''मुझे कल फर्नीचर पहुँचाने के लिये, सियान (Caen)[42] जाना था।''

सियान ? नाम मुश्किल से ही परिचित था। सियान ? मैंने फिर देखा। शेरवर्ग (Cherbourg) के रास्ते पर, और पेरिस से लगभग एक सौ पच्चीस मील दूर, एक शहर। ये शेरबर्ग से मोटे तौर से पिचहत्तर मील पहले था। मैंने इस पर सोचा और विचार किया। ''मैं शेरबर्ग जाना चाहता हूँ या ले हाव्रे (Le Havre),'' मैंने कहा। ''यदि, कोई आदमी, मेरे साथ गाड़ी को वापिस लाने के लिये हो, तो मैं फर्नीचर की गाड़ी पर जाऊँगा और तुम्हारा काम करूँगा। तुम इसके लिये पैसा ले लेना। मैं केवल अपनी यात्रा से ही संतुष्ट हो जाऊँगा।''

उसने मेरी तरफ आनन्द से देखा। ''परन्तु हाँ, ऐसी व्यवस्था की जा सकती है, मेरा साथी चला सकता है, हमें, यहाँ से फर्नीचर को एक बड़ी दुकान से लदवाना पड़ेगा और उसे सियान तक ले जा कर उतरवाना पड़ेगा।'' तेजी से कार्य करके ऐसी व्यवस्था की गई। कल सुबह, मैं एक फर्नीचर ढोने वाले सहायक के रूप में, बिना भुगतान के, जाने वाला था।

हेनरी, ड्रायवर, आसानी से असमर्थता का प्रमाणपत्र प्राप्त कर सका। केवल एक चीज जो थी, वह एक पोस्टमास्टर था। वह काम से जी चुराने की हर पेंतरेबाजी को जानता था। दुकान की नजर से ओझल होते ही, उसने रोका और कहा, ''तुम गाड़ी चलाओ, मैं थका हुआ हूँ।'' वह टहल कर पीछे चला गया और सबसे अधिक आरामदेह फर्नीचर, जो भी उसे मिला, के ऊपर जाकर पसर गया और सो गया। मैंने गाड़ी चलाई।

सियान में उसने कहा, ''तुम फर्नीचर को उतारना शुरू करो, मैं इन कागजात पर हस्ताक्षर करा लूँ।'' जब तक वह लौटा, दो आदमियों को छोड़ कर हर चीज, घर में उतर चुकी थी। आगे झुक कर

42 अनुवादक की टिप्पिणी : सिआन, इंग्लिश चैनल से लगभग 15 किलोमीटर दूर, उत्तर–पश्चिमी फ्रांस का एक लाख से अधिक आबादी वाला एक नगर है।

खड़ा होने वाला वह आदमी, फिर एक माली के साथ लौटा, जिसने मुझे चीजों को उतरवाने में मदद की। उसने हमें निर्देशित किया ताकि दीवारों को नुकसान नहीं पहुँचे। हमने सामान को उतरवाया, मैं ड्राइवर की सीट पर बैठा। हेनरी, बिना कुछ सोचे–विचारे, मेरे बगल में बैठा। मैंने गाड़ी को मोड़ा और रेलवे स्टेशन, जो मैंने आते समय ही कहीं रास्ते में देख लिया था, की तरफ ले गया। मैं वहाँ रुका, अपने दोनों सूटकेस लिये और हेनरी से कहा, ''अब तुम चलाओ।'' इसके साथ ही, मैं मुड़ा और स्टेशन में घुस गया।

वहॉ बीस मिनट में, शेरवर्ग के लिये एक गाड़ी आने वाली थी। मैंने अपना टिकट खरीदा और खाने के लिये कुछ चीज ली, और ठीक तभी रेल आ गई। बढ़ती हुई शाम में, हम दौड़ते रहे। शेरबर्ग नगर के स्टेशन पर, मैंने अपनी दोनों पेटियों को छोड़ दिया और क्वाई डे ल'ऐंट्रपोर्ट (Quai de l'Entport) पर रुकने की कोई जगह तलाशने के लिये घूमता फिरा। अंत में मुझे, नाविकों के लिये बनी एक सराय, मिल गई। मैं घुसा, एक साधारण सा कमरा किराये पर लिया, पैसे का अग्रिम भुगतान किया, और अपना सामान लेने के लिये वापिस गया। थका हुआ होने के कारण, मैं बिस्तर पर गया और सो गया।

सुबह जितना संभव हो सकता था, सराय में रहने वाले दूसरे नाविकों के साथ मिला जुला, जो जहाजों का इंतजार कर रहे थे। महान सौभाग्य के साथ, मैं अगले कुछ दिनों में, बंदरगाह पर खड़े हुए जहाजों के इंजन रूम में जाने के लिये सक्षम हो पाया। सप्ताह के बीच, एक नियुक्ति के संबंध में, जो मुझे अंटालाटिंक महासागर के पास ले जा सके, मैंने जहाजरानी एजेंटों की तलाश की। एजेंट मेरे कागजात देखते, मेरी विसर्जन पुस्तिका को देखते, और पूछते, ''अच्छा, छुटटी मनाने के लिये तुम्हें पैसों की तंगी है, इसलिये एक तरफ की यात्रा के लिये काम करना चाहते हो, ठीक है, हम तुम्हारा ध्यान रखेंगें और यदि ऐसी कोई चीज आती है, तो हम तुम्हें बताऐंगे। मैं नाविकों के साथ, उनकी शब्दावली को सीखते हुए, व्यक्तियों के बारे में सीखते हुए, अधिक से अधिक मिला जुला। कुल मिला कर, मैंने वह सब सीखा, जिसको किसी ने कम कहा और मैंने अधिक सुना, किसी की, बड़े आदमी की, प्रतिष्ठा, उसकी प्रखरता बन जाती है।

अंत में, कुछ लगभग दस दिन के बाद, मुझे एक जहाज के एजेंट के ऑफिस में बुलाया गया। एक छोटा, चोकोर सा दिखने वाला आदमी, एजेंट के पास बैठा था। ''क्या तुम आज रात को चलने के लिये तैयार हो, यदि जरूरत हो ?'' एजेन्ट ने पूछा।

मैं अभी चलने को तैयार हूँ श्रीमान, ''मैंने जबाव दिया। छोटा चोकोर आदमी, मुझे बहुत करीब से देख रहा था। तभी उसने, तेजी से, प्रश्नों की बौछार, ऐसे लहजे में, जिसे मैं मुश्किल से ही समझ पा रहा था, कर दी। ''यहॉ का प्रमुख, एक स्कॉटी (Scotsman) आदमी है, उसका तीसरा इंजीनियर बीमार हो गया है और अस्पताल में भर्ती है। वह तुम्हें उसके साथ तुरन्त बाहर भेजना चाहता है,'' एजेन्ट ने अनुवाद करते हुए कहा। बड़ी एकाग्रतापूर्वक, मैं उस स्कॉटी आदमी की बात का शेष हिस्सा समझ पाया और संतोषपूर्ण ढंग से उसके प्रश्नों का उत्तर दे पाया। ''अपना सामान लादो,'' अंत में उसने कहा, ''और जहाज के ऊपर आ जाओ।

सराय पर वापिस आकर मैंने जल्दी से उसके बिल को निपटाया, अपनी पेटियों को उठाया, और जहाज के बगल में जाने के लिये, एक मोटर को किराये पर लिया। वह, जंग खायी हुई, दुःखपूर्वक पेन्ट के एक अस्तर की मांग करती हुई और खेदजनक ढंग से, अंटलाटिंक महासागर को पार करने के लिये काफी छोटी, सुधारी हुई पुरानी गाड़ी थी। ''ये,'' जहाज के डॉक पर एक आदमी ने कहा। ''उसने अपनी जवानी गुजार दी है, और उसके बाद के समुद्र में वह अंतड़ियाँ बाहर निकाल कर वापस लौटेगी।

मैं जल्दी से लकड़ी के तख्ते के ऊपर चलता हुआ, जहाज पर चढ़ा, अपनी पेटियों को जहाज में छोड़ा, और लोहे की सीढ़ियों पर से, नीचे की ओर, इंजन कक्ष की ओर दौड़ा, जहॉ प्रमुख, मैक

(Mac) प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने इंजनों के संबंध में मुझसे चर्चा की और मेरे उत्तरों से संतुष्ट हुए। ''ठीक है, लड़के,'' अंत में उन्होंने कहा, ''हम जायेंगे और अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करेंगे। सहायक तुमको तुम्हारा केबिन दिखा देगा।'' हम जल्दी से, जहाजों के दफ्तर में वापिस आये, अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किये।'' और तब जहाज पर लौटे। ''लड़के! हमें ठीक सीधे चलना है'' मैक ने कहा। इसलिये शायद, इतिहास में पहली बार, अमेरिकी की तरह से दिखावा करते हुए, एक तिब्बती लामा ने, निगरानी करने वाले एक इंजीनियर के रूप में, जहाज के ऊपर अपना स्थान ग्रहण किया। पहले मैंने आठ घण्टे तक काम किया, जहाज लंगर पर खड़ा था और ये मेरे लिये शुभ था। मेरी तीव्र पठन की शक्ति, अब कुछ व्यावहारिक अनुभव के साथ रुक गई थी और मैंने स्वयं को पूरी तरह से आत्मविश्वस्त समझा।

घंटियाँ बजने और भाप की शोर भरी आवाज के साथ, स्टील की चमकती हुईं छड़ें, चढ़ीं और गिरीं, फिर चढ़ीं और गिरीं। जहाज में जीवन डालते हुए पहिए, तेजी से, और तेजी से, घूमे। गर्म तैल और भाप की गंध आई। मेरे लिये, ये अनोखा जीवन था, उतना अनजान जीवन, जितना कि चीफ मैक, का लामामठ में हुआ होता, जो भाव हीन ढंग से, स्टील के एक चमकदार नियंत्रण पहिये पर, हल्के से, एक हाथ टिकाये हुए, अपने दांतों में पाइप दबाये खड़ा था। घंटी फिर बजी और बेतार के तार के डायल पर दिखाई दिया ''आधा पीछे की तरफ।'' मुश्किल से एक नजर के साथ, मैक ने पहियों को घुमा दिया और एक लीवर को झटका दिया। इंजन की धमाकेदार आवाज बढ़ी और पूरा खोल हल्के से हिल गया। ''रुको!'' टेलीग्राफ के डायल ने कहा, उसके बाद शीघ्र ही ''आधा आगे की ओर।'' मैक नियंत्रणों को घुमा पाता, लगभग उसके ठीक पहले, घंटी ''पूरा आगे की ओर'' के लिए, फिर गूंजी। सरलता से जहाज आगे बढ़ गया। मैक ने मेरी तरफ, आगे कदम बढ़ाया, ''ओह, लड़के,'' उसने कहा, ''तुमने अपने आठ घंटे पूरे कर लिए हैं। तुम यहाँ से मुक्त हो। सहायक को कहो कि, मैक के लिए कोको ले कर आये।''

कोको, खाद्य! इसने मुझे याद दिला दिया कि, मैंने बारह घंटे से अधिक से कुछ नहीं खाया है। जल्दी से, मैं लोहे की सीढ़ियों पर चढ़ा, और खुली हवा में जहाज के डेक पर पहुँचा। आगे की ओर पानी की बौछारें टूटीं पड़ रहीं थीं, और ज्यों ही हम खुले समुद्र की ओर आगे बढ़े, कुछ हद तक जहाज डूबा। मेरे पीछे, अंधेरे में, फ्रांसीसी समुद्रतट की बत्तियाँ, हल्की पड़तीं जा रहीं थीं। मेरे पीछे की एक तीखी आवाज ने, मुझे वर्तमान में ला दिया! ''मेरे आदमी, तुम कौन हो?'' मैं मुड़ा और मैंने देखा, पहला मेठ मेरे पीछे खड़ा था।

''तीसरा इंजीनियर, श्रीमान,'' मैंने उत्तर दिया।

''तब तुम ड्रेस में क्यों नहीं हो ?''

''मैं छुट्टी में काम करने वाला एक इंजीनियर हूँ, श्रीमान, जो शेरवर्ग में जहाज पर शामिल हुआ और तुरंत ही निगरानी पर चला गया।''

''ह्रम्फ,'' मेट ने कहा। ''अभी, इसी समय अपनी ड्रेस पहन लो, हमें यहाँ अनुशासन में रहना चाहिए।'' इसके साथ ही, उसने मुझे पकड़ने के लिए पीछा किया, मानो वह, एक गंदे, जंग लगे, पुराने आवारा जहाज के बजाय, जहाजरानियों में से एक के ऊपर, पहला मेट हो।

जहाज के रसोईघर (galley) के दरवाजे पर मैंने, चीफ मैक का आदेश सुना दिया।'' तुम नये तीसरे ?'' एक आवाज ने मेरे पीछे से कहा। मैं घूमा और दूसरे इंजीनियर को देखा, जो अभी–अभी प्रविष्ट हुआ था। ''हॉ, श्रीमान,'' मैंने जवाब दिया। ''मैं अपनी ड्रेस लेने के लिए, अभी अपने रास्ते पर हूँ और तब मैं कुछ खाना चाहता हूँ।''

उसने सिर हिलाया, ''मैं तुम्हारे साथ आऊँगा। मेठ ने अभी शिकायत की है कि, तुम बिना बर्दी के हो। उसने बताया कि, उसने सोचा था कि, तुम छिप कर यात्रा करने वाले (stoaway) हो। उसे बताया कि, तुम अभी काम पर आये हो और सीधे ड्यूटी पर पहुँच गये हो। ''वह मेरे साथ चला और

उसने इशारा करके बताया कि, मेरा केबिन वीथिका (alley) के पार इसी की सीध में हैं। ''जब तैयार हो जाओ, तो मुझे बुला लेना, ''उसने कहा,'' और रात के खाने के लिए हम साथ ही जायेंगे।''

उसे बर्दियों को मेरे नाप के हिसाब से बदलवाना पड़ा। अब, जब मैं व्यापारिक जहाजरानी के अधिकारी के रूप में, ड्रेस पहनकर खड़ा हुआ तो मुझे आश्चर्य लगा कि, यदि मेंरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे देखा, तो उनकी भावना क्या होगी। इसने मुझे दबी–दबी हॅसी से सोचने को प्रेरित किया कि, यदि मैं ल्हासा में इस पोशाक में दिखाई पड़ जाऊॅ, तो कैसा लगेगा। हम, रात्रि भोज के लिए, दूसरे इंजीनियर को बुलाते हुए, साथ–साथ, ऑफिसर मैस की तरफ चले। कैप्टन पहले से ही अपनी मेज पर था, उसने हमें, अपनी घनी भौंहों के नीचे से त्यौरी चढ़ा कर देखा।

''धत्तेरे की!'' जब उसके सामने पहला स्तर (course) रखा गया, दूसरे इंजीनियर ने कहा। वही पुराना सुअर का खाना, क्या तुम यहाँ कभी कोई परिवर्तन नहीं ला सकते ?''

''मिस्टर! केप्टन की आवाज ने, लगभग हमें अपने बैठने के स्थानों से उठा दिया।'' मिस्टर! तुम हमेशा शिकायत करते रहे हो, जब हम न्यूयॉर्क पहुॅचें, तुम दूसरे जहाज पर बदल लेना।''

किसी ने उपेक्षापूर्ण ढंग से हॅसना शुरू किया, एक निर्लज्जतापूर्ण हँसी, जो कैप्टन के गुस्से से उसकी दिशा में देखते ही, स्तब्धित कर देने वाली खाँसी में बदल गई। बाद का खाना, जब तक कैप्टन ने हमारे सामने खत्म किया और वह गया और वह चला नहीं गया, तब तक शांति में हुआ। ''नरक का जहाज,'' अधिकारी ने कहा। ''बूढ़ा आदमी, युद्ध के समय में, ब्रिटेन की जहाजरानी में, एक जिम्मी द वन (Gimmy the one) (पहला मेठ) था। वह परिवहन में था और वह इस तंत्र के बाहर नहीं जा सकता था।''

''ओह, तुम दुखते पेट वाले लोग, हमेशा बहुत सनकी होते हो,'' दूसरी आवाज ने कहा।

''नहीं,'' दूसरे ने मेरी तरफ फुसफुसाकर कहा, ''वह अमेरिकी नहीं है, वह केवल प्यूर्टो रिकन (प्यूर्टो रिका का निवासी) है, जिसने काफी सिनेमा देखे हैं।''

मैं थका हुआ था, और अन्दर मुड़ने से पहले, बाहर डेक पर गया। ठीक ओट (lee) के बाद की तरफ, कुछ आदमी गर्म राख को, और बंदरगाह में जमे हुए कूड़े करकट से छुटकारा पाने के लिए, उसे, समुद्र में फेंक रहे थे। जहाज थोड़ा सा उछल रहा था और मैं अपने केबिन के बाहर निकला। दीवारें पलस्तर की हुईं थीं, जिनके ऊपर लड़कियों के चित्र टंगे थे, मैंने उनको फाड़ दिया और कागज की रद्दी टोकरी मे फैंक दिया। जैसे ही मैंने कपड़े उतारे और मैं कलाबाजियाँ खाते हुए, अपनी शायिका पर गया, मैं जानता था कि, मैं अपने कर्तव्य को निभाने में सक्षम हो जाऊँगा।

''समय पूरा हुआ'' एक स्वर चिल्लाया और एक हाथ ने दरवाजे को खोला और बत्ती के बटन पर झपटा। ''समय पहले से ही ?'' मैंने खुद ही सोचा। क्यों ?, ऐसा क्यों लगा कि, मैं मुश्किल से ही सो पाता हूँ। मैंने अपनी घड़ी पर नजर मारी और लुढ़क कर बाहर की तरफ आ गया। मुँह धोया, कपड़े पहने और मैं नाश्ता करने के लिए अपने रास्ते पर चल दिया। अभी मैस वीरान था, मैंने अकेले ही और जल्दी से ही खाना खाया। बाहर की तरफ, रोशनी के आने वाली सीधी रेखा के बगल से, मैं स्टील की सीढ़ियों से जल्दी से नीचे उतरा। ''तुम समय के बहुत पक्के हो,'' दूसरे इंजीनियर ने कहा। ''मैं इसे पसंद करता हूॅ। इसके सिवाय कि, सुरंग में दो ग्रीस लगाने वाले हैं, कहने को कुछ नहीं है। ओह, ठीक है, मैं जा रहा हूॅ,'' उसने भारी जम्हाई लेते हुए कहा।

इंजन धमाके की आवाज के साथ, नीरसता के साथ, लयपूर्वक रुके, उनका हर चक्कर, हमको न्यूयॉर्क के समीप ला रहा था। "काली–गेंग (black gang)" ने, बाहर, भट्टियों के स्थान (stokehold) में, टुकड़ों में इकट्ठा करते हुए, भाप का अगला सिरा, लाल लाईन से थोड़ा पहले रखते हुए, अपनी आग बुझा दीं। सुरंग में घुसने से पहले, नोदक (propeller) की शाफ्ट से, पसीने से तर–बतर, हल्के धब्बे लगे हुए और गंदे, दो आदमी प्रकट हुए, सौभाग्य मेरे साथ था, तापमान सामान्य थे, कहने लायक कुछ

भी नहीं था। कोयले से भरे हुए, कार्बन डाई ऑक्साइड की प्रतिशतता और दूसरे डाटा वाले, गंदे कागज मेरी तरफ भेजे गये। मैंने उन पर हस्ताक्षर किये, बैठा और इंजन कक्ष की अपनी निगरानी के बारे में लिखा। ''ये कैसी चल रही है, मिस्टर''? सहकर्मियों के साथ, रास्ते पर नीचे उतर कर आते हुए मैक ने कहा।

''एकदम ठीक'' मैंने उत्तर दिया। ''हर चीज सामान्य।''

''ठीक है'' मैक ने कहा। ''मेरी कामना है कि केप्टन *** सामान्य हो जाये। वह कहता है कि, हम लोगों ने पिछले चक्कर (trip) में काफी कोयला खर्च किया था। मैं क्या करूँ ? उसे जहाज को ठीक कराने को कहो। वह कराहा, उसने स्टील के फ्रेम वाले अपने चश्मे को पहना, लॉग (log) को पढ़ा और उस पर अपने हस्ताक्षर किये।

जहाज खराब अंटलाटिक पर हो कर आगे बढ़ा। उसके बाद का अगला दिन, एकाकीपन की उसी उदासीनता में गुजरा। ये कोई खुश जहाज नहीं था, डेक के अधिकारी, इंजन स्टाफ के ऊपर झींक रहे थे। कप्तान एक मनहूस आदमी था, जो सोचता था कि, वह एक पुराने मालवाही जहाज के डिब्बे के बजाय, अंटलाटिक मार्ग के जहाज को कमान कर रहा है। मौसम भी खराब था। एक रात मैं, उछलने और पटकने के कारण, सो नहीं सका और मैं डेक पर चला गया। दबे हुए शोकगीत के रूप में, हवा, मुझे उस समय का प्रबल रूप से ध्यान दिलाती हुई, जब मैं लामा मिंग्यार डोंडुप और जिग्मे के साथ, चाकपोरी की छत के ऊपर खड़ा था, और आकाशीय यात्राओं में गया था, मस्तूल के साथ जबरदस्ती कर रही थी। एक अकेली आकृति ने, जहाजों के बीच में, जहाज की ओट (ली) की तरफ, रेल के सहारे को, लगभग निराशापूर्ण ढंग से पकड़े हुए उबकाई लीं, और अधिक, उबकाई लीं, ''अपने दिल को उठाते हुए,'' जैसा उसने बाद में कहा। मैं समुद्र की बीमारी (sea sickness) के प्रति काफी अभ्यस्त (immune) था, और जीवंतपर्यन्त नाविक रहने वाले लोगों को, पेट के ऊपर ऐसा करते हुए देख कर, आश्चर्य से भी अत्यधिक आश्चर्य, हुआ। बिनाकल (binnacle)[43] की रोशनियॉ पुल में, ऊपर की तरफ हल्की सी रोशनी फेंकतीं थीं। कप्तान के केबिन में घोर अंधेरा था। पानी की फुहारें बॉस पर पड़ीं और वहाँ तक फैल गईं, जहॉ मैं खड़ा था। जहाज, अपने मस्तूल को रात के आकाश पर सनकी चाप बनाते हुए, एक पागल चीज की तरह से लुढ़का और उछला। जहाज के दायीं ओर काफी दूर से अंटलाटिक का एक जहाज, कोर्क के स्क्रू (cork screw) की चाल में, जिसने उसके यात्रियों को दुःखी कर दिया होगा, पूरी रोशनियॉ जलाये हुए, हमारी ओर आया। पीछे आनी वाली हवाओं के साथ, वह अच्छा समय गुजार रहा था, उसकी गहरी सुन्दर साजसज्जा एक पतवार की तरह काम कर रही थी। ''शीघ्र ही ये दक्षिणी ऐंपटन (South ampton)[44] की सड़कों में होगा,'' जब मैं नीचे जाने के लिये मुड़ा, मैंने खुद ही कुछ सोचा।

तूफान के उच्चतम स्थिति में होने पर, कोई चीज टूट जाने की वजह से, खराब पानी निकालने वाले पम्प का, अन्दर पानी ले जाने वाला पाइप (inlet), जहाज के बहुत तेजी से हिलने के कारण, रुक गया, और मुझे उस गंदे पानी में, नीचे जाना पड़ा और उस आदमी की देखभाल करनी पड़ी, जो वहॉ काम कर रहा था। शोर बहुत भयानक था। जब जहाज का पिछला हिस्सा हवा में था, और जब वह, अगली लहर में उछलने से पहले, डगमगाया और उसका पिछला हिस्सा पानी में डूबा तब नोदक (प्रोपेलर) एकांतर क्रम से पागलपन से दौड़ रहा था, नोदक की शाफ्ट कांप रही थी।

रुकने के स्थान में, मशीनरी के एक बक्से की सुरक्षा करते हुए, जो टूट कर खुल गया था, डेक के कर्मचारी बहुत तेजी से काम कर रहे थे। चूँकि यहॉ पर, इस जहाज पर, इतना घर्षण था कि, हम

---

43 अनुवादक की टिप्पिणी : बिनाकल, जहाज पर, अचुम्बकीय पदार्थों से बनी एक घर जैसी संरचना होती है, जिसमें जहाज की कुतुबनुमा रखी जाती है, ताकि उनमें न्यूनतम विक्षोभ हों। ये सामान्यतः नियंत्रणकक्ष के सामने वाले भाग में रखी जाती है।

44 अनुवादक की टिप्पिणी : साउथएंप्टन, इंग्लेंड के दक्षिणी समुद्रतट पर स्थित सबसे बड़ा नगर है, ये लंदन से दक्षिण–पश्चिम में 121 किलोमीटर दूर, और पोर्टस् माउथ से उत्तर–पश्चिम में 31 किलोमीटर दूर, स्थित है। 1912 में टाइटेनिक जहाज ने यहीं से यात्रा प्रारंभ की थी। ये पाषाण काल का नगर है।

अपनी पूरी क्षमताओं के साथ, अपना काम ठीक से नहीं कर पा रहे थे, मुझे बहुत खराब लगा। इससे क्या फर्क पड़ता था कि, एक आदमी जहाज के पेट में, मशीनों के साथ काम कर रहा था, जबकि दूसरा, ये देखने के लिये कि, जहाज के बगल से पानी ठीक से बह कर निकल जाये, डेक के पुल (docking bridge) के ऊपर खड़ा था या डेक के ऊपर टहल रहा था।

काम ? यहॉ करने के लिये काम बहुत था, पम्पों की पूरी तरह साफ–सफाई (overhauling) करनी थी, डिब्बों को दुबारा भरना था, मिश्रण (blend) का निरीक्षण करना था और उन्हें परखना था, और न्यूयॉर्क में जहाज के खड़े होने की तैयारी में, समुद्रतटों की तरफ जाने वाली लाइनों की, पूरी तरह से देखभाल की जाने वाली थी।

चीफ, मैक अपने आप में एक अच्छा काम करने वाला और अच्छा आदमी था। वह अपने इंजनों को ऐसा प्यार करता था, जैसा एक मॉ, अपने पैदा होने वाले, पहले बच्चे को करती है। एक दिन शाम को मैं चटाई (gratling) पर बैठा हुआ, निगरानी के लिये जाने की प्रतीक्षा में था। हल्के तूफानी बादल, आकाश में दौड़ कर आये और उसके बाद में, वहॉ भारी बारिश की आशंका थी। मैं पढ़ता हुआ खिड़कियों की शरण में बैठा। अचानक ही, एक भारी हाथ मेरे कंधे पर पड़ा, एक धमाकेदार स्कॉटी (scottish) आवाज ने कहा, ''आह लड़के, मैं आश्चर्य करता हूँ तुम अपने फालतू समय में क्या करते हो। ये क्या है? पश्चिमी (western) ? यौन (sex) ?''

मुस्कराते हुए, मैंने किताब उसको दे दी। ''पानी के जहाजों के इंजन (marine engines)'' मैंने कहा, ''पश्चिमी अथवा यौन की पुस्तकों की तुलना में मुझे अधिक अच्छी लगती है।''

मुझे पुस्तक वापिस देने से पहले, किताब के ऊपर नजर मारते हुए, वह अनुमोदन करते हुए भुनभुनाया। ''लड़के तुम्हारे लिये अच्छी है,'' उसने कहा। ''हम तुम्हें अभी इंजीनियर बना देंगे और यदि तुम इससे चिपके रहे, तो तुम खुद ही चीफ इंजीनियर बन जाओगे।'' अपने पुराने टूटे हुए पाइप को वापिस मुँह में धकलते हुए, उसने स्नेह पूर्वक मुझे सिर हिलाया और कहा, ''तुम इसे ले सकते हो, लड़के।''

जहाज हड़बड़ी में, हलचल में था। ''तीसरे कप्तान का निरीक्षण'' दूसरे ने फुसफुसा कर कहा। ''वह एक पागल लड़का है, जो ऐसा सोचता है कि, वह यात्री जहाज पर है, पूरे जहाज का निरीक्षण करता है – केबिन और सभी – हर ट्रिप में।''

ज्यों ही कप्तान, उसके पीछे प्रथम मेट और पोतनीस (purser) ने प्रवेश किया, मैं अपने बिस्तर के बगल से खड़ा था। जब उसने अवज्ञापूर्वक अपने चारों ओर देखा, ''हूँ ह,'' वह महान आदमी चिल्लाया। ''कोई तस्वीरें नहीं?'' उसने कहा, मैं सोचता था, सभी अमेरिकी टॉग के पीछे पागल होते हैं। उसने मेरी इंजीनियरिंग की किताबों के ऊपर नजर डाली और उसके मुँह पर एक पगली सी मुस्कान खिल गई। ''क्या इस तकनीकी पुस्तक के आवरण के अन्दर कोई उपन्यास है ?'' उसने पूछा। एक शब्द कहे बिना, मैं आगे बढ़ा और हर पुस्तक को कहीं से भी, खोल दिया। कप्तान ने, रेल के ऊपर, बिस्तर के नीचे, और दरवाजे के ऊपर आले में, यहाँ–वहॉ उगुलियॉ फिराईं। अपनी, अभी तक साफ, उगलीं के पोरों को देखते हुए, उसने निराशा में सिर हिलाया और सब कुछ छान मारा। दूसरा, जानबूझ कर मुस्कराया, ''उस बार, उसको तुमने पकड़ लिया, वह नकियाता है।''

तनावपूर्ण प्रत्याशा की हवा वहॉ थी। आदमी समुद्रतट पर, तट पर जाने के पहनावे में, अपने आप को धोते–पौंछते, ये निश्चय करते हुए कि, उनके पार्सल को कस्टम से कैसे बाहर निकला जाये, अपने–अपने ठिकानों की तरफ जा रहे थे। आदमी अपने परिवारों के बारे में, अपनी महिला मित्रों के बारे में बात कर रहे थे। सभी की जवानें खुली हुईं थीं। सारे बंधन समाप्त हो गये थे। शीघ्र ही, वे किनारे पर, अपने मित्रों और प्रियजनों के पास पहुँच जायेंगे। मेरे पास, जाने के लिये कोई स्थान नहीं था, बात करने के लिये कोई नहीं था। न्यूयॉर्क में, केवल मैं एक अजनबी की तरह से, मित्र हीन, अन्जान

पहुँचूँगा।

क्षितिज पर, बरसात और तूफान से धुल जाने के बाद, मेनहट्टन (Manhattan)[45] की ऊँची मीनारें, धूप में चमकती हुईं, खड़ीं थीं। अलग–थलग खिड़कियॉ, सोने की तरह चमकती हुईं सूर्य की रोशनियों को, परावर्तित कर रहीं थीं। स्वतंत्रता की मूर्ति (statue of liberty)–मैंने उसे अमेरिका में पीछे से देखा था– अपने सामने दिखते हुए। ''आधा आगे,'' टेलीग्राफ पर संदेश आया और जैसे ही हमारा संवेग समाप्त हुआ, जहाज धीमा हुआ। अगला छोटा हिस्सा। जैसे ही हमने अपने स्थान की तरफ सीध की, ''रुको,'' टेलीग्राफ ने कहा। लाइनें फेंक दी गईं थीं, पकड़ लीं गईं थीं और जहाज को एक बार फिर, जमीन से बांध दिया गया था। ''इंजन भी बंद हो गये,'' टेलीग्राफ ने कहा। शोकपूर्ण क्रंदन करते हुए पाइपों में भाप समाप्त हो गई। दैत्याकार पिस्टन की छड़ें शान्त खड़ी हो गईं, और जहाज नरमी से अपने लंगरों पर खड़ा हो गया, परन्तु समीप से गुजरने वाले जहाजों से हल्का सा विक्षुब्ध हुआ और हमने, झण्डों और चरखियों तथा सहायक उपकरणों को काम में लाते हुए, वाल्वों को घुमा दिया।

अपनी खूंटियों को फेंकते हुए, हेच कवर के ऊपर तिरपाल (tarpaulin) को खींचते हुए, पकड़ों को खोलते हुए, आदमी डेक पर, इधर से उधर भाग रहे थे। जहाज के एजेन्ट, जहाज पर आये। उनके पीछे, जहाजी कुली (stevedors) आये। शीघ्र ही, जहाज आवाजों का और दिये जाने वाले आदेशों का पागलखाना बन गया। क्रेनें खुल गईं और गर्व से फूल गयीं और वहॉ लगातार भारी कदमों की छीना–झपटी हुई, बन्दरगाह के चिकित्सा अधिकारियों का सहायक, जहाज के बेड़े के अभिलेखों के ऊपर टूट पड़ा। पुलिस जहाज पर आयी और एक निन्दनीय, छिप कर यात्रा करने वाले को, पकड़ कर ले गई, जिसके बारे में हमने इंजन रूम में कुछ नहीं सुना था। भाग्यहीन मनुष्य को, दो हृष्टपुष्ट दिखने वाले, बिगड़ैल से सिपाहियों के साथ, जो उसे प्रतीक्षा करती हुई पुलिसकार के पास ले गये, हथकड़ी बांध कर ले जाया गया, और शीघ्र ही उन्होंने उसे अन्दर ढकेल दिया।

हम लाइन में खड़े हो गये, अपना पैसा लिया, इसके लिये हस्ताक्षर किये और अपने विसर्जन पुस्तकों (discharge books) को लेने के लिये गये। चीफ, मैक ने मेरी पुस्तक में लिखा था, ''कर्त्तव्य के प्रति विशेष महासमर्पण। सभी शाखाओं में दक्ष। मैं जहाज के साथी के रूप में, किसी भी समय इसका स्वागत करूँगा।'' ''क्या कृपा है,'' मैंने सोचा, ''कि मुझे इस सबकों को साफ कर देना पड़ेगा, कि मैं इसे और जारी नहीं रख सकता।''

मैं अपने केबिन में वापिस गया और कम्बलों को लपेट कर, उन्हें एक तरफ रखते हुए, अपनी किताबों को पैक करते हुए, खुद को नागरिक (civil) कपड़े पहनाते हुए और अपने सामान को, दोनों सूटकेसों में बंद करते हुए, साफ–सुथरे ढंग से तैयार हुआ। अंतिम नजर के साथ, मैं बाहर गया और अपने पीछे के दरवाजे को बंद कर दिया।

''क्या तुम अपना मन नहीं बदलोगे ?'' चीफ मैक ने कहा। ''तुम एक अच्छे जहाजी हो, और मैं, इसके बाद दूसरे पूरे ट्रिप के लिये, तुम्हें अपने साथ रख कर प्रसन्न होऊँगा।''

''नहीं, चीफ'' मैंने उत्तर दिया ''मैं थोड़ा आसपास घूमना चाहता हूँ और कुछ अधिक अनुभव प्राप्त करना चाहता हूँ।''

''अनुभव बहुत आश्चर्यजनक चीज है। तुम्हारे लिये शुभ भाग्य''

मैं अपने दोनों सूटकेसों को साथ में लिये हुए, चढ़ने उतरने के लिये लगाये गये लकड़ी के तख्ते (gangplank) के नीचे चला। लंगर डाले हुए जहाजों के बगल से थोड़ा दूर। एक दूसरा जीवन मेरे सामने था; मैं इस चारों तरफ घूमने–फिरने से किस प्रकार घृणा करता था, ये पूरी अनिश्चिता, मित्र

45 अनुवादक की टिप्पिणी : लेनाप भाषा में मेंनहट्टन का शाब्दिक अर्थ होता है, ''अनेक पहाड़ियों का प्रायद्वीप।'' लेनाप अमेरिकन लोग यहाँ के मूलनिवासी थे। ये नगर हड़सन नदी के दोनों तटों पर बसा है। इसकी आबादी दस लाख से अधिक है। मेंनहट्टन, अमेरिका के सर्वाधिक आय वाले स्थानों में से एक है। यहाँ जीवनयापनं का व्यय एवं जीवनस्तर अमरीका में सबसे अधिक ऊँचा है। धार्मिक आधार पर यहाँ आबादी में अत्यधिक बिबिधता है। रोमन कैथोलिक (36 प्रतिशत), यहूदी (20 प्रतिशत), प्रोटैस्टेंट (9 प्रतिशत), तथा मुस्लिम (3 प्रतिशत), शेष अन्य धर्मावलम्बी हैं। मेंनहट्टन के तीन प्रमुख भाग हैं, लोअर मेंनहट्टन, मिड टाउन, एवं अपर मेंनहट्टन तथा 5वाँ एवेन्यू, जो अमरीका की मुख्यभुमि के साथ न्यूयार्क से जुड़ा हुआ है।

कहने भर के लिये कोई नहीं।

''तुम कहॉ पैदा हुए हो?'' कस्टम के आदमी ने कहा।

''पासाडेना (Pasadena),'' अपने कागजातों के ऊपर, जो मेरे हाथों में थे, सोचते हुए मैंने जबाव दिया। ''तुम्हें क्या चाहिये'' उसने पूछा।

''कुछ नहीं,'' मैंने उसे बताया। उसने तीखेपन से मुझे देखा, ''ठीक है, खोलो,'' वह गुर्राया। अपने सूटकेसों को उसके सामने रखते हुए, मैंने उन्हें खोला। उसने सामान को उलट–पुलट किया, फिर किया, और तब गंदे तरीके से, हर चीज को, निकाल कर बाहर डाल दिया और उसके अस्तरों की जॉच की। ''उन्हें दुबारा से भरो,'' उसने कहा, जब वह मुझसे दूर गया और उसने मुझे छोड़ा।

मैंने अपने सूटकेसों को दुबारा पैक किया, और दरवाजे से बाहर निकला। बाहर, ट्रेफिक के पगले शोर के बीच, थोड़ा सुस्ताने और सांस लेने के लिये, मैं एक क्षण के लिये रुका। ''तुम्हारे साथ क्या परेशानी है, भले आदमी ? यह न्यूयॉर्क है!'' मेरे पीछे से किसी कर्कश आवाज ने कहा। मुड़ना, मैंने पुलिस के एक सिपाही को, अपनी तरफ निगाह मारते हुए, देखा।

''क्या रुकना कोई अपराध है?'' मैंने उसे उत्तर दिया।

''चलते रहें '' वह गुस्से से चिल्लाया।

धीमे से, मैंने अपने सूटकेस उठाये और सड़क पर आ गया। मैनहट्टन में, मनुष्य द्वारा बनाये गये, धातु के पहाड़ों के ऊपर आश्चर्य करते हुए, मैंने अब की तुलना में, कभी भी, अपने आप को अकेला महसूस नहीं किया था। विश्व के इस हिस्से में पूरी तरह बाहरी। मेरे पीछे झल्लाता हुआ सिपाही, किसी दूसरे अभागे के ऊपर, अपनी भड़ास निकाल रहा था, ''हम न्यूयॉर्क में ऐसा नहीं करते हैं, चलते बनो'' लोग परेशान और तनाव में महसूस करते थे। मोटर वाहन, पागलपन की गति से भाग रहे थे। वहॉ लगातार टायरों की चीखें और जलती हुई रबर की गंध मची हुईं थीं।

मैं चलता गया। अंत में मैंने अपने सामने ''नाविकों का हॉस्टल'' का साइनबोर्ड देखा, और मैं आभार सहित उसके दरवाजे की ओर मुड़ा। ''हस्ताक्षर करो'' एक ठंडी और औपचारिक आवाज ने कहा। सावधानी से मैंने फॉर्म को पूरा किया, जो मेरे ऊपर भद्दे तरीके से फेंका गया था, और उसे ''धन्यवाद'' सहित वापिस किया। ''मुझे धन्यवाद मत दो,'' ठंडी आवाज ने कहा, ''मैं तुम्हारा कोई पक्ष नहीं ले रही हूँ, ये मेरा काम है।'' मैं प्रतीक्षा में खड़ा रहा। ''ठीक है, ये क्या है?'' आवाज ने कहा। ''कमरा नं. 3–0–3 जैसा उस फॉर्म पर कहा गया और चाभी के छल्ले पर था।''

मैं मुड़ा। मानवीय स्वचालन (human automation) के साथ, कोई आदमी कैसे बहस कर सकता है। मैं पुरुषों की पत्रिका को देखते हुए एक आदमी के पास गया, स्पष्टरूप से एक नाविक, एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। ''हम लोग निश्चित रूप से जैनी के बालों में फंसे हैं,'' मैं कुछ कह पाता, उससे पहले उसने कहा। ''तुम्हारा कमरा नम्बर क्या है?''

''3–0–3'', मैंने ठंडे मन से जबाव दिया। ''यहॉ मैं पहली बार आया हूँ।''

''तीन तल्ले ऊपर,'' उसने कहा। ये दांई ओर तीसरा कमरा होगा। उसको धन्यवाद देते हुए मैं ''सीढ़ियॉ'' लिखे हुए एक दरवाजे की ओर बढ़ा। ''जाओ और बटन को दबाओ'', कुर्सी पर बैठे आदमी ने कहा। मैंने ऐसा किया, और कुछ क्षणों के बाद दरवाजा फटाक से खुल गया और एक नीग्रो लड़के ने मुझे अन्दर ले लिया। ''नम्बर ?'' उसने पूछा।

''3–0–3,'' मैंने जबाव दिया। उसने एक बटन दबाया और वह छोटा कमरा धीमे–धीमे ऊपर चढ़ा और सहसा रुक गया। उस नीग्रो लड़के ने दरवाजा खोला और कहा, ''इस तरफ।'' मेरे पीछे का दरवाजा बंद हो गया और एक बार फिर, मैं अकेला हो गया।

अनिश्चितापूर्वक, दुबारा जॉच करने के लिये, मैंने चाभी के छल्ले पर नम्बर को देखा और तब अपना कमरा पता करने के लिये आगे चला। हॉ, ये एक छोटी सी प्लेट के ऊपर ''3–0–3'' नम्बर

लिखा हुआ कमरा था। तीसरे तल्ले पर, सीढ़ियों के दांई तरफ। मैंने चाभी घुसाई और घुमाई। दरवाजा खुला और मैं कमरे में प्रविष्ट हुआ। मैंने देखा, कुछ–कुछ जहाज के एक केबिन की तरह से एक बहुत छोटा कमरा। जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया, मैंने नियमों की छपी हुई एक सूची देखी। सावधानीपूर्वक उन्हें पढ़ते हुए मैंने पाया कि, मैं केवल चौबीस घण्टे यहॉ रुक सकता हूँ। जब तक कि मैं, वास्तव में, जहाज पर दुबारा नहीं जाऊँ, तब अधिकतम समय, जो किसी व्यक्ति को रुकने के लिये दिया जा सकता था वह था, अड़तालीस घण्टे। चौबीस घण्टे! इसलिये अभी भी वहॉ कोई शांति नहीं थी। मैंने अपनी पेटियों को जमाया, अपने ऊपर से धूल झाड़ी और खाने तथा अखबारों की तलाश में निकल गया ताकि मैं यह देख सकूँ कि, क्या उनमें कोई रोजगार के विज्ञापन थे, जिन्हें मैं कर सकता था।

अध्याय छह

न्यूयॉर्क काफी अधिक अमैत्रीपूर्ण स्थान लगा। लोग, जिनको मैंने रास्ता पूछने के लिये रोकने का प्रयास किया, उन्होंने मुझ पर एक डरावनी नजर डाली और तेजी से निकल गये। एक रात की नींद के बाद, मैंने अपना नाश्ता किया और ब्रोंक्स (Bronx)[46] के लिये एक बस पर चढ़ा। अखबारों से मैंने ये विचार प्राप्त कर लिया था कि, कहॉ पर ठहरना सस्ता होगा। ब्रोंक्स पार्क के पास मैं उतरा और पैर घसीटता हुआ, ''किराये के लिये कमरा,'' इस लिखावट को देखते हुए सड़क पर चला। तेजी से आती हुई एक कार, दो डिलीवरी कारों के बीच में चमकी और वह भी, सड़क के गलत तरफ, बगल से चलने के रास्ते पर, ब्रेक लगाती हुई खड़ी हुई और मुझसे बांई तरफ टकराई। एक बार फिर, मैंने हड्डियों के टूटने की आवाज सुनी। ज्यों ही मैं बगल के रास्ते पर खिसका, और कृपापूर्ण क्षमा मांगी, मैंने एक आदमी को, अपने दोनों सूटकेसों के ऊपर झपटते हुए और जल्दी में भागते हुए देखा।

हवा पूरी तरह संगीत की आवाज से भरी हुई थी, वर्षों की परेशानियों के बाद, मैं प्रसन्न था, आराम में था। ''आह''! लामा मिंग्यार डोंडुप ने विस्मयभरी आवाज से कहा, ''और तुम्हें यहॉ फिर, दुबारा आना पड़ा ? मैंने अपनी ऑखें खोलीं। उनकी ऑखों में अत्यधिक करुणा के साथ, मैंने उन्हें अपने ऊपर मुस्कराते हुए पाया। ''पृथ्वी पर जीवन बहुत कठोर और कटु है, और तुम वह अनुभव प्राप्त कर चुके हो, जिससे अधिकांश लोग, प्रसन्नता पूर्वक बचे हुए हैं। ये मात्र एक अवकाश है लोबसांग, मात्र एक दुखद अवकाश। लम्बी रात के बाद, एक आलस्यमय दिन की सजगता आयेगी, जब तुम्हें पृथ्वी पर फिर वापिस आने की आवश्यकता नहीं होगी और न, हीं, किसी निचले विश्व में जाने की।'' मैंने कराहा। यहॉ आनन्ददायक था और वह अभी भी, परेशानी और पृथ्वी के खराब जीवन के बारे में जोर दे रहे थे। ''तुम, मेरे लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''तुम पृथ्वी पर, अपने आखिरी जीवन में हो। तुम अपने पुराने सभी कर्मो को भुगत रहे हो और एक आवश्यक कार्य भी कर रहे हो, जिसे बुरी शक्तियॉ छिपाना चाहतीं हैं।''

कर्म! उन्होंने जीवन्तरूप से, मेरे दिमाग में एक पाठ याद दिला दिया, जिसे मैंने प्रेम से सीखा था, ल्हासा से बहुत दूर.....

चॉदी की छोटी घण्टियों की खनखनाहट समाप्त हो गई थी। ल्हासा की घाटी में, खुरदरी, पतली हवा में, जोर से और स्पष्ट, आवाज करती हुई तुरहियॉं और अब अधिक नहीं बज रही थीं। मेरे आसपास एक अलौकिक शांति थी, शांति जो नहीं होनी चाहिए थी। ज्यों ही मंदिर के भिक्षुओं ने, अपनी गहरी आवाज में, मृत आत्माओं के लिए की जाने वाली प्रार्थनाओं का प्रारम्भ किया, मैं अपने ध्यान से उठा। मृत्यु ? हॉं! वास्तव में, बूढ़े भिक्षु की आत्मा के लिए, की जाने वाली प्रार्थनाऐं, जो अभी हाल में ही मरा था। जीवन भर कष्ट झेलते–झेलते, दूसरों की प्रार्थना करते–करते, बेसहारा और गलत समझे जाते हुए मर गया।

''उसके कर्म कितने भयानक रहे होंगे,'' मैंने खुद से कहा। ''वापसी में ऐसा दंड पाने के लिए, पिछले जन्म में वह कितना टेढ़ा आदमी रहा होगा।''

''लोबसांग!'' मेरे पीछे का स्वर, बहुत दूरी पर बिजली कड़कने की थाप जैसा था। चोटें, जो मेरे सिकुड़ते हुए बदन के ऊपर बरसीं – ठीक– दुर्भाग्य से ये उतनी अधिक दूर नहीं थीं। ''लोबसांग!'' तुम हमारे मृत भाई के लिए, असम्मान प्रदर्शित करते हुए, जी चुरा रहे हो, उसे, उसको समझो!'' अचानक

46 अनुवादक की टिप्पिणी : (Bronx) ब्रोंक्स, संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क प्रांत में, न्यूयार्क शहर के, पाँच प्रमुख काउंटियों में से, उत्तरी क्षेत्र की एक काउंटी है। एकमात्र ब्रोंक्स काउंटी ही, अमरीका की मुख्य भूमि पर स्थित है, शेष सभी काउंटियाँ द्वीपों में स्थित हैं। इसकी आबादी लगभग 14 लाख है। ब्रोंक्स नदी, जिसके नाम पर शहर का नाम पड़ा है, न्यूयार्क की मीठे पानी की एकमात्र नदी है। ब्रोंक्स नदी, इसे दो भागों में विभाजित करती है। पश्चिमी भाग, मेनहट्टन का समीपवर्ती पहाड़ी क्षेत्र है, जबकि पूर्वी मैदानी भाग, लोंग द्वीप (Long Island) के निकट है। ब्रोंक्स का पश्चिमी भाग 1874 में और पूर्वी भाग 1895 में न्यूयार्क काउंटी के साथ जोड़ा गया था। बाद में 1914 में इसे एक स्वतंत्र काउंटी बना दिया गया। अनेक वर्षों तक दक्षिणी ब्रोंक्स, कारखानों वाला क्षेत्र रहा और 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में इसे पियानों निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त था। यहाँ पियानों निर्माण के 63 कारखाने थे, जिनमें 5000 से अधिक कारीगर काम करते थे।

ही, मानो कि जादू से, थाप और गालियाँ रुक गईं। मैंने अपना दुखी चेहरा घुमाया और अपने ऊपर खड़ी दैत्याकार आकृति की ओर टकटकी लगाकर देखा, उसके हाथों में अभी भी, भारी लाठी उठी हुई थी।

''कुलानुशासक (proctor),'' एक प्रिय आवाज ने कहा, '' वास्तव में, ये एक छोटे बच्चे के लिए बहुत भारी दंड था। उसने इसे झेलने लायक ऐसा क्या किया था ? क्या उसने मंदिर को अपवित्र कर दिया ? क्या उसने स्वर्णिम प्रतिमाओं के प्रति असम्मान दिखाया ? बोलो, और अपनी क्रूरता को स्पष्ट करो।''

लंबे समय तक मंदिर के कुल अनुशासक चुप रहे, ''स्वामी मिंग्यार डोंडुप,'' धीमे स्वर में वे कराहे, ''लड़का यहॉ दिवास्वप्न देख रहा था, जबकि उसे अपने साथियों के साथ, मृत आत्माओं के लिए की जाने वाली प्रार्थनाओं में होना चाहिए था।''

लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने आप में कोई छोटे आदमी नहीं, दुखी भाव से, अपने सामने खड़े हुए, सात फुट लंबे, खाम के आदमी की ओर, घूर कर देख रहे थे। दृढ़तापूर्वक लामा ने कहा, ''आप जा सकते हैं, कुलानुशासक, मैं इसके साथ ख़ुद निपट लूँगा।'' ज्यों ही, कुलानुशासक ने सम्मानपूर्वक नमन किया और मुड़ कर बाहर गया, मेरे गुरू, लामा मिंग्यार डोंडुप मेरी ओर मुड़े, ''अब लोबसांग, हम, मेरे कमरे की ओर चलें ताकि तुम, अपने असंख्य, भली भांति दंडित किये हुए पापों पर, फिर से ध्यान दे सको।'' इसके साथ ही, वे धीमे से, आगे की ओर झुके और उन्होंने मुझे, अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। मेरे छोटे से जीवन में, मेरे शिक्षक के अलावा अन्य किसी ने, मेरे प्रति, कभी करुणा नहीं दिखाई, मुझे सदैव आभार के आंसू और प्रेम के लिए, कठोरता में रखा गया।

लामा दूर की ओर मुड़े और धीमे से लंबे समय से उपयोग में न लाये गए, गलियारे में गए। ये जानते हुए कि, इस महान व्यक्ति की तरफ से, कभी भी, अन्याय हो ही नहीं सकता, मैंने उनके कदमों का, नम्रता पूर्वक अनुगमन किया, उत्सुकता पूर्वक अनुगमन भी किया। वे अपने कमरे के दरवाजे के बाहर रुक गए, मेरी ओर मुड़े और मेरे कंधे पर हाथ रखा, '' साथ आओ लोबसांग, तुमने कोई अपराध नहीं किया है, अन्दर आओ और मुझे इस परेशानी के बारे में बताओ।'' इसके साथ ही, उन्होंने मुझे अपने सामने ही धक्का दिया और बैठने के लिए कहा। ''खाना, लोबसांग, खाना, ये भी तुम्हारे दिमाग में है। जब तक हम बात करें, हमें चाय और खाना ले लेना चाहिए।'' आराम से, उन्होंने अपनी चांदी की घंटी को बजाया, और एक सहायक प्रविष्ट हुआ।

जब तक खाना और पेय हमारे सामने नहीं रखा गया, हम ये सोचते हुए, कि किस निश्चिंतता के साथ, मेरे अपराध ढूढे गये थे और उनमें से लगभग अधिकांश, किये जाने से पहले ही, दंडित किए गए थे, शांति में बैठे। एक बार फिर मेरे विचारों में एक स्वर फूटा। ''लोबसांग तुम दिवास्वप्न देख रहे हो! खाना, लोबसांग, खाना तुम्हारे सामने है और तुम जैसे सभी लोग, इसे देख नहीं पाते।'' कृपापूर्ण मजाकिया आवाज ने मुझे वापस होश में ला दिया और लगभग स्वतः ही, मैं इन सबके लिए पहुँच गया, मीठी, चीनी वाली केक, जिन्होंने इतनी शालीनता के साथ, मेरे तालू को मोहित किया था। केक, जिन्हें बहुत दूर भारत से, दलाईलामा के लिए, लाया गया था, परंतु उनकी कृपा के माध्यम से, मुझे उपलब्ध हो रही थीं।

कुछ और क्षणों के लिए हम बैठे और हमने खाया, अथवा समझें कि, मैंने खाया, और लामा मेरे ऊपर शुभेच्छा के साथ मुस्कुराते रहे। ''अब लोबसांग,'' जब मेरे पेट भर जाने के संकेत उन्हें दिखे, उन्होंने कहा, ''ये सब किस संबंध में हैं ?''

''स्वामी,'' मैंने जवाब दिया, ''मैं उस भिक्षु, जो मर गया था, के भयंकर कर्मों के ऊपर अपनी प्रतिक्रिया दे रहा था। निश्चितरूप से, वह पिछले कई जन्मों में, बहुत टेढ़ा आदमी रहा होगा। ऐसा सोचने में, मैं मंदिर की सेवाओं के बारे में भूल गया, और कुलानुशासक, उससे पहले कि, मैं भागने में

समर्थ हो पाता, मुझ तक आ गए।''

वह हंसी के साथ फट पड़े,'' इसलिए, लोबसांग, यदि कर सको! तो तुम अपने कर्मों से भी इसी प्रकार भागने की कोशिश करोगे'' मैंने ये जानते हुए कि, किसी बलिष्ठ कुलानुशासक से, यदि कोई कुछ बचा सकता है, तो वह है, शीघ्रता से चम्पत हो जाना, उदास हो कर उनकी ओर देखा।

''लोबसांग, कर्म का ये मामला। ओह, यहॉ मंदिर में भी, कुछ लोगों द्वारा, ये किस प्रकार, गलत तरीके से समझा जाता है। खुद को आराम से बैठाओ, क्योंकि मैं इस मामले में, तुमसे कुछ विस्तार से, बात करना चाहता हूँ।''

मैं थोड़ा सा हिला और ''आराम में होने का दिखावा किया''। मैं दूसरे लोगों के साथ बाहर जाना चाहता था, यहॉ बैठ कर, लामा मिंग्यार डोंडुप जैसे एक बड़े आदमी से भी, किसी भाषण को नहीं सुनना चाहता था क्योंकि, भाषण तो आखिर भाषण ही होता है, और कितनी भी अच्छे स्वादवाली दवाई, आखिर दवाई ही होती है।

''तुम इस सबको जानते हो, लोबसांग, या जानना चाहिए, यदि तुमने अपने शिक्षकों की ओर कोई ध्यान दिया हो (जिसका मुझे संदेह है!) परंतु मैं तुम्हें दुबारा ध्यान दिलाऊँगा क्योंकि, मुझे डर है कि, तुम्हारा ध्यान अभी भी पूरा नहीं है।'' इसके साथ ही उन्होंने मुझे तीखी नजर से देखा। ''हम इस पृथ्वी पर एक स्कूल की तरह से आये थे। हम यहाँ पर अपने पाठ सीखने के लिए आते हैं। हम स्कूल में, पहली हाजिरी के साथ, सबसे छोटी कक्षा में होते हैं, क्योंकि हम भोले हैं, अन्जान हैं और अभी हमने कुछ भी सीखा नहीं है। हम अपना सत्र समाप्त होने के बाद, या तो अपनी परीक्षाऐं पास कर लेते हैं या उनमें फेल हो जाते हैं। जब हम, स्कूल की छुट्टियों से वापस लौटते हैं तो, यदि पास हुए तो उच्चतर कक्षाओं में जाते हैं और यदि हम फेल हुए, तो हम उसी कक्षा में वापस आते हैं, जिसको हमने छोड़ा था। यदि हम, शायद, केवल एक या दो ही विषय में फेल होते हैं तो, हमें ऊँची कक्षा में जाने की इजाजत मिल जाती है और फेल हुए विषय को, हमें दुबारा पढ़ना पड़ता है।''

ये मुझे उस भाषा में कहा गया था, जिसे मैं अच्छी तरह समझता था। मैं परीक्षाओं के बारे में, एक विषय में फेल होने और बड़े लड़कों के साथ पढ़ते हुए, प्रतियोगिता करते हुए, और उच्चतर कक्षाओं में जाने के बारे में, और अपने उसी समय में, खाली समय में, किसी पुराने ढंग के बूढ़े लामा शिक्षक के पास, कोई वह, जो इतना पुराना था, जो अपने लड़कपन के दिनों को पूरी तरह से भूल चुका था, गिद्ध की निगाहों के अंतर्गत पढ़ते हुए, सब कुछ जानता था।

एक धमाका हुआ, और मैं डर के कारण इतना उछल गया कि, मैंने लगभग जमीन को छोड़ दिया। ''आह, लोबसांग, इस प्रकार हमें कुल मिला कर प्रतिक्रिया मिली,'' मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने, उस चांदी की घंटी को उठाते हुए, जो मेरे पीछे गिर पड़ी थी, हॅसते हुए कहा! ''मैंने कई अवसरों पर तुमसे बात की है, परंतु तुम बहुत दूर के क्षेत्रों में घूम रहे थे।''

''मुझे खेद हैं, आदरणीय लामा,'' मैंने उत्तर दिया, ''परंतु मैं सोच रहा था कि, आपका व्याख्यान कितना स्पष्ट था।''

लामा ने एक मुस्कुराहट बिखेरी और कहना जारी रखा। ''हम इस लोक में आते हैं, जैसे कि, बच्चे स्कूल जाते हैं। यदि हम अपने जीवन काल में, अच्छा करते हैं और कुछ सीख लेते हैं, जिसके कारण हमें यहॉ आना पड़ा था, तो हम आगे उन्नति करते हैं और अगला जन्म, उच्चतर स्थिति में पाते हैं। यदि हम अपने पाठों को नहीं सीखते हैं तो हम, अधिकांशतः उसी प्रकार के शरीर और परिस्थितिओं में वापस आते हैं। कुछ मामलों में, किसी आदमी ने अपने पिछले जन्म में, दूसरों के प्रति अत्यधिक क्रूरता दिखाई होगी, तो उसे इस पृथ्वी पर दुबारा वापस आना चाहिए और अपने बुरे कामों का हरजाना देना चाहिए। उसे यहॉ वापस आना चाहिए और दूसरों के प्रति दयालुता दिखानी चाहिए। इस जीवन के महान सुधारक, पिछले जीवन में आक्रामक रहे थे। जीवन का चक्र इसी प्रकार घूमता है, पहले एक

को धनाढ्य बनाते हुए और दूसरे को गरीबी में लाते हुए, और आज का भिखारी, कल का राजकुमार हो सकता है और इस प्रकार ये एक जीवन से दूसरे जीवन तक, लगातार चलता जाता है। ''परंतु आदरणीय लामा,'' मैंने बीच में टोका, ''क्या इसका अर्थ ये है कि, यदि कोई आदमी, एक टांग वाला भिखारी है, तो उसने पिछले जन्म में, किसी दूसरे की टाँग काटी होगी ?''

''नहीं, लोबसांग, ऐसा नहीं है। इसका मतलब ये है कि, उस आदमी को गरीब होने की और एक टॉग गवाँ देने की आवश्यकता थी ताकि, वह इससे सबक ले सके। यदि तुम आकृतियों को देखो, यदि अपनी ही स्लेट और अपने ही गणक को लो। यदि तुम खोदने की विद्या का अध्ययन करना चाहते हो, तो तुम एक चाकू और एक लकड़ी का टुकड़ा लोगे। अपने हाथ में जो काम है, तुम उसके सम्बंधित उपयोगी औजारों को लोगे। ऐसा ही शरीर के उस प्रकार के साथ है, जो हमारा है, शरीर और हमारे जीवन की परिस्थितयॉ, उस काम के लिए, जिसे हमें सीखना है, सबसे अच्छी हैं।''

मैंने उस बूढ़े भिक्षु के ऊपर विचार किया, जो मर गया था, वह हमेशा अपने खराब कर्मों के प्रति, ये आश्चर्य करते हुए विलाप करता रहता था कि, उसने ऐसा क्या किया था कि, उसे इतना कठोर जीवन मिला। ''आह, हॉ, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने मेरे विचारों को पढ़ते हुए कहा, ''आत्मानुभूति को प्राप्त न किए हुए लोग, हमेशा कर्मों के व्यवहार पर रोते, पछताते रहते हैं। वे ये नहीं महसूस करते कि, कई बार, वे दूसरों के बुरे कार्यों के भी शिकार हो जाते हैं, और इस प्रकार अन्याय पूर्वक भुगतते हैं, यद्यपि बाद के जीवन में, वे इसकी पूरी क्षतिपूर्ति अथवा मुआबजा पा जाते हैं। मैं तुमसे फिर कहता हूँ, लोबसांग, तुम किसी आदमी के उन्नयन को, पृथ्वी पर उसकी वर्तमान अवस्था से, तय नहीं कर सकते, और न ही बुराई के रूप में उसकी निंदा कर सकते हो क्योंकि, वह कठिनाईयों में दिखाई देता है। न हीं, तुम्हें उसकी निंदा करनी चाहिए, क्योंकि जब तक तुम सभी तत्वों को नहीं जानते हो, जिसको तुम इस जीवन में नहीं जान सकते, तुम कोई पक्का निर्णय नहीं ले सकते।''

मंदिर की तुरइयों की, हॉल और गलियारों में गूंजती हुईं आवाजों ने, हमको अपनी बातों से हट कर, शाम की प्रार्थना के लिए बुलाया। मंदिर की तुरइयों की आवाजें ? अथवा ये एक गहरी आवाज वाला घंटा था ? ऐसा लगा कि, फलता–फूलता, मुझको झटके मारता, मुझको पृथ्वी पर जीवन में वापस लाता हुआ घंटा, मेरे सिर में था। कठिनता से मैंने अपनी आँखें खोलीं। मेरे विस्तर के पास पर्दे थे और पड़ौस में ऑक्सीजन का एक सिलेंडर रखा था। ''वह जग गया है, डॉक्टर,'' पैरों को हिलाते हुए, एक स्वर ने कहा और अच्छी तरह कलफ दिये गए कपड़ों की सरसराहट की तरह, एक लाल चेहरा मेरे दृष्टि क्षेत्र में आया। ''आह'' अमेरिकी डॉक्टर ने कहा। ''और अब तुम वापस अपने जीवन में आ गए हो, तुमको वास्तव में, रगड़ दिया गया था'' मैंने शून्य में उसकी ओर देखा।

''मेरे सूटकेस ?'' मैंने पूछा, ''क्या वे ठीक–ठाक हैं ?''

''नहीं, एक लड़का उन्हें लेकर भाग गया और पुलिस उसे ढूंढ़ नहीं सकी।''

बाद में, जानकारी चाहती हुई पुलिस, दिन में, मेरे बिस्तर के पास आई। मेरे सूटकेस चोरी हो गए थे। जिस व्यक्ति की कार ने मुझे धक्का दे कर गिरा दिया था और मुझे बुरी तरह घायल कर दिया था, उसका बीमा नहीं था। वह बेरोजगार नीग्रो था। एक बार फिर, मेरी बांयी भुजा टूट गई थी, पसली की चार हड्डियाँ टूट गईं थीं और दोनों पैर कुचल गए थे। ''तुम एक महीने में बाहर हो जाओगे, ''डॉक्टर ने प्रसन्न होते हुए कहा ? तब मुझे डबल निमोनियॉ हो गया। नौ हफ्ते के लिए, मैं अस्पताल में और लंबा टिक गया। जैसे ही मैं उठने के लिए समर्थ हुआ, मुझे, भुगतान करने के लिए कहा गया। ''हमें तुम्हारे बटुये में दो सौ साठ डालर मिले थे, उसमें से हमें दो सौ पचास डालर, तुम्हारे यहाँ रहने के लेने पड़ेंगे।'' मैंने हक्का–बक्का सा हो कर, उस आदमी को देखा। ''परंतु मेरे पास कोई काम नहीं है, कुछ नहीं,'' मैंने कहा। ''मैं दस डालर पर कैसे जीवित रहूँगा ?''

आदमी ने अपने कंधे उचकाये। ''ओह, तुम्हें उसे नीग्रो के ऊपर मुकदमा करना पड़ेगा। तुम्हारा

इलाज हुआ है और हमें इसका भुगतान करना पड़ेगा। हम इस मामले में कुछ नहीं कर सकते– उस आदमी के खिलाफ कार्यवाही करो, जिसने तुम्हें ये कष्ट दिया है।

कांपते हुए, मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा। गलियों में घूमा। दस डालर को छोड़ कर कोई पैसा नहीं, कोई रोजगार नहीं, रहने की कोई जगह नहीं, कैसे रहा जाये, ये समस्या थी। चौकीदार ने अपने अंगूठे दिखा दिये, ''गली में, वहॉ एक काम दिलाऊ ऐजेन्सी है, जा कर उनसे मिलो।'' पहले की तरह से उसने सिर हिलाते हुए कहा, अपनी एकमात्र आशा को देखते हुए, मैं घूम गया। एक थोड़ी बगल की गली में, मैंने एक अच्छा सा चिन्ह देखा, ''रोजगार''। मैं तीसरे तल्ले पर, कार्यालय में, चढ़ गया, जिसकी व्यवस्था करना मेरे लिए मुश्किल था। जब तक मैं हॉफते हुए, रेलिंग की चोटी के ऊपरी किनारे तक, नहीं पहुँचा, मुझे थोड़ा अच्छा महसूस हुआ।

''क्या चाहिए तुम्हें लड़के ?'' पीले दांतों वाले एक आदमी ने, खराब सी सिगार को, अपने मोटे होठों के बीच घुमाते हुए कहा। उसने मुझे नीचे से ऊपर तक देखा। ''अनुमान करो कि, तुम अभी ही जेल या अस्पताल में से आये हो,'' मैंने उसे, जो गुजर चुका था, वह सब बताया, मेरा सामान और पैसा कैसे खोया। ''इसलिए, तुम तेजी से कुछ पैसा कमाना चाहते हो,'' उसने कहा, उसने कार्ड उठाते हुए और उसमें कुछ वर्णन लिखते हुए कहा। उसने वह मुझे दे दिया, और उसे एक होटल में, जिसका नाम बहुत उत्सवमय था, जाने के लिए कहा, अपने मूल्यवान सेन्टों (cents) को बस किराये में खर्च करके, मैं सभी होटलों से अच्छे में, गया।

''बीस डालर प्रति सप्ताह और एक दिन में एक बार खाना,'' स्टाफ के प्रबंधक ने कहा। इसलिए, ''बीस डालर और एक बार प्रतिदिन खाने के लिए'' मैंने गंदी प्लेटों के पहाड़ों को धोया, और अंतहीन सीढ़ियों को प्रतिदिन दस घण्टे रगड़ कर साफ किया।

एक सप्ताह में बीस डालर–और दिन में एक बार खाना। स्टाफ को दिया जाने वाला खाना, उस गुणबत्तता का नहीं था, जो अतिथियों को दिया जाता था। स्टाफ के खाने का मुश्किल से ही जॉच और निरीक्षण किया जाता था। मेरी मजदूरी इतनी कम थी कि, मैं एक कमरा नहीं ले सकता था। मैंने अपना घर, पार्को में, मेहराबों और पुलों के नीचे, बनाया और रात को जब उस बीट का सिपाही आता, मैंने उससे पहले वहॉ से हट जाना सीख लिया, जो अपनी रात की छड़ी को चुभाता हुआ आता था। मैंने उस कड़ाके की ठंड से बचने के लिए, जो रात में न्यूयॉर्क को वीरान बना देती थी, अपने कपड़ों को अखबारों से भरना सीख लिया। मेरे कपड़ों में से एक सूट, यात्रा में फट गया था और कामों के कारण गंदा हो गया था, और मेरे पास बदलने के लिए अंडरवियर भी नहीं था। अपने कपड़े धोने के लिए, मैं खुद को पुरुषों के कक्ष में बंद कर लेता, अपने अंडरवियर को हटाता और फिर से पैंट पहन लेता और बाश बेसिन में अपने कपड़ों को धोता, और बाद में भाप के नलों पर डाल कर उन्हें सुखाता क्योंकि, जब तक वे पहनने लायक नहीं होते, मैं बाहर नहीं जा सकता था। मेरे जूतों में, उनके तल्लों में, छेद हो गए थे, कूड़ेदान में अच्छी जोड़ियों के लिए ढूढ़ते हुए, जो शायद कोई ग्राहक फैंक गया हो, मैंने उन्हें गत्ते लगा कर बंद किया। परंतु, मुझ तक पहुंचने से पहले, अतिथियों के उन कूड़ेदानों को देखने वाली, वहाँ तमाम ऐसी उत्सुक ऑखें और तमाम ऐसे हाथ थे। मैं एक खाना प्रतिदिन और पर्याप्त पानी के आधार पर, रहता और काम करता था। धीमे–धीमे, मैंने एक पुराना सूट, और एक जोड़ी पुराने जूते, और बदलने के लिए कपड़े जमा कर लिए। धीमे–धीमे मैंने सौ डालर जोड़ लिए।

एक दिन, जब में सेवा द्वार की ओर काम कर रहा था, मैंने दो अतिथियों को बात करते हुए सुना। वे एक विज्ञापन के, जिसे एक विशेष प्रकार के आदमी उठाते थे, जैसा वे चाहते थे, उत्तर (responce) पाने की असफलता के ऊपर, विचार विमर्श कर रहे थे। मैंने अपना काम धीमे, और धीमे किया। ''यूरोप का ज्ञान, अच्छी आवाज, रेडियो प्रशिक्षण.....'' मुझे कुछ हुआ, मैं दरवाजे के पास दौड़ा और खुशी से चिल्लाया, ''मैं इन सब का दावा कर सकता हूँ!'' आदमी मुझे देखता हुआ अवाक् रह गया

और तब हँसी के मारे फूट पड़ा। अपने चेहरों पर तेज गुस्से के साथ, प्रमुख प्रतीक्षक (waiter) और एक उसका अधीनस्थ प्रतीक्षक, आगे की ओर दौड़े। ''बाहर!'' प्रमुख प्रतीक्षक ने कहा। ज्यों ही, मेरी बेचारी पुरानी जैकिट को ऊपर से नीचे फाड़ते हुए, उसने हिंसक तरीके से मेरा कॉलर पकड़ा, मैं उसकी तरफ मुड़ा और मैंने जैकेट के दोनों टुकड़े, उसके मुँह पर दे मारेः ''एक हफ्ते में बीस डालर, तुम्हें किसी आदमी से ऐसा कहने के काबिल नहीं बनाते हैं।'' मैंने तीखे पन से कहा। दोनों आदमियों में से एक ने, मुझे निस्तब्ध आतंक के साथ देखा, ''एक हफ्ते में बीस डालर, तुमने ये कहा ?''

''हॉ, श्रीमान्, यही है, जो मुझे दिया जाता है, और एक बार खाना प्रतिदिन। मैं बगीचों में सोता हूँ, स्थान–स्थान पर पुलिस द्वारा मेरा पीछा किया जाता है। मैं इस ''अवसर वाले देश'' मैं आया था कि, अगले ही दिन, एक दौड़ते हुए आदमी ने, मुझे अपनी कार से गिरा दिया और जब मैं बेहोश था, एक अमेरिकन ने, जो कुछ भी मेरे पास था, सब लूट लिया। प्रमाण ? श्रीमान् ? मैं आपको प्रमाण दूँगा, तब आप मेरी कहानी की जाँच करें।'' उस तल का मैनेजर, अपने हाथों को मलता हुआ और लगभग रोता हुआ, दौड़ता हुआ आया। हमें ऑफिस में ले जाया गया। दूसरे लोग बैठे, मुझे खड़ा छोड़ दिया गया। दोनों आदमियों में से अधिक आयु वाले ने, अस्पताल को फोन किया, और कुछ विलंब के बाद, मेरी कहानी पूरे विस्तार के साथ, पूरी तरह सत्यापित कर दी गई। तल के मैनेजर ने मुझे बीस डालर का नोट दिया, ''एक नई जैकेट खरीद लो,'' उसने कहा, ''और यहॉ से दफा हो जाओ; और'' मैंने उसके मोटे हाथों में वह पैसा वापस दबा दिया। ''तुम इसे ले लो'' मैंने उत्तर दिया, ''मेरी अपेक्षा तुम्हें इसकी अधिक आवश्यकता होगी।'' मैं वहाँ से चलने के लिए मुड़ा और ज्यों ही मैं दरवाजे पर पहुँचा, एक हाथ तेजी से बाहर आया और एक स्वर ने कहा, ''रुको''। बूढ़े आदमी ने सीधे मेरी आँखों पर निगाह गढ़ाई। ''मुझे लगता है कि, तुम हमारे लिए ठीक रहोगे। हम देखेंगे। तुम कल शेनेक्टेडी (Schenectady)[47] आ जाओ। मेरा कार्ड ये है।'' मैं जाने के लिए मुड़ा। ''रुको, तुम्हें वहाँ मिलने के लिए, ये पचास डालर लो।''

''सर,'' प्रस्तावित किए गए धन को मना करते हुए, मैंने कहा, ''मैं वहाँ अपने साधन से पहुँचूंगा। मैं तब तक आपसे कोई पैसा नहीं लूँगा, जब तक कि आप पूरी तरह निश्चिंत न हो जाऐं कि, मैं आपकी जरूरतों को पूरा करता हूँ, क्योंकि यदि आप मुझे नहीं चाहेंगे, तो हो सकता है कि, मैं आपके पैसे वापस न कर सकूँ'' मैं मुड़ा और कमरे के बाहर निकल गया। स्टाफ रूम के लॉकर में से, मैंने अपने अति अल्प सामान को लिया और गली मे से सड़क पर बाहर आ गया। पार्क में एक सीट को छोड़ कर, मुझे कहीं जाने के लिए नहीं था। कोई छत नहीं, कोई नहीं जिसे मैं अलविदा कह सकूँ। रात में दयाहीन वर्षा हुई और मुझे पूरी तरह पानी में भिगो दिया। सौभाग्य से, मैंने ''अपने नये सूट को'' उस पर बैठे रहते हुए, सूखा बनाये रखा था। सुबह मैंने एक कप कॉफी और एक सेंडविच ली और न्यूयॉर्क शहर से शेनेक्टेडी जाने का सबसे सस्ता तरीका बस से ही पाया। मैंने अपना टिकिट खरीदा और एक सीट पर बैठ गया। किसी यात्री ने, सुबह के समाचार पत्र की एक प्रति, अपनी सीट पर छोड़ दी थी, इसलिए मैंने इसे, अपने अनिश्चित भविष्य के ऊपर, अपनी ही सोच बनाने के लिए, पूरा पढ़ा। बस भिनभिनाती हुई आई और मीलों को पचाती चली गई। शाम तक मैं शहर में पहुँच गया। मैं सार्वजनिक

47 अनुवादक की टिप्पिणी : शेनेक्टेडी, न्यूयॉर्क राज्य का एक शहर है, जिसकी आवादी लगभग 66 हजार है। मोहाक (Mohawk) भाषा के शब्द से व्युत्पन्न शेनेक्टेडी का शाब्दिक अर्थ है ''चीड़ के पेड़ों के पीछे''। शहर न्यूयोर्क के पूर्वी भाग में और मोहक तथा हडसन नदियों के संगम पर, मोहोक नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। इसे 17वीं शताब्दी में डच (Dutch) कोलोनाइजरों ने बसाया था। 19वीं शताब्दी में शहर का विकास तेजी से हुआ, जिसमें मोहाक घाटी निर्माण तथा यातायात के रास्ते बनाए गए। 1824 तक कृषि और व्यापार की तुलना में, निर्माण कार्यों में अधिक लोग काम करते थे। शहर में तब धुर दक्षिण से कपास ला कर प्रसंस्करण करने वाली, एक बड़ी मिल थी। 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीय प्रभाववाली अनेक कंपनियाँ और उद्योग शेनेक्टेडी में विकसित हुए, जिनमें जनरल इलेक्ट्रिक और अमेरिकन लोकोमोटिवक कंपनी, जो 20वीं शताब्दी में शक्तिशाली थीं वहां प्रारंभ हुईं। शहर में नाभिकीय ऊर्जा पनडुब्बियों (Nuclear submarines) को बनाने वाली तकनीक का विकास हुआ। 21वीं शताब्दी में, पुनः नवीनीकरण ऊर्जा (Renewable energy) के विभिन्न स्वरूपों पर अत्यधिक तेजी से काम किया गया। प्रमुखतः दो कंपनियों एडीसन इलेक्ट्रिक कंपनी (अब जिसे जनरल इलेक्ट्रिक के नाम से जाना जाता है) और अमेरिकन लोकोमोटिव कंपनी के कारण, शहर को ''शहर जो पूरे विश्व को प्रकाशित करता है'' का खिताब दिया गया। जनरल इलेक्ट्रिक ने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था अभी भी वहीं रखी है, जबकि उसके हजारों निर्माण कार्यों को सनवेल्ट और दूसरे देशों को स्थानान्तरित कर दिया गया है। अमेरिकन लेाकोमोटिव कंपनी ने वर्षों तक भाप के इंजन बनाए। बाद में इसे उच्च दवाब वाले, सर्वोच्च क्षमता वाले, भाप के इंजनों के निर्माण के लिए जाना गया। द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि में इसने युद्ध को समर्थन देने के लिए अपना स्वरूप बदल लिया और अमरीकी फौज के लिए टैंक बनाए। बाद में 1969 में कंपनी ने अपना कारोबार शेनेक्टेडी से बंद कर दिया।

स्नानगृह की ओर गया और जितना अपने आपको चुस्त बना सकता था, बनाया, अपने साफ कपड़े पहने और बाहर निकल आया।

रेडियो स्टूडियो में दोनों आदमी प्रतीक्षा कर रहे थे। घंटों के बाद घण्टों तक, उन्होंने मेरे साथ प्रश्नों का अंबार लगा दिया। एक के बाद एक आदमी अंदर आया और फिर बाहर गया। अंत में उन्होंने मेरी पूरी कहानी सुनी। ''तुम्हारा कहना है कि, तुम्हारे सारे कागजात शंघाई में एक दोस्त के पास रखे हैं ?'' वरिष्ठ आदमी ने कहा, ''तब हम तुम्हें अस्थाई आधार पर काम में लगा देंगे और शंघाई को एक समुद्रीतार (cable) भेजेंगे ताकि तुम्हारे सारे कागज, सारी चीजें यहाँ आ जाऐं। जैसे ही हम इन कागजों को देख लेंगे, तुम्हें स्थाई आधार मिल जाऐगा। एक सौ दस डालर एक सप्ताह के; जब हम कागजात को देख लेंगे, हम इसके ऊपर आगे चर्चा करेंगे। उन्हें वहाँ से हमारे खर्चे पर भिजवा दो।''

दूसरा आदमी बोला, ''निश्चितरूप से मैं अनुमान लगाता हूँ कि, इसको अग्रिम देने पर, ये ऐसा कर सकता है,'' उसने कहा।

''इसको एक महीने का वेतन, अग्रिम के रूप में दे दो।'' पहले आदमी ने कहा। ''उसे परसों से काम शुरू करने दो।''

इस प्रकार, मेरे जीवन का आनंदपूर्ण समय प्रारम्भ हुआ। मैंने काम को पसंद किया, और मैंने पूरी संतुष्टि प्रदान की। कुछ समय बाद मेरे कागजात, मेरा वर्षो पुराना क्रिस्टल और काफी कम, दूसरी चीजें आ गईं। दोनों आदमियों ने हर चीज की जाँच–परख की और मुझे पंद्रह डालर प्रति सप्ताह की वेतन वृद्धि दे दी। जीवन मेरे ऊपर मुस्कुराना शुरू कर रहा था, मैंने सोचा।

कुछ समय बाद, जिसके बीच मैंने अपने अधिकांश पैसे को बचाया, मुझे इस प्रकार की भावना महसूस होने का अनुभव हुआ कि, मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ, मैं अपने ऊपर सौंपे गए कामों को जीवन में नहीं लेने वाला हूँ। अब, बूढ़ा आदमी मुझे अधिक पसंद करता था, मैं उसके पास गया और अपनी व्यथा सुनाई, उसे बताते हुए कि, जब उन्हें एक कोई उचित आदमी मिल जाएगा, मैं चला जाऊँगा। तीन महीने के लिए मैं और वहाँ रुका।

मेरे कागजात शंघाई से आ चुके थे, उनके साथ में ब्रिटेन के अधिकारियों द्वारा, ब्रिटिश रियायतों पर जारी किया गया, एक पासपोर्ट था। युद्ध के बंद होने के बाद के उन दिनों में, ब्रिटेन के लोग मेरे बहुत प्रशंसक हो गए थे, क्योंकि उन्होंने मेरी सेवाओं का लाभ उठाया था। मैं अपने पासपोर्ट और दूसरे कागजों को, न्यूयॉर्क में, इंग्लैंड के दूतावास ले गया, और काफी विलंब के बाद, एक बीसा और इंग्लैंड में काम करने की अनुमति प्राप्त की।

अंत में मेरा एक स्थानापन्न (substitute) मिल गया, और मैं ''अपना कामकाज उसे सिखाने के लिए'' दो हफ्ते वहाँ रुका। तब मैंने छोड़ दिया। अमेरिका इस मामले में, शायद, अद्वितीय है कि, हर कोई यहाँ जानता है कि, वहाँ लगभग मुफ्त में, कहीं भी कैसे जाया जा सकता है। मैंने विभिन्न समाचार पत्रों की ओर देखा जब तक कि मैंने ''परिवहन (transport)'' शीर्षक के अंतर्गत निम्नलिखित नहीं

पाया'केलीफोर्निया[48], सियाटेल[49], बोस्टन[50], न्यूयॉक[51]।

गैस मुफ्त, कॉल 000000 xxx गाड़ी बाहर चला कर ले जानी है।''

अमेरिका में प्रतिष्ठान (firms), कारों को, पूरे महाद्वीप में अपने ग्राहकों को, उनके घरों पर पहुँचाते हैं। अनेक ड्राईवर यात्रा करना चाहते हैं इसलिए, उन सँभावित ड्राईवरों के लिए, ऐसी गाड़ी पहुँचाने वाले संस्थानों के संपर्क में आना, एक अच्छा और सस्ता तरीका है। गाड़ी चलाने की एक साधारण परीक्षा पास करने के बाद, किसी ड्राईवर को उसके रास्ते पर पड़ने वाले विभिन्न पेट्रोल पम्पों के गैस बाउचर[52] दे दिए जाते हैं। मैं xxx गाड़ी भिजवाने वाली कंपनी पर मिला और मैंने कहा मैं एक कार को सियाटेल (Seattle) तक चला कर ले जाना चाहता था। ''कोई परेशानी नहीं, बिल्कुल,'' उसने

---

48 अनुवादक की टिप्पिणी : कैलीफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित एक राज्य है। ये अपनी तीन करोड़, नब्बे लाख, आबादी के साथ, अमरीका का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है और क्षेत्रफल के हिसाब से अलास्का और टैक्सास के बाद अमरीका में इसका तीसरा स्थान आता है। कैलीफोर्निया के उत्तर में ओरेगोन, पूर्व में नेवादा, दक्षिण–पूर्व में एरीजोना और दक्षिण में मैक्सिको के बाजा–कैलीफोर्निया के राज्य आते हैं। कैलीफोर्निया राज्य में, अमरीका के 50 सर्वाधिक आबादी वाले शहरों में से आठ (लॉस ऐंजेलिस, सेन डियागो, सेन ओजे, सेन फ्रांसिस्को, फ्रेसनो, सेक्रेन्मेंटो, लोंग बीच तथा ओक लैंड) इस राज्य में हैं। 1854 से सेक्रेमेंटो कैलीफोर्निया राज्य की राजधानी है। कैलीफोर्निया की अर्थ व्यवस्था तकनीक, वित्त, भवन एवं सम्पत्ति, शाासकीय, वैज्ञानिक और तकनीकी उद्योग सेवाओं पर आधारित है जो कुल मिला कर राज्य की अर्थव्यवस्था में 50 प्रतिशत योगदान करती है। राज्य का लगभग 45 प्रतिशत हिस्सा जंगलों से भरा है। कैलीफोर्निया के व्हाइट माउंटेन्स (White mountains) के क्षेत्र में ऐसे अनेक पेड़ हैं, जो दुनिया में संबसे अधिक पुराने हैं।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, बड़े–बड़े अंर्तमहाद्वीपीय सड़कों, जैसे कि लिंकन (Lincolin) हाई वे और रूट 66 के जाल के कारण, कैलीफोर्निया में आव्रजकों (immigrants) की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। 1900 से 1965 के काल में लगभग 10 लाख लोगों की आबादी बढ़ी, जिसने इसे संयुक्त राज्य का सबसे बड़ा आबादी वाला राज्य बना दिया। बढ़ती हुई आबादी की मांगों को पूरा करने के लिए, आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, लॉस ऐंजेलेस एक्वाडक्ट (Los Angeles Aqua ducts), ओरेबिले और शास्ता बांध, (Shasta dam), खाड़ी (Valley) और स्वर्ण द्वार सेतु (Golden Gate bridge) बनाए गए। अनेक फिल्म निर्माणकर्ताओं ने 1920 में हॉलीवुड में अपने स्टूडियो बनाए। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, कैलीफोर्निया ने अमरीका की फौजी आवश्यकताओं का लगभग 8.7 प्रतिशत उत्पादन किया ।

स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी और उसके इंजीनियरिंग फैकल्टी के डीन फेडरिक टर्मन (Fredrick Terman) ने फैकल्टी और विद्यार्थियों को कैलीफॉर्निया में ही बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया और एक अत्यधिक उच्च तकनीकी क्षेत्र, जिसे आजकल सिलीकोन वैली (Silicon Valley) कहा जाता है, का विकास किया। तथापि, 20वीं शताब्दी में कैलीफॉर्निया में दो महान आपदायें आईं। 1906 में सेन फ्रांसिस्को में भूकम्प आया और 1928 में सेन फ्रांसिस्को बांध का पानी अमेरिका के इतिहास में मारक बाढ़ के रूप में प्रकट हुआ। कैलीफॉनिया की 0.38 प्रतिशत आबादी हिन्दी, .31 प्रतिशत आबादी पंजाबी और 2..29 प्रतिशत आबादी तेलगू बोलती है। राज्य के कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के भण्डार, केन्द्रीय घाटी में हैं और कैलीफॉर्निया समुद्र तट पर अपने दो बड़े नाभिकीय बिजली घरों, डियाबलो केनियन (Diablo Canyon) और सेन ओनोफ्रे (San Onofre) के लिए भी जाना जाता है। इसमें से बाद वाले को 2013 में बंद कर दिया गया, जबकि 1970 के बाद में कोई भी नया नाभिकीय बिजली घर नहीं लगाया गया।

किसी समय मे स्वर्ण द्वार सेतु (Golden Gate bridge), जिसका मुख्य स्पान (span) 4200 फुट का है, विश्व का सबसे लंबा झूला सेतु (suspension bridge) था। इसे 1937 में चालू किया गया। लॉस एन्जेलिस अंर्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा, विश्व का सर्वाधिक व्यस्त हवाई अड्डा है, जबकि सेनफ्रांसिस्को का अंर्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा, विश्व का 21 वां व्यस्ततम हवाई हड्डा है।

49 अनुवादक की टिप्पिणी : सियाटेल (Seatel) अमरीका के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित बंदरगाह वाला एक शहर है, जिसकी आबादी लगभग 6 लाख 62 हजार है। सियाटेल, उत्तरी अमरीका के प्रशान्त महासागर के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र और वाशिंगटन राज्य का सबसे बड़ा शहर है, जो अमेरिका में सर्वाधिक तेजी से विकसित हुआ, बड़ा शहर है और चोटी के पांच शहरों में से एक है। सियाटेल क्षेत्र, प्रारंभ में मूल अमरीकनों (native Americans) द्वारा लगभग 4 हजार वर्ष पहले बसाया गया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ये शहर व्यापारिक और जहाज बनाने के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, आंशिक रूप से स्थानीय बोईंग कंपनी जो हवाई जहाजों को बनाती है, के कारण, शहर की प्रगति की दर बहुत अधिक रही। तकनीकी केन्द्र के रूप में सियाटेल क्षेत्र 1980 के दशक में विकसित हुआ, जिसमें माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) जैसी कंपनियां वहां स्थापित हुईं। 1994 में अमेजन, जो खुदरा व्यापार का सबसे बड़ा दैत्य है, सियाटेल में स्थापित हुआ। शहर मुख्यतः पहाड़ी इलाका है, यद्यपि सभी जगह ऐसा नहीं है। रोम की भाँति शहर को सात पहाड़ियों पर स्थित कहा जाता है, जिसमें केपीटोल हिल (Capitol hill) , फर्स्ट हिल (First hill), वेस्ट सियाटेल (West Seatel), बेकन हिल (Bacon hill), क्वीन एनी (Queen Anne), मंगोलिया (Mangolia) और पूर्ववर्ती डेनी हिल (Danny hill) शामिल है।

50 अनुवादक की टिप्पिणी : बोस्टन, अमरीका के मैसाचुसेटस् के कॉमन वैल्थ का सबसे बड़ा शहर और राजधानी है। अमरीका के सबसे पुराने शहरों में से एक, बोस्टन 1630 में इंग्लैण्ड से आए प्रवासियों द्वारा बसाया गया था। शहर लगभग 48 वर्गमील में फैला हुआ है, जिसकी आबादी लगभग 6 लाख 60 हजार है, जो इसे संयुक्त राज्य का 24वां सबसे बड़ा शहर और न्यू इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा शहर बनाती है। इस क्षेत्र के अनेक कॉलेज और यूनीवर्सिटी, बोस्टन को चिकित्सा का, और उच्च शिक्षा का अंर्तराष्ट्रीय केन्द्र बनाते हैं। शहर को विभिन्न प्रकार के आविष्कारों के लिए जाना जाता है। शहर, निर्माण उद्योग का और विशेष रूप से शिक्षा और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र है।

शहर में जीवन यापन की लागत (cost of living), संयुक्त राज्य में सबसे ऊंची है, जबकि जीवन यापन का स्तर (standard of living), विश्व भर में, उच्च स्थान पर है। 1990 के बाद, यहाँ मकानों की कीमतें अनाप–शनाप तेजी से बढ़ी हैं। 1850 में आयरलैण्ड के आलू के अकाल (Irish potato femine), के बाद विशेष रूप से आयरलैण्ड से यहां आने वाले प्रवासियों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। बोस्टन में लगभग 35 हजार आयरिश लोग रहते हैं। बोस्टन का क्षेत्रफल 90 वर्गमील है, जिसमें से 54 प्रतिशत जमीन और 46 प्रतिशत पानी है। शहर के, लोगन अंर्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे की, समुद्रतल से ऊंचाई 19 फीट है, जबकि बोस्टन का सबसे ऊँचा भाग, बेलीब्यू हिल (Balleuve Hill) समुद्रतल से 330 फुट की ऊंचाई पर है।

यहाँ बसंत और ग्रीष्म के प्रारंभ में, कोहरा छाया रहना आम बात है। बोस्टन, दुनियाँ के आर्थिक रूप से संपन्न शहरों में, तीसवां स्थान रखता है। बोस्टन में विश्व भर के लगभग 3 लाख 50 हजार विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। पर्यटन यहाँ की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान करता है। उसकी संस्कृति के कारण, बोस्टन को, 'अमेरिका का अथेंस (Athens of America)* कहा जाता है। इसे 'अमेरिका की प्रतिभा राजधानी (intellectual capital of America)' भी कहा जाता है। बोस्टन के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हार्वड विश्वविद्यालय (Harvard university), मैसाचुसेटस इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी (Massachusetts Institute of Technology), बोस्टन विश्वविद्यालय (Boston university) और ब्रांडाईस विश्वविद्यालय (Brendeis university) प्रसिद्ध हैं। बृहत्तर बोस्टन में, 100 से अधिक विश्वविद्यालय और कॉलेज हैं।

51 अनुवादक की टिप्पिणी : संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्तर पूर्वी प्रान्त, न्यूयॉर्क है, जो विस्तार के हिसाब से अमरीका का 27 वां और आबादी के हिसाब से 4था और आबादी के घनत्व के हिसाब से 7वां राज्य है। न्यूयॉर्क की सीमाऐं, दक्षिण की ओर न्यू जर्सी (New Jersey) तथा पेनसिल्वानिया (Pennsylvania) और पूर्व की ओर कनेक्टीकट (Connectcut), मेसाचुसेट्स (Massachusetts) और वरमोंट (Vermont) में मिलती हैं। लोंग द्वीप (Long island) के पूर्व के द्वीप रोड़े (Rheode) के साथ, राज्य की खुली सीमा है, और वैसे ही, केनेडा के साथ भी खुली सीमा है। उत्तर की तरफ, केनेडा का क्यूवेक (Quevec) राज्य और पश्चिम की तरफ केनेडा का ओंटारियो (Ontario) राज्य है। न्यूयॉर्क राज्य को न्यूयॉर्क और न्यूयॉर्क शहर को न्यूयॉर्क शहर के नाम से जाना जाता है।

न्यूयॉर्क शहर की आबादी लगभग 8 करोड़ 50 लाख है। न्यूयॉर्क शहर, अमेरिका का सबसे अधिक आबादी वाला शहर है और बाहर से वैधानिक रूप से आने वाले आव्रजकों (immigranrs) का प्रवेश द्वार है। यहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations) का मुख्यालय है। न्यूयॉर्क को ''विश्व की सांस्कृतिक और आर्थिक राजधानी (Cultural and economic capital of the world)" कहा जाता है। न्यूयॉर्क कीं स्वतंत्रता की मूर्ती (Statue of Liberty) विश्वविख्यात है, जो स्वतन्त्रता, एवं प्रजातंत्र के आदर्शों को प्रदर्शित करती है। न्यूयॉर्क में उच्च शिक्षा के लगभग 200 महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं, जिनमें कोलंबिया विश्वविद्यालय (Columbia Unversity) कोर्नेल विश्वविद्यालय (Corneil University), न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय (New York University) और रोकफेलर विश्वविद्यालय (Rocke Feller University) विशेषरूप से विख्यात हैं और विश्व के प्रथम 35 विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल हैं।

आयरलैण्ड के साधारण आदमी की बोली में कहा। ''मैं एक लिंकन (Lincoln) कार को वहाँ ले जाने के लिए, एक ड्राईवर की तलाश में हूँ। मुझे आसपास गाड़ी चला कर दिखाओ, तुम कैसी चलाते हो।'' ज्यों ही, मैंने उसे साथ लेकर गाड़ी चलाई, उसने मुझे विभिन्न लाभदायक बातें बताईं। वह मुझे काफी हद तक पसंद करता हुआ लगा, तब उसने कहा, ''मैंने तुम्हारी आवाज पहचान ली है, तुम एक उद्घोषक (announcer) थे।'' ये मुझे पक्का पता चल गया। उसने कहा, ''मेरे पास एक लघुतरंग (shortwave) का रेडियो है, जिससे मैं देहात के संपर्क में रहता हूँ। इसमें अब लघुतरंगे नहीं आ रही हैं, इसके बारे में क्या कुछ गलत है। स्थानीय आदमी, इस प्रकार के रेडियो को नहीं समझते हैं, क्या तुम जानते हो ?''

मैंने उसे विश्वास दिलाया कि, मैं उसके रेडियो को देखूँगा और एक कार मुझे देते हुए, उसने मुझे शाम को अपने घर आने का आमंत्रण दिया, जिसके साथ मैं उसके घर जाऊँगा। उसकी आयरिश पत्नी, अपवादरूप से (exceptionally) अच्छी थी, और उन्होंने मेरे अंदर आयरलैंड के लिए प्रेम पैदा किया, जो मेरे वहाँ रहने के लिए जाने पर, तीव्रतम हो गया।

रेडियो, एक बहुत प्रसिद्ध अंग्रेजी मॉडल का था, अपवादस्वरूप सबसे अच्छा एक ईडीस्टोन (Eddistone), जिसका कोई सानी नहीं है। भाग्य मेरे ऊपर मुस्करा रहा था। आयरिश आदमी ने तारों मे लगे हुए प्लगों में से एक को उठा लिया और मैंने देखा, उसने उसे किस प्रकार पकड़ा। ''मुझे वह कुंण्डल (coil) दो,'' मैंने कहा, ''और एक आवर्धक कांच?'' उसके पास था, एक जल्दी से की गई परीक्षा ने मुझे दिखाया कि, तारों को गलत ढंग से पकड़ने के कारण, उसकी पिन में से एक तार टूट कर निकल गया था। मैंने इसे, उसे दिखाया। ''क्या तुम्हारे पास टाँका और टाँका लगाने का कइया है ?'' मैंने पूछा। नहीं, परंतु यह उसके पड़ौसी के पास था। जल्दी से वह दौड़ा, कइया और टाँका लिए हुए, वापस लौटा। तार को वापस जोड़ देना कुछ मिनटों का काम था– और रेडियो चालू हो गया। ट्रिमर के साथ में किए गए छोटे–मोटे ताल मेल से वह और अच्छा काम करने लगा। जल्दी ही हम उसमें से बी.बी.सी. लंदन सुनने लगे।

''मैं इस रेडियो को ठीक करने के लिए वापस लंदन भेज रहा था,'' आयरिश आदमी ने कहा। ''अब मैं तुम्हारे लिए कुछ करने वाला हूँ। लिंकन का मालिक, हमारे ड्राईवरों में से एक को लेकर, यह चाहता है कि, उसकी कार सियाटेल ले जाई जाये। वह एक धनाढ्य आदमी है। मैं तुम्हें अपने यहाँ नौकरी पर रख रहा हूँ ताकि, तुम्हें वेतन मिल जाए। हम तुम्हें अस्सी डालर देंगे और उस आदमी से एक सौ बीस डालर प्राप्त करेंगे। मंजूर ?'' मंजूर ? निश्चितरूप से, अधिकांशतः ये मेंरे लिए एकदम ठीक है।

आने वाले सोमवार की सुबह, मैने यात्रा शुरू की। मेरा पहला ठिकाना पासाडेना (Pasadena)[53] था। मैं ये निश्चित करना चाहता था कि, उस जहाजी इंजीनियर के, जिसके कागजात

11 सितम्बर, 2001, को चार आतंकवादियों में से दो ने, हवाई जहाज टकरा कर, विश्व व्यापार केन्द्र (World Trade Center) की युग्म मीनारों (twin towers) को गिरा दिया था, जिससे वे तो पूरी तरह बर्बाद हो ही गयीं, इसके साथ आग से हुये नुकसान के कारण विश्व व्यापार केन्द्र (WTO) की सात अन्य इमारतें गिर गई। विश्व व्यापार केन्द्र का नुकसान मरम्मत के लायक नहीं होने के कारण, इसे पूरी तरह गिरा कर दुबारा बनाया गया। 11 सितम्बर, 2011 को इसके स्मारक के रूप में एक स्मारक बना कर इसको दुबारा चालू किया गया। बाद में यहाँ, 21 मार्च 2014 को एक संग्रहालय (museum) की स्थापना की गई। अब 2014 में पूरे हुये नये विश्व व्यापार केन्द्र में विश्व की सर्वाधिक ऊँची गगनचुम्बी इमारतें हैं, जिनकी ऊंचाई 7076 फुट है।

सामान्यतः न्यू यॉर्क का वातावरण थोड़ा नम है। न्यू यॉर्क में वरमोंड के आकार के बराबर आकार वाले एडीरोनडेक उद्यान (Adirondec Park) को बनाया गया। राज्य में लगभग 22 राष्ट्रीय उद्यान (National Parks) हैं, जिनमें लगभग एक करोड़ 65 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। न्यू यॉर्क राज्य की लगभग दो तिहाई आबादी, न्यू यॉर्क शहर में रहती है। न्यू यॉर्क में न्यू यॉर्क स्टाक एक्सचेंज (New York Stock Exchange) और नासडॉक (Nasdoc) स्थित हैं, जो विश्व के स्टॉक एक्सचेंजों में से क्रमशः पहला और दूसरा स्थान रखते हैं। न्यू योर्क भारी मात्रा में विभिन्न प्रकार के समान, जैसे खाद्य सामग्री, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक्स का सामान, हीरे और दूसरे सामान निर्यात करता है।

52 अनुवादक की टिप्पिणी : अमरीका में पेट्रोल को गैसोलिन (Gasolin) कहते हैं, जिसका संक्षिप्त 'गैस' पद, पेट्रोल के लिये उपयोग में लाया जाता है। इसलिये गैस वाउचर का अर्थ पेट्रोल वाउचर से है।

53 अनुवादक की टिप्पिणी : पासाडेना, जो अमेरिका के कैलीफॉर्निया राज्य में है, लॉस ऐंजेलिस की एक काउंटी है। पासाडेना की आबादी लगभग एक लाख चालीस हजार है। इसे 1886 में बसाया गया था। शहर को वार्षिक रोज बाउल फुटबॉल गेम (Rose bowl football game) तथा टूर्नामेंट ऑफ रोजज परेड (Tournament of roses parade) के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त पासाडेना में अनेक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संस्थान हैं, जिसमें प्रमुखतः कैलीफॉर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (California Institute of Technology), जेट प्रोपल्सन लेबोरेटरी (Jet Propulsion Laboratory) , श्यूलर थियोलॉजिकल सेमीनारी (Fuller Theology Seminary), आर्टस सेंटर,कॉलेज ऑफ डिजायन (Art center college of design), पासाडेना प्ले हाऊस (Pasadena play house), नोर्टन साइमन म्यूजियम ऑफ आर्टस ऑफ पेसिफिक एशिया (Norton Simon museum of arts of Pecefic Asia) प्रमुख हैं। पासाडेना के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध एक बरदान सिद्ध हुआ, क्योंकि तब दक्षिणी कैलीफॉर्निया, प्रशान्त महासागर के युद्ध के लिए एक मंच बन गया था। कैलीफॉर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (Caltech), पासाडेना के दक्षिणी मध्य भाग में है। जेड प्रपल्सन लेबोरेटरी (काल्टेक द्वारा नासा के लिए व्यवस्थित) कालटेक के 31 नोबेल पुरुस्कार विजेताओं ने 32 नोबेल पुरुस्कार जीते हैं।

मेरे पास हैं, जिनका मैंने उपयोग किया था, वास्तव में, कोई रिश्तेदार नहीं हैं। न्यूयॉर्क (New York), पिट्सवर्ग (Pittsburgh)[54], कोलंबस (Columbus)[55], कांसास (Kansas)[56] शहर, मील (miles) जुड़ते गए। मैंने जल्दी नहीं की। मैंने यात्रा मैं एक सप्ताह लगाया। होटल के खर्चे बचाने के लिए, रात को मैं बड़ी कार में सोता था, मेरे विचार से, जहाँ कहीं भी ठीक होता, मैं सड़क से दूर ले जा कर गाड़ी को खड़ी कर देता। शीघ्र ही, मैं अच्छी हवा का आनंद लेता हुआ, अमरीका के रॉकी पर्वत (Rockies)[57] की निचली पहाड़ियों में था और जैसे–जैसे कार ऊपर, और ऊपर, चढती, मेरा आनंद बढ़ता जाता। पूरे एक दिन के लिए, मैं उन पर्वत श्रेणियों में पड़ा रहा, और तब पासाडेना के लिए चला। अधिकांश सूक्ष्म जानकारियॉ, इस बात को पता लगाने में असफल रहीं कि, इंजीनियर के कोई रिश्तेदार थे। वह एक उदास, रूखा, चिड़चिड़े प्रकार का आदमी था, जो बजाय किसी अन्य व्यक्ति के साथ के, खुद ही अकेला रहना चाहता था।

मैने राष्ट्रीय योसेमिटी (Yosemite) उद्यान[58] में होकर गाड़ी चलाई। ज्वालामुखी की झील (Crater Lake) राष्ट्रीय उद्यान, पोर्टलेंण्ड (Portland), और अंत में सियाटेल (Seattle)। मैं गाड़ी को गैरिज में ले गया, जहाँ उसका सावधानी से निरीक्षण किया गया। ग्रीस लगाई गई और धोया गया। तब गैरिज के मालिक ने, कार के मालिक को फोन लगाया। ''आ जाओ,'' उसने मुझसे कहा, वह गाड़ी को वहीं मंगाना चाहता है।'' मैंने लिंकन गाड़ी को और मैनेजर ने दूसरी गाड़ी को चलाया, जिससे हमको

---

54 अनुवादक की टिप्पिणी : पिट्सवर्ग (Pittsburgh) का नाम 1958 में जनरल जोन्स फोरबिस (General Johns Forbis) ने ब्रिटिश राजनेता, बिलियम पिट्स (William Pitts) के नाम पर रखा था। पिटसवर्ग कॉमन वैल्थ पेन्सिलवानिया में दूसरा सबसे बड़ा शहर है, जिसकी आबादी तीन लाख से अधिक है। पिट्सवर्ग को ''स्टील का शहर (The steel city)'' और ''पुलों का शहर (city of bridges)'' दोनों नामों से जाना जाता है, क्योंकि इसमें 300 से अधिक स्टील प्लांट तथा उससे संबंधित उद्योग हैं और इसमें 446 पुल हैं। स्टील के अलावा पिट्सवर्ग एल्यूमीनियम, कांच, पानी के जहाज निर्माण, पेट्रोलियम, खाद्य सामग्री, खेल कूद की सामग्री और इलेक्ट्रोनिक्स के लिए भी जाना जाता है। गूगल (Google), एपल (Apple), बॉश (Bosch), डिजनी (Disney), यूबर (Uber), इंटेल (Intel) और आई.बी..एम. (IBM) आदि 1600 तकनीकी फर्मों में शामिल हैं, जो यहाँ 20.7 मिलियन डॉलर का वार्षिक वेतन वितरण करती हैं। इस क्षेत्र में 68 महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं, जिनमें विशेष रूप से कारनेगी मेलन विश्वविद्यालय (Carnegie Mellon University) और पिट्सवर्ग विश्वविद्यालय (University of Pittsburgh) उल्लेखनीय है। पिट्सवर्ग का कुल क्षेत्रफल 58.3 वर्गमील है, जिसका 95.25 प्रतिशत हिस्सा जमीन और 4. 75 प्रतिशत हिस्सा जल का है। पिट्सवर्ग में कैनीवुड मनोरंजन पार्क (Kennywood Amusement Park) स्थित है। यहाँ राज्य से मान्यता प्राप्त अनेक जुआघर (casino) हैं।

55 अनुवादक की टिप्पिणी : कोलंबस नगर को आधिकारिक रूप से 1816 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में कोलंबस संयुक्त राज्य के ओहियो (Ohio) राज्य की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। यह संयुक्त राज्य का 15 वां सबसे बड़ा शहर है, जिसकी आबादी 8 लाख 50 हजार के लगभग है। ओहियो स्टेट यूनीवर्सिटी (Ohio State University), वीटल मेमोरियल इंस्टीट्यूट (Battelle Memorial Institute) यहाँ स्थित हैं। 2010 में प्रारंभ किया गया, 700 फुट लम्बा मेनस्ट्रीट का पुल (main street bridge), उत्तरी अमेरिका में अपने प्रकार का सर्वप्रथम पुल है। शहर का प्रमुख हवाई अड्डा, कोलंबस अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा है (Columbus International airport), जो शहर के पूर्वी भाग में स्थित है।

56 अनुवादक की टिप्पिणी : कंसास शहर, कंसास राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शहर है, जिसकी आबादी लगभग एक लाख पचास हजार है। यह काउ नदी (Kaw river) अथवा कंसास नदी (Kansas river) के किनारे पर स्थित है, जहाँ पर यह मिसोरी नदी (Missouri river) से संगम बनाती है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 128 वर्गमील है।

कंसास शहर, 'टोनार्डो एली (Tornado Alley)', जो एक विस्तृत क्षेत्र है, के किनारे पर स्थित है, जहाँ केनेडा की रॉकी पहाड़ियों (Rocky hills) से ठण्डी हवा आती है और जो मैक्सिको की खाड़ी से आने वाली गर्म हवा से टकराती है, जिससे विशेषकर बसंत ऋतु में, शक्तिशाली तूफान उठते हैं।

कंसास शहर में जनरल मोटर्स (General Motors), जो शेवरलेट की मालीबू और ब्यूकालाग्रोसो ब्रांड की कारें बनाती है, की फेयर फैक्स एसेम्बली लाइन (Fairfax assembly line) है। यहाँ का सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता, कंसास यूनीवर्सिटी का अस्पताल है। 2011 में गूगल ने फाइवर ऑप्टिक्स के नेटवर्क के लिए कंसास का चयन किया था, जिसका पूरा खर्चा गूगल ने उठाया। यह नेटवर्क 2012 में चालू हुआ। कंसास शहर में अनेक एतिहासिक इमारते हैं जैसे कि, रोमन कैथोलिक आर्कडियोसिस ऑफ कंसास सिटी, (Roman Catholic Archdiocese of Kansas city), मेमोरियल हॉल (Memorial hall), रोजडेल आर्च (Rosedel Arch), जो अमेरिका की राष्ट्रीय पंजी (National register), में सूचीबद्ध हैं।

57 अनुवादक की टिप्पिणी : रॉकी पर्वत, जिसे सामान्यतः राकीज कहा जाता है, उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के पश्चिमी भाग में, एक बड़ी पर्वत श्रंखला है। ब्रिटिश कोलंबिया के सबसे उत्तरी भाग से, पश्चिम कनाडा में न्यू मैक्सिको तक, रॉकी पर्वत, अमरिका के दक्षिण पश्चिमी भाग में, 3 हजार मील तक फैला है। प्रशान्त महासागर के समुद्रतटीय और झरने जैसी श्रंखलाओं से और सियारा नेवादा श्रंखलाओं से, जो सभी इससे आगे पश्चिम में गई हैं, रॉकी कुछ हद तक अलग है।

रॉकी पर्वत, लगभग 80 मिलीयन वर्षों से 55 मिलयन वर्षों के बीच, पहले बना था, जिसमें लारामाईड ओरोजेनी के बीच, अनेक प्लेटों ने उत्तरी अमरीकी प्लेट के नीचे, फिसलना शुरू कर दिया था। इसके बाद, हिमनदों का नाश होने के साथ–साथ, पिछले हिमयुग के अंत में, रॉकीज में चोटियों और घाटियों का एक विशेष प्रकार का प्राकृतिक स्कल्पचर बना और मानव ने इस पर्वत श्रंखला में रहना प्रारंभ किया, यद्यपि श्रंखला कभी भी बहुत घनी आबाद नहीं हुई। आजकल, अधिकांश पर्वत श्रंखला सार्वजनिक पार्कों और जंगली भूमि से संरक्षित है और विशेषरूप से हाइकिंग, कैम्पिंग, पर्वतारोहण, मछली, शिकार, पर्वती साईकिल मार्ग, और स्कीइंग के लिए और बर्फ में निवास करने के लिए, एक प्रमुख पर्यटक स्थान है।

58 अनुवादक की टिप्पिणी : योसेमिटी राष्ट्रीय उद्यान (Yosemite National Park), अमेरिका के राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है, जो उसके केन्द्रीय पूर्वी भाग में, कैलीफॉर्निया राज्य में स्थित है। उद्यान का क्षेत्रफल, 7 लाख 47 हजार 956 एकड़ है, जो सियारा नेवादा पर्वत श्रंखला के पश्चिमी ढलान पर आरपार पहुंचता है। 3 करोड़ 70 लाख लोग प्रतिवर्ष योसेमिटी में पर्यटन के लिए आते हैं। इसे 1984 से विश्व विरासत के रूप में स्वीकृत किया गया है। योसेमिटी में पारदर्शी ग्रेनाइट की पहाड़ियॉ, झरने, साफ पानी की धाराएं, और जीवन की विविधताएं हैं। कैलीफॉर्निर्या के 7 हजार वानस्पतिक नमूनों में से लगभग 50 प्रतिशत, सियारा नेवादा में पाये जाते हैं और 20 प्रतिशत से अधिक, केवल योसेमिटी में।

लगभग एक करोड़ वर्ष पहले सियारा नेवादा, प्राकृतिक घ्यटना के रूप में, आकस्मिक रूप से, जमीन से ऊपर उठा था और थोड़ा सा झुक (tilt) गया, जिससे पश्चिमी ढ़लान और पूर्वी चढ़ाई, नाटकीय रूप से उत्पन्न हुई। पुरातत्वीय खोजों से पता लगा है कि, योसेमिटी घाटी लगभग 3 हजार वर्ष पहले से आबाद थी, यद्यपि मानव के चरण यहां 8 हजार से 10 हजार वर्ष पहले पड़ चुके थे।

योसेमिटी का शाब्दिक अर्थ है, 'मारक (killer),' जो मूलतः रेनेग्ड जनजाति (Regenade tribe) के लिए उपयोग में लाया जाता है, जिसको इस क्षेत्र से बाहर खदेड़ दिया गया।

1903 में इसके उत्तरीय भाग में एक बांध बनाया गया, जो हेचहेची घाटी में स्थित है। और वह घाटी को और सेनफ्रांसिस्को शहर को जल विद्युत प्रदान करता है। योसेमिटी अपने झरनों की अधिकता के कारण प्रसिद्ध है, जिनमें से योसेमिटी घाटी का झरना, 'ब्राइडल वील फॉल (Bridal veil fall)' प्रमुख है। वम्पा फॉल (¡mpa fall), जो हेच हेची घाटी (Hatch hatchy valley) में है, दूसरा उल्लेखनीय झरना है। छोटे–बड़े सैंकड़ों झरने आसपास में, पार्क में, मिलते हैं।

वापसी में, लौटने में, यातायात का साधन, मिल जाए। बड़े घर की खूब फैली, विस्तारित सड़क तक, गाड़ी चलाई, और तीन आदमी प्रकट हुए। मैनेजर कुँहासे–चेहरे जैसे दिखने वाले आदमी के प्रति, बहुत सम्मानपूर्ण था, जिसने लिंकन को खरीदा था। दो दूसरे आदमी, जो उसके साथ में थे, वे ऑटोमोबाइल इंजीनियर थे, जिन्होंने लिंकन की पूरी जाँच करने के लिए कदम बढ़ाये। ''इसे बहुत सावधानी के साथ चलाया गया है,'' वरिष्ठ इंजीनियर ने कहा, ''तुम पूर्ण विश्वास के साथ इस कार को ले सकते हो।''

कुँहासे–चेहरे वाले आदमी ने, प्रोत्साहनपूर्ण ढंग से मेरी तरफ सिर हिलाया। ''मेरे अध्ययन कक्ष में चलो।'' उसने कहा, ''मैं तुम्हें सौ डालर का बोनस देने वाला हूँ– तुम्हारे अकेले के लिए– क्योंकि तुमने इतनी सावधानी से गाड़ी चलाई है।''

''आदमी, ओह! आदमी!'' मैनेजर ने बाद में कहा। ''ये उसके लिए बड़ी रकम होगी, तुमने निश्चितरूप से बड़ा हाथ मारा है।''

''मैं कैनेडा (Canada) में जा कर कुछ काम करना चाहता हूँ,'' मैंने कहा। ''क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?''

''ठीक है,'' मैनेजर ने जवाब दिया, तुम बास्तव में वेंकोवर (Vancouver) जाना चाहते हो और मेरे पास उस दिशा में कुछ नहीं है, परंतु मेरे पास एक आदमी है, जो नई डि सोटो (De Soto) कार लेना चाहता है। वह ओरोविले (Oroville)[59] में, सीमा के ठीक पास, रहता है। वह इतनी दूर तक खुद कार नहीं चलाएगा। उसकी कार को, उसके यहॉ पहुँचाने पर, वह बहुत प्रसन्न होगा। उसकी साख अच्छी है। मैं उससे बात करता हूँ।''

''जी (Gee), हैंक (Hank)! मैनेजर ने टेलीफोन पर उस आदमी से कहा,'' ''क्या आप कार बदलने के लिये अच्छी तरह से सोच रहे हैं और क्या आप, वास्तव में, डि सोटो लेना चाहते हैं?'' उसने थोड़े समय के लिए सुना और तब संचार तोड़ दिया, ''ठीक है, मैं तुम्हें बताऊँगा ? मेरे पास एक लड़का है, जो कनाडा जाने के लिए, ओरोविले आ रहा है। वह एक लिंकन कार को, न्यू यॉर्क से यहाँ लाया हैं। हैंक, तुम क्या कहते हो ?'' हैंक, ओरोविले के ऊपर लंबी बातें करता हुआ, गपशप करता रहा। उसकी आवाज, आवाजों की गड़बड़ के साथ में, मुझ तक आई। मैनेजर चिढ़ कर आह भरने लगा। ''ठीक है तुम्हारे पास एक साधारण लाने वाला है ? ''उसने कहा। ''तुम, ये अनुमान करते हुए कि, मैं तुमको बीस या उससे अधिक वर्षों से जानता हूँ, तुम मुझ से बच कर भाग नहीं पाओगे, अपना चैक बैंक में लगा सकते हो'' उसने काफी देर तक बातचीत को सुना। ''ठीक्क्क् है,'' अंत में उसने कहा ''मैं ऐसा करूँगा। यप्, मैं उसे बिल में जोड़ दूंगा।'' उसने टेलीफोन को स्टैण्ड पर रख दिया और लंबी सांस छोड़ी। धीमी सीटी के साथ कहा, ''बोलो, मिस्टर,'' उसने मुझे कहा, ''क्या तुम औरतों के बारे में कुछ जानते हो? औरतें ? मैं औरतों के बारे में जानता हूँ, इसके बारे में उसकी क्या सोच है ? मैं उनके बारे में क्यों जानूँगा ? वे अपने आप में पहेली हैं। मैनेजर ने मेरे खाली चेहरे को देखा और कहना जारी रखा, ''हैंक वहाँ देखो, वह चालीस साल से कुंवारा है, इतना मै जानता हूँ। अब वह तुम्हें कुछ जनानी, तड़क–भड़क वाली चीजें, अपने लिए लाने के लिए कहता है। ठीक है, ठीक है, ठीक है, उस गुजरे गे (gay), ओल डुआंग (Ol' daug's) का अनुमान करो। मैं अपनी पत्नी को पूछूँगा कि क्या भेजा जाना है।''

---

59 अनुवादक की टिप्पिणी : ओरोविले, फेदर (feather) नदी के किनारे पर, फुट हिल्स (Foothills) के आधार पर स्थित है, यहाँ से यह, सैक्रोमेन्टो घाटी (Sacromento valley) में हो कर सियारा नेवादा की तरफ बहती है। स्वर्ण की खदानों के अनेक स्थानों में से एक, बिडवेल (Bidwell) नामक स्थान पर, कैलीफॉर्निया में सोना मिल सका था, जिससे सोना चाहने वाले लोग हजारों की संख्या में, उस तरफ दौड़े। कैलीफॉर्निया गोल्ड रश (California gold rush) के दौरान, सपाट मैदान में खुदाई करने वाले लोगों के द्वारा, दिशासूचक के रूप में इसका उपयोग किया जाता था। शहर को पहले ओफिर सिटी (Ophir city) के नाम से जाना जाता था। बाद में इसका नाम, जब 1854 में यहाँ पहला डाकखाना खुला, बदल कर आरोविले कर दिया गया।

चीनी मंदिर, जो 1863 में बनाया गया था, ऐतिहासिक स्थानों के राष्ट्रीय रजिस्टर में दर्ज है। चीनी श्रमिकों ने, अपने तीनों चीनी धर्मों, तोओवाद (Taoism), बौद्धमत (Buddhism) और कन्फूसियस मत (Confucianism) के पूजा स्थल के रूप में इस मंदिर को स्थापित किया था। ओरोविले की आबादी में लगभग 75 प्रतिशत श्वेत, 3 प्रतिशत अफ्रीकी अमरीकन लगभग 4 प्रतिशत मूल अमरीकन, 8 प्रतिशत एशियाई और .4 प्रतिशत प्रशान्त महासागर के छोटे छोटे द्वीपों के लोग तथा साढ़े बारह प्रतिशत लेटिन अमरीका मूल के लोग हैं।

सप्ताह के बाद में, मैं औरतों के ढेर सारे कपड़े और एक ब्राण्ड न्यू डि सोटो कार को चला कर, सियाटेल ले गया। मैनेजर की पत्नी ने, अच्छी तरह से यह देखने के लिए कि, यह सब किस के संबन्ध में था, हैंक को टेलीफोन कर दिया। सियाटेल से वेनाख्शी (Wenatchee)[60], वेनाख्शी से ओरोविले। हैंक संतुष्ट था, इसलिए मैंने थोड़ा सा समय गवाँया परंतु कनाडा में घुस गया। कुछ दिनों के लिए मैं ओसोयूस (Osoyoos)[61] में रुका, परंतु एक छोटे सौभाग्य के कारण नहीं, मैं कनाडा में, ट्रेल (Trail) से ओटावा (Ottawa)[62] होकर, मोंट्रियल (Montreal)[63] होते हुए, क्यूवेक (Quebec)[64] हो कर, अपना रास्ता बना सका। यहाँ, उस मामले में, जाने की कोई तुक नहीं है, क्योंकि ये इतना आसमान्य था कि, ये फिर से एक दूसरी पुस्तक का विषय हो सकता है।

क्यूवैक एक सुंदर शहर हैं परंतु इसमें एक खराबी हैं कि, इसके कुछ भागों में, यदि कोई फ्रांसीसी भाषा नहीं बोल सकता है, तो वह अपरिचित ही रहेगा। भाषा के संबंध में मेरा खुद का ज्ञान, काम चलाने के लिए, केवल ठीक–ठीक ही था। मैंने बंदरगाह पर, बार–बार आना–जाना किया, और नाविकों की एक यूनियन के कार्ड को पाने व्यवस्था की, मैंने एक जहाज के ऊपर, डैक–सहायक के रूप में, नौकरी की। काम, कोई अच्छे वेतन वाला नहीं था परंतु ऐसा काम था, जिसने मुझे एक बार फिर, ऐटलांटिक महासागर पर जाने का मौका दिया। जहाज, पुराना मालवाही जहाज था। कैप्टन और उसके सहयोगी, समुद्र और अपने जहाज के प्रति, अपने उत्साह को खो चुके थे। थोड़ा सा सफाई का काम किया गया था। मैं अधिक परिचित नहीं था, क्योंकि मैं जुआ नहीं खेलता था या औरतों के मामले में चर्चा नहीं करता था। मैं बहुत डरा हुआ था क्योंकि, जहाज के गुंडे (bully) के, मेरे ऊपर अपनी श्रेष्ठता (superiority) दिखाने के लिये किये गये धमकाने वाले प्रयास, उसकी दया मांगने की चीख के रूप में, सामने आये थे। उसके गिरोह में से दो ने और ज्यादा गडबड़ किया था और मुझे खींच कर कप्तान के सामने पेश किया गया तथा मुझे बेड़े के सदस्यों को अयोग्य बनाने के लिये, प्रताड़ना झेलनी पड़ी। इस बात का कोई विचार नहीं था कि, मैं केवल स्वयं को बचा रहा था! इन अत्यन्त छोटी–छोटी घटनाओं के अलावा, यात्रा बिना घटनाओं के हुई और शीघ्र ही जहाज ने अपनी धीमी यात्रा, इंगलिश

---

60 अनुवादक की टिप्पिणी : वेनाख्शी, उत्तर मध्य वाशिंगटन राज्य में स्थित एक छोटा शहर है, जिसकी आबादी लगभग 33 हजार है। शहर का नामकरण समीप में रहने वाले वेनाखी, लाल भारतीय (Red Indian) जनजाति, के नाम पर किया गया था, जिसका अर्थ है ''इन्द्रधनुष की पोशाक (Robe of rainbow)।'' घाटी में स्थित अपने अनेक बड़े–बड़े बागवानों के कारण, वेनाख्शी को ''विश्व की सेव राजधानी (Apple capital of the world)'' के नाम से जाना जाता है। 2013 में यहाँ के जंगलों में, वेनाख्शी के दक्षिणी भाग में लगभग 31 मील दूरी तक, बहुत बड़ी आग फैली थी, जिसमें लगभग 40 समीपवर्ती परिवार प्रभावित हुए थे। वेनाख्शी शहर के एक तरफ उत्तर की तरफ वेनाखी नदी और पूर्व की तरफ कोलंबिया नदी बहती है, और इसके दक्षिण और पश्चिम में, वेनाख्शी पर्वत श्रेणियाँ हैं। ये चोटियाँ और घाटियाँ शहर के पश्चिम और दक्षिण की तरफ, एक दीवार का निर्माण करती है।

61 अनुवादक की टिप्पिणी : ओसोयूस कनाडा का एक शहर है, जो ब्रिटिश कोलम्बिया की घाटी के दक्षिण भाग में स्थित है। ये वाशिंगटन राज्य की राजधानी के समीप है। नगर की जनसंख्या लगभग 5 हजार है, जो गर्मियों में, पर्यटकों के कारण बढ़ जाती है। ओसोयूस गाँव 1946 के करीब स्थापित हुआ और 1980 में नगर बना।

62 अनुवादक की टिप्पिणी : ओटावा नदी के दक्षिण तट पर स्थित ओटावा, कनाडा की राजधानी है। ये कनाडा का चौथा सबसे बड़ा शहर है, जिसकी आबादी लगभग 9 लाख है और जो कनाडा में सबसे अधिक शिक्षित शहर माना जाता है। जुलाई महीने में यहां अधिकतम तापमान लगभग 26.5 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा जनवरी में न्यूनतम तापमान –14.8 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता है। ओटावा में, गर्मियां गर्म और सीलन भरी होती हैं। यहां जीवन स्तर काफी अधिक ऊँचा और बेकारी की दर काफी कम है।

63 अनुवादक की टिप्पिणी : मोंट्रियल, कनाडा के दक्षिण पश्चिमी भाग के क्यूवेक राज्य का एक शहर है। ये राज्य का सबसे बड़ा शहर और कनाडा का दूसरा सबसे बड़ा शहर तथा उत्तरी अमरीका महाद्वीप का नौंवा सबसे बढ़ा शहर है। मूलतः इसको ''Ville Marie'' या ''मेरी का शहर'' कहा जाता था। इसे बाद में रॉयल पर्वत (mount royal), जिसकी तीन चोटियों वाली पहाड़ी, शहर के मध्य में स्थित है, के नाम पर, दोबारा नाम दिया गया। शहर, मोंट्रियल के द्वीप पर और कुछ छोटे–छोटे समीपवर्ती अन्य द्वीपों पर स्थित है।

2011 में इसकी आबादी लगभग 16 लाख थी। शहर की औपचारिक, अधिकारिक भाषा, फ्रांसीसी है। शहर को ''यूनेस्को सिटी ऑफ डिजाइन (UNESCO city of desing)" का नाम दिया गया, जो विश्व की तीन डिजाइन राजधानियों में से एक है ,बाकी दो हैं, बर्लिन और ब्यूनस आयरस। ऐतिहासिक रूप से ये कनाडा की व्यापारिक राजधानी थी, लेकिन 1970 में अपनी जनसंख्या और आर्थिक शक्ति के आधार पर, टोरोंटो इससे आगे निकल गया।

मोंट्रियल की जनगणना में लगभग 65.8 प्रतिशत ईसाई (christians), 18.4 प्रतिशत नास्तिक, 9.6 प्रतिशत मुसलमान, 2.2 प्रतिशत यहूदी, 2 प्रतिशत बौद्ध मताबलम्बी, 1.4 प्रतिशत हिन्दू और 0.03 प्रतिशत सिक्ख हैं।

मोंट्रियल सिनेमा और टेलीविजन निर्माण का केन्द्र है। आजकल ये व्यापार, वित्त, उद्योग, तकनीक, संस्कृति, तथा वैश्विक मामलों का केन्द्र और मोंट्रियल स्टोक एक्सचेंज का मुख्यालय है। 1976 में इसने ओलंपिक खेलों की मेजवानी की थी।

64 अनुवादक की टिप्पिणी : क्यूवेक शहर, केनेडा के क्यूवेक राज्य की राजधानी है। 1911 में शहर की आबादी लगभग 5 लाख 70 हजार थी, जो मोंट्रियल के बाद, इसे क्यूवेक राज्य का दूसरा बड़ा शहर होने का दर्जा प्रदान करती थी।

क्यूवेक का शाब्दिक अर्थ है ''जहाँ नदी संकरी होती है (where the river narrows)।'' इसे 1608 में बसाया गया। क्यूवेक को घेरते हुए एक प्राचीर के अवशेष अभी भी हैं, जिसमें एक छोटा किला भी है, जिसे यूनेस्को ने 1985 में 'विश्व विरासत स्थल' के रूप में घोषित किया। ये उत्तरी अमरीका महाद्वीप में, यूरोपीय महाद्वीप के लोगों की सबसे पुरानी बसाहटों में से एक है। शहर में 1925 में एक भूकम्प आया था। अपनी मातृभाषा के रूप में, शहर के लगभग 95 प्रतिशत लोग फ्रेंच बोलते हैं। इसके अतिरिक्त एक तिहाई से अधिक आबादी फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों बोलतीं हैं। 90 प्रतिशत से अधिक आबादी रोमन कैथोलिक है, थोड़ी सी आबादी प्रोटेस्टेन्ट, मुस्लिम, यहूदी लोगों की भी है।

चैनल (English Channel)[65] की ओर शुरू की।

जब हम नीडल्स (Needles)[66] से गुजरे और और सोलेन्ट (Solent)[67], पानी की पट्टी, जो वीट के आइसेल (Isle of Wight)[68] और मुख्यदेश से सीमित थी, में प्रविष्ट हुए, अपनी ड्यूटी खतम होने के बाद, मैं डेक पर था। धीरे–धीरे हम, उसके सुन्दर प्रांगण के साथ–साथ, नेटले (Netley) अस्पताल के आगे तक रैंग गये। बूलस्टोन (Woolston)[69] पर, व्यस्त नौकाओं (ferries) को गुजारते हुए, और साउथ एम्पटम (South ampton)[70] के बंदरगाह के अंदर। छपाक की आवाज के साथ लंगर डाले गए, और लंगरों के छेदों में हो कर, जहाज में जंजीरे बांध दीं गईं। जहाज लहरों के ऊपर झूला, इंजन कक्ष का टेलीग्राफ बजा, और इंजन के हल्के से कंपन बंद हो गए। अधिकारी जहाज पर आये, जहाज के कागजों की जांच की और बेड़े के क्वाटरों (crew's quarters) के अंदर झांका। बंदरगाह के चिकित्सा अधिकारी ने हमको जाने की इजाजत दे दी, और धीमे से जहाज लंगर पर खड़ा हो गया। जब तक कि, जहाज पूरी तरह खाली नहीं हो गया, बेड़े के सदस्य के रूप में, मैं जहाज पर खड़ा रहा और तब मुझे भुगतान प्राप्त हुआ, मैंने अपने अति अल्प सामान को लिया और किनारे पर चला गया।

''कोई चीज, जिसकी घोषणा करनी हो ?'' सीमा शुल्क (custom) अधिकारी ने पूछा।

''कुछ नहीं, जैसा कहा गया था, अपने बक्सों को खोलते हुए मैंने जवाब दिया। उसने मेरे कम सामान को देखा, बक्से को बंद किया और चॉक से उसके ऊपर अपने हस्ताक्षर कर दिए। ''आप कितने दिन यहाँ रुकेंगे?'' उसने पूछा।

''मैं यहाँ रहने के लिए आया हूँ श्रीमान्।''

उसने मेरे पासपोर्ट को देखा। अनुमोदन के साथ, कार्य बीसा के अनुज्ञापत्र को देखा। ''ठीक है, उसने मुझे दरवाजे की तरफ इशारा किया। मैं चला, और जिस जहाज को मैंने छोड़ा था, उसे दुबारा देखने के लिए, एक झलक पाने के लिए, मुड़ा। मैं जल्दी से मुड़ा। दूसरा कस्टम अधिकारी, गली से, तेजी से, जल्दी में चला आ रहा था, वह अपने कर्तव्य पर पहुंचने में विलंबित हो गया था। वह मेरे साथ टकराया और अब वह अर्ध मूर्छित सा सड़क पर बैठ गया। एक क्षण के लिए, वह वहाँ बैठा रहा, तब मैं उसकी मदद करने के लिए गया। उसने प्रचण्ड क्रोध के आवेश में मुझे टोका, इसलिए मैंने अपने बक्से

---

65 अनुवादक की टिप्पिणी : इंग्लिश चैनल पानी की एक धार है, जो दक्षिणी इंग्लैण्ड को उत्तरी फ्रांस से अलग करती है और उत्तरी महासागर के दक्षिणी भाग को एटलांटिक महासागर से जोड़ती है। यह डोबर की पट्टी में, लगभग 350 मील लंबा और विभिन्न स्थानों पर 20.6 मील से 150 मील तक बदलती हुई चौड़ाई वाला मार्ग है। यह उथले समुद्रों में सबसे छोटा है और यूरोप के महाद्वीपीय खानों में लगभग 29000 वर्गमील के क्षेत्र को घेरने वाला एक क्षेत्र है।

66 अनुवादक की टिप्पिणी : नीडल्स, मोहाव घाटी में एरीजोना और नेवादा की सीमा के समीप ओर लास बैंगास पट्टी से लगभग 110 मील दूर, कैलीफॉर्निया राज्य के सेन्ट वरनारडिनो काउंटी का एक शहर है, जो कोलोराडो नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इसकी आबादी लगभग 5 हजार है।

मुहाव पर्वत श्रेणियों में, शहर के दक्षिण की ओर, एरीजोना की तरफ, कोलोराडो नदी के नुकीले सीमान्त तक फैली हुई, पहाड़ी चोटी के कारण, इसका नाम नीडल्स रखा गया था। उत्तरी पश्चिमी घाटी, मृत्यु की घाटी (death valley) के समान, नीडल्स को भी अत्यधिक गर्म स्थानों के रूप में जाना जाता है। गर्मियों में तापक्रम सामान्यतः (जुलाई के अंत और अगस्त के प्रारंभ में) 49 डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाता है, जबकि सर्दियों में उच्चतम तापक्रम 17 से 27 और निम्नतम 4 से 16 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता है। वार्षिक वर्षा लगभग 130 मिलीमीटर होती है।

67 अनुवादक की टिप्पिणी : सोलेन्ट, समुद्र में पानी की पट्टी है, जो व्हाइट के द्वीप को इंग्लैण्ड की मुख्य भूमि से अलग करती है। ये लगभग 20 मील लंबी है, जबकि इसकी चौड़ाई, स्थान–स्थान पर 1 मील से 4 मील तक बदलती है। सोलेन्ट, यात्री, मालवाही और नौ सेना के जहाजों के लिए, एक प्रमुख जहाजी मार्ग है। ये पानी के खेलों (water sports), विशेषकर एचिंग के लिए, मनोरंजन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

68 अनुवादक की टिप्पिणी : आइसेल, आइसेल ऑफ व्हाइट का काउंटी है और इंग्लैण्ड का दूसरा सबसे बड़ा, सर्वाधिक आबादीवाला द्वीप है। ये इंग्लिश चैनल में, लगभग हैंप शायर तट से लगभग 4 मील दूर है और सोलेन्ट से मुख्य भूमि इंग्लैण्ड से कटा हुआ है। व्हाइट का द्वीप मोटे तौर से हीरे के आकार का है, जो 150 वर्ग मील का क्षेत्र घेरता है। आइसेल में अनेक विश्रामालय (resorts) हैं, जो विक्टोरिया काल से ही, छुट्टियाँ मनाने के लिए जाने जाते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच, द्वीप पर बार–बार बमबारी हुई। ये इंग्लैण्ड के कुछ स्थानों में से एक है, जहाँ भूरी गिलहरियों, जो इंग्लैण्ड में पाई जाती हैं, के बजाय लाल गिलहरियाँ पाई जाती है। डाईनासोर की हड्डियाँ और उनके पद् चिन्ह्, द्वीप के आसपास, चट्टानों में और खुले में, और समुद्र तटों पर, विशेषकर, यावरलैण्ड और कॉम्पटन के रास्ते पर, देखे जा सकते हैं। परिणामस्वरूप, इसे 'डाइनासोर का द्वीप' कहा जाता है। उत्तरीय समुद्रतट के साथ–साथ, इस द्वीप पर फोसिल बने हुए शेल फिश, मगर, कछुए ओर दूसरे स्तनधारी प्राणियों की अस्थियों के फोसिल्स पाए जाते हैं, जिनमें से नवीनतम (recent), लगभग तीन करोड़ साल पहले का है।

69 अनुवादक की टिप्पिणी : बूलस्टन दक्षिणी एम्पटन, हेम्पशायर का उपनगरीय इलाका है, जो इचेन (Itchen) नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। यहाँ निवासियों के लिए, एक स्थानीय समूह के द्वारा, सहस्त्राब्दी उद्यान (millennium garden) बनाया गया था, जो 2002 में पूरा हुआ। इसका केन्द्र बिन्दु, 10 मीटर लंबी, धातु और पुर्नचक्रित (recycled) काँच की बनी हुई, पंख के आकार की एक संरचना है, जो 'बूलस्टन के उड़ान और यान खेने के इतिहास' को महत्व देने के उद्देश्य से बनाई गई थी। उद्यान को तीन क्षेत्रों में, जो क्रमशः पृथ्वी, आकाश और सागर को निरूपित करते हैं, बनाया गया था। टाइटेनिक जहाज के बेड़े के अधिकांश लोग, बूलस्टन के रहने वाले थे, इसलिए उद्यान की पगडण्डियों में लगाए गए रास्ते पर, उनके नाम की ईटें जड़ीं गई हैं।

70 अनुवादक की टिप्पिणी : साउथ एम्पटन, हेम्पशायर की सेरीमोनियल काउंटी का सबसे बड़ा शहर है, जो इंग्लैण्ड के दक्षिणी समुद्रतट पर स्थित एक बड़ा बंदरगाह है। ये लंदन से 75 मील दूर दक्षिण पश्चिम दिशा में है। नगर की अनुमानित आबादी, दो लाख 54 हजार के करीब है। साउथ एम्पटन के रहने वाले सोटोनियन कहलाते हैं, क्योंकि इसे सोटोन के नाम से भी जाना जाता है। साउथ एम्पटन को आर एम एस टाइटेनिक जहाज के साथ संबद्ध होने के कारण जाना जाता है।

को ले लिया और चलने लगा। ''रुको, वह चिल्लाया।

''ये सब ठीक है, श्रीमान्'' उस अफसर ने, जो मुझे बाहर जाने की इजाजत दे चुका था, कहा, ''उसके कागजों में कुछ नहीं है, उसके पास कुछ नहीं है और उसके कागज ठीक हैं।''

''उसकी जाँच मैं खुद करूँगा,'' वरिष्ठ अधिकारी चिल्लाया। दो दूसरे अधिकारी, मेरे साथ खड़े थे, उनके चेहरे भी काफी हद तक दुःखी दिखाई दिए। विरोध करने का एक प्रयास, परंतु उन्हें ''मुँह बंद रखने'' के लिए कहा गया।

मुझे एक कमरे में ले जाया गया, और जल्दी ही वह क्रोधित अधिकारी प्रकट हुआ। उसने मेरे सामान को फर्श पर फैलाते हुए, मेरे बक्से को देखा। उसने मेरे पुराने सुधारे गए बक्से की तली और अस्तर को जाँचा। कुछ नहीं मिला। इस पर चिढ़ते हुए, उसने मेरा पासपोर्ट मांगा। ''आह! वह विस्मित होते हुए जोर से चिल्लाया, ''तुम्हारे पास एक बीसा और एक कार्य अनुज्ञापत्र हैं। न्यूयॉर्क के अधिकारी को, ये दोनों जारी करने का कोई अधिकार नहीं है। इंग्लैंड में, ये हमारे विवेक के ऊपर है।'' उसे विजयी होने की धुन थी, और धमकी देने की मुखाकृति के साथ, उसने मेरे पासपोर्ट को फाड़ दिया और कूड़ेदान में फेंक दिया। एक आवेग के साथ, उसने तार–तार फटे हुए अवशेषों को उठाया और अपनी जेब में ठूंस लिया। उसके घंटी बजाने पर, बाहर के कार्यालय से दो लोग अंदर आये। ''इस आदमी के पास कोई कागज नहीं हैं,'' उसने कहा, ''इसे वापस, देश से निष्कासित, करना पड़ेगा, उसे बंद करने वाले कक्ष में ले जाओ।''

''परंतु श्रीमान्'' अधिकारियों मे से एक ने कहा, ''मैंने, वास्तव में, इन्हें देखा था, ये सही थे।''

''क्या तुम मेरी काबिलियत पर सवाल उठा रहे हो''? वरिष्ठ आदमी गुर्राया। ''मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो।''

एक आदमी ने, दुःख के साथ मेरी बाँह पकड़ी। ''आओ,'' उसने कहा। मुझे बाहर ले जाया गया और एक खाली कोठरी में बंद कर दिया गया।

''जोव की सौगंध (By Jove), बूढ़े मानुष!'' विदेश कार्यालय से एक जोशीले या जवान आदमी ने, जब वह बहुत–बहुत बाद में मेरे प्रकोष्ठ में प्रविष्ट हुआ, कहा। ''ये सब भयानक घबराया हुआ है, क्या ? उसने अपने बच्चे को, उसकी छोटी चिकनी ठोढ़ी पर, हल्की सी आवाज करते हुए मारा। ''तुम हमारी स्थिति को देख रहे हो, बूढ़े आदमी, ये ठीक अत्यधिक सामान्य निराशा है। तुम्हारे पास कागजात रहे होंगे अन्यथा क्यूबैक में वल्लाह (¡llah) ने तुमको जहाज पर चढ़ने नहीं दिया होता। अब तुम्हारे पास कोई कागज नहीं हैं। शायद जहाज पर ही खो गए होंगे। यही सिद्ध करना था, बूढ़े आदमी, क्या ? मैं कहना चाहता हूँ कि––––''

मैंने आँखें तरेर कर उसकी तरफ देखा और टिप्पणी की, ''मेरे कागजात जानबूझ कर फाड़े गए। मैं मांग करता हूँ कि मुझे छोड़ा जाए और शहर में अंदर आने की इजाजत दी जाए।''

''हॉ, हाँ,'' जोशीले नौजवान ने उत्तर दिया, ''परंतु क्या तुम इसे सिद्ध कर सकते हो। मेरे कान में एक हल्की सी हवा आई, जिसने मुझे, जो हुआ था, ठीक–ठीक बताया। हमें अपने असूचित स्टाफ के साथ खड़ा होना चाहिए, अन्यथा प्रैस हमारे खिलाफ खड़ा हो जायेगा। बफादारी और सहयोग की भावना, और इसी प्रकार की सब चीजें।''

''इसलिए,'' मैंने कहा, ''तुमको सच्चाई मालूम है कि मेरे कागजात नष्ट कर दिए गए थे, फिर भी तुम ''स्वतंत्र देश की,'' शेखी बघार रहे हो, एक बगल से, नरमी से खड़े हो सकते हो और इस अत्याचार को देख सकते हो ?''

''मेरे प्रिय साथी, तुम्हारे पास, एक सूचीबद्ध राज्य (Annexed state) के निवासी होने का पासपोर्ट मात्र था, तुम जन्म से राष्ट्रमण्डल (commonwealth)[71] के सदस्य नहीं हो। मुझे डर हैं कि

71 अनुवादक की टिप्पिणी : राष्ट्रमण्डल (Commonwealth), राजनैतिक समाज के लिये एक पारम्परिक अंग्रेजी शब्द है, जो सभी के भले के लिये स्थापित किया गया था, जिसका अर्थ समाज की भलाई, सभी के हित या लाभ होते हैं। ऑस्ट्रेलिया, वाहमास और डोमिनिका को आधिकारिक रूप से कॉमनवेल्थ का खिताब मिला हुआ है। बाद में, भूतपूर्व

तुम हमारी कक्षा (orbit) के बाहर हो। अब, बच्चू, जब तक तुम इससे सहमत नहीं हो जाते कि, तुम्हारे पास कागजात थे– आह!– जो जहाज पर खो गए, हमें तुम्हारे खिलाफ अवैधानिक प्रवेश का एक मुकदमा करना पड़ेगा, जो तुम्हें दो साल तक के लिए, कूलर में फेंक देगा। यदि तुम हमारे साथ मिल कर चलोगे, तो तुम्हें, मात्र न्यूयॉर्क ही वापस लौटाया जायेगा।''

न्यूयॉर्क ? न्यूयॉर्क क्यों ? मैंने पूछा।

यदि तुम क्यूबैक को लौट जाते हो, तो तुम हमें कुछ तकलीफ दे सकते हो। हम सिद्ध कर सकते हैं कि, तुम न्यूयॉर्क से आये थे। इसलिए अब ये तुम्हारे ऊपर है, न्यूयॉर्क जाओ अथवा दो साल के लिए राजा के अनिच्छुक मेहमान बनो। उसने, बाद के विचार के रूप में कहा, ''वास्तव में, तुमको इसके बाद भी, अपनी सजा काटने के बाद भी, देश से निष्कासित कर दिया जायेगा और अधिकारी, प्रसन्नता पूर्वक, उस धन को छीन लेंगे, जो तुम्हारे पास है। हमारा सुझाव तुम्हें इसको अपने पास रखने में सक्षम बनायेगा।

वह जोशीला नौजवान खड़ा हुआ और उसने धूल के काल्पनिक धब्बों को, अपनी बेदाग जैकिट से झड़ाया। ''दुबारा सोच लो बूढ़े लड़के, हम तुम्हें एक पूर्णतः बुद्धिमानी का, बाहर जाने का, एक रास्ता बताते हैं।'' इसके साथ ही वह लौटा और मुझे प्रकोष्ठ में अकेला छोड़ गया।

उबाऊ अँग्रेजी खाना लाया गया और मुझे इसे भौथरे चाकू से काटना पड़ा, जो मैने अभी तक शायद ही कभी उपयोग किए हों। मेरे अधिकम अनुमान के अनुसार, उन्होंने ऐसा सोचा होगा कि, मैं आत्महत्या कर सकता हूँ। ठीक है, कोई भी वैसे भौथरे चाकू से आत्महत्या नहीं कर सकता।

दिन चढ़ता गया। एक मित्रवत् संतरी ने, कुछ अंग्रेजी अखबार, उछाल कर मेरी तरफ फेंके। एक नजर मारने के बाद, मैंने उसे बगल से रख दिया, जहाँ तक में देख सका, वे केवल यौन और षड़यंत्रों से भरे पड़े थे। आने वाले अंधकार के साथ, मेरे लिये कोको का एक मोटा कप, एक ब्रेड का टुकड़ा और नकली मक्खन, लाया गया। रात एकदम ठंडी थी, एक अंधेरा, जिसने मुझे सड़ती हुई लाशों की कब्रों की याद दिला दी।

सुबह के संतरी ने, एक मुस्कान के साथ मेरा अभिवादन किया, जिसने उसके पथराये हुए चेहरे से डरा दिया। ''तुम कल चले जाओगे'' उसने कहा। ''एक जहाज का कप्तान, यदि तुम अपने रास्ते में उसके लिए काम करो, तुम्हें साथ ले जाने के लिए तैयार हो गया है और जब तुम न्यूयॉर्क पहुँच जाओगे तो तुम्हें पुलिस को दे दिया जाएगा।

सुबह, बाद में, एक अधिकारी अधिकारिक रूप से ये कहने के लिए और ये बताने के लिए कि, बिना किसी परिश्रम बचाने वाली युक्ति के, एक पुराने जहाज के बंकर के ऊपर, कोयले को तोड़ते हुए, जहाज पर मुझे कठोरतम मेहनत करनी होगी। कोई वेतन नहीं मिलेगा और ये कहते हुए कि, मैं इन शर्तो को स्वीकार करता हूँ, मुझे अनुच्छेद (Article) पर हस्ताक्षर करने पड़ेंगे। शाम को मुझे पहरे में, जहाज के ऐजेन्ट के पास ले जाया गया, जहाँ कप्तान की उपस्थिति में, मैंने उस अनुच्छेद पर हस्ताक्षर किए।

चौबीस घण्टे बाद, अभी भी पहरे में, मुझे जहाज पर ले जाया गया और एक छोटे केबिन में बंद कर दिया गया, ये बताया गया कि, मैं यहाँ तब तक रहूँगा जब तक कि जहाज, इस देश की समुद्री सीमाओं के बाहर नहीं पहुँच जाता। शीघ्र ही पुराने इंजन की धमाकेदार आवाज ने हल्के–हल्के जीवन के लिए, जहाज को जगाया। भारी कदमों की आवाज हुई। अपने कदमों के ऊपर और डेक के ऊपर, मेरा ऊपर–नीचे गिरना। गिरने से मुझे मालूम हुआ कि हम, गहरे समुद्र की ओर बढ़ रहे हैं। जब तक कि, दूरी पर दिखता हुआ पोर्टलैंण्ड ब्रिज, जहाज की नजरों से काफी दूर नहीं हो गया, मुझे छोड़ा नहीं गया। ''आओ यार,'' एक सुधारा हुआ फाबड़ा और बेलचा देते हुए, कोयला झोंकने वाले ने कहा। इन्हें

ब्रिटिश राज्य के, सभी सदस्यों को, राष्ट्रकुल मण्डल का सदस्य बना दिया गया। अमरीका के केन्टुकी, मेसाचुसेट्स, पेनसेलवानिया, और बर्जीनिया आदि राज्यों को भी कॉमन वेल्थ का सदस्य माना जाता है। भारत, श्रीलंका और पाकिस्तान भी कॉमन वैल्थ के सदस्य हैं।

साफ कर लो, ये धातु के मल (clinker) से खराब हैं। उन्हें डैक पर ले जाओ और नीचे गिरा दो। अब जानदार दिखो।''

ओह यहाँ देखो, एक बड़ा सा आदमी, जहाज के पिछले भाग में नाविकों के घर (fo'c'sle) में से, बाद में जब मैं वहाँ गया, चिल्लाया। ''हमारे पास चिपकू (Gook)[72] है, अथवा शिंक (Chink)[73] अथवा एक जाप (Jap)[74] है और तुम्हारे पास, ''उसने मुझे चेहरे पर चांटा मारते हुए कहा, ''पर्ल हार्बर को याद रखना ?''

''उसे बना रहने दो, बुच (Butch),'' दूसरे आदमी ने कहा, ''सिपाही उसके पीछे हैं।''

''कैसे–कैसे!'' बुच चिल्लाया, ''हम इसे, पहले, पर्ल हार्बर के लिए काम करने दें।'' मुट्ठियॉं, पिस्तौल की तरह चलाते हुए, और कठोर से कठोरतर गुस्से में आते हुए, वह मेरी तरफ आया। चूंकि मेरे गले को पकड़ने के प्रयास में पहुँचते और दबाते हुए, उसके मुक्कों में से कोई भी, मुझ तक नहीं पहुँचा, वह गुरगुराया,'' फिसलता हुआ रुई का फाया, एह।'' बूढ़े त्सू और दूसरों ने, सुदूरपूर्व तिब्बत में, मुझे ऐसी चीजों के लिए पूरी तरह तैयार कर दिया था। मैं गिरा, भुजा और बुच के संवेग ने, उसे (बुच को) आगे फेंक दिया। वह मेरे ऊपर गिर पड़ा और उसका चेहरा, अपने जबड़ों और मग से, जिसको उसने अपने गिरते समय तोड़ दिया था, लगभग एक कान को कटते हुए, जहाज के पिछले भाग के पास, फो' स'ले (fo'c'sle)[75] की मेज के किनारे से टकरा कर खत्म हो गया। उसके बाद, मुझे बेड़े से कोई परेशानी नहीं हुई।

धीमे–धीमे न्यूयॉर्क का क्षितिज हमारे आगे आया। उस घटिया कोयले से, जो हम उपयोग में ला रहे थे, धुंए का एक काला गुबार आसमान में छोड़ते हुए, हम (जहाज को) जोतते गए। एक कोयला झोंकने वाला (Lascar), जो भयभीत होकर उसके कंधों की ओर देख रहा था, मेरे पास किनारे पर आया। ''जल्दी ही तुम्हारे लिए सिपाही आने वाले हैं,'' उसने कहा। ''तुम भले आदमी हो, (मैंने) चीफ को कहते हुए सुना, जो कैप्टन ने उसे बताया था। उन्हें अपनी नाकें ऊँची रखनी पड़ेंगीं।'' उसने मुझे तैलीय–खाल (oilskin) का, तंबाकू का एक थैला दिया। ''इससे पहले कि वे तुम्हें किनारे पर पकड़ें, अपने पैसे को इसमें रखो और इसे अपनी बगल में खिसका दो।''ये बताते हुए कि, पुलिस की नाव किस तरफ जाएगी, मुझे ये बताते हुए कि, मुझे कहाँ छिपना चाहिए, जैसा वह पूर्व में कर चुका था, उसने गुप्त रूप से फुसफुसाहट की। मैंने बहुत ध्यान से उसे सुना। उसने मुझे बताया कि, जहाज पर से कूदने के बाद, पुलिस की तलाश से बच कर कैसे भागा जाए। उसने मुझे उन लोगों के नाम और पते भी दिए, जो मेरी सहायता करेंगे और जब वह समुद्र तट पर पहुँच जायेगा, मुझे उनके संपर्क में आने का वायदा किया। ''मैं भी इसी प्रकार की मुसीबतों में रहा हूँ,'' उसने कहा। मेरे ऊपर, मेरी खाल के रंग के कारण, अभियोग लगाये गये थे।''

''हे, तुम!'' पुल पर से आवाज आई। ''कैप्टन तुम्हें बुला रहे हैं। दूनी चाल से दौड़ कर आओ!'' मैं तेजी से पुल तक गया, मेठ ने चार्ट रूम की दिशा में अंगूठे से बताया,। कप्तान, मेज पर बैठ कर, कुछ कागजों के ऊपर निगाह मार रहा था। ''आह'' उसने कहा, जैसे ही उसने मेरी ओर देखा। ''मैं तुम्हें पुलिस को सौंप रहा हूँ। क्या तुम मुझे, इसके पहले कुछ बताना चाहते हो ?''

''श्री मान्,'' मैंने उत्तर दिया, ''मेरे सभी कागजात ठीक थे परंतु एक वरिष्ठ कस्टम अधिकारी ने उन्हें फाड़ दिया।''

---

72 अनुवादक की टिप्पिणी : गूक का शाब्दिक अर्थ चिपचिपा और गाढ़ा पदार्थ होता है, परन्तु यहाँ यह अवमानना (गाली) के रूप में काम में लाया गया है, जो एशिया मूल के लोगों के लिये उपयोग किया जाता है।

73 अनुवादक की टिप्पिणी : शिंक का शाब्दिक अर्थ दरार या खनक होता है, परन्तु यहाँ यह अवमानना (गाली) के रूप में काम में लाया गया है, जो चीनी मूल के लोगों के लिये उपयोग किया जाता है।

74 अनुवादक की टिप्पिणी : जाप का शाब्दिक अर्थ रोगन होता है, परन्तु यहाँ यह अवमानना (गाली) के रूप में काम में लाया गया है, जो जापानी मूल के लोगों के लिये उपयोग किया जाता है।

75 अनुवादक की टिप्पिणी : जहाज अथवा स्टीमर की पूँछ के समीप स्थित एक ढाँचा होता है, जिसका उपयोग मशीन इत्यादि रखने अथवा कर्मचारियों के निवास के लिये किया जाता है।

उसने मेरी तरफ देखा और सिर हिलाया, अपने कागजों की ओर फिर देखा और स्पष्टरूप से अपना मन बना लिया। ''तुम्हारा जिस आदमी से तात्पर्य है, उसे मैं जानता हूँ। खुद मुझे भी उसने परेशान किया था। नौकरशाही का चेहरा बचना चाहिए, दूसरे लोगों को क्या परेशानियाँ आती हैं, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी कहानी सही है, क्योंकि कस्टम में मेरा एक मित्र है, जिसने तुम्हारी कहानी की पुष्टि की है।'' उसने फिर नीचे देखा और कागजों पर सरसराहट की।'' मुझे एक शिकायत है कि तुम चोरी छिपे यात्रा कर रहे थे।

''परंतु श्रीमान्'' मैंने विस्मय से कहा, ''न्यूयॉर्क में ब्रिटेन का दूतावास इसकी पुष्टि कर सकता है कि, मैं कौन हूँ। इसी प्रकार से क्यूबैक के जहाजी ऐजेन्ट भी इसकी पुष्टि कर सकते हैं।''

''मेरे आदमी,'' कप्तान ने दुख के साथ कहा, ''तुम पश्चिम के तरीकों को नहीं जानते हो। कोई पूछताछ नहीं की जाएगी। तुमको समुद्र तट पर ले जाया जाएगा, एक कोठरी में रखा जायेगा, मुकदमा चलेगा, और सजा होगी, और जेल भेजे जाओगे और तब तुम भुला दिए जाओगे। जब तुम्हारा छूटने का समय करीब आयेगा, तुमको रोक लिया जायेगा जब तक कि, तुम्हें चीन के लिए वापस न भेज दिया जाए। ''ये मृत्यु होगी, श्रीमान्,'' मैंने कहा।

उसने सिर हिलाया। ''हाँ, परंतु अधिकारिक कर्तव्यों का रास्ता चला जाऐगा। हमें इस जहाज का एक अनुभव है, इस संदेह में काफी पहले, मनाही के दिनों में, हमको गिरफ्तार किया गया था और जबरदस्त जुर्माना लगा था, यद्यपि हम पूरी तरह से अनजान थे।''

उसने अपने सामने दराज को खोला और एक छोटी चीज निकाली। ''मैं पुलिस को बताऊँगा कि, तुम्हें झूठे प्रकरण में फसाया गया है, मैं तुम्हारी हर संभव सहायता करूँगा। वे तुम्हें हथकड़ी लगा सकते हैं, परंतु वे तुम्हारी तलाशी तब तक नहीं लेंगे जब तक कि, तुम समुद्र तट पर नहीं पहुँच जाओ। ये चाबी है, जो पुलिस की सभी हथकड़ियों में लग जाती है। मैं तुम्हें इसे नहीं दूंगा परंतु, यहाँ रख दूँगा, और चला जाऊँगा।'' उसने चमकती हुई चाबियाँ मेरे सामने रखीं, अपनी मेज से उठा, और मेरे पीछे, चार्ट की तरफ मुड़ गया। मैंने चाबी को उठाया और अपनी जेब में रख लिया।

धन्यवाद श्रीमान्,'' मैंने कहा, ''मैं अपने प्रति, आपके विश्वास के लिये, अच्छा महसूस करता हूँ।''

दूरी पर मैंने एक पुलिस की नाव को अपनी तरफ आते देखा। जहाज के अग्र भाग पर फुहारों का सफेद झरना फैला। जल्दी से ये (नाव) बगल में आई, आधा मोड़ लिया, और हमारी तरफ घूम गई। सीढ़ी नीचे उतारी गई और बेड़े के सदस्यों की ओर से कड़वी निगाहों के बीच, दो पुलिस वाले जहाज पर ऊपर आये और पुल तक का रास्ता तय किया। कप्तान ने, पेय और सिगार उनको देते हुए, उनका स्वागत किया। तब उसने अपनी दराज में से कुछ कागज निकाल कर उनको दिए। ''इस आदमी ने अच्छी तरह काम किया है। मेरे ख्याल से, इसको एक सरकारी अधिकारी ने गलत फसाया है। ब्रिटिश दूतावास में यदि मिलने का समय दिया जाय, तो ये अपनी अज्ञानता को सिद्ध कर देगा।''

पुलिस का वरिष्ठ सिपाही चिड़चिड़ा लगता था, ''ये सभी लोग अनजान ही होते है; सुधार की जेलें, जिन्हें फसाया गया है, उन्हें सुनने के लिए, ऐसे भोले आदमियों से भरी पड़ीं हैं। हमें जो चाहिए वह है, अच्छी तरह उसे बांध कर प्रकोष्ठ में डालना और तब हम अपनी ड्यूटी से मुक्त होंगे। ''सामान्य आदमी,'' उसने मुझसे कहा। मैं अपने बक्से को उठाने के लिए मुड़ा। ''ओह तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी,'' मुझे जल्दी करते हुए, बाद के विचार के रूप में, उसने मेरी कलाइयों पर हथकड़ी बांध दी। ''ओह तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है,'' कप्तान ने कहा। ''वह कहीं नहीं भाग सकता, और वह तुम्हारी नाव में भी कैसे उतरेगा ?'' ''वह शराब में डूब सकता है और हम उसे खींच कर निकाल लेंगे,'' पुलिस ने भद्दे ढंग से हँसते हुए, जवाब दिया।

सीढ़ी पर नीचे उतरना आसान नहीं था, परंतु मैंने बिना किसी गड़बड़ी के, पुलिस के लिए दिखते हुए खेद के साथ, इसकी व्यवस्था की। एक बार, उन्होंने काटने वाले के ऊपर, मेरी तरफ अधिक

ध्यान नहीं दिया। हम कई जहाजों को पीछे छोड़ते हुए आगे चले और जल्दी से पुलिस की गश्ती नाव पर पहुँचे। ''अब ये ही ठीक समय है,'' मैंने सोचा, और एक तेज उछाल के साथ, मैं एक तरफ हो गया, खुद को डूब जाने दिया। थोड़ी सी परेशानी के साथ, मैंने चाबी ताले में खिसकाई, और घुमाई। हथकड़ी खुल गई और डूब गई। धीमे से बहुत धीमे से, मैं सतह पर उठा। पुलिस का काटने वाला बहुत दूर था, आदमियों ने मुझे पहचान लिया, और गोली चलाना शुरू किया। गोलियाँ मेरे आसपास छिटकीं और मैं दुबारा डूब गया। जोर से तैरते हुए, जब तक कि मैंने यह महसूस नहीं किया कि, मेरे फेंफड़े फट जाऐंगे, मैं फिर ऊपर आया। पुलिस, ''स्पष्ट स्थान, को तलाशती हुई, जहॉ पर मेरे जमीन पर पहुँचने की आशा की जा सकती थी, बहुत दूर थी। मैं न्यूनतम दिखने वाले स्थान पर पहुँचा परंतु, इसको यहॉ बताऊँगा नहीं, हो सकता है, किसी दुर्भाग्यशाली को शरण लेने की आवश्यकता पड़े।

घंटों तक, ठिठुरते हुए और दर्द सहते हुए, मैं, जलते हुए पानी में, जो मेरे आसपास घूम रहा था, आधे डूबे हुए बांसों पर पड़ा रहा। पानी में पतवार के खेने और चप्पू के टूटने की आवाजें आईं। मैं दंड से दूर खिसक गया, और खुद को पानी में डूब जाने दिया, जिससे कि केवल मेरे नकुए, पानी के ऊपर रहें। यद्यपि में दंड से छिपा हुआ था, मैं क्षणिक उड़ान की तैयारी में था। नाव शिकार की खोज में आई, ऊपर आई। अंत में, बहुत–बहुत देर में, एक बेसुरी आवाज ने कहा, ''अनुमान है कि, वह अब तक अकड़ गया होगा। उसकी लाश बाद में मिलेगी। हम कुछ काफी पीने के लिए बाहर चलें।'' नाव मेरी परास (range) के बाहर हो गई। लंबे समय के बाद, उस दंड के ऊपर, लगभग अनियंत्रित रूप से कांपते हुए, मैंने अपने दुखते शरीर को खींचा।

दिन समाप्त हुआ, और मैं किरण के सहारे, चोरी से, आधी सड़ी हुई सीढ़ी पर चढ़ा और किसी को वहॉ न देखते हुए, अपने कपड़ों को उतारते हुए और उन्हें जितना संभव हो निचोड़ते हुए, एक सायबान की शरण के लिए झपटा। गोदी के अंत में, काफी दूर, कोयला झोंकने वाला, एक आदमी दिखाई दिया। जब वह नीचे आया, वह मेरे सामने था। मैंने एक धीमी सी सीटी बजाई, वह रुका, और एक जहाज के खूंटे के ऊपर बैठा, ''तुम सावधानी से बाहर आओ,'' उसने कहा। ''निश्चित रूप से, सिपाही दूसरी तरफ को देखभाल कर रहे होंगे, आदमी! तुमने उन लड़कों को निश्चित रूप से उद्विग्न कर दिया होगा।'' वह खड़ा हुआ, उसने अंगड़ाई ली, और अपने आसपास देखा। ''मेरे पीछे आओ,'' उसने कहा, ''लेकिन यदि तुम पकड़े गए, तो मैं तुम्हें नहीं जानता। एक रंगीन जेनलमन (जैन्टलमेन), ट्रक के साथ, तुम्हारा इंतजार कर रहा है। जब हम वहॉ पहुँच जायेंगे, तुम पीछे चढ़ना और अपने आपको तिरपाल से ढक लेना।''

वह दूर चला गया, अपने आपको काफी समय देते हुए, एक छायादार इमारत से दूसरी इमारत तक, मैंने उसका पीछा किया। झुंड़ो के आसपास पानी के उछाल और काफी दूर पर पुलिस कार का चिल्लाना, केवल यही आवाजें थीं, जो शांति को खराब कर रहीं थीं। अचानक ही वहाँ, एक ट्रक के इंजन के शुरू किए जाने के कारण, इंजन का शोर हुआ और पूंछ की बत्तियाँ दिखाई दीं। एक बड़े नीग्रो ने, कोयला झोंकने वाले (loscar), को इशारा किया और मुझे अपने पीछे आने के लिए कहा, जब उसने ट्रक के पीछे की तरफ इशारा किया, एक मित्रतापूर्ण ऑख मारी। कष्ट के साथ, मैं उसमें चढ़ गया और पुराने तिरपाल को अपनी तरफ खींच लिया। ट्रक चलता गया और थोड़ा रुका। दो आदमी उस पर चढ़े और एक ने कहा, ''हमें थोड़ा लादना है, आगे चलो।'' मैं ड्राइवर के केबिन की तरफ आगे बढ़ा और वहाँ संदूकों के लादे जाने की आवाजें आईं।

ट्रक आगे चला। ऊबड़–खाबड़ सड़कों पर झटके खाते हुए, ये जल्दी ही रुक गया और एक खराब सी आवाज आई, ''तुम लोगों के पास क्या है?'' ''केवल कूड़ा–करकट, श्रीमान्'' नीग्रो ने कहा। भारी कदम, मेरी बगल से आये। कुछ चीज पीछे की तरफ चुभाई गई। ''ठीक है,'' आवाज ने कहा, ''अपने रास्ते पर।'' दरवाजा बंद हुआ, नीग्रो ने गियर को बदला, और हम रात में ड्राइव करके चले।

हम घंटों तक चलते दिखे, तब ट्रक तेजी से घूम गया, ब्रेक लगे और रुक गया। तिरपाल को खींचा गया, नीग्रो और लासकार मेरे ऊपर मुस्कुराते हुए खड़े थे। मैं थके हुए अंदाज में काँप रहा था और मैंने अपने पैसे को छू कर महसूस किया। ''मैं तुम्हें पैसे दूँगा,'' मैंने कहा।

''कुछ मत दो,'' नीग्रो ने कहा

''हम न्यूयॉर्क पहुँचें उससे पहले, बुच मुझे मारने वाला था'' लासकार ने कहा। ''तुमने मुझे बचाया, और अब मैंने तुम्हें बचाया, और हमने अपने प्रति, भेदपूर्ण व्यवहार के विरूद्ध लड़ाई लड़ी। अंदर आओ।''

''जाति–प्रजाति, और रंग कोई मतलब नहीं रखते,'' मैंने सोचा। ''सभी मनुष्यों का खून लाल होता है।'' वे मुझे एक गर्म कमरे में ले गए, जहाँ हल्के रंग की, दो नीग्रो महिलाऐं थीं। शीघ्र ही मुझे गर्म खाना खाते हुए, गर्म कंबलों में लपेटा गया। तब उन्होंने वह स्थान दिखाया, जहाँ मैं सो सकता था और वे चले गए।

अध्याय सात

मैं दो दिनों और दो रातों तक के लिए सोया। मेरा थका हुआ शरीर, दो लोगों के बीच झूलता रहा। जीवन मेरे लिए हमेशा कठोर रहा है, हमेशा कष्ट सहना और बड़ी गलतफहमियॉं, परंतु अब मैं सोया।

मेरा शरीर, मेरे पीछे पृथ्वी पर छूट गया था। जैसे ही मैंने ऊपर की तरफ यात्रा शुरू की, मैंने देखा कि नीग्रो औरतों में से एक, नीचे मेरे खाली खोल को, अपने चेहरे पर महान करुणा के साथ देख रही थी। तब वह मुड़ी और बाहर गंदी सड़क पर देखते हुए, एक खिड़की के पास बैठी। शरीर के बंधन से मुक्त हो कर, मैं सूक्ष्मशरीर के रंगों को और भी अधिक स्पष्ट देख सकता था। ये लोग, ये रंगीन लोग, जो मुझे मदद कर रहे हैं जबकि, गोरे लोगों की जाति ने मुझे हमेशा तंग किया, अच्छे थे। प्रताडना और कठिनाईयों ने उनके अहम् को बढ़ा दिया था, और उनका मस्त रवैया, मात्र उनकी आंतरिक भावनाओं को पूरा करने के लिए था। मेरा पूरा धन, जो मैंने परेशान होते हुए और आत्म त्याग से, कठिनता से कमाया था, मेरे तकिये में चुन्नट डाल कर नीचे सिला हुआ था, इन लोगों से इतना सुरक्षित, जैसे कि किसी सबसे मजबूत बैंक में होता।

समय और आकाश के बंधनों को छोड़ते हुए, एक के बाद एक, आकाशीय स्तरों मे प्रवेश करते हुए, मैं ऊपर, और ऊपर, चढ़ता गया। अंत में, मैं स्वर्णिम प्रकाश के लोक को पहुँचा, जहाँ मेरे शिक्षक लामा मिग्यांर डोंडुप ने मेरा स्वागत किया।

''तुम्हारी प्रताड़नायें वास्तव में बड़ी रहीं हैं,'' उन्होंने कहा, ''परंतु जो कुछ तुमने झेला है, वह सब अच्छे उद्देश्य के लिए था। हमने पृथ्वी के लोगों का और अनजान, गलत सभ्यताओं का अध्ययन किया है, जो उनके पास हैं और जो तुम्हें सताऐंगे क्योंकि, उनकी समझदारी बहुत कम है। परंतु, अभी हमें तुम्हारे भविष्य के ऊपर बातचीत करनी है। तुम्हारा वर्तमान शरीर, अपने उपयोगी जीवन के अंत के करीब है और इस दृश्य के लिए, जो योजनाऐं हमारे पास हैं, पूरी जानी चाहिए।'' वह मेरे बगल से एक सुंदर नदी के किनारे, चले। पानी दमक रहा था और जीवंत प्रतीत हो रहा था। उसके दोनों किनारों पर, इतने आश्चर्यजनक बाग थे कि मैं, मुश्किल से ही, अपने अनुभव का विश्वास कर सका। हवा अपने आप में, जीवन से परिपूर्ण, कंपन करती हुई लगी। थोड़ी दूरी पर, तिब्बतीय परिधान में लपेटा हुआ, लोगों का एक समूह, धीमे से हमसे मिलने आया। मेरे शिक्षक मुझे देखकर मुस्कराए, ''यह एक महत्वपूर्ण सभा है,'' उन्होंने कहा, ''क्योंकि हमें तुम्हारे भविष्य की योजना बनानी है। हमें देखना है कि, मानवीय प्रभामंडल के शोधकार्यो को कैसे प्रोत्साहित किया जाए, क्योंकि हमने देखा है कि, जब कभी भी पृथ्वी पर प्रभामंडल की बात की जाती है, अधिकांश लोग, विषय को बदलने का प्रयास करते हैं।''

समूह पास आया, और मैंने उनमें से कुछ को पहचाना, जिनके आश्चर्य में, मैं खड़ा था। अब वे शुभेच्छा से मुझ पर मुस्कुराए और उन्होंने बराबरी के हिसाब से मेरा अभिनंदन किया।'' हम अधिक आरामदायक जगह पर चलें,'' एक ने कहा,''ताकि हम विषय पर, आसानी से, विचार विमर्श कर सकें।'' जब तक कि रास्ते में मोड़ नहीं आ गया, हम उस दिशा में, राह पर आगे बढ़े, जहाँ से ये आदमी आये थे। हमने अपने सामने, एक अति सुन्दर, भव्य, हॉल को देखा, जिसने मुझे आनंद की अनुभूति के साथ अनिच्छा पूर्वक रोका। पेस्टल के मनभावन रंगों की उसकी दीवारें, जिसके रंगो की अंदरूनी छाप, किसी के देखते ही बदल जाती थी, शुद्धतम क्रिस्टल की बनी लग रहीं थीं। पैरों के नीचे का रास्ता, नर्म था, और मुझे प्रवेश करने के लिए दवाब देने के लिए, मेरे शिक्षक के द्वारा, इस पर थोड़ा जोर देने की आवश्यकता थी।

हम अंदर गए, और ऐसा लगा मानो हम एक बड़े मंदिर में हैं। एक साफ मंदिर, जिसमें अंधेरा नहीं, और एक ऐसा वातावरण, जिसमें किसी को भी ये साधारण आभास होगा कि, यही जीवन है। हम

भवन के मुख्य भाग में हो कर गए, जब तक कि, हम इसे पृथ्वी पर मठाध्यक्ष का कमरा, कहते नहीं आ गए। यहॉ आदामदायक सादापन था, दीवार के ऊपर एक चित्र के साथ अधिक यथार्थ था। जिंदा पौधे दीवारों के करीब थे और चौड़ी खिड़कियों से, कोई भी, बागों का उत्तम विस्तार, देख सकता था।

तिब्बत की तरह, हम फर्श पर रखी गईं गद्दियों पर बैठे। मैंने अपने आपको सहज, लगभग संतुष्ट महसूस किया। मेरा शरीर पृथ्वी पर होने के ख्यालों ने, मुझे अभी भी परेशान किया, क्योंकि जब तक रजत तंतु ठीक–ठाक था, मुझे लौटना पड़ता। मठाध्यक्ष,– मैं उन्हें कहूँगा, यद्यपि वह इससे काफी ऊपर थे,– ने अपने आसपास देखा और तब कहा। ''यहाँ से, हमने वह सब समझ लिया है, जो पृथ्वी पर तुम्हारे साथ हुआ। हम तुम्हें पहले ये ध्यान दिलाना चाहते हैं कि, तुम कर्म के प्रभाव से कष्ट नहीं उठा रहे हो, परंतु इसके बदले, हमारे अध्ययन के उपकरण के रूप में, कार्य कर रहे हो। क्योंकि, जितना बुरा तुम अभी तक झेल चुके हो, तुमको उतना ही तुम्हारा पुरुष्कार मिलेगा।'' वे मेरी ओर देख कर मुस्कराए और जोड़ा, ''यद्यपि, जब तुम पृथ्वी पर कष्ट झेल रहे हो, ये अधिक सहायता नहीं करता, तथापि,'' वह कहते गए, ''हमने बहुत सीखा है, परंतु अभी कई बिन्दु ऐसे हैं, जिनका अध्ययन किया जाना है। तुम्हारा वर्तमान शरीर काफी झेल चुका है और शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा। हमने इंग्लैंड के देश में, एक संपर्क स्थापित किया है। ये आदमी, अपने शरीर को छोड़ना चाहता है। हम उसे सूक्ष्म स्तर पर लाये थे और उसके साथ मामलों पर बातचीत की थी। वह शरीर छोड़ने के लिए अत्यधिक व्यग्र है और वह सब करेगा, जिसकी हमें आवश्यकता होगी। हमारे आदेश पर, उसने अपना नाम बदल लिया है, जो तुम्हें अधिक उपयोगी होगा। उसका जीवन सुखी नहीं रहा है, उसने जानबूझ कर अपने रिश्तेदारों से संबंध तोड़ लिए हैं। दोस्त तो उसने कभी बनाये ही नहीं। वह तुम्हारे ही अनुनादी कंपनों (resonant vibrations) पर हैं। इस समय हम इस पर, इस मामले पर, हम और अधिक चर्चा नहीं करेंगे, क्योंकि बाद में, जब तुम इस शरीर को लोगे, हम तुम्हें इसके जीवन में से थोड़ा–सा, दिखा देंगें। तुम्हारा वर्तमान कार्य है, अपने शरीर को वापस तिब्बत ले जाना, जिससे इसको संरक्षित किया जा सके। तुमने अपने प्रयासों और त्याग से धन संकलित कर लिया है, अपने यात्रा के किराये के लिए, तुम्हें इससे थोड़ा सा और अधिक चाहिए। ये तुम्हारे लगातार प्रयासों के द्वारा आ जायेगा परंतु, अभी इतना ही काफी है। अपने शरीर में लौटने से पहले, आज के लिए, यहाँ पर अपनी यात्रा का आनंद लो।''

एक बच्चे के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रौढ़ के रूप में, अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ होना, ये वास्तव में वरदान था, जो उस महान आदमी की आसामान्य क्षमताओं और चरित्र की प्रशंसा कर सकता है। गहरे नीले रंग की एक खाड़ी को अनदेखा करते हुए, हम पहाड़ी के बगल से, नर्म घास के ऊपर, अकेले बैठे। हवा के कारण पेड़ हल्के से हिले और देवदार तथा चीड़ की सुगंध का झोंका हम पर आया। भूतकाल पर चर्चा करते हुए, बात करते हुए, चार घण्टों तक हम इसी प्रकार बैठे रहे। मेरा इतिहास, उनके लिए खुली किताब था, अब उन्होंने मुझे ऐसा बताया। इस प्रकार दिन गुजर गया और जैसे ही सांझ की नीली सी रोशनी मुझ पर पड़ी, मुझे लगा यह पृथ्वी पर, दुःखमयी पृथ्वी पर, उसके कटु मनुष्यों और गंदी जुबानों के साथ, जुबानें, जिन्होंने पृथ्वी पर बुराइयाँ पैदा कीं, वापस आने का, लौटने का समय है।

हैंक! ओह, हैंक! वह जग गया है!'' एक कुर्सी के खिसकाये जाने की, घिसने की आवाज आई, और जैसे ही, मैंने अपनी आँखें खोलीं, नीग्रो को, मैंने अपने ऊपर देखते हुए पाया। अब वह मुस्करा नहीं रहा था, उसका चेहरा आदर से पूर्ण था, आश्चर्य, भी। महिला ने अपने आपको लांघा और जब उसने मेरी दिशा में देखा, थोड़ी झुकी। ''ये क्या है ? क्या हुआ ?'' मैंने पूछा।

''हमने एक जादू देखा है। हम सब ने।'' जब वह बोला, उस बड़े नीग्रो की आवाज निस्तब्ध थी।

''मैंने तुमको बहुत तकलीफें दीं हैं,'' मैंने पूछा।

''नहीं, स्वामी, तुम हमारे लिए केवल आनंद लाये हो,'' महिला ने जवाब दिया।

''मैं तुम्हें एक उपहार देना चाहूँगा,'' अपने पैसे की तरफ पहुँचते हुए, मैंने कहा।

नीग्रो ने नर्मी से कहा, ''हम गरीब लोग हैं, परंतु हम तुम्हारा पैसा नहीं लेंगे। जब तक आप जाने के लिए तैयार न हों, इसे अपना ही घर समझें। हम जानते हैं कि, आप क्या कर रहे हैं।''

''परंतु मुझे आभार प्रदर्शित करना चाहिए,'' मैंने उत्तर दिया। ''जिसके बिना मैं मर गया होता।''

''और महान भव्यता की ओर चले गए होते'' महिला ने जोड़ते हुए कहा, ''स्वामी तुम हमें पैसे से बड़ी कोई चीज दे सकते हो। हमें प्रार्थना करना सिखाऐं।''

तब निवेदन को स्वीकार करते हुए, एक क्षण के लिए मैं शांत रहा। ''हाँ,'' मैंने कहा, ''मैं तुम्हें प्रार्थना करना सिखाऊँगा, जैसे मुझे सिखाया गया था।''

''सभी धर्म, प्रार्थना में आस्था रखते हैं, परंतु केवल कुछ ही लोग इस प्रक्रिया की तकनीक को समझते हैं, कुछ नहीं समझ सकते। उदाहरण के लिए, संरक्षक (guardian) एक पल में दुनियाँ के किसी भी भाग में जा सकता है। ये संरक्षक ही है, जो सूक्ष्मशरीर से यात्राऐं करता है और रजत तंतु के माध्यम से वापस शरीर को भेजता है, जो आवश्यक है।

''जब तुम प्रार्थना करो, तुम स्वयं से प्रार्थना करो। अपने अहम् से दूसरे भाग से, अपने बड़े अहम् के साथ। यदि हम ठीक से जानते हों कि, प्रार्थना कैसे की जाए, तो हम उन प्रार्थनाओं को रजत तंतु के माध्यम से भेज सकते हैं क्योंकि, टेलीफोन की लाइनें, जिनको हम उपयोग में लाते हैं, एक बहुत खराब उपकरण हैं, और अपने आपको यह सुनिश्चित करने के लिए कि, संदेश ठीक से चला जाए, हमें कई बार दुहराना पड़ता है। इसलिए जब तुम प्रार्थना करो, तो ऐसे बोलो जैसे तुम टेलीफोन लाइन पर किसी से बहुत दूर से बात कर रहे हो, एकदम परम स्पष्टता के साथ बोलो, और वास्तव में सोचो कि, तुम क्या कह रहे हो। मैं जोड़ना चाहूँगा कि, इस दुनियाँ में, इस अपूर्ण शरीर में, जो इस दुनियाँ में हमारा है, दोष हमारे अंदर हैं, हमारे संरक्षक का दोष नहीं है। ये सुनिश्चित करते हुए कि, तुम्हारी प्रार्थनाऐं हमेशा रचनात्मक हैं और कभी भी विनाशात्मक नहीं, सरल भाषा में प्रार्थना करो।

''अपनी प्रार्थना को परम धनात्मक बना लेने के बाद, और गलतफहमी की किसी भी संभावना को पूरी तरह से हटा देने के बाद, प्रार्थना को शायद, तीन बार दुहराओ। हम एक उदाहरण लें; उदाहरण के लिए मान लो, एक मनुष्य है, जो बीमार है और भुगत रहा है और तुम इस संबंध में कुछ करना चाहते हो। तुम्हें तीन बार, हमेशा बिल्कुल वही बात कहनी चाहिए। तुम्हें उस छायामयी आकृति का, उस अमूर्त आकृति का, जो वास्तव में, उस रास्ते पर चलते हुए, जिस पर तुम, उस दूसरे आदमी के घर तक, स्वयं गए होते, जा रही है, घर में घुसते हुए और उस आदमी पर अपना हाथ रखते हुए और इलाज को प्रभावी बनाते हुए, ध्यान करना चाहिए। हम एक क्षण में, इस विशेष विषय के ऊपर, वापस लोंटेंगे परंतु, पहले मुझे कहने दो– इसे इतनी बार दोहराओ जितना कि, आवश्यक हो और, यदि तुम वास्तव में, विश्वास करते हो तो, उसमें निश्चित रूप से सुधार होगा।

''पूर्णतः इलाज का ये तरीका; ठीक है, यदि किसी आदमी की टॉग कट गई है, कितनी भी, कैसी भी प्रार्थना, उसकी टाँग को बदल नहीं सकती परंतु, यदि कोई व्यक्ति, कैंसर या किसी अन्य गंभीर बीमारी से पीड़ित है, तो उसे रोका जा सकता है, उसके इलाज को तेजी से प्रभावित करने का एक तीव्र तरीका है। हर आदमी, पूरी दुनियाँ में जादुई इलाज के अभिलेखों को जानता है। लोर्डेस (Lourdes)[76] और दूसरे अनेक स्थान, इस तरह के इलाज के लिये प्रसिद्ध हैं, और ये इलाज, दूसरे अहम् द्वारा प्रभावित किये जाते हैं, जो उस स्थान के प्रसिद्धि के साथ–साथ, संबंधित व्यक्ति का संरक्षक होता है। उदाहरण के लिये, लोर्डेस को पूरी दुनियाँ में जादुई इलाज के लिये जाना जाता है, इसलिये

76 अनुवादक की टिप्पिणी : लोर्डेस, दक्षिण–पश्चिम फ्रांस में, पायरेनिस की पहाड़ियों की तलहटी में, एक छोटा सा व्यापारिक नगर है। यह सन् 1858 में विश्व में विख्यात हुआ और शीघ्र ही रोमन कैथोलिकों का तीर्थस्थान और पर्यटन स्थल बन गया। आज वहाँ विश्व भर से लगभग साठ लाख पर्यटक, प्रतिवर्ष आते हैं।

लोग वहॉ बड़े विश्वास के साथ कि, वे उपचारित हो ही जायेंगे जाते हैं, और अधिकाशतः ये विश्वास उस व्यक्ति के संरक्षक को भेज दिया जाता है और इस प्रकार इलाज को बहुत–बहुत आसानी के साथ प्रभावित किया जाता है। कुछ लोग ये सोचना चाहते हैं कि, कोई साधु, देवदूत अथवा किसी साधु का पुराना अवशेष है, जो ये इलाज करता है, परन्तु वास्तव में, हर व्यक्ति अपना इलाज स्वयं करता है, और यदि इलाज करने वाला, उस बीमार व्यक्ति के इलाज करने के आशय से, उसके सम्पर्क में आता है, तब उस बीमार व्यक्ति के संरक्षक के माध्यम से, इलाज प्रभावित किया जाता है। जैसे मैं तुम्हे पहले बता चुका हूँ आपके खुद के लिये, आपके स्वयं के वास्तविक के लिये, जो आप हैं, ये सब नीचे आता है। जब तुम इस प्रतिबिम्बित जीवन को छोड़ते हो और महान यथार्थ में प्रवेश करते हो। जब तक हम पृथ्वी पर हैं, हम यह सोचते हैं कि, केवल यही चीज है, जो मायने रखती है, परन्तु पृथ्वी, ये विश्व – नहीं, ये माया की दुनियॉ है, कठिनाइयों की दुनियाँ, जहॉ हम पाठ सीखने के लिये आते हैं, जो दयालुता, अधिक उत्पादक विश्व, जिसमें हम लौटते हैं, में नहीं सीखे जा सकते।

''आपके अन्दर स्वयं में कुछ असमर्थताऐं हो सकती हैं, आप बीमार हो सकते हैं या आपके अन्दर, वांछित शाश्वत शक्ति की कमी हो सकती है। यदि तुम इसमें विश्वास करो और यदि तुम वास्तव में चाहते हो, इसका इलाज किया जा सकता है, इस पर पार पाया जा सकता है। मान लो तुम्हारे अन्दर दूसरों को मदद करने की एक बड़ी इच्छा है, एक ज्वलंत इच्छा; तुम स्वस्थ करने वाला बनना चाहते हो। तब तुम अपने निजी कमरे के एकांत में प्रार्थना करो, शायद अपने शयनकक्ष में। तुमको सर्वाधिक शिथिलता की स्थिति में आराम करना चाहिये, जो तुम्हें, वरीयता से अपने पैरों को आपस में जोड़ते हुए और अपनी उँगुलियों को आपस में फँसाते हुए, प्रार्थना के सामान्य तरीके से नहीं, परन्तु अपनी उगुलियों को आपस में फँसाते हुए, मिल सकता है। इस तरीके से तुम शरीर के चुम्बकीय परिपथ को संरक्षित करते हो और बढ़ाते हो, तुम्हारा प्रभामण्डल और शक्तिशाली हो जाता है, और तुम्हारा रजत तन्तु, तुम्हारे संदेशों को और सही रूप से प्रेषित करने में सक्षम होता है। तब अपने आप को सही स्थिति में रखते हुए और सही मानसिक अवस्था में रखते हुए, तुमको प्रार्थना करनी चाहिये।''

उदाहरण के लिये, आप प्रार्थना कर सकते हैं। ''मुझे स्वास्थ लाभ की शक्ति दो कि, मैं दूसरों को स्वास्थ लाभ करा सकूँ। मुझे स्वास्थ लाभ कराने की शक्ति दो कि मैं दूसरों को लाभ करा सकूँ।'' तब, जब तुम शिथिलता की स्थिति में हो, कुछ क्षणों के लिये बने रहो और अपने आप को, अपने खुद के शरीर की छाया में घिरे हुए रूप में चित्रित करो।

''जैसा तुम्हें पहले कहा, तुमको वह रास्ता अपने ध्यान में लाना चाहिये, जिसे तुम बीमार आदमी के घर तक लोगे, और तब अपनी कल्पना में, उस शरीर को, उस व्यक्ति के घर तक ले जाओ, जिसे तुम ठीक करना चाहते हो। उस आदमी की उपस्थिति में स्वयं को चित्रित करो। तुम्हारा वृहत् अहम् उसके घर पर पहुँचा, जिसको तुम मदद करना चाहते हो। अपने आप को, अपनी बाहों को उठाते हुए अपने हाथों को, और उस आदमी को छूते हुए, चित्रित करो। जीवन प्रदान करने वाली शक्ति, तुम्हारे हाथों में से आ रही है, तुम्हारी उगुलियों में से होती हुई, दूसरे आदमी में जीवन्त नीले प्रकाश के रूप में प्रवेश करती हुई, प्रवाहित हो रही है, इसकी कल्पना करो। कल्पना करो कि, आदमी धीमे–धीमे ठीक हो रहा है। विश्वास के साथ, थोड़े अभ्यास के साथ, इसे किया जा सकता है। यह सुदूर पूर्व में किया जा रहा है।

''कल्पना में एक हाथ, उस व्यक्ति की गर्दन के ऊपर, पीछे की तरफ रखना, और दूसरा हाथ, व्यथित अंग के ऊपर रखना, उपयोगी होगा। तुम्हें अपने आप से, तीन–तीन प्रार्थनाओं के समूह में एक दिन में कई बार प्रार्थना करनी होगी, जब तक कि, तुम्हें वांछित परिणाम नहीं मिल जायें। फिर, यदि तुम विश्वास रखते हो, तुम्हे परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे। परन्तु मुझे एक गंभीर, गंभीर चेतावनी देने दो। तुम अपने खुद के भाग्य को, इस विधि से नहीं बढ़ा सकते। इस संबंध में गूढ़ विज्ञान का एक बहुत

पुराना नियम है, जो किसी को खुद के स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थनाओं का उपयोग करने से रोकता है। तुम इसे खुद के लिये नहीं कर सकते जब तक कि, ये दूसरों की मदद करने के लिये न हो, और जब तक कि, तुम इसके ऊपर गंभीरता से विश्वास न करते हो कि, यह दूसरों को सहायक होगा। मैं एक वास्तविक मामले में जानता हूँ, जिसमें एक आदमी, जिसकी साधारण आमदनी थी और ठीक से आराम से रह रहा था। उसने सोचा कि, ''यदि वह आयरलैण्ड की लॉटरी को जीत ले, तो वह दूसरों की मदद कर सकता है; वह मानवता का बहुत अच्छा शुभेच्छु बन सकता है।''

शाश्वत मामलों में, थोड़ा, परन्तु अधिक नहीं जानते हुए, उसने उसे क्या करना है, के संबंध में बड़ी योजनाऐं बनाई। उसने सावधानी पूर्वक तैयार की गईं प्रार्थनाओं का कार्यक्रम बनाया। उसने इस अध्याय में दिये गये तरीके से, दो महीने तक लगातार प्रार्थना की; उसने प्रार्थना की कि, वह आयरलैण्ड के लॉटरी का विजेता होगा। दो महिने के लिये उसने तीन–तीन प्रार्थनाओं के समूह में दिन में तीन बार – प्रतिदिन कुल मिला कर नौ बार प्रार्थनाऐं की। जैसा वह पूरी तरह से आशान्वित था, उसने ऑयरलैण्ड की लॉटरी को जीता और उसने उनमें से सबसे बड़ा पुरस्कार प्राप्त किया।

''अंत में उसे पैसा मिल गया और उसने अपनी बुद्धि से विचार किया। वह अपने पूरे वायदों, भले आशयों के बारे में सब कुछ भूल गया। सिवाय इसके कि, उसके पास बहुत धन है। वह इस संबंध में हर चीज को भूल गया और वह जैसा चाहता था ठीक वैसा ही कर सकता था। उसने धन का उपयोग अपने खुद के दिखावे के लिये किया। कुछ ही महीनों में ये उसके लिये आश्चर्यजनक समय था, जिसके मध्य वह कठोर, और कठोर, होता गया, और तब कठोर नियम अपने प्रभाव में आया, और पैसे को अपने पास रखने के और दूसरों को मदद करने के बदले में, उसने हर चीज को गवां दिया, जो उसने प्राप्त की थी और हर चीज, जो इससे पहले उसके पास थी। अंत में वह मर गया और कंगाल लोगों के कब्रिस्तान में दफन किया गया।

''मैं तुमसे कहता हूँ कि, यदि तुम अपनी स्वार्थपूर्ति के विचार के बिना, अपने खुद के उन्नयन के विचार के बिना, प्रार्थना की शक्ति का ठीक से उपयोग करो, तो तुम्हें संसार की प्रबलतम शक्तियों में से एक मिलेगी, एक इतनी महान शक्ति कि, केवल कुछ ही सही व्यक्ति, पृथ्वी पर शांति की प्रार्थना करें तो पृथ्वी पर पूरी शांति होगी और युद्ध और युद्ध के विचार, कहीं नहीं रहेंगे।''

कुछ समय के लिये शांति रही जब उन्होंने इसके ऊपर मनन किया, जो मैंने उन्हें बताया था, तब उस औरत ने कहा, ''मैं चाहती हूँ कि, आप कुछ समय के लिये यहॉ रहें और हमें सिखायें। हमने एक चमत्कार देखा है, परन्तु कोई आया और उसने हमें इसके संबंध में बात करने से मना किया।''

मैंने कुछ घण्टों के लिये आराम किया और तब मैंने कपड़े पहने और शंघाई में, अपने एक अधिकारी मित्र को, ये बताते हुए कि, मेरे कागजात के साथ क्या हुआ, एक पत्र लिखा। हवाई जहाज से उन्होंने मुझे एक नया पारपत्र, जिसने निश्चित रूप से मेरी स्थिति को सरल बना दिया, भेज दिया। हवाई जहाज से, एक बहुत धनी महिला का पत्र मेरे पास आया। ''कुछ समय के लिये'', उसने लिखा, ''मैं आपका पता प्राप्त करने की कोशिश करती रहीं हूँ। मेरी पुत्री, जिसको आपने जापानियों से बचाया था, मेरे साथ है और वह पूरी तरह से स्वास्थ्य लाभ कर चुकी है। आपने उसे बलात्कार से और फलॉ–फलॉ चीजों से बचाया और मैं, कम से कम कुछ अंशों में, आपके प्रति अपना ऋण, उसका प्रतिफल अदा करना चाहती हूँ। मुझे बतायें, मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ।''

मैंने उसे लिखा और उसे बताया कि, मैं मरने के लिये अपने घर तिब्बत जाना चाहता हूँ।'' मेरे पास भारत के एक बंदरगाह तक जाने के लिये, टिकिट खरीदने के लिये पर्याप्त धन है,'' मैंने जबाव दिया, ''परन्तु महाद्वीप को पार करने के लिये पर्याप्त धन नहीं है। यदि आप वास्तव में मेरी मदद करना

चाहते हैं, तो मेरे लिये, भारत में बम्बई से कलिंगपोंग[77] जाने के लिये टिकिट खरीदें।'' मैंने ऐसा मजाक के रूप में लिखा, परन्तु दो सप्ताह बाद, मुझे एक पत्र मिला और प्रथम श्रेणी का समुद्री टिकिट और कलिमपोंग तक के लिये प्रथम श्रेणी का रेल टिकिट, प्राप्त हुआ। तुरन्त, मैंने उसे ये बताते हुए कि, मैं दूसरे धन को नीग्रो परिवार को दे दूँगा, जिसके साथ मेरी मित्रता थी, लिखा और अपना आभार प्रदर्शित किया।

नीग्रो परिवार दुखी था कि, मैं उसे छोड़ने वाला था, लेकिन इस बात से अति प्रसन्न भी था कि, जीवन में एक बार, मैं फिर से सुविधाजनक यात्रा करने वाला था। अंत में, हमने इसको आपस में साझा किया। ''एक चीज है,'' नीग्रो महिला ने कहा। ''तुम जानते थे ये पैसा आयेगा क्योंकि, यह एक अच्छे उद्देश्य के लिये था। क्या तुमने इसके लिये, जिसे तुम विचार आकृति (thought form) कहते हो, भेजी थी ?''

''नहीं'', मैंने उत्तर दिया, ''इसे इस दुनियाँ से बहुत दूर, दूसरे स्रोत के द्वारा भेजा गया होगा।''

वह परेशान लगी। ''तुमने कहा कि, जाने से पहले, तुम हमें विचार आकृतियों के बारे में बताओगे। क्या तुम्हारे पास अभी समय है ?''

''हॉ'', मैंने जबाव दिया। ''बैठो, और मैं तुम्हें एक कहानी बताऊँगा।'' वह बैठी और अपने हाथ जोड़ लिये। जैसे ही उसका पति, प्रकाश में से मुड़ा और पीछे अपनी कुर्सी पर बैठ गया, मैंने बोलना शुरू किया : भूरे पत्थरों के बीच, जलती हुई रेत में, सिर पर तेज जलते हुए सूरज के नीचे, आदमियों का एक छोटा समूह, पतली गलियों में से हो कर, अपने रास्ते पर गुजर रहा था। कुछ मिनटों के बाद वह रुका, उसने फटे हाल दिखने वाले दरवाजे पर, थपथपाया और वे अन्दर गये। कुछ ने, कुछ वाक्यों को, धीमे से कहा, और तब आदमियों को मशालें दे दी गईं, जिन्होनें लाख (resin) की बूँदें आस–पास में थुकथुका कर बिखेर दीं। धीमे–धीमे, नीचे, और नीचे, मिस्र की बालू में जाते हुए, उन्होंने गलियारों में होते हुए अपना रास्ता लिया। वातावरण थका सा, सुखद था। जी मचलाते हुए, नकुओं में, इस तरीके से रिसाव हुआ कि, वह श्लेष्मिक झिल्ली (mucous membrain) से चिपक गया।

मशालवाहक, जो छोटे से जुलूस के रूप में आगे बढ़ रहे थे। ''सिवाय इसके कि, जो प्रकाश मशाल के वाहकों से आ रहा था, मुश्किल से ही प्रकाश की कोई किरण, यहॉ थी। ज्यों ही वे, जमीन के नीचे, प्रकोष्ठ में आगे बढ़े, लोबान (frankinsence)[78] की सुगंध, गुग्गुल (myrrh) की सुगंध और पूर्व से लायी गयीं, कुछ पारलौकिक अनजान जड़ी बूटियों की सुगंध, और तीव्र हो गईं। सड़ने की, सड़ती हुई वनस्पतियों की, और मृत्यु की गंध भी, वहॉ थी।

''बहुत दूर स्थित दीवार के सामने, चॉदनी से ढके हुए जारों का एक संग्रह रखा था, जिन में उन लोगों के दिल और आँतें रखीं थीं, जिन पर मरहम लगाया जा रहा था। उनके ऊपर सावधानी से, निहित चीज के वर्णन और उन्हें बंद किये जाने की तारीख के साथ, लेवल चिपकाये गये थे। मुश्किल से कंधे हिलाते हुए, जुलूस यहॉ से गुजरा, और वह कलमी पोटाश (कलमी शोरा, nitre) से भरे टबों के पास से गुजरा, जिसमें लाशों को नब्बे दिन के लिये डुबाया गया था। लाशें अभी भी इन टबों में तैर रहीं थीं, और अक्सर एक सहायक आता और लाशों को एक लम्बे लट्ठे से डूबा देता और उन्हें पलट

77 अनुवादक की टिप्पिणी : कलिंगपोंग भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में एक पहाड़ी स्थान है। इसकी औसत ऊँवाई समुद्र तल से लगभग 4100 फुट है। कलिंगपोंग शहर, कलिंगपोंग जिले का मुख्यालय है। शहर के बाहरी क्षेत्रों (outskirts) में भारतीय सेना का 27 पर्वतीय विभाग (division) यहाँ रहता है। कलिंगपोंग को अपने अनेक शैक्षणिक संस्थानों के कारण जाना जाता है, जिन्हें अंग्रेजी राज्य के समय में स्थापित किया गया था। तिब्बत में चीन के अतिक्रमण और चीनी–भारतीय युद्ध से पहले, यह तिब्बत और भारत के बीच व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। कलिंगपोंग और उसके समीपवर्ती दार्जिलिंग क्षेत्र ने, 1980 के दशक में, और बाद में 2010 में, पृथक् गोरखा लैण्ड राज्य की मांग उठाई गई थी। कलिंगपोंग में फूलों की खेती बहुत महत्वपूर्ण है, इसें अपने फूलों के बागवानों के लिए और विभिन्न प्रकार के फूलों के व्यापार के लिए, जाना जाता है, जिसमें हिमालय में उत्पन्न होने वाले फूलों (flowers), शल्वों (bulbs), नलियों (tubes), और रीजोम्स (rhizomes) को निर्यात किया जाता है, जो कलिंगपोंग की अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा भाग है। शहर बौद्धमत का प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। जांग धोक पालरी खोदांग (Zang Dhok Palri Phodang), यहाँ का प्रमुख बौद्धमठ है, जिसमें तिब्बती बौद्धधर्म की बिरली पाण्डुलिपियाँ रखी हैं। कलिंगपोंग, भारत का अदरक उत्पादन करने वाला बहुत बड़ा क्षेत्र है। कलिंगपोंग और सिक्किम राज्य, दोनों मिला कर भारत के अदरक उत्पादन का लगभग 15 प्रतिशत पैदा करते हैं। अधिकांश चाय बागान दार्जिलिंग के शहर की तरफ, तीस्ता नदी के पश्चिमी किनारे पर हैं। 2011 में भारतीय जनगणना के अनुसार कलिंगपोग की आबादी लगभग 43 हजार थी। यहाँ नेपाली,, हिन्दी, और बंगला, इस क्षेत्र में उपयोग में लाई जाने वाली विशेष उपभाषाएं हैं।

78 अनुवादक की टिप्पिणी : लोबान, एक सुगंधयुक्त गोंद होता है, जो विभिन्न अरब देशों तथा पूर्वी अफ्रीकन देशों के पेड़ों से प्राप्त होता है। इसे पूजा में सुगंधित धुआं बनाने के लिये जलाया जाता है।

देता। इन तैरती हुई लाशों के ऊपर हल्की सी नजर डालने के साथ, जुलूस प्रकोष्ठ के अन्दर गया। वहॉ फराओ का, लाइनन की रस्सियों से कस कर लपेटा हुआ मृत शरीर, जिस पर मधुर सुगंध देने वाली जड़ीबूटियों के चूर्ण को अच्छी तरह फैलाया हुआ था, और अच्छी तरह से मरहम लगाया हुआ था, मधुर सुगंधित लकड़ी के लट्ठों के ऊपर रखा था।'' आदमी प्रविष्ट हुए और चार वाहकों ने लाश को पलट दिया, और उसे एक हल्के लकड़ी के खोल में रख दिया, जो दीवार के सहारे खड़ा रखा था। तब उसे अपने कंधों की ऊॅचाई तक उठाते हुए, पलट कर उस जमीनदोज (underground) कमरे के बाहर, कलमी शोरे के टबों से निकलते हुए, मिस्र के मलहम लगाने वाले लोगों के कमरों से बाहर निकलते हुए, उन्होंने मशाल वाहकों का अनुगमन किया। सतह के पास, लाश को दूसरे कमरे में ले जाया गया, जिसमें दिन की हल्की सी रोशनी छन कर आ रही थी। यहॉ पर उसे, उस लकड़ी के खोल में से बाहर निकला गया और उसे दूसरे डिब्बे में, जो एकदम, ठीक उसी लाश की शक्ल में ही था, रख दिया गया। हाथों को छाती के ऊपर रखा गया और उसे पट्टियों से कस कर बांध दिया गया। मृत व्यक्ति के इतिहास को बताने वाला एक भोजपत्र, उनके साथ बांधा गया।

अब कई दिनों के बाद, ओरिसिस (Orisis)[79], आईसिस (Isis)[80] और होरस[81] (Horus) के पुजारी यहाँ आये। आत्मा को निचले लोक में से लाने के लिये, वहॉ उन्होंने अपनी प्रांरम्भिक प्रार्थनाओं को गाया। यहॉ भी पुराने मिस्र के ओझाओं और जादूगरों ने अपने विचारों की आकृतियाँ (thought forms) बनाईं, विचार आकृतियॉ, जो उस लाश की सुरक्षा करेंगीं और बदमाशों को कब्र तोड़ने और उसकी शांति को भंग करने से रोकेंगीं।

''पूरे मिस्र (Egypt) देश में इस बात का, उन दण्डों का, ऐलान किया कि, जो उन पर पड़ेंगे, जिन्होंने कब्र को खराब किया। वाक्य : नियम भंग करने वाले की जवान खींच ली जावेगी और तब कलाईयों के ऊपर, उसके हाथ काट लिये जावेंगे। कुछ दिन बाद, उसकी ऑतें निकाल ली जावेंगीं और उसे गरम बालू में, गर्दन तक दबा दिया जावेगा, जहॉ वह केवल कुछ घण्टों के लिये जिन्दा रहेगा।

''तूताखांमेन (Tutankhamen)[82] की कब्र ने इतिहास रचा, क्योंकि ये श्राप उन लोगों पर पड़ा, जिन्होंने कब्र का उल्लंघन किया। वे सभी व्यक्ति, जो तूताखामेन की कब्र में गये मर गये या उन्होंने रहस्यमय लाइलाज बीमारियों को भुगता।

''मिस्र के पुजारियों के पास एक विज्ञान था, जो वर्तमान दुनियाँ में गुम हो गया है, विचार आकृति उत्पन्न करने का विज्ञान, जो मनुष्य शरीर से काम करने के लिये, किये जाने की दक्षता से परे है, परन्तु उस विज्ञान को समाप्त होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि कोई भी, थोड़े से अभ्यास के साथ, थोड़े से धैर्य के साथ, विचार आकृति बना सकता है, जो भले या बुरे के लिये काम करेंगीं।

''वह कौन कवि था, जिसने लिखा : ''मैं अपनी आत्मा का कप्तान हूँ'' ? उस आदमी ने एक महान सत्य को उगला, शायद, उससे ज्यादा, जितना वह जानता रहा होगा, क्योंकि वास्तव में, आदमी ही अपनी आत्मा का कप्तान होता है। पश्चिमी लोगों ने भौतिक पदार्थो को, यांत्रिक चीजों को, कोई भी

79 अनुवादक की टिप्पिणी : मिथक कथाओं के अनुसार, ओरिसिस, मिस्र के देवता और हॉरस के पिता हैं। ओरिसिस सामान्यतः, मृत्यु के बाद के, जीवन परिवर्तन के, और आगामी जीवन के देवता हैं, इन्हें नील नदी की वार्षिक बाढ़ का देवता भी माना जाता है। इन्हें हरी त्वचा और फराओह की दाढ़ी वाला चित्रित किया जाता है।

80 अनुवादक की टिप्पिणी : आइसिस, प्राचीन मिस्र की देवी, पृथ्वी के देवता गेब और आकाश की देवी नट की पुत्री, और ओरिसिस की पत्नी और बहिन हैं। इन्हें आदर्श पत्नी और आदर्श माँ के रूप में, प्रकृति और जादू की संरक्षिका के रूप में पूजा जाता है। ये फराओ की महत्वपूर्ण शक्ति हैं। बाद में इन्हें पूरे रोमन कैथौलिक समुदाय में पूजा जाने लगा।

81 अनुवादक की टिप्पिणी : हॉरस, मिस्र के महत्वपूर्ण देवता और ओरिसिस तथा आइसिस (ISIS) के पुत्र हैं। इन्हें आकाश, युद्ध एवं शिकार तथा संरक्षण का देवता माना जाता है।

82 अनुवादक की टिप्पिणी : तूताखामेन या तूताखामून, मिस्र के 18वें राजवंश का फराओ था, जिसने लगभग 10 वर्ष की आयु में शासन संभाला और 1332 ईसा पूर्व से, 1323 ईसा पूर्व तक, शासन किया। फराओ मिस्र के राजाओं की उपाधि है। तूताखामेन ने अपनी सोतेली बहन से शादी की थी। होबार्ड काल्टर और जॉज हरवर्ट ने, सन् 1922 में, तूताखामेन की लगभग सही सलामत, कब्र की खोज की, जिसे विश्व भर में समचार–पत्रों एवं संचार माध्यमों ने विशेष महत्व के साथ प्रसारित किया। तूताखामेन के साथ दफनाये गये मास्क अभी कैरों अजायघर में रखे गये हैं और उनको विश्व भर में प्रदर्शित किया जा चुका है। फरवरी 2010 में की गई, डी.एन.ए. जांचों से पता चला कि तूताखामेन, अखेनातेन और उसकी (नाम अज्ञात) बहिन तथा पत्नी का पुत्र था अर्थात् तूताखामेन के माता–पिता, आपस में सगे भाई–बहिन थे। अजायबघर में संरक्षित ममी में इसे जवान महिला के नाम से बताया गया है। तूताखामेन की कब्र के पास 5398 वस्तुऐं मिली हैं जिनमें ठोस सोने का कफन, चेहरे का मास्क, सिंहासन, तीर कमान, खाना, शराब, चप्पलें और नये अण्डर वियर मिले हैं। इन सबको सूचीबद्ध करने में हार्वड काल्टेन को 10 साल का समय लगा। तूताखामेन को दुनियाँ, फराओओं के रूप में, उसके शासन की बजह से नहीं, बल्कि उसकी कब्र की बजह से अधिक जानती है, जो बहुत अच्छी तरह से संरक्षित करके रखी गई थी। उसके चेहरे की छवि, कलाकृति के रूप में सबसे अधिक प्रदर्शित की जाती है।

चीज, जो इस दुनियाँ में की जा सके, को रच दिया। उन्होंने अंतरिक्ष को खोजने का प्रयास किया है, परन्तु वे, सभी रहस्यों में से सबसे गहरे रहस्य को, खोजने में असमर्थ रहे हैं – आदमी का अवचेतन (subconscious) मन, क्यों कि आदमी के मन का 9/10 हिस्सा अवचेतन है, इसका अर्थ है कि, मन का केवल 1/10 हिस्सा ही चेतन (conscious) है। अर्थात्, आदमी का केवल 1/10 हिस्सा ही उसके स्वयं के नियंत्रण में है। यदि आदमी डेढ़ बटे दस ही चेतन हो सके, तब वह आदमी सबसे अधिक ज्ञानी होगा, परन्तु, संसार में, ज्ञानी होना, केवल एक ही दिशा में ज्ञानी होना है। बहुधा वे दूसरी दिशाओं में काफी कमजोर होते हैं।

''फराओहों के दिनों में, मिस्री लोग, अवचेतन की शक्ति को अच्छी तरह से जानते थे। वे अपने फराओ को गहरी कब्रों में दफना देते थे और वे उनकी कलाओं (arts) के साथ, उनके मानवता के ज्ञान के साथ, जादू–टोना करते थे। वे विचार आकृति बनाते थे, जो मृत फराओओं की कब्रों की सुरक्षा करती थी और भयानक बीमारियों के दण्ड के प्रभाव से, घुसपेठियों को प्रवेश करने से रोकती थी।''

परन्तु, आप विचार आकृति बना सकते हैं, जो अच्छा करेंगीं, परन्तु निश्चय करें कि, ये अच्छे के लिये होगा क्योंकि, कोई विचार आकृति, बुराई से अच्छा नहीं कर सकती। ये दोनों में से कोई एक ही करेगी। परन्तु, बुरे विचारों की आकृति, अंत में, बनाने वाले को ही दण्डित करेगी।

''अलादीन की कहानी, वास्तव में, विचार आकृति की ही कहानी है, जो अपना प्रभाव डालती थी। ये पुरानी चीनी किवंदंतियों (legends) में से एक के ऊपर आधारित है, जो अक्षरशः सही है।

''इस दुनियाँ में कल्पना (imagination) एक बहुत बड़ी शक्ति है। कल्पना, दुर्भाग्यवश, बुरा नाम धरी (badly named) गई। यदि कोई 'कल्पना' शब्द का उपयोग करता है, तो वह स्वतः ही किसी विक्षिप्त आदमी के संबंध में सोचता है, जिसमें अवसाद की प्रवृत्तियॉ हों, परन्तु फिर भी सत्य से आगे कुछ भी नहीं हो सकता। सभी महान कलाकारों, सभी महान चित्रकारों, सभी महान लेखकों को भी, एक प्रखर नियंत्रित कल्पना रखनी पड़ी है, अन्यथा वे उस अंतिम स्वरूप को दिमाग में नहीं देख सकते थे, जो वह बनाने का प्रयास कर रहे थे।

''यदि हम दैनिक जीवन में कल्पना को सींचें, तो हम, वह प्राप्त कर सकते हैं, जिन्हें हम चमत्कार कह सकते हैं। उदाहरण के लिये, हमारा एक प्रिय जन किसी बीमारी से भुगत रहा हो, कुछ ऐसी बीमारी, जिसका अभी भी चिकित्सीय विज्ञान के पास कोई इलाज नहीं है। यदि हम कोई विचार आकृति बनायें, जो उस बीमार आदमी के अहम् के सम्पर्क में आयेगी, और उस अहम् को, शरीर के अंग को पैदा करने में, उसको भौतिक रूप देने में सफल होगी, तो उस आदमी का इलाज किया जा सकता है। इस प्रकार, एक आदमी, जो मधुमेह की अवस्थाओं से पीड़ित है, ठीक मदद के साथ, अग्नाशय (pancreas)[83] के उन खराब अंगों को दुबारा पैदा किया जा सकता है, जिन्होंने बीमारी पैदा की थी।

''हम विचार आकृति कैसे बना सकते हैं ? ठीक है, यह आसान है। अब हम इसमें अन्दर घुसेंगे। किसी को सबसे पहले यह तय कर लेना चाहिये कि, वह क्या प्राप्त करना चाहता है, और यह निश्चित कर लेना चाहिये कि, वह अच्छे के लिये है। तब, किसी को, कल्पना को भूमिका में लाना चाहिये। किसी को, ठीक उन्हीं परिणामों को मन में देखना चाहिये, जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है। कल्पना करो कि, एक आदमी बीमार है, जिसका एक अंग बीमारी से अतिक्रमित किया गया है। यदि हम एक विचार आकृति बनाने जा रहे हैं, जो उसकी सहायता करेगी, तो हमें उस आदमी को, ठीक अपने साथ में खड़े होने की कल्पना करनी चाहिये। हमें, प्रभावित अंग को, मानसिक रूप से देखने की कोशिश करनी चाहिये। मानसिक चित्र में, खराब अंग अपने सामने रखते हुए, हमको कल्पना करनी

83 अनुवादक की टिप्पिणी : रीढ़ की हड्डी वाले प्राणियों में, अग्नाशय या पेनक्रियास (Pencreas), पाचनतंत्र में ग्रंथि जैसा एक अंग होता है, जो अंतःस्रावी ग्रंथि (endocrine gland) होती है। मनुष्यों में ये पेट की गुहा (cavity of stomach) में, विशेषरूप से, पेट के ऊपरी बांयी भाग में, पेट के पीछे की तरफ, पाई जाती है। अंतःस्रावी ग्रंथि अनेक प्रमुख हार्मोनों, जैसे इन्सुलिन (Insuline), ग्लूकागोन (Glucagon), सोमेटासेटिन (Somatosatin) और अग्नाशय की पॉलीपेप्टाइड (Pencreatic Polipeptides) को निकालती है, जो खून के साथ प्रवाहित होते हैं। अग्नाशय पाचन तंत्र का भी एक भाग है, जो अग्नाशय रस को निकालता है, जिसमें पचाने वाले एन्जाईम्स (Eæymes) होते हैं, जो छोटी आँत में, पोषक तत्वों का अवशोषण करते हैं। ये एन्जाईम, कार्बोहाइड्रेट्स (Carbohydrates), प्रोटीन्स (Protiens) और लिपिड्स (Lipids) को तोड़ने में मदद करते हैं।

चाहिये कि, वह धीमे–धीमे ठीक हो रहा है, और हमें उसे रचनात्मक अभिकथन (positive affirmation) देना चाहिये। इसलिये, हम इस विचार आकृति को, उस आदमी को ध्यान में रखते हुए बनाते है, और हम उस आदमी के बगल में खड़े हो कर, विचार आकृति के बनाने की, अलौकिक (super normal) शक्तियों के उस बीमार व्यक्ति के शरीर में अन्दर पहुॅचने की, और उस स्वास्थ्यकारी स्पर्श के साथ उस बीमारी को समाप्त हो जाने की, कल्पना करते हैं।

''हमें हर समय, विचार आकृति, जो हमने बनाई है, से एक पक्के, धनात्मक आवाज में बात करनी चाहिये। किसी भी समय, कोई सन्देह अथवा ऋणात्मकता नहीं होनी चाहिये और न हीं, अनिश्चय की स्थिति। हम को सरलतम संभव, भाषा में और संभवतः सर्वाधिक सीधे ढंग से बोलना चाहिये। हमें इसके साथ ऐसे बोलना चाहिये, जैसे हम किसी अत्यन्त पिछड़े से बच्चे से बात करते हैं, क्योंकि इस विचार आकृति के पास, कोई कारण नहीं है और ये केवल प्रत्यक्ष आदेशों को ही, या सरल कथन को ही, स्वीकार करती है।

''किसी अंग पर कुछ सूजन हो सकती है और हमें उसके लिये, इस विचार आकृति को कहना चाहिये : ''तुम अब अमुक अमुक अंग को स्वस्थ करोगे। तन्तु आपस में बुनाई कर रहे हैं।'' तुम्हें इसको दिन में कई बार दोहराना पड़ेगा और यदि तुम अपनी विचार आकृति को, वास्तव में, काम करते हुए देखना चाहते हो, तो ये वास्तव में काम करेगी। इसने मिस्री लोगों के साथ काम किया है, ये वर्तमान समय के लोगों के साथ भी काम कर सकती है।''

भुतहा छाया–आकृतियों के द्वारा, मकबरों की रक्षा किये जाने के अनेक अधिकृत उदाहरण हैं। ऐसा इसलिये है कि, या तो मृत व्यक्ति के अथवा दूसरे व्यक्तियों के विचार इतने कठोर थे कि, उन्होंने वास्तव में, एक्टोप्लाज्म (ectoplasm)[84] की शक्ल बना दी। फराओ के दिनों में, मिस्री लोग, फराओओं की मलहम लगी लाश को दफनाते थे, परन्तु वे पराकाष्ठा वाले उपाय काम में लेते थे, ताकि उनकी विचार आकृति, हजारों साल बाद भी, जीवंत हो सके। वे गुलामों को यह कहते हुए कि, यदि उन्होंने आवश्यक पदार्थो को मरने पर उनके साथ रखा, जिनके साथ एक ठोस विचार आकृति बनानी है, वे परलोक में दुख–दर्द से आराम पायेंगे, गुलामों को कष्टदायक तरीके से, धीमे–धीमे गुलाम बनाते थे। पुरातात्विक अभिलेखों ने, लम्बे समय तक, इन भुतहा चीजों को और कब्र के अभिशापों को, बचा कर रखा है और ये सारी चीजें पूरी तरह स्वाभाविक, एकदम सामान्य नियमों के परिणाम हैं। ''मात्र थोड़े से अभ्यास के साथ, विचार आकृति किसी भी व्यक्ति के द्वारा बनाई जा सकती है परन्तु सुबह सबसे पहले अपने विचारों के अच्छे होने पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा क्योंकि, यदि तुमने बुरी आकृति बनाई, तो विश्वस्त रूप से ये विचार आकृति, पलट कर तुम पर ही वार करेगी और शायद, भौतिक रूप में, मानसिक रूप में अथवा सूक्ष्मशरीरी अवस्थाओं में, तुमको कठोरतम क्षति पहुॅचायेगी।''

अगले कुछ दिन व्यस्त थे, पारगमन (transit) वीजा लेना था, अंतिम तैयारियाँ करनी थीं, चीजों को बांधना था और शंघाई में वापस भेजना था। मेरा क्रिस्टल सावधानीपूर्वक पैक किया गया और मुझे भविष्य के उपयोग के लिए वहाँ वापस भेजा गया, ऐसे ही, मेरे चीनी कागजात, कागजात जिन्हें, संयोग से, अब अनेक उत्तरदायी व्यक्ति देख चुके हैं। मेरा व्यक्तिगत सामान, कपड़ों का एक सूट और बदलने के लिए आवश्यक अंडरवियर, जिसे मैंने एकदम न्यूनतम रखा। अब किसी अधिकारी के ऊपर विश्वास न करते हुए, मैंने हर चीज की, पासपोर्ट, टिकिट, मेडीकल सर्टिफिकेट और हर चीज की, फोटो प्रतियाँ बना लीं थीं। ''क्या तुम मुझे विदा करने आ रहे हो ?'' मैंने अपने नीग्रो दोस्तों से पूछा। ''नहीं,'' उन्होंने जवाब दिया। ''रंग भेद के चलते, हमको वहाँ पास में नहीं जाने दिया जाएगा।''

अंतिम दिन आ पहुॅचा, और मैं बस से गोदी की तरफ गया। अपने छोटे बक्से को लिए हुए, और अपने टिकिट को दिखाते हुए, मेरे सामने एक मांग आई कि, मेरे बाकी सामान कहाँ हैं, जिसका

84 अनुवादक की टिप्पिणी : एक्टोप्लाज्म, तंद्रावस्था में माध्यम के शरीर में से निकला हुआ एक पदार्थ माना जाता है।

मुझे सामना करना पड़ा। ''यही सब कुछ है,'' मैंने जवाब दिया। ''मैं और अधिक कुछ नहीं ले जा रहा हूँ।''

अधिकारी दुखी होकर परेशान हो गया – और संदेह में भी। ''यहॉ प्रतीक्षा करो,'' वह बड़बड़ाया, और जल्दी से अंदर के कार्यालय में गया। कई मिनिटों के बाद, वह एक अधिक वरिष्ठ अधिकारी के साथ आया। ''क्या यही तुम्हारा सामान है, श्रीमान् ?'' नये आदमी ने पूछा।

''यही है'', मैंने जवाब दिया।

उसने त्यौरियॉ चढ़ा कर मेरे टिकिटों की ओर देखा, उन्हें पुस्तकों में लिखी गई प्रविष्टियों के विरुद्ध मिलाया, जॉच किया और तब मेरे टिकिट और किताब के साथ लौटा। दस मिनिट बाद वह बहुत परेशान दिखते हुए वापस आया। मेरे टिकिट और दूसरे कागजात मुझे देते हुए उसने कहा, ''ये बहुत अनियमित है, भारत जा रहे हो और कोई सामान नहीं,'' अपने सिर को हिलाते हुए, वह मुड़ गया। पहले वाले क्लर्क ने इस पूरे मामले से अपने हाथों को धो लेना, लगभग तय कर लिया था क्योंकि वह मुड़ कर चला गया और जब मैंने उससे जहाज की स्थिति की जानकारी चाही, उसने कोई जवाब नहीं दिया। अंत में, मैंने अपने हाथ के नए कागजों की ओर देखा और देखा कि, एक बोर्डिंग कार्ड है, जिसमें सभी आवश्यक जानकारियॉ दी गई हैं।

मुझे जहाज के बगल की तरफ, लंबी दूरी तक चलना था और जब मैं पहुँचा, मैंने पुलिसमेन को वहाँ घूमते हुए परंतु सावधानी पूर्वक यात्रियों को निगरानी करते हुए देखा। मैं आगे चला, अपने टिकिट दिखाये और जहाज पर चढ़ने वाले लकड़ी के तख्ते (gangplank) की ओर चला। एक घंटा या इसके बाद, दो आदमी मेरे केबिन में आए और पूछा कि, मेरे पास सामान (luggage) क्यों नहीं है। ''परंतु मेरे प्रिय आदमियो,'' मैंने कहा, ''मैं सोचता था कि, ये स्वतंत्र लोगों का देश है ? मैं क्यों सामान के साथ उलझूँ ? मैं क्या ले जा रहा हूँ, निश्चित रूप से ये मेरा मामला है ?'' वह धीरे–धीरे बोला और भुनभुनाया, और उसने कागजों के साथ छेड़खानी की और कहा, ''ठीक है, हमें ये सुनिश्चित करना है कि, सभी चीजें ठीक–ठाक हैं। क्लर्क ने सोचा कि, चूंकि तुम्हारे पास कोई सामान नहीं है, तुम न्याय से भाग रहे हो। वह भी इसे सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा था।''

मैंने अपने संदूक की ओर इशारा किया। ''मुझे जो चाहिए वो सब यहाँ है; ये मुझे भारत तक ले जाएगा; भारत में मुझे दूसरा सामान मिल जाएगा।'' वह थोड़ा आराम में महसूस हुआ, ''आह! तो तुम्हारा दूसरा सामान भारत में है ? तब फिर, सब ठीक है।'' जब मैंने सोचा, ''हर बार, केवल तभी, जब यह वैधानिक रूप से होता है, जब मेरे पास वे पूरे कागजात होते हैं, जो लालफीताशाही मांगती है, जब मैं किसी देश में प्रवेश करता हूँ या उसे छोड़ता हूँ, मुझे परेशानी होती है, मैं खुद पर मुस्कुराया।''

जहाज के ऊपर जीवन बहुत सुस्त था, दूसरे यात्री, क्लास के ऊपर बहुत ध्यान देते थे और मेरे बारे में जो कहानी चली, वह थी ''केवल एक संदूक''। प्रथम दृष्टया, इसने मुझे मानव समाज के बाहर कर दिया, क्योंकि में इस देश के सामान्य सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करता था और मैं एकदम अकेला था जैसे कि, जेल में कैदी, परंतु एक बड़े अंतर के साथ कि, मैं चल फिर सकता था। दूसरे यात्रियों को, उनके द्वारा बैरे को बुला कर, अपनी कुर्सियों को मुझसे थोड़ा सा दूर खिसकवाते हुए देखना, ये बहुत आश्चर्यजनक लगता था।

हम न्यूयार्क के बंदरगाह से यात्रा शुरू करके जिब्राल्टर के जलडमरूमध्य (strait of Gibralter) में गए। भूमध्यसागर के पार, हमने अलेक्जेंडेरिया (Alexandria) को मिलते हुए और तब पोर्टसैयद (Port Said) की ओर जाते हुए, स्वेज नहर (Suez Canal)[85] की ओर जाते हुए, लाल सागर

85 अनुवादक की टिप्पिणी : पोर्ट सैयद बन्दरगाह और स्वेज की खाड़ी के बीच, स्वेज नहर, समुद्र के तल के समान, कृत्रिम, एक मार्गीय (one way) जल मार्ग है, जो उत्तर से दक्षिण की ओर जाता है। मिस्र में, स्वेज नहर स्थूमस के आर पार और भूमध्य सागरीय समुद्र को लाल सागर से जोड़ती है। ये नहर, एशिया महाद्वीप को अफ्रीका महाद्वीप से अलग करती है तथा यूरोप को पश्चिमी प्रशान्त महासागर से हो कर, हिन्द महासागर को जोड़ती है। ये विश्व के सर्वाधिक व्यस्ततम जलमार्गों में से एक मार्ग है। दस साल के समय में पूरा करने के बाद, इसे 17 नवम्बर 1969 को खोला गया था। आधुनिक जलयानों के द्वारा नहर का अत्यधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि यह एटलांटिक महासागर से हिन्द महासागर को जोड़ने का सबसे सस्ता और छोटा रास्ता है। इसके पश्चिमी किनारे की ओर इसके साथ–साथ, रेल लाइन और मीठे पानी की नहर चलती है। स्वेज

में प्रविष्ट हुए। गर्मी ने मुझे बुरी तरह परेशान किया, लाल सागर, वास्तव में उबल रहा था, परंतु अंत में ये समाप्त हुआ, और हमने अरब सागर को पार किया और अंत में बम्बई बंदरगाह पर आ कर उतरे। शहर में, बौद्ध पुजारी और मेरे कुछ दूसरे दोस्त थे, भारत से कलिंगपोंग जाने की यात्रा से पहले, मैंने उनके साथ एक सप्ताह गुजारा। कलिंगपोंग साम्यवादी जासूसों से और संवाददाताओं से पूरी तरह भरा हुआ था। नए पहुँचे हुए लोग, अंतहीन, संवेदनहीन, प्रश्न पूछे जाने के कारण, अपने जीवन को कमजोर पाते थे। वे प्रश्न, जिनका मैंने कभी उत्तर नहीं दिया, परंतु जारी रहे। मैं क्या कर रहा था। दूसरे के मामलों में दखल देने की, पश्चिमी लोगों की ये रुचि, मेरे लिए पूरी तरह रहस्य बनी रही, मैं वास्तव में, इसे समझ नहीं सका।

मैं कलिंगपोंग से बाहर जाते हुए और अपने देश तिब्बत में जाते हुए, बहुत खुश था। मेरी वहाँ प्रतीक्षा की जा रही थी। मैं व्यापारियों से, और उच्च लामाओं के एक दल से, मिला, जिनको मुफलिस (तंगहाल या गरीब) भिक्षु (mendicant monks) कहा जाता था। मेरा स्वास्थ्य तेजी से गिर रहा था और उसे लगातार, जल्दी–जल्दी विराम और विश्राम की आवश्यकता होती थी। अंत में, बहुत लंबे समय बाद, कुछ दस हफ्तों के बाद, ल्हासा की घाटी को अनदेखा करते हुए, हम हिमालय के एक ऊँचे स्थान में, अलग–थलग पड़े, एक लामामठ में पहुँचे। एक लामामठ, जो इतना छोटा और पहुँच के इतना बाहर था कि, चीनी साम्यवादी वहाँ पहुँचने की जुर्रत भी नहीं कर सकते थे।

मैंने कुछ दिनों के लिए विश्राम किया। अपनी शक्ति को थोड़ा सा पुनः प्राप्त करने के प्रयास में, विश्राम किया और ध्यान किया। अब मैं घर में था, और बरसों बाद, पहली बार, प्रसन्न था। पश्चिमी लोगों का छलकपट और चालबाजी मुझे एक बुरे स्वप्न से अधिक नहीं दिखाई दी। रोजाना, तिब्बत में हुई घटनाओं को मुझे बताने के लिए और मुझे सुनने के लिए, आदमियों का एक छोटा समूह, मेरे पास आता, जब मैंने उन्हें इस अजनबी, खराब हमारी सीमाओं के बाहरी विश्व के बारे में बताता।

मैं, सुख और शांति प्राप्त करते हुए, परिचित रस्मोरिवाज में सभी प्रार्थनाओं में शामिल हुआ। परंतु, फिर भी मैं, एक अलग सा आदमी था, एक आदमी जो मरने के लिए लगभग तैयार था और जिसे दुबारा जीना था। एक आदमी, जिसे अजनबी अनुभवों के बीच गुजरना था और जिंदा प्राणियों के एक बड़े समूह के बीच गिरना था। फिर भी, ये इतना अधिक अनोखा था ? हमारे दक्ष पुरुषों में से अनेक, इसको जीवन के बाद जीवन, अनेकों जीवन तक करते हैं। दलाई लामा ने, एक नए जन्मे, नवजात बच्चे के शरीर को, अपने लिए लेते हुए, खुद इसे बार–बार किया। परंतु, अंतर केवल ये था, मैं एक प्रौढ़ व्यक्ति के शरीर को लेने वाला था और केवल अहम् ही नहीं, वल्कि पूरे शरीर का एक–एक कण, उसके शरीर को, अपने रूप में ढालने वाला था। यद्यपि मैं ईसाई नहीं हूँ, ल्हासा में अपने अध्ययन में, मुझे ईसाइयों की बाइबल पढ़नी पड़ी थी और इसके ऊपर व्याख्यान सुनने पड़े थे। मैं जानता था कि, बाइबिल में ऐसा कहा गया है कि ईसा का शरीर, मैरी और जोसेफ के पुत्र, एक ''सूर्य के पुत्र की आत्मा'' ने अपने लिए लिया था और वह बाद में ईसा बना। मैं ये भी जानता था कि, ईसाई पादरियों ने, ईसा की कुछ शिक्षाओं को प्रतिबंधित करने के लिए, 60 ई. में एक सम्मेलन किया था। अवतार को प्रतिबंधित कर दिया गया, दूसरे के शरीर को अपने लिए लेना और अनेक–अनेक विषय, जो ईसा द्वारा बताए गए थे, उनके साथ प्रतिबंधित कर दिये गये।

मैंने अपनी काँच विहीन खिड़कियों में से, काफी नीचे, ल्हासा के शहर को देखा। ये अनुभव करना कठिन था कि, घृणित साम्यवादी, वहाँ प्रभारी थे। अभी तक, वे आश्चर्यजनक वायदों के द्वारा, नौजवान तिब्बतियों के ऊपर विजय पाने की कोशिश कर रहे थे। हमने इसे, ''मुख में राम बगल में

नहर का रख रखाब, स्वेज नहर अधिकरण (SCA), मिस्र, के द्वारा किया जाता है और वही इसका स्वामित्व रखता है। व्यापारिक जलयानों को, इसे युद्धकाल में और शान्तिकाल में, बिना किसी भेदभाव के, समान रूप से उपयोग करने की अनुमति है। अगस्त 1994 में, इसको चौड़ा करने और विस्तारित करने, का कार्य प्रारम्भ किया गया, जिससे एक दिन में गुजरने वाले जहाजों की संख्या 49 से बढ़ कर 97 हो गई। नई स्वेज नहर ने, जिसे 6 अगस्त दो हजार पन्द्रह को आवागमन के लिये चालू किया गया, इसको दूना कर दिया है। गुजरने वाले जलयानों द्वारा दिया गया कर (toll tax), मिस्र की सरकार की आय का एक महत्वपूर्ण साधन है।

छुरी'' या ''चाकू के ऊपर शहद लगाना'' कहा, जिसने जितना ज्यादा शहद चाटा, उतना ही जल्दी उसको तीखा चाकू काट देगा। चीनी सेनायें, पार्गो कलिंग (Pargo Kaling) की सुरक्षा में खड़ीं थीं। चीनी सेनायें, हमारे पुराने धर्म के ऊपर उपहास करते हुए, ताना मारते हुए, हमारे मंदिरों के प्रवेशद्वारों पर खड़ी थीं, जैसे कि पश्चिमी विश्व में हड़ताल के समय, उसे घेरा जाता है। भिक्षुओं का अपमान किया जा रहा था, हाथापाई तक की जा रही थी और निपढ़ किसान और गड़रियों को वैसा ही करने के लिए, प्रोत्साहित किया जा रहा था।

हम यहाँ, साम्यवादियों से सुरक्षित थे, लगभग इस न चढ़ सकने योग्य चट्टान के ऊपर, सुरक्षित। हमारे आसपास का पूरा क्षेत्र, गुफाओं द्वारा मधुमक्खी के छत्ते की तरह से भरा हुआ था, और वहॉ उतावली में बनाया गया, केवल एक ही रास्ता था, जो घूम फिर कर, चट्टान के किनारे से होता हुआ, जहाँ से, मात्र एक बार गिर जाने से, जो फिसल कर गिरे तो एक हजार फुट नीचे गिर कर मरना ही होता था। यहॉ, खुले में साहस का काम करते हुए, हमने भूरे रंग के चोगे पहने, जो चट्टान के रंग से मिलते जुलते थे। भूरे चोगे, जो हमें चीनी लोगों की निगाह से, उनके द्वारा द्विनेत्री दूरबीन (binocular) प्रयोग करते हुए देखे जाने पर, बचाते थे।

काफी दूरी पर, मैं सर्वेक्षण यंत्रों, खड़े व पड़े कोण नापने के यंत्रों (theodolites) के साथ और नापने वाली छड़ियों (measuring sticks) के साथ चीनी विशेषज्ञों को देख सका। वे जमीन पर खूंटिया गाड़ते हुए, अपनी किताबों में प्रविष्टियाँ करते हुए, चींटियों की तरह रेंगते थे। एक भिक्षु, एक सैनिक के सामने से होकर गुजरा, चीनी ने, रायफल के बोनट से, भिक्षु की टांग के ऊपर, चोट मारी। बीस गुना आवर्धन करने वाली द्विनेत्री दूरबीन – मेरा एक विलास, जिसे मैं लाया था, से मैं खून की धार को और चीनी के चेहरे पर, दुख में प्रसन्न होने वाली आई मुस्कान को, देख सका। पोटाला के गर्व को और मेरे खुद के चाकपोरी को बताते हुए, ये काँच अच्छे थे। मेरे सिर के पीछे कुछ चीज चमकी, कुछ चीज भूली जा रही थी। मैंने फिर से द्विनेत्री दूरबीन को फोकस किया और दुबारा देखा। सर्प मंदिर झील के पानी के ऊपर, कुछ नहीं हिला। ल्हासा की गलियों में कोई कुत्ते, कुछ नहीं खोद रहे थे, कचरे के ढरों में से कुछ नहीं सूंघ रहे थे। कोई जंगली चिड़ियाँ नहीं, कोई कुत्ते नहीं। मैं अपने बगल में खड़े भिक्षु की ओर मुड़ा। ''कम्युनिस्टों ने खाने के लिए सबको मार डाला था। साम्यवादी कहते थे, कुत्ते किसी काम के नहीं थे, इसलिए उनको खाना नहीं मिलना चाहिए, परंतु वे दूसरों का खाना बनने की सेवा कर सकते थे। किसी कुत्ते या बिल्ली को या किसी भी प्रकार के पालतू जानवर को पालना, अब ये एक अपराध था।'' मैंने भयभीत हो कर भिक्षु की ओर देखा। पालतू जानवर को रखना एक अपराध! सहज भाव से मैंने फिर चाकपोरी की ओर देखा।

''हमारी बिल्लियों का यहॉ क्या हुआ ?'' मैंने पूछा।

''सब मार दी गईं और खा ली गईं,'' उत्तर था।

मैंने दुःख की आह भरी और सोचा, ''ओह यदि मैं लोगों को साम्यवाद के बारे में सत्य बता सकूँ, तो वे वास्तव में, लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करेंगे। समझो कि, पश्चिमी लोग ही इतने गलत काम करने में हिचकिचाने वाले नहीं होते।

मैंने भिक्षुणियों के समुदाय के ऊपर सोचा, जिनके बारे में मैंने एक उच्च लामा से सुना था, जो अपनी यात्रा पर, एकमात्र जीवित रहने वाली भिक्षुणी से, हाल ही में मिला था और जिसने अपनी बाहों में मर जाने से पहले, उसकी कहानी को सुना था। उसकी भिक्षुणियों का समुदाय, उसने उसे बताया, चीनी सैनिकों के जंगली दस्ते द्वारा अतिक्रमित किया गया था। उन्होंने पवित्र चीजों को अपवित्र कर दिया था और उन सब चीजों को चुरा लिया था, जो कीमती हो सकतीं थीं। बूढ़ी और वरिष्ठ, उन्होंने उसको नंगा कर दिया था और उसको घी लगा कर मला था। तब उन्होंने उसको जिंदा जला दिया और हँसे और उसकी चीखों के साथ, जोर से, आनंद के साथ चिल्लाए। अंत में, बेचारी काली पड़ गई उसकी लाश

जमीन पर शांत पड़ी रही, और एक सैनिक ने, यह निश्चित करने के लिए कि वह मर चुकी है, उसके शरीर की पूरी लंबाई में, बोनट घुसा–घुसा कर देखा ।

बूढ़ी भिक्षुणियों को नंगा किया गया और उनमें लाल तपते हुए लोहे के सरिये घुसाए गए, जिससे वे कष्ट में मर गईं। जवान भिक्षुणिओं से, एक दूसरे के सामने, हरेक के साथ, बलात्कार किया गया, जब तक सैनिक डटे रहे, तीन दिन के भीतर कुछ बीस या तीस बार बलात्कार हुआ। तब वे इस खेल से थक गए, या पूरी तरह चुक गए, क्योंकि तब वे उन औरतों की ओर, अंतिम अशिष्टता के पागलपन में मुड़े। कुछ औरतों के अंग काट दिए गए, कुछ को फाड़ कर खोल दिया गया। फिर भी दूसरों को, बाहर कटु शीत में ही, नंगा करके हाँक दिया गया।

भिक्षुओं का एक छोटा दल, जो ल्हासा की यात्रा कर रहा था, उनके पास आया और उनके अंदर चमक रही जीवन की हल्की सी ज्योति को जलाए रखने के प्रयास में, औरतों को अपनी पोशाकें देते हुए, उनकी मदद करने की कोशिश की। चीनी साम्यवादी सैनिकों ने, वे भी ल्हासा की ओर जा रहे थे, उन भिक्षुओं के प्रति, निष्ठुरता के साथ, इतना खराब व्यवहार किया कि, उनको लिख पाना संभव नहीं है। उन भिक्षुओं का, बचने की उम्मीद के परे हद तक, अंगभंग किया गया, उनको नंगा, खून बहते हुए, जब तक कि वे खून के बहने से मर न जायें, खुला छोड़ दिया गया। केवल एक औरत बची थी; वह एक खाई में गिर गई थी और प्रार्थना के झण्डों के बीच में, जिनको चीनियों ने अपने चौकियों से फटे कपड़े के रूप में फेंक दिया था, छिप जाने से बच गई थी। अंत में लम्बे समय के बाद, लामा और उनका सहयोगी बेदीसेवक (acolyte) वीभत्स दृश्यों की ओर आए और सबने एक साथ औरतों के मरते हुए होंठों से पूरी कहानियॉ सुनी।

''ओह! पश्चिमी विश्व को साम्यवाद का यह आतंक बताना,'' मैंने सोचा, परंतु जैसा मुझे बाद में पता लगा, पश्चिम में, सत्य के संबंध में, अपनी कीमत पर, कोई लिख या बात नहीं कर सकता। सभी आतंकों को चिकना किया जाना चाहिए, सभी के ऊपर शिष्टता की छाप लगानी चाहिए। क्या साम्यवादी (communists) ''शिष्ट हैं'' जब वे बलात्कार करते हैं, अंग भंग करते हैं या मार देते हैं ? यदि पश्चिम के लोग इन सब बातों को उनसे, जिन्होंने पीड़ा झेली है, सच्चाई को सुनेंगे, तो वे वास्तव में, अपने आपको ऐसे आतंकों से बचायेंगे, क्योंकि साम्यवाद, कैंसर की तरह से कपटी है, और जबकि लोग ये सोचने के लिए तैयार हैं कि, ये भयानक चलन, एक दूसरी प्रकार की राजनीति मात्र है, तो वहाँ वास्तव में, दुनियाँ के लोगों के लिए खतरा है। एक पीड़ित के रूप में, मैं कहूँगा कि, – लोगों को छपाई में और चित्रों में (कोई बात नहीं, ये कितना भी भयानक क्यों न हो) दिखाओ। ''लोहे के परदों (iron curtains) के पीछे क्या चल रहा है।

जब मैं इन चीजों के ऊपर मनन कर रहा था, और अनियमितरूप से अपने सामने के परिदृश्य की जॉच कर रहा था, एक बूढ़ा आदमी झुका और एक छड़ी के सहारे चलते हुए, मेरे कमरे में प्रविष्ट हुआ। उसके चेहरे पर कड़ी पीड़ा की रेखाऐं थीं, और उसकी हड्डियाँ विशेष रूप से बाहर निकलीं हुईं थीं, केवल चमड़ी के द्वारा कसी हुई, मुरझाई हुई खाल। मैंने देखा कि वह अंधा था, मैं उसकी बाँह पकड़ने के लिए उठा। उसकी आँखों के गड्ढे, गुस्से से, लाल छेदों की तरह, चमक रहे थे और उसकी चाल अनिश्चित थी, जैसी कि नए अंधे की होती है। मैंने उसे अपने पास बिठाया, और ये सोचते हुए हल्के से उसका हाथ पकड़ा, कि इस अतिक्रमित देश में, अब हमारे पास कुछ भी नहीं है, जिससे इसकी पीड़ा को घटाया जा सके और इसकी सूजी हुई आँखों के गड्ढों के दर्द को, कुछ कम किया जा सके।

वह धैर्यपूर्वक मुस्कुराया और उसने कहा, ''तुम मेरी आँखों के ऊपर आश्चर्य कर रहे हो, भाई। मैं अपने एक पवित्र स्थान पर दण्डवत् करता हुआ, अपने पवित्र मार्ग पर था। मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ। मैंने टकटकी लगाई, पोटाला को देखा और दुर्घटनावश उसी समय, एक चीनी अधिकारी मेरी

ऑख की सीध में था। उसने अभियोग लगाया कि, मैं दुर्भावनापूर्वक उसको नजर बांध कर देख रहा था, मैं उसके ऊपर हमला करता हुआ दिख रहा था। मुझे एक रस्से से कार के साथ बांध दिया गया और मैदान में खींचा गया। वहॉ दर्शकों को इकट्ठा किया गया, और उनके सामने मेरे आँखें खोदी गईं और बाहर निकाल कर मेरे ऊपर फेंक दीं गईं। मेरे शरीर में, जैसा तुम निश्चित रूप से देख सकते हो, तमाम अधभरे हुए घाव हैं। मुझे यहाँ दूसरों के द्वारा लाया गया और अब मुझे, यहाँ तुम्हारा अभिनंदन करते हुए खुशी हो रही है।''

जब उसने अपनी पोशाक को खींच कर खोला, मैं आतंक से धक रह गया क्योंकि, जिधर से उसको सड़क पर घसीटा गया, उसका शरीर, कच्चा लाल मांस, था। मैं इस आदमी को अच्छी तरह जानता था। उसके अधीन बेदीसेवक के रूप में, मैंने मन की चीजों का अध्ययन किया था। मैं उसे तब से जानता था, जब मैं लामा बना, क्योंकि वह मेरे निर्वाचकों में से एक था। वह उन लामाओं में से एक था, जब मैंने, उस अल्प मृत्यु की रस्म को झेलने के लिए, पोटाला में काफी नीचे यात्रा की थी। अब वह मेरे बगल से बैठा था, और मैं जानता था कि, उसकी मृत्यु अब अधिक दूर नहीं है।

''तुमने बहुत यात्रायें की हैं और काफी कुछ देखा और झेला है,'' उसने कहा। ''अब मेरा इस जीवन में एक अंतिम कार्य है, एक अंग्रेज आदमी के जीवन की, जो अपने शरीर को छोड़ने के लिए उत्सुक है, जिसे तुम ले सकते हो, आकाश के अभिलेखों की कुछ झलक दिखाने में, तुम्हारी मदद करना। तुमको केवल झलकियाँ दिखाई देंगी, क्योंकि इसमें काफी ऊर्जा लगती है और हम दोनों ही, शक्ति में, काफी कमजोर हैं।'' वह रुका, और तब अपने चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान के साथ, उसने कहना जारी रखा। ''यह प्रयास, मेरे इस वर्तमान जीवन को समाप्त कर देगा, और इस अंतिम कार्य के द्वारा, मैं उत्कृष्टता (merit) प्राप्त करने के इस अवसर को पा कर प्रसन्न हूँ। भाई, मेरे लिए यह संभव बनाने के लिए तुमको धन्यवाद। जब तुम अपनी सूक्ष्मशरीर यात्रा से यहाँ लौटोगे, तो मैं तुम्हारे बगल से मरा हुआ मिलूँगा।

आकाशीय अभिलेख (Akashic Records)! ये ज्ञान का कितना अद्‌भुत स्रोत था। ये कितना दु:खमय है कि, लोग इसको खोजते नहीं हैं। इसकी संभावनाओं के बदले में, परमाणु बम के साथ छेड़छाड़ करते हैं। हर चीज, जो हम करते हैं, हर चीज, जो होती है, आकाश के ऊपर अमिटरूप से अपना प्रभाव छोड़ती है। एक नरम माध्यम[86], जो द्रव्य के अंदर भी घुसा रहता है। जब से पृथ्वी बनी, तब से इसके ऊपर चली गई हर चाल, इन अभिलेखों में उपलब्ध है, जिसे आवश्यक प्रशिक्षण के साथ, देखा जा सकता है। उन लोगों के लिए, उनकी खुली आँखों से, विश्व का इतिहास उनके सामने है। एक पुराना भविष्य कथन कहता है कि, इस शताब्दी के अंत में, वैज्ञानिक, आकाशीय अभिलेखों को, अपने इतिहास को, देखने में सक्षम होंगे। ये जानना रुचिकर होगा कि, क्लियोपात्रा (Cleopatra)[87]

---

86 अनुवादक की टिप्पिणी : विज्ञान में इस माध्यम को काल्पनिक ईथर (Hypothetical ether) कहते हैं, इसके अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है परन्तु तरंग के चलने के लिये एक पूर्ण प्रत्यास्थ, सर्वव्यापी माध्यम की आवश्यकता होती है, जिसकी पूर्ति यह काल्पनिक माध्यम करता है।

87 अनुवादक की टिप्पिणी : क्लियोपात्रा VII फिलोपेटर, (69 ईसा पूर्व से 12 अगस्त 30 ईसा पूर्व तक), जिसे इतिहास में केवल क्लियोपात्रा के नाम से जाना जाता है, मिस्र की अंतिम सक्रिय फराहो थी। उसके राज्य के बाद, मिस्र, उस समय स्थापित हुए नए रोमन साम्राज्य का, एक राज्य बन गया। इसका एक पुत्र सिजेरियन (Caesarion) था। क्लियोपात्रा तोलेमाइक (Ptolamaic) राजवंश की सदस्य थी,, जिसने मिस्र पर, सिकन्दर महान की मृत्यु के बाद, राज्य किया। तोलेमी लोगों ने हमेशा अपने राज्यकाल में ग्रीस की भाषा बोली और मिस्री भाषा बोलने से मना कर दिया। यही कारण है कि, मिस्री और ग्रीस दोनों भाषाएं, राज्य के न्यायालयीनं दस्तावेजों में जैसे कि रोसेटा स्टोन, में पाई जाती हैं। इसके विपरीत क्लियोपात्रा ने मिस्री भाषा सीखने का प्रयास किया था और स्वयं को एक मिस्री देवी, आईसिस (ISIS) के अवतार के रूप में बताया था। क्लियोपात्रा ने अपने प्रारंभ के दिनों में, अपने पिता के साथ और बाद में अपने भाईयों, तोलेमी XIII और तोलेमी XIV, जिसके साथ उसने मिस्री परम्पराओं के अनुसार विवाह किया था ,के साथ राज्य किया परंतु अंत में, वह एकमात्र शासक बन गई। शासक के रूप में उसने ज्यूलिट सीजर के साथ संबंध बनाए, इससे राजगद्दी पर से उसकी पकड़ फिसल गई। बाद में उसने अपने पुत्र सीजेरियन को सीजर के साथ, सह–शासक के रूप में नामित किया। 12 अगस्त 30 ईसा पूर्व को उसकी मृत्यु हुई। इसके संबंध में दो कारण, समझे जाते हैं; या तो उसकी हत्या कराई गई अथवा उसने अपने बक्ष पर जहरीले नाग द्वारा डसवा कर आत्महत्या की। क्लियोपात्रा का नाम, ग्रीस नाम क्लियोपात्रा, से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'पिता से मिली हुई भव्यता' अर्थात् ''वह, जिसका पिता भव्य है।'' क्लियोपात्रा की मां के संबंध में जानकारी अप्राप्त है।

प्राचीन विश्व में, क्लियोपात्रा को उसके अत्यन्त रूपवती होने के कारण, जाना जाता था। जब वह छोटी लड़की ही थी और प्रेम के मामलों में अनुभवहीन, परंतु वह एन्टोनी (Antony) से तब मिलने जा रही थी, जब औरतों की सुन्दरता उनके चरम सीमा पर होती हैं। उसको आशा थी कि, वह एन्टोनी को अपने चरणों में झुका लेगी क्योंकि, सीजर पेम्पी उससे परिचित था। एन्टोनी के साथ उसके दो जुड़वां पुत्र, क्लियोपात्रा स्लेने II (Cleopatra Sclene II) तथा एलेक्जेंडर हैलियोस (Alexander Helios) पैदा हुए। वास्तव में, कुल मिला कर, उसकी सुन्दरता अतुलनीय नहीं थी, फिर भी क्लियोपात्रा, अपनी विनोदप्रियता, छवि और स्वर की मधुरता के कारणं आकर्षक थी।

ने एंथोनी (Anthony) से, वास्तव में, क्या कहा था, और श्रीमान् ग्लेडस्टोन (Gladstone) की प्रसिद्ध टिप्पिणियाँ क्या थीं। मेरे लिए, मेरे अपने आलोचकों का चेहरा देखना, जब वे गधे थे, जब उन्हें ये स्वीकार करना पड़ेगा कि, मैंने कुल मिला कर सत्य लिखा था, एक प्रसन्नतादायक चीज होगी, लेकिन कहने में दुःख होता है, कि तब वहाँ इसे देखने के लिए, कोई नहीं होगा।

परंतु ये आकाशिक अभिलेख, क्या हम अधिक स्पष्टरूप से इसकी व्याख्या कर सकते हैं ? हर चीज जो होती है, माध्यम के ऊपर, जो हवा में भी घुसा रहता है, स्वयं का ''प्रभाव'' डालती है। एक बार कोई ध्वनि हुई, या कोई कार्य प्रारंभ किया गया, ये हमेशा के लिए वहाँ (मौजूद) है। उचित उपकरणों की सहायता से, कोई भी इसे देख सकता है। इसे प्रकाश के रूप में, अथवा कंपनों के रूप में, जिसे हम प्रकाश या दृष्टि कहते हैं, देखा जा सकता है। प्रकाश, एक निश्चित वेग से चलता है। जैसा कि हर वैज्ञानिक जानता है, वह रात में उन तारों को देखता है, जो अब अस्तित्व में नहीं हैं। उनमें से कुछ तारे इतनी दूर हैं कि, उनसे आने वाला वह प्रकाश, हम तक पहुँच रहा है, जो पृथ्वी पर आने से पहले, उसके वहाँ होने पर शुरू हुआ था। हमारे पास ये जानने का कोई तरीका नहीं है कि, वह तारा दस लाख साल पहले, या ऐसे ही कुछ समय पहले, मर चुका है, क्योंकि प्रकाश अब भी, शायद लाखों साल बाद तक भी, हम तक पहुॅचता रहेगा। किसी को ध्वनि का ध्यान दिलाना आसान होगा। हम तड़ित की चमक देखते हैं और उसकी आवाज उसके कुछ समय बाद सुनते हैं, ये ध्वनि की मंदगति के कारण होता है, कि हमें चमक देखने के कुछ समय बाद, उसकी आवाज सुनाई देती है। ये प्रकाश की मंदता है, जो किसी उपकरण को ''भूतकाल'' को देखने के लिए संभव बना देती है।

यदि हम इसी समय किसी ग्रह पर जाऐं, जो काफी दूरी पर है और जहाँ से प्रकाश को हम तक पहुँचने में एक साल लगता है, तो हम जैसे ही यहाँ से छोड़ेंगे, हम उस प्रकाश को देखेंगे, जो वहाँ से एक साल पहले शुरू हुआ होगा। यदि हमारे पास, कोई काल्पनिक चीज, अति शक्ति, अति संवेदनशीलता वाला दूरदर्शी जैसा कुछ है, जो पृथ्वी के किसी स्थान पर फोकस कर सकता हो, तो ग्रह से हम, पृथ्वी के उस दृश्य को देखेंगे, जो एक साल पुराना होगा। चलने की सामर्थ्य दिए जाने के साथ, हमारे अच्छे से अच्छे दूरदर्शी, इतनी दूर स्थित एक ग्रह पर, जहाँ से पृथ्वी तक प्रकाश आने में दस लाख वर्ष लगते हैं, वहाँ से हम पृथ्वी को ऐसा देखेंगे, जैसी कि यह दस लाख वर्ष पहले थी। काफी दूर और आगे जाने पर, वास्तव में, अंत में, हम ऐसे स्थान पर पहुँचेंगे, जहाँ से हम पृथ्वी को जैसी वह जन्म के समय थी, देख सकेंगे और सूर्य को भी।

आकाशीय अभिलेख, हमको ये सब करने के लिए सक्षम बनाते हैं। विशेष प्रशिक्षण के द्वारा हम लोकांतर में जा सकते हैं, जहाँ समय और आकाश दोनों का ही अस्तित्व नहीं है और जहाँ बदले में दूसरे आयाम, इनका स्थान ले लेते हैं तब कोई भी सब कुछ देखता है। दूसरे समय और दूसरे आयामों को भी ? ठीक है, एक सरल उदाहरण के रूप में, मान लो कि, किसी के पास एक मील लंबा, एक पतला धागा, यदि आप चाहें तो सिलाई का धागा है। एक आदमी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना है। जैसा पृथ्वी पर है, हम रुई के धागे पर होकर नहीं जा सकते और न ही उसकी परिधि पर हो कर। किसी को भी, सतह के ऊपर हो कर, एक मील दूर जाना होगा, और तब वह दूसरी तरफ

उसे अपनी प्रतिभा के लिए भी जाना जाता है। वह कम से कम, नौ भाषाएं बोल सकती थीं और उसे दुभाषिये की आवश्यकता कभी नहीं हुई।

पहुँचेगा, दूसरा एक मील। यात्रा लंबी है। सूक्ष्म शरीर से, हम सीधे अंदर घुस कर, जा सकते हैं। आकाशीय अभिलेखों से हो कर गुजरने का, एक अत्यंत सरल उदाहरण है, यदि कोई उसे जानता हो।

आकाशीय अभिलेखों का उपयोग, गलत उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता। इसे ऐसी सूचना प्राप्त करने के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता, जो दूसरों के लिये हानिकारक हो और न ही विशेष व्यवस्था के बिना, कोई कुछ देख सकता है अथवा किसी के निजी मामलों के ऊपर चर्चा कर सकता है। कोई वास्तव में, उन चीजों की, जो ठीक से इतिहास के प्रकरण हैं, देख और चर्चा कर सकता है। अब, मैं किसी दूसरे के निजी जीवन की झलकियों को देखने जा रहा था, और अंत में, मुझे ये निश्चय करना पड़ा; क्या मुझे इस व्यक्ति के शरीर को, अपने विस्थापन के रूप में लेना चाहिए ? मेरा शरीर बहुत तेजी से गिर रहा था, और अपने निश्चित किए गए कार्य को पूरा करने के लिए, उसके साथ बंधने के लिए, मुझे एक दूसरा शरीर लेना था, जब तक कि, मैं अपने एक–एक कण को उससे न बदल लूँ।

मैंने स्वयं को व्यवस्थित किया और अंधे लामा के बोलने का इंतजार किया।

अध्याय आठ

धीमे से, ऊँची चोटियों के चमकीलेपन की रूप रेखाओं को चमकाते हुए, सूर्य पहाड़ियों की दूर श्रृंखला के पीछे डूबा। हल्की धुंधली झागदार धारा, ऊँचे–ऊँचे कंगूरों से आते हुए मंद प्रकाश को, और असंख्य रंगों की छापों को, जो शाम की नर्म हवा और अनिश्चितताओं के साथ, हिल रहीं थीं, बदल रहीं थीं, पकड़ रहीं थीं। गहरे बैंगनी रंग की परछाइयों ने, रात के प्राणियों को, जो खेलने के लिए आ रहे थे, फूलों में से चुरा लिया। धीमे–धीमे, ऊँचे, और ऊँचे, चढ़ते हुए जब तक कि, सुनहरी छतों ने अंतिम चमक को परावर्तित नहीं किया, उसके काफी पहले, खुद को गहरे अंधेरे में डुबाते हुए, मखमली अंधेरा, पोटाला के आधार की ओर फैल गया। एक–एक करके, अंधेरे में प्रदर्शन के लिए रखे गए काले आधार के ऊपर, जैसे कि, नगीने चमक रहे हों, प्रकाश की चमकें उभरीं।

घाटी की पर्वतीय दीवारें, अपने पीछे के प्रकाश को तीव्रता में घटाते हुए, कड़ी और सीधी खड़ीं थीं। यहाँ अपने चट्टानी घर में, जब उसने चट्टानी दर्रे को प्रदीप्त किया, हमने ढलते हुए सूर्य की हल्की सी झलक पायी। तब हम भी अंधेरे में आ गए। हमारे लिए कोई रोशनी नहीं, हमें पूरे अभ्यारण्य के झुठला देने के डर से मना कर दिया गया था। जब हम धोखे से अतिक्रमित किए गए अपने देश को नजर गढ़ा कर देख रहे थे, रात के अंधेरे और अपने विचारों के अंधेरे के सिवाय, हमारे लिए कुछ भी नहीं था।

''भाई,'' अंधे लामा ने, जिसकी उपस्थिति, मैं अपने अप्रसन्न विचारों के ऊपर सोचते करते हुए, लगभग भूल गया था, कहा। ''भाई, क्या हम चलें ?'' हम दोनों साथ–साथ पद्मासन में बैठे और जो हम करने जा रहे थे, उसके ऊपर ध्यान किया। रात की नर्म हवाओं ने, परमानन्द में, धीमे से कुछ कहा, और मानो कि ये, चट्टानों की दीवारों और कंगूरों के आसपास, खेल कर रही हैं, हमारी खिड़की में फुसफुसाईं। अप्रसन्न करने वाले झटके के साथ नहीं, जो बहुधा ऐसी मुक्ति के साथ होता है, अंधा लामा – अब और अधिक अंधा नहीं – और मैं, दूसरे लोक की स्वतंत्रता के अंदर, अपने पार्थिव शरीरों से ऊपर उठे।

''दुबारा देखना अच्छा है,'' लामा ने कहा, ''क्योंकि जब एक रोशनी चली जाती है, तो दूसरा खजाना मिल जाता है।'' अपने जाने पहचाने रास्ते के ऊपर, उस स्थान तक, जिसे हमने ''स्मृतियों का हॉल (hall of memories)'' नाम दिया था, हम साथ–साथ ऊपर तैरते गए। शांति में प्रवेश करते हुए हमने देखा कि, दूसरे लोग, शोध में, आकाशीय शोध में, लगे हुए थे, परंतु उन्होंने क्या देखा, ये हमारे लिए ठीक वैसे ही अदृश्य था, जैसे कि हमारे दृश्य, उनके लिए अदृश्य रहे होंगे।

''हम कहाँ से शुरू करें, भाई,'' बूढ़े लामा ने कहा। ''हम घुसपैठ नहीं करना चाहते,'' मैंने जवाब दिया, ''लेकिन हमको ये देखना चाहिए कि, जिसके साथ हमें व्यवहार करना है, वह किस तरह का आदमी है।''

हमें स्पष्ट दिखाई देने के लिए, जैसे–जैसे चित्र तीखे उभरते गए, हम लोगों के बीच, थोड़ी देर के लिए, शांति रही। ''अरे (Eek)!'' मैं खतरे से कूदता हुआ, विस्मय से चिल्लाया। ''वह शादीशुदा है। मैं इस सम्बंध में क्या करूँ ? मैं ब्रह्मचारी भिक्षु हूँ! मैं इसके बाहर आ रहा हूँ।'' मैं महान खतरे के साथ मुड़ा और हंसी के साथ हिलते हुए बूढ़े आदमी की निगाह ने, मुझे रोक दिया। कुछ समय के लिए, ये आनंद इतना अधिक था कि, इसे कहा नहीं जा सकता।

''भाई, लोबसांग,'' उसने अंत में कहने की व्यवस्था की, ''तुम मेरे घटते हुए दिनों को, अत्यधिक उत्साह पूर्ण बना रहे हो। जब तुम बैठे, तुम इतना ऊँचा उछले, तो मैंने पहले सोचा कि, शैतानों के पूरे वर्ग ने तुम्हें खा लिया है। अब भाई, यहाँ कोई समस्या नहीं है, परंतु पहले तुम मुझे, मित्रता पूर्वक, अपने बारे में जॉच करने दो। तुम मुझे पश्चिम के बारे में, और उनके अजनबी विश्वासों के बारे में बता रहे

थे। तब तुम्हें मैं यह बताऊँ कि, उनकी अपनी बाइबल के अनुसार : ''विवाह सभी में आदरणीय है'' (हिब्रूज का अध्याय 13, श्लोक 4)। एक बार फिर, उसे हंसी का दौरा पड़ा, और अधिक असंतोष के साथ मैंने उसको देखा कि, जब तक कि वह थक कर, इससे पूरी तरह से रुक न जाए, उतना ज्यादा वह हंसता था।

''भाई,'' जब वह सक्षम हुआ, उसने कहना जारी रखा, ''जो हमें दिशा निर्देश देते हैं और हमें मदद करते हैं, उनके दिमाग में भी ये था। तुम और वह महिला, सहचारिता की अवस्था में एक साथ रह सकते हो, क्योंकि क्या हमारे स्वयं के भिक्षु और भिक्षुणियाँ, एक ही छत के नीचे रहते हुए, साथ–साथ नहीं रहते ? हम इन परेशानियों को नहीं देखें, ये कहाँ नहीं होतीं। चलें, हम अभिलेखों के साथ में जारी रखें।''

दिल में अनुभव की गई आह के साथ, मैंने गूंगेपन से सिर हिलाया। इस क्षण, शब्द मेरे लिए सीमा के एकदम बाहर थे। जितना ज्यादा मैं इसके ऊपर सोचता था, उतना ही कम मैं इसको पसंद करता था। मैंने, सुनहरे प्रकाश के देश में, कहीं सुख से बैठे हुए अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डौंडुप के बारे में सोचा। मेरी अभिव्यंजना काली, और ज्यादा काली, हो गई होगी, क्योंकि बूढ़े लामा ने दुबारा हंसना शुरू कर दिया।

अंत में, हम दोनों शांत हो गए और एक साथ आकाशीय अभिलेखों को देखने लगे। मैंने उस आदमी को देखा, जिसका शरीर, आशा की जाती थी कि, मैं लूंगा। बढ़ती हुई दिलचस्पी के साथ, मैंने पाया कि, उसके सर्जीकल उपकरण लगे थे। मेरी प्रसन्नता के लिए, यह स्पष्ट था कि, वह निश्चित रूप से जानता था कि, वह क्या कर रहा है, वह एक सक्षम तकनीशियन था, और जैसे ही मैंने, एक के बाद दूसरे प्रकरण में, उसे व्यवहार करते हुए देखा, मैंने अनैच्छिक रूप से अनुमोदन में अपना सिर हिलाया।

दृश्य चलते गए और जैसे ही मानो कि हम, यहाँ भीड़ में शामिल हुए, हम इंग्लैंड में लंदन का शहर देखने में सक्षम थे। यातायात में अंदर घुसती हुईं और बाहर आती हुईं और यात्रियों की महान भीड़ को लाती, ले जाती हुईं, बड़ी–बड़ी लाल बसें, गलियों में शोर कर रहीं थीं। एक नारकीय चीख और शोक पूर्ण क्रंदन फूटा, और शरण के लिए, हमने लोगों को अंजान पथरीली इमारतों में, जो गलियों में खड़ी थीं, छितराते हुए देखा। वहाँ लगातार, वायुयानरोधी गोलों की ''क्रम्प–क्रम्प'' की आवाज हो रही थी और युद्धक हवाई जहाज आकाश में उड़ रहे थे। हवाई जहाजों में से एक में से, आवाज करते हुए बम गिरे और वार बचाने के लिए हम, सहज भाव से नीचे सिर झुका कर दुबके। एक क्षण के लिए, वहाँ निस्तब्ध शांति थी और तब वूम (Whoom)! इमारतें हवा में छलांग भर रहीं थीं और धूल के रूप में, और मलबे के रूप में, नीचे गिरीं।

मैं, भवनों के पार, जिसे लोग ''महल'' कहते थे, के पूरे स्पष्ट दृश्य के साथ, लंदन की ऊँची छतों के ऊपर, लोहे के एक ऊँचे प्लेटफार्म के ऊपर, खड़ा हुआ दिखाई दिया। एक अकेला हवाई जहाज, बादलों में से नीचे डूबा, और इंग्लैंड के राजा के घर के ऊपर तीन बम गिराये। मैंने अपने आसपास देखा। आकाशीय अभिलेखों से देखते हुए, किसी मुख्य चरित्र ने जैसा किया, वैसा कोई देखता है, इसलिए बूढे लामा और मैंने, दोनों ने देखा मानो हम दोनों ही मुख्य आकृति (main figures) थे। मुझे ऐसा लगा कि, मैं लंदन की ऊँची–ऊँची छतों पर फैली हुई, आग से भागने की तैयारी में था। मैंने ऐसी चीजें पहले भी देखी थीं, परंतु मुझे अपने साथी को इसका उपयोग समझाना पड़ा। तब इसने मुझे डुबा दिया, वह आकृति, जिसे मैं देख रहा था–हवाई जहाज की उपस्थिति का पता लगा रही थी ताकि, जो लोग नीचे हैं, उनको उस आसन्न खतरे की, जो उनको डरा रहा था, चेतावनी दी जा सके। भौंपू (sirens) दुबारा बजे, सब साफ है, और मैंने देखा कि, आदमी नीचे उतरा और उसने अपने सिर पर से, हवाई हमले के वार्डन के, स्टील के टोप को हटा दिया।

एक मुस्कान के साथ, बूढ़ा लामा मेरी ओर मुड़ा, ''ये बहुत दिलचस्प है, पश्चिम में, मैंने घटनाओं

को इस तरह से नहीं देखा, मेरी अभिरुचियाँ मेरे अपने देश तक ही सीमित रहीं। अब मैं समझा कि, जब तुम कहते हो कि, ''एक चित्र हजारों शब्दों से अधिक कीमती है'', तो इससे तुम्हारा क्या आशय है। हमें फिर देखना चाहिए।''

ज्यों ही हम बैठे और हमने अभिलेखों को देखा, हमने लंदन की ब्लेक आउट की हुई गलियों को देखा, मोटर कारों की हेड लाईटों में विशेष प्रकार के ढक्कन लगाए गए थे। लोग खंबों से, और एक दूसरे से टकराते थे। सुरंग की रेलों (subway trains) के अंदर, वे सतह पर आऐं उससे पहले, सामान्य रोशनियाँ बंद कर दी गईं, और उदास नीले बल्ब जला दिए गए। खोजी रोशनियों (sealights) की किरणें, कई बार, आड़ के लिए लगाए गए गुब्बारों की बगल से, भूरी चमकती हुई, रात के आकाश में जाँच कर रहीं थीं। एकदम मोहित होते हुए बूढ़े लामा ने, गुब्बारों को देखा। सूक्ष्मयात्राऐं वह अच्छी तरह समझता था परंतु, रात में, हवाओं में बैचेनी से टहलते हुए, ऊँची रस्सी से बंधे हुए, इन भूरे प्राणियों ने, वास्तव में, उसे आश्चर्यचकित कर दिया था। मैं स्वीकार करता हूँ कि, मैंने अपने साथी के भाव को उतना ही दिलचस्प पाया जैसे कि, आकाशीय अभिलेखों को।

हमने, उस आदमी को, रेल से बाहर निकलते हुए, जब तक कि वह, फ्लेटों के एक बड़े ब्लॉक के पास नहीं पहुँचा, गलियों में, अंधेरी गलियों में, चलते हुए देखा। हमने उसे घर में प्रवेश करते देखा परंतु, उसके साथ हम प्रविष्ट नहीं हुए; इसकी बजाए हमने बाहर के व्यस्त दृश्य को देखा। घर बमबारी से चटक गए थे, और आदमी अभी भी, जीवित बचे हुए और मरे हुए लोगों को ढूंढ़ने के लिए, खोद–खोद कर देख रहे थे। भौंपुओं की विविधता ने, बचाव के कार्यों में कुछ बाधा डाली। बहुत ऊपर हवा में उड़ते हुए मच्छरों की तरह से, लैम्पों की आड़ी–तिरछी रोशनी में, दुश्मन के बमवर्षक हवाई जहाज पकड़ लिए गए थे। बमवर्षकों में से एक की चमकती हुई रोशनी ने, हमारा उत्सुक ध्यान खींचा, और तब हमने देखा कि, ये ''रोशनियाँ'' बम थीं, जो अपने रास्ते पर नीचे गिर रहे थे। उनमें से एक, ''घरघराहट (crump)'' की आवाज के साथ, फ्लेटों के बड़े ब्लॉक के बगल में, नीचे गिरा। वहाँ एक जीवंत चमक हुई और राजगीरी का सामान, चूर–चूर होकर फुहारों के रूप में नीचे गिरा। लोग उमड़ते हुए, भवनों से बाहर निकले, गलियों की संदेहपूर्ण सुरक्षा में बाहर आए।

'' मेरे भाई, तुम शंघाई में इससे ज्यादा खराब देख चुके हो ?'' बूढ़े लामा ने कहा।

''हाँ बहुत खराब,'' मैंने जवाब दिया। ''हमारे पास कोई बचाव नहीं था और बहुत कम सुविधायें थीं। जैसा आप जानते हैं, मैं एक गिरते हुए मलबे के अंदर दब गया था, और बहुत कठिनाई के साथ बाहर निकला था।''

''क्या हम, समय में थोड़ा आगे चलेंगे ?'' मेरे साथी ने पूछा। ''हमें अंतहीनरूप तक ये सब देखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम दोनों ही स्वास्थ्य में कमजोर हैं।''

मैं अत्यधिक उत्साह के साथ सहमत हुआ। मैं केवल ये जानना चाहता था कि, ये किस तरह का आदमी था, जिससे मैं अपने शरीर को बदलने वाला था। मेरे लिए इसमें, किसी दूसरे के मामलों में, ताकझांक करने में कोई रुचि नहीं थी। हम अभिलेखों में हो कर गुजरे, प्रायोगिक रूप से रुके, और फिर चले। सुबह की रोशनी पर, अग्नि की अनेक लपटों के द्वारा कीचड़ उछाल दी गई थी। रात के घण्टे नर्क थे। ऐसा दिखाई दिया कि, आधा लंदन आग की लपटों में जल रहा था। वह आदमी, मलबे से भरी हुई गली में, एक गली जिसके ऊपर हद से ज्यादा बमबारी की गई थी, में चल रहा था। अस्थाईरूप से बनायी गई एक नाके बंदी पर, युद्ध के आरक्षित पुलिस मेन ने उसे रोका। हमने देखा कि, प्रबंध निदेशक वहाँ पहुँचा और उस आदमी को, जिसके जीवन को हम देख रहे थे, से कहा, ''तुम इससे आगे नहीं जा सकते, श्रीमान्, इमारतें खतरनाक हैं।'' पुलिस के सिपाही को एक शब्द कहते हुए, उन्होंने रस्से से अपने ऊपर वार को बचाया और गिरते हुए भवनों के बीच से, साथ–साथ चले। टूटे हुए नलों से पानी, पूरे माल के ऊपर फुहारें मार रहा था। नल का काम और बिजली के तार, एक ऊन की

लच्छी की तरह से, जिससे मानो कि बिल्ली के बच्चे ने खेला हो, आपस में गुंथ गए थे और सुलझने में असमर्थ थे। एक सुरक्षित लटकन, एक बड़े छेद के ऊपर, एक खतरनाक कोण से अभी भी लड़खड़ा रही थी। चिथड़े, दुखी हो कर हवा में फड़फड़ा रहे थे और जले हुए कागज के टुकड़े, जलते हुए कोयले के काजल की तरह से, हवा में काली बर्फ की तरह से, पड़ौस के भवनों से उड़ रहे थे। मैं, जिसने युद्ध को बहुत अच्छी तरह से देखा था और जो बहुत अच्छी तरह से पीड़ित हुआ था, इस भावनाहीन विनाश के ऊपर बहुत दुखी हुआ। लेखे चलते गए.....

लंदन में युद्ध के समय में बेरोजगारी, आदमी ने युद्ध के आरक्षित सिपाहियों के रूप में अपना नाम लिखाने के लिए प्रयास किया। प्रयास बेकार गया। उसके चिकित्सा के कागजातों में, उसे चतुर्थ श्रेणी का बताया गया था, जो सेवा के लिए अनुपयुक्त था। अब, बम गिरने के बीच, उसका रोजगार छिन जाने के बाद, काम की तलाश में, वह गलियों में घूमता रहा। एक के बाद एक, फर्में उसे लेने से मना करतीं रहीं। उसके इस कठिनाई के समय के अंधेरे को चमकाने के लिए, कोई आशा नहीं दिखाई देती थी, कुछ नहीं।

अंत में उसे, एक पत्राचार स्कूल में, जिसमें वह पढ़ा था – और अपनी मानसिक सजगता और उद्योग से, उनको प्रभावित किया था, एक अवसर के माध्यम से, लंदन के बाहर, अपने युद्धकालीन कार्यालयों में, रोजगार प्रस्तावित किया गया। ''ये एक सुंदर स्थान है,'' उस आदमी ने कहा, जिसने ये प्रस्ताव दिया था। ''हरी रेखा (green line) की बस से नीचे जाओ। जो (Joe) को मिलो, वहाँ होगा, परंतु दूसरे लोग तुम्हारी देखभाल करेंगे। यात्रा के लिए श्रीमतीजी को ले जाओ। मैं स्वयं भी यहाँ से अपने आपको हटाने की कोशिश कर रहा हूँ।'' गॉव, वास्तव में, कूड़ा था। कोई सुंदर जगह नहीं, उसे ऐसा मानने के लिए कहा गया था। वहाँ हवाई जहाज बनाए जाते थे, उनकी परीक्षा की जाती थी, और देश के अन्य भागों को भेजे जाते थे।

पत्राचार महाविद्यालय में जीवन, वास्तव में, नीरस था। आकाशीय अभिलेखों को देखते हुए, जहाँ तक हम उसे देख सके, फार्मों को पढ़ना और लोगों से आए हुए पत्रों को पढ़ना और तब उन्हें सुझाव देना कि, कौन सा पाठ्यक्रम उन्हें लेना चाहिए, इसमें शामिल था। मेरी खुद की, निजी राय थी कि, जब तक कि, किसी के पास व्यवहारिक रूप से काम करने की सुविधायें न हों, पत्राचार द्वारा अध्ययन, वास्तव में, पैसे की बर्बादी है।

मोटर साइकल के इंजन की तरह से एक अंजान शोर, मेरे कानों में आया। जैसे ही हमने देखा, एक विशेष प्रकार का हवाई जहाज, हमारे परिदृश्य में आया, हवाई जहाज जिसमें कोई चालक या बेड़ा नहीं था। इससे खिंचाव युक्त, अनियमित खांसी जैसी हुई और इंजन कट गया, जहाज नीचे डूबा और उसमें जमीन से ठीक ऊपर विस्फोट हो गया ''ये जर्मनी का रोबोट (Robot) हवाई जहाज था, मैने लामा से कहा, ''(V.1)'' और ''(V.2)'' अनआनन्दायक मामले दिखते हैं।'' दूसरा रोबोट हवाई जहाज, घर, जिसमें आदमी और उसकी पत्नी रहते थे, के पास, ऊपर आया। उसने घर की एक तरफ की खिड़कियों को उड़ा दिया, और तभी दूसरी तरफ बाहर की एक दीवार फट गई।

''उनके मित्र, काफी नहीं लगते, ''बूढ़े लामा ने कहा। ''मेरा ख्याल है उनके पास मन की संभावनाऐं है, जिन्हें आकस्मिक प्रेक्षक अनदेखा कर देगा। मुझे ऐसा लगा कि, वे एक पति और पत्नी की अपेक्षा, आपस में भाई–बहिन की तरह ज्यादा रहते हैं। मेरे भाई! इससे तुम्हें आराम मिलेगा'' बूढ़े आदमी ने दबी–दबी हंसी के साथ कहा।

आकाशीय अभिलेख, उस व्यक्ति का जीवन, विचारों की गति से दिखाते हुए, चलते गए। हम अभी भी, दूसरे हिस्सों को छोड़ते हुए अथवा दूसरी घटनाओं को समय–समय पर देखते हुए, एक से दूसरे हिस्से की ओर चल सकते थे। उस आदमी को लगा कि, संयोगों की एक श्रृंखला घटी, जिसने विचारों को अधिक, और अधिक, पूर्व की ओर घुमा दिया। ''स्वप्नों ने'' उसके जीवन को तिब्बत में

दिखाया, स्वप्न, जो वास्तव में, बूढ़े लामा के नियंत्रण में आकाशीय यात्राऐं थी। ''हमारी अत्यंत छोटी तकलीफों में से एक'' बूढ़े आदमी ने मुझे बताया, ''जब उसने हम में से किसी के साथ बात की, उसे हमारे लिए 'स्वामी' शब्द का उपयोग करना चाहिए था।''

''ओह; मैंने जवाब दिया, ये पश्चिमी देशों द्वारा की जाने वाली सामान्य गलतियों में से एक है, वे किसी भी नाम का उपयोग करना पसंद करते हैं, जो उन्हें दूसरों के ऊपर शक्ति प्रदान करती हो। तुमने उसे क्या कहा ?''

बूढ़ा लामा मुस्कुराया और उसने कहा, ''मैंने उससे एक छोटी बात कही, मैंने भी उसे कम प्रश्न पूछने देने के लिए ही प्रयास किया था। मैंने जो कहा, मैं तुम्हें बताऊँगा, क्योंकि ये उसके आंतरिक स्वभाव को पता लगाने में उपयोगी है। मैंने कहाः ये वह शब्द है जो मेरे लिए, और सभी पूर्व वासियों के लिए, घृणास्पद है। 'स्वामी' का मतलब होता है कि, एक, दूसरे के ऊपर, अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है, उन लोगों के ऊपर अपना वर्चस्व चाहता है, जो 'स्वामी' उपयोग करने का अधिकार नहीं रखते। एक स्कूल शिक्षक, अपने शिष्यों को कुछ सिखाने का प्रयास करता है। हमारे लिए 'स्वामी' का अर्थ है, ज्ञान का स्वामी, ज्ञान का स्रोत अथवा कोई वह, जिसने इस शरीर के लालचों के ऊपर, स्वामित्व प्राप्त कर लिया है। हमने– मैंने उसे बताया कि हम, – गुरू शब्द को, अथवा प्रवीण शब्द को प्रधानता देते हैं, क्योंकि कोई भी स्वामी, जैसा कि हम शब्द को जानते हैं, शायद कभी मुश्किल से ही, कोई अपने विद्यार्थी को और उसकी विचार धारा को प्रभावित करने का प्रयास करेगा। पश्चिम में कुछ निश्चित छोटे समूह और सभ्यताऐं, ऐसे लोग हैं, जो ये सोचते हैं कि, केवल उनके पास ही स्वर्ग के क्षेत्रों की कुन्जी है। उस निश्चित धर्म, धर्म परिवर्तन कराने के क्रम में, उत्पीड़न का प्रयोग करते हैं। अपने लामामठों में से एक के ऊपर की गई, खुदाई की नक्काशी (carving) के ऊपर मैंने उसको ध्यान दिलाया – ''हजार भिक्षु, हजार धर्म।''

''वह मुझे, मेरी बात को, अच्छी तरह से समझता हुआ लगा,'' बूढ़े लामा ने कहा, ''इसलिए, गर्म लोहे पर चोट करने के अंदाज में, हमने उसे थोड़ा अधिक समझने वाला विचार दिया। मैंने कहा :भारत में, चीन में, और पुराने जापान में, होने वाला शिष्य, ज्ञान चाहने की इच्छा के साथ, अपने गुरु के चरणों में बैठता है, ज्ञान पाने की इच्छा रखता है परन्तु उनसे प्रश्न नहीं पूछता, क्योंकि विद्वान विद्यार्थी इसलिये कभी प्रश्न नहीं पूछता कि, कहीं उसे भगा न दिया जाए। गुरु से प्रश्न पूछना, एक निश्चित, धनात्मक, प्रमाण है कि, विद्यार्थी अभी अपने प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए तैयार नहीं है। ज्ञान पाने के लिए, बिना पूछे, प्रश्न का उत्तर पाने के लिए, कुछ विद्यार्थियों ने, सात–सात वर्षों तक प्रतीक्षा की है। इस समय में विद्यार्थी, गुरु की सभी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, उसके कपड़े धोता है, उसको खाना बना कर देता है, और ऐसी ही कुछ दूसरी आवश्यकताऐं, जो उन्हें हों। पूरे समय, उसके कान, ज्ञान प्राप्त करने के लिए, सजग रहते हैं क्योंकि, ज्ञान प्राप्ति के साथ ही, शायद, जो दूसरों को दिया जा रहा है, उसे सुनने पर, विद्वान विद्यार्थी समाधान निकाल सकता है, परिणाम प्राप्त कर सकता है और जब गुरु, अपनी बुद्धि में ये देख लेता है कि, विद्यार्थी अपनी प्रगति कर रहा है कि, गुरू अपने अच्छे समय में, और अपने सुयोग्य ढंग से विद्यार्थी को प्रश्न पूछता है, और यदि वह यह देखता है कि, विद्यार्थी में, जमा किए हुए ज्ञान में, कुछ दोषपूर्ण अथवा अपूर्ण है, तब गुरु फिर अपने अच्छे समय में, उन भूलों और कमियों का सुधार कर देता है।''

पश्चिम में लोग कहते है– 'अब, मुझे ये बताओ। मैडम ब्लावात्सकी (Madam Blavatsky) ने कहा है– विशप लेडबैटर (Bishop Ledbetter) कहता है– विली ग्राहम (Billy Graham) कहता है– आप क्या कहते हैं ?– मेरा ख्याल है आप गलत हैं।' पश्चिम के लोग, केवल बात करने के लिए प्रश्न पूछते हैं, वे ये न जानते हुए कि, वे क्या कहना चाहते हैं, प्रश्न पूछते हैं, ये न जानते हुए कि, वे क्या सुनना चाहते हैं, परंतु जब शायद, एक कृपापूर्ण गुरु प्रश्नों का उत्तर देता है, विद्यार्थी तुरंत बहस करता

है, ''ओह ठीक है, मैंने अमुक–अमुक को ऐसा कहते हुए सुना है अथवा वैसा या कोई दूसरी चीज।''

''यदि विद्यार्थी गुरु को एक प्रश्न पूछता है, तो उसका मतलब यह होना चाहिए कि, विद्यार्थी उसका मतलब नहीं जानता है परंतु वह समझता है कि गुरु जानता है, और यदि विद्यार्थी गुरु के उत्तर के ऊपर, तुरंत प्रश्न उठाता है, तो ये प्रदर्शित करता है कि, विद्यार्थी अज्ञानी है और पहिले से ही राय बनाये हुए है और एकदम गलत तरीके के शिष्टाचार के विचारों, और सामान्य दूसरी शालीनताओं से पहले से ही भरा हुआ है। मैं तुमसे ये कहता हूँ कि, अपने प्रश्नों के उत्तर पाने का एकमात्र तरीका है, अपने प्रश्नों को बिना पूछा (unasked) छोड़ दो, जानकारियों को इकट्ठा करो और उनके अर्थ और परिणाम निकालो, तब, समय के परिपक्व होने पर, वशर्ते तुम हृदय में पूरी तरह शुद्ध हो, तुम ध्यान के और अधिक शाश्वत तरीकों से, आकाशीय यात्राओं को करने में सक्षम होगे और इस प्रकार, तुम आकाशीय अभिलेखों को देखने में सक्षम हो जाओगे, जो कभी झूठ नहीं बोलते, कभी संदर्भ के बाहर उत्तर नहीं देते, और अपनी कोई सलाह अथवा व्यक्तिगत झुकावों से रंगी हुई, कोई सूचना नहीं देते। मनुष्य की जिज्ञासा, मानसिक अपच से पीड़ित होती है और वह, अपने उन्नयन और अध्यात्मिक विकास को, दुख के साथ, धीमा कर देती है। प्रगति करने का एकमात्र तरीका ? प्रतीक्षा करना और देखना होता है। दूसरा कोई तरीका नहीं है, अपने विकास को बल पूर्वक पाने का कोई तरीका नहीं है, सिवाय इसके कि, गुरु, जो तुम्हें अच्छी तरह से जानता है, के त्वरित आमंत्रण पर; वह गुरु तुम्हें अच्छी तरह से जानते हुए, शीघ्र ही तुम्हारे विकास को गति प्रदान करेगा, यदि वह सोचता होगा कि, तुम इस लायक हो।''

मुझे ऐसा लगा कि, अधिकांश पश्चिमी लोग, इसे पढ़ाये जाने से लाभांवित होगे परंतु हम यहाँ पढ़ा नहीं रहे हैं, वल्कि एक व्यक्ति के जीवन से, प्रमुख दृश्यों को, देखने के लिए खोल रहे हैं, एक व्यक्ति, जो शीघ्र ही अपने पार्थिव खोल को खाली कर देगा।

''ये मजेदार है,'' अभिलेख के एक दृश्य की ओर, मेरा ध्यान आकर्षित करते हुए, बूढ़े लामा ने कहा। ''इसे व्यवस्थित करने मे काफी समय लगा, परंतु जब उसने इसकी मांग को देखा, उसने कोई आपत्ति नहीं की। मैंने उसी उलझन में उस दृश्य को देखा, तब वह मेरे ऊपर आ पड़ा। हॉ ; ये एक वकील का कार्यालय था। ये उसके नाम में परिवर्तन का कागज था। हाँ ये ठीक था, मुझे याद है, उसने अपना नाम बदल लिया था, क्योंकि जो नाम उसका पूर्व में था उसके कंपन, जैसा कि हमारे अंको के विज्ञान (science of numbers) ने बताया, गलत थे। मैंने कागज को रुचि के साथ पढ़ा और देखा कि, यद्यपि ये काफी कुछ ठीक था परंतु ये पूरी तरह ठीक नहीं था।

यहाँ काफी कुछ झेलना था। दंत चिकित्सक के पास जाने ने, काफी नुकसान किया, इतना नुकसान, जिससे कि उससे निकलवाने के लिए, ऑपरेशन के लिए, नर्सिंग होम जाना पड़ा। तकनीकी अभिरुचि को छोड़ कर, आवश्यक सावधानी के साथ, मैंने पूरी क्रिया को ध्यान से देखा।

उस– आदमी, जिसके जीवन की हम जांच–परख कर रहे थे– ने महसूस किया कि, उसका नियोक्ता लापरवाह है। देखते हुए, हमने भी ऐसा ही महसूस किया, और मैं और बूढ़ा लामा, इस पर प्रसन्न थे कि, उस आदमी ने, पत्राचार प्रशिक्षण स्कूल में अपने काम को समाप्त करने का नोटिस दे दिया। फर्नीचर एक गाड़ी पर लादा गया, उसमें से कुछ बेच दिया गया, और उस आदमी और उसकी पत्नी ने, पूरी तरह से एक नये जिले में जाने के लिए, उस क्षेत्र को छोड़ दिया। कुछ समय के लिए वे एक अनजान बूढ़ी औरत के मकान में रहे, जो ''भविष्य'' बताती थी, और अपने खुद के महत्व का आश्चर्य चकित करने वाला विचार, उसके पास था। आदमी ने रोजगार प्राप्त करने का प्रयास किया और कठिन प्रयास किया। कोई भी चीज, जो उसे ईमानदारी के साथ पैसा कमाने में योग्य बना सके।

बूढ़े लामा ने कहा, ''अब हम निर्णायक भाग की ओर बढ़ रहे हैं। जैसा तुम देखोगे, वह भाग्य को लगातार कोसता है। उसके पास धैर्य नहीं है और मुझे डर है कि, यदि हमने जल्दी नहीं की तो वह

हिंसक तरीके से अपने जीवन को छोड़ देगा।''

''आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं ?'' मैंने पूछा, ''आप वरिष्ठ हैं,'' बूढ़े लामा ने कहा, ''परंतु मैं चाहूँगा कि, तुम उसे सूक्ष्मशरीर से मिलो, और ये देखो कि तुम्हारा क्या विचार है।''

''निश्चितरूप से'', मेरा प्रत्युत्तर था, ''हम साथ–साथ चलेंगे।'' एक क्षण के लिए, मैं विचारों में खो गया, तब मैंने कहा, ''ल्हासा में अभी सुबह के दो बजे हैं। इंग्लैंड में इस समय, रात के आठ बजे होंगे, क्योंकि उनका समय हमसे पीछे चलता है। हम तीन घंटों के लिए, प्रतीक्षा करेंगे और तब उसे सूक्ष्म यात्रा पर यहाँ लायेंगे।''

''हॉ'', बूढ़े लामा ने कहा। वह एक कमरे मे अकेला सोता है, इसलिए हम इसे कर सकते हैं। अभी हम आराम करें, क्योंकि हम थके हुए हैं।''

हम, धुंधली तारों की रोशनी मे बगल–बगल में बैठे हुए, अपने शरीरों में लौटे। ल्हासा की रोशनियाँ अब बुझा दीं गईं थीं, और केवल भिक्षुओं की बस्तियों में से हल्की–हल्की चमक, और चीनी साम्यवादी सुरक्षाकर्मियों की चौकियों से तेज रोशनियाँ, आ रही थीं। हमारी दीवारों के बाहर, थोड़ी चीखों से खनखनाता हुआ छोटा सा झरना, रात की शांति के विरुद्ध, तेज अप्राकृतिक, दिखाई दिया। ऊपर ऊँचे से, कंकड़ों की हल्की सी बौछारों की आवाज, जो ऊँची हवाओं द्वारा, वहाँ से उखाड़ दिए गए थे, वे उछल कर हमें लगे। ढीले, बड़े पत्थरों ने हमें पर्वत के बगल से नीचे की तरफ धक्का लगाया। वे चीनी बेरकों मे से उठती हुई शोर की आवाज को दबाने के लिए दौड़े। रोशनियाँ जला दीं गईं, राइफलें हवा में चलाईं गईं, और ल्हासा के भिक्षुओं के आक्रमण से डरते हुए सैनिक चारों तरफ जंगलीपन में दौड़े। पदचाप शीघ्र ही दब गए, और रात्रि शांत थी और एक बार फिर शांति।

बूढ़ा लामा नरमी से हंसा और उसने कहा, ''ये मेरे लिए कितना आश्चर्यजनक है कि, हमारे देश के परे के लोग, आकाशीय यात्राओं को नहीं समझ सकते। ये कितना अनजान है कि, वे सोचते हैं कि, ये एक कल्पना है। वे ये नहीं समझ सकते कि, किसी दूसरे के लिए, किसी अन्य का अपने शरीर को बदलना, मात्र ऐसा है जैसे कि, किसी गाड़ी में, एक ड्राईवर के बदले में, कोई दूसरा बदला जा रहा हो ? यह असहमतिपूर्ण लगता है कि, आदमी अपनी तकनीकी उन्नति के कारण, आत्मिक मामलों में अंधा जैसा दिखे।''

मैंने, पश्चिम के काफी अनुभव के साथ उत्तर दिया, ''परंतु एक अत्यल्प अल्पसंख्यकों को छोड़ कर, पश्चिमी लोग, आध्यात्मिक मामलों की क्षमता नहीं रखते। वे जो कुछ चाहते हैं वह है; युद्ध, यौन, यातना और दूसरे के मामलों में ताक–झांक करने का अधिकार।''

लम्बी रात्रि, चढ़ती गई, हमने आराम किया और अपने आपको चाय और त्संपा के साथ ताजा किया। अंत में, पहले प्रकाश की पहली धुंधली किरणें फूटीं, जो हमारे पीछे पर्वत श्रृंखलाओं के ऊपर पड़ीं। अभी तक, हमारे पैरों के नीचे की घाटी, अंधेरे में डूबी थी। कहीं दूर एक याक ने रंभाना शुरू किया मानो कि, ये पहचानते हुए कि, एक नया दिन शीघ्र ही हम पर आ जाऐगा। तिब्बती समय के अनुसार, सुबह के पाँच बजे थे। मैंने निर्णय किया कि, इंग्लैंड के समय के अनुसार, लगभग ग्यारह बजे थे। धीमे से, मैंने बूढ़े लामा को, जो हल्का सा उनींदा था, कोहनियों से धकियाया। ''समय, जब हम आकाशीय यात्राओं में जाना था, ''मैंने कहा।

''ये मेरे लिए अंतिम समय होगा,'' उसने जवाब दिया, ''क्योंकि मैं अपने शरीर में वापस नहीं लौटूँगा।''

धीमे–धीमे, जल्दी करते हुए बिल्कुल नहीं, हम, सूक्ष्म अवस्था में फिर से प्रविष्ट हुए। अलसाते हुए, हम इंग्लैंड में उस घर पर पहुँचे। वह आदमी, वहाँ करवट के बल लेटा हुआ सो रहा था। उसके चेहरे पर असंतुष्टि की पराकाष्ठा का प्रदर्शन जैसा था। उसका आकाशीय स्वरूप, अलग होने के किसी भी चिन्ह के बिना, उसके भौतिक शरीर को अपने में लपेटे हुए था।

''क्या तुम आ रहे हो ?'' मैंने सूक्ष्मशरीर में होते हुए पूछा। ''क्या तुम आ रहे हो,'' बूढ़े लामा ने दुहराया। धीमे से, लगभग अनिच्छिापूर्वक, उस आदमी की सूक्ष्म आकृति अपने भौतिक शरीर के ऊपर उठी, और उठी, और उसके ऊपर तैरने लगी, जैसे कोई करता है, सूक्ष्मशरीर का सिर, भौतिक शरीर के पैरों के ऊपर पलटा, सूक्ष्मशरीर हिला और उसने झटके खाये। अचानक तेज गति से चलने वाली रेल की आवाज ने, वापस उसे अपने भौतिक शरीर में ला दिया। तब, मानो कि सहसा, एक निर्णय लिया गया, उसकी सूक्ष्म आकृति मुड़ी, और अपनी ऑखों को मलते हुए, हमारे सामने खड़ी हो गई। मानो कि, कोई अपनी नींद से उठ रहा हो, उसने हमारी तरफ टकटकी लगा कर देखा।

''तो तुम अपने शरीर को छोड़ना चाहते हो?'' मैंने पूछा।

''हाँ, मैं यहाँ घृणा करता हूँ'' वह जोरदार ढंग से चिल्लाया।

हम एक दूसरे को देखते हुए खड़े रहे। मुझे वह अत्यधिक गलतफहमी वाला व्यक्ति दिखाई दिया। एक व्यक्ति, जो इंग्लैंड में, अपने जीवन की कोई छाप नहीं छोड़ सका, परंतु वह तिब्बत में इसका अवसर पायेगा। वह जोर से हँसा, ''अच्छा तुम मेरे शरीर को चाहते हो, ठीक है, तुम अपनी गलती समझोगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि, तुम इंग्लैंड में क्या जानते हो। फर्क इससे पड़ता है कि, तुम किसको जानते हो। मैं कोई रोजगार नहीं पा सकता, बेरोजगारी का लाभ भी प्राप्त नहीं कर सकता। देखो, यदि तुम कुछ अच्छा कर सको।''

''चुप रहो मेरे दोस्त,'' बूढ़े लामा ने कहा, ''क्योंकि, तुम यह नहीं जानते हो कि, तुम किस से बातें कर रहे हो। शायद, तुम्हारी उग्रता ने, तुम्हारे रोजगार पाने को बाधित किया है।''

''तुम्हें अपनी दाढ़ी बढ़ानी पड़ेगी,'' मैंने कहा, '' क्योंकि, यदि मैं तुम्हारे शरीर में आता हूँ, मेरा शरीर, तुमसे बदला जायेगा और मुझे अपने जबड़ों की खराबी को छिपाने के लिये, दाढ़ी का रखना अनिवार्य है। क्या तुम दाढ़ी बढ़ा सकते हो ?''

''हॉ श्रीमान्'' उसने जबाव दिया ''मैं दाढ़ी बढ़ाऊँगा।''

''बहुत अच्छा,'' मैंने कहा। ''मैं यहॉ एक महीने में वापिस लौटूगॉ और तुम्हें छुटकारा दिलाते हुए, तुम्हारे शरीर को ले लूगॉ, ताकि मेरा खुद का शरीर, अंतिम रूप से उसको विस्थापित कर सके, जिसको मैं लूगॉ। मुझे बताओ,'' मैंने पूछा, ''तुम्हें मेरे आदमियों द्वारा, पहले और सबसे पहले, किस प्रकार पहुँचा गया ?''

''श्रीमान्,'' उसने कहा, ''मैं लम्बे समय से, इग्लैण्ड में अपने जीवन से, उसके भेद भाव के कारण, पक्षपात के कारण, घृणा करता था। मैंने अपने पूरे जीवन भर, तिब्बत और सुदूर पूर्व के देशों में दिलचस्पी ली थी। पूरे जीवन में, मैंने ''स्वप्न'' देखे, जिनमें मैंने, तिब्बत, चीन, और दूसरे देश, जो मैं पहचान नहीं सका, देखे, अथवा देखे हुए से लगे। कुछ समय पहले मुझ में, कानूनी रूप से अपना नाम बदलने का, एक तीव्र आवेग आया, जो मैंने किया।''

''हॉ,'' मैंने टिप्पणी की, ''मैं उसके बारे में सब कुछ जानता हूँ, परन्तु हाल ही में, तुम तक कैसे पहुँचा गया और तुमने क्या देखा ?''

उसने थोड़ा सोचा, और तब कहा, ''उसको बताने के लिये, मुझे अपने तरीके से और अपनी जानकारी में से, जो मेरे बाद के ज्ञान की दृष्टि में गलत दिखाई देती है, कुछ करना पड़ेगा।''

''बहुत ठीक,'' मेरे जबाव था, ''अपने तरीके से मुझे बताओ और हम तुम्हारे गलत विचारों को बाद में ठीक कर सकते हैं। यदि मैं तुम्हारे शरीर को लेता हूँ, तो तुम्हें अच्छी तरह से समझने के लिये, मुझे ये जानकारी चाहिये और ऐसा करने का ये एक तरीका है।''

''शायद, मैं पहले वास्तविक सम्पर्क से शुरूआत कर सकूँ तो मैं अपने विचारों को अच्छी तरह रख सकता हूँ।'' देर रात में आने वाले लोगो को लंदन से वापिस लाते हुए, रेलवे स्टेशन से ऊपर की ओर सड़क पर, रेल का ब्रेक लगाने का एक जोर का झटका लगा। शीघ्र ही, एक रेल की, दूर जाने

की शुरूआत करने की, आवाज आई, और तब वह आदमी अपनी कहानी पर आया, जबकि बूढ़ा लामा और मैं सतर्कतापूर्वक उसे सुन रहे थे।

''रोज क्रोफ्ट, थामेस डिट्टन (Rose Croft, Thames Ditton),'' उसने शुरूआत की, ''एक छोटा सा, अच्छा सा, सुन्दर स्थान था। ये एक घर था, जो एक सड़क के पीछे स्थित था, जिसके सामने एक बगीचा था, एक छोटा सा बगीचा और पीछे की तरफ एक बहुत बड़ा बगीचा। मकान में पीछे की तरफ एक बालकनी थी, जो देहात की तरफ, काफी अच्छा दृश्य प्रस्तुत करती थी। मैं अपना काफी समय, उस बाग में, विशेष रूप से, अपने अगले बगीचे में खर्च किया करता था क्योंकि कुछ समय से ये उपेक्षित था और मैं उसे सही करने की कोशिश कर रहा था। घास उगने दी गई, ताकि ये कई फुट ऊँची हो जाये और इसके बीच का खाली स्थान, जो हमारे लिये समस्या था, समाप्त हो जाये। मैंने इसका आधा हिस्सा, एक पुराने भारतीय गोरखा चाकू से, पहले ही काट दिया था। ये मेहनत का काम था, क्योंकि, मुझे अपने हाथ और पैरों के बल चलना पड़ता था और घास पर वार करना पड़ता था और हर कुछ हमलों के बाद, मुझे अपने चाकू को एक पत्थर पर घिस कर तेज करना पड़ता था। मैं फोटोग्राफी में भी रुचि रखता था, और कुछ समय से, मैं एक उल्लू का फोटो लेने की कोशिश कर रहा था, जो पड़ोस के घर के एक पेड़ में रहता था, घर का एक पेड़, जो चढ़ती हुई लता से पूरी तरह घिरा हुआ था। मेरा ध्यान, उसी शाखा पर, जो मेरे सिर के ऊपर अधिक ऊँची नहीं थी, किसी चीज के फड़फड़ाने से भंग हुआ। मैंने देखा, और अपने सुखद आश्चर्य के साथ, मैंने शाखा को पकड़े हुए और फड़फड़ाते हुए, सूर्य की तेज रोशनी से अंधा होते हुए, एक जवान उल्लू को देखा। शांत रूप से, मैंने चाकू को, जिससे मैं कटाई कर रहा था, नीचे रख दिया और एक केमरा लाने के लिये अंदर घुसा। उसे अपने हाथों में लिये हुए और उसके शटर को व्यवस्थित करते हुए, मैंने अपना रास्ता पेड़ की तरफ किया और धीमे से, अथवा इतनी शांति से, जितनी मैं कर सकता था, मैं पहली शाखा पर चढ़ा। चोरी से, मैं उसके साथ चढ़ा, पक्षी सूर्य की तेज रोशनी में मुझे देख पाने में अक्षम था परन्तु मुझे सूंघते हुए, दूसरी शाखा पर, बाहर के सिरे की तरफ, चला गया। मैं खतरे से पूरी तरह बेखबर, आगे बढ़ा, और आगे बढ़ा, और मेरी प्रत्येक चाल के साथ, पक्षी मुझसे आगे और दूर होता गया, जब तक कि वह लगभग शाखा के आखिरी सिरे पर नहीं पहुँच गया, जो मेरे वजन के कारण, अब खतरे के साथ, नीचे की तरफ झुक रही थी।

''सहसा मैंने उतावली में अपना कदम बढ़ाया और वहॉ एक तीखी चटकन हुई और चूर्ण हुई लकड़ी की गंध आयी। शाखा सड़ी हुई थी और उसने मुझे नीचे गिरा दिया। मेरे सिर के नीचे, पृथ्वी की तरफ मेरे सिर में चोट लगी। कुछ फुट गिरने में, मुझे गिरने की शाश्वतता प्रतीत हुई। मुझे ज्ञात है, घास कभी और अधिक हरी नहीं दिखाई थी, वह जीवन से बढ़ कर लगी, मैं उसके ऊपर छोटे–छोटे कीटाणुओं के साथ, हरेक तिनके को अलग–अलग देख सकता था। मुझे याद है, एक लेडीवर्ड (lady bird), ने डर कर मेरी पहुँच पर, उड़ान भरी और तब वहॉ अंधा करने वाला दर्द हुआ और एक चमक हुई मानो कि, रंगीन रोशनी, सब काली हो गई। मुझे नहीं मालूम कि, मैं कितनी देर तुड़ा–मुड़ा, निष्क्रिय पिण्ड के रूप में, पुराने फर के पेड़ की शाखाओं के नीचे पड़ा रहा, परन्तु सहसा मैं, बहुत तेजी से सजग हुआ कि, मैं अपने भौतिक शरीर से अलग हो रहा था, और मैं चीजों को, पहले की तुलना में और अधिक बड़े दृश्यक्षेत्र के साथ देख रहा था। रंग नये और चकित करते हुए जीवंत थे।

''सतर्कतापूर्वक, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ, और मैंने अपने आसपास देखा। अपने भयभीत आश्चर्य के साथ, मैंने पाया कि, मेरा शरीर, जमीन पर औंधा लेटा हुआ था। खून देखने भर को नहीं था परन्तु निश्चित रूप से, गूमड़ का खराब निशान, मेरी दायीं कनपटी के ठीक ऊपर था। मैं थोड़ा सा संभ्रित था, क्योंकि शरीर घरघराहट में सांस ले रहा था और अत्यन्त दबाव के चिन्हों को प्रदर्शित कर रहा था। ''मृत्यु'', मैंने सोचा, ''मैं मर गया हूँ; अब मैं कभी वापिस नहीं लौटूगॉ। मैंने अपने सिर से अपने

शरीर की ओर, अपने शरीर से ऊपर की ओर, चढ़ती हुई, धुंऐ का एक पतला तन्तु देखा। तन्तु में कोई हलचल नहीं थी। कोई धड़कन नहीं और मुझे बीमारी जैसी घबराहट हुई। मुझे आश्चर्य हुआ कि, मुझे क्या करना चाहिये अथवा शायद किसी दूसरे कारण से, मैं डर के केन्द्र में समाया हुआ दिखाई दिया। तब एक सहसा हलचल, मेरे इस अनजान विश्व की एक मात्र हलचल, ने मेरी ऑखों को आकर्षित किया और मैं लगभग चीख पड़ा, अथवा चीख पड़ा होता, यदि मेरी आवाज होती। घास के ऊपर पहुॅचते हुए, उच्चक्रम की केसरिया पोशाक पहने हुए, एक तिब्बती लामा की आकृति, समीप आयी। उसके पैर जमीन से कई इंच ऊपर थे, फिर भी वह स्थिर चाल से, मेरी ओर आ रहा था। मैंने पूरी तरह मूर्ति बन कर उसकी तरफ देखा।

वह, अपने हाथों को फैलाते हुए मेरी तरफ आया, और मुस्कराया। उसने कहा, ''तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। यहॉ तुम्हारे डरने या चिंता करने के लिये कुछ भी नहीं है।'' मैंने ये समझा कि, उसके शब्द किसी भिन्न भाषा में थे, हो सकता है तिब्बती हों परन्तु मैं इसे समझ गया, परन्तु फिर भी मैंने कोई आवाज नहीं सुनी। वहॉ कोई आवाज नहीं थी। मैं चिड़ियों की आवाज और पेड़ों में सीटी बजाती हुई हवा की आवाज भी नहीं सुन सका। ''हॉ,'' मेरे विचारों को तोड़ते हुए उसने कहा; ''हम बोली का उपयोग नहीं करते, परन्तु दूरानुभूति का करते हैं। मैं तुमसे दूरानुभूति में बात कर रहा हूॅ।'' हमने साथ–साथ एक दूसरे की ओर, और अपने नीचे पड़े हुए शरीर की ओर देखा। तिब्बती ने दुबारा मेरी ओर देखा, और मुस्कराया और कहा, ''तुम्हें मेरी उपस्थिति पर आश्चर्य हो रहा है ? मैं यहॉ हूॅ क्योंकि, मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित किया गया। इस विशिष्ट क्षण में, मैंने अपने शरीर को छोड़ दिया है और मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित किया गया है क्योंकि, तुम्हारे खुद के जीवन के विशिष्ट कम्पनों में एक मूल संनादी (harmonic) है, जिन पर मैं कार्य करता हूॅ। इसलिये मैं आया हूॅ, मैं यहॉ आया हूॅ क्योंकि, किसी एक के लिये, जिसे अपना जीवन पश्चिमी विश्व में जारी रखना है, क्योंकि उसे करने के लिये एक काम है, जिसे हस्तक्षेप की कोई छोटी नदी, बर्दाश्त नहीं कर सकती, मैं तुम्हारा शरीर चाहता हूॅ।

मैंने उसको हक्का बक्का हो कर देखा। वह आदमी यह कहते हुए कि, उसे मेरा शरीर चाहिये, पागल था। ये मेरा शरीर था। मैं किसी को अपना शरीर, अपनी सम्पत्ति इस तरह नहीं लेने दूगॉ। इसलिये मैंने ऐसा किया, मैं अपनी इच्छा के विरूद्ध, अपने भौतिक वाहन में से, कॉपता हुआ बाहर आया और मैं वापिस जा रहा था, परन्तु स्पष्ट रूप से, तिब्बती ने मेरे विचारों को पढ़ लिया। उसने कहा, ''तुम्हें आगे क्या दिखाई देता है ? बेरोजगारी, बीमारी, अप्रसन्नता, साधारण लोगों के बीच में साधारण जीवन, और तब बहुत दूर नहीं, निकट भविष्य में मृत्यु और फिर से सब कुछ दुबारा शुरू। क्या तुम्हें इस जीवन में कोई उपलब्धि हुई है? क्या तुमने ऐसा कुछ किया है जिस पर तुम्हे गर्व हो ? इस पर सोचो,''

''मैंने इस पर सोचा। मैंने, अवसादों को, गलतफहमियों को, और अप्रसन्नताओं को, भूतकाल को सोचा। उसने मुझे कहा, ''क्या तुम ये जान कर संतोष करोगे कि, तुम्हारे कर्म पोंछ दिये गये हैं, कि भौतिक रूप से तुमने एक कार्य की तरफ सहयोग किया है। मानव जाति के एक अधिकतम लाभ के लिये ?'' मैंने कहा, ''ठीक है, मैं इस बारे में नहीं जानता, मानवता मेरे लिये कभी बहुत बड़ी नहीं रही है। तब मैं क्यों चिंता करूॅ ?''

''उसने कहा, नहीं, इस पृथ्वी में तुम, वास्तविक सत्य के प्रति अंधे हो गये हो। तुम नहीं जानते कि, तुम क्या कह रहे हो, परन्तु एक और अलग वृत्त में, समय गुजरने के बाद, तुम इस बात को, अवसरों को, जो तुमने खो दिये, जान जाओगे। मैं तुम्हारे शरीर को दूसरे के लिये चाहता हूॅ।'' मैंने कहा, ''ठीक है, मैं इसके बारे में क्या करूॅ ? मैं हर समय, एक प्रेत के संबंध में आश्चर्य नहीं कर सकता, और हम दोनों एक ही शरीर में नहीं रह सकते है।'' भव्यतापूर्ण, जिसे कोई शब्द वर्णन नहीं कर

सकते। मैं पूरी तरह संतुष्ट था, और मैंने कहा मैं स्वयं से छूटने के लिये और जितना जल्दी संभव हो सके उतना जल्दी, इच्छुक होऊगॉ, बहुत इच्छुक।''

बूढ़ा लामा, दबी–दबी हंसी में मुस्कराया, और उसने कहा, ''हमें उसे बता देना था कि, अभी इतनी जल्दी नहीं थी, और अंतिम निर्णय से पहले तुम्हे खुद आ कर देखना होगा। कुल मिला कर, उसके लिये, उसकी परेशानियों से, ये आनन्दपूर्ण छुटकारा था।''

मैंने उन दोनों की ओर देखा। ''बहुत अच्छा,'' मैंने अंतिम टिप्पणी की, ''मैं एक महीने में वापिस आऊॅगा। यदि तब तुम्हारी दाढ़ी हुई और तुम सभी संदेहों से परे हो कर ये सुनिश्चित कर लो कि, तुम ये करना चाहते हो, मैं तुम्हें मुक्त कर दूॅगा और तुम्हें अपनी यात्राओं पर भेज दूॅगा।''

उसने संतोष के साथ, दुख की आह भरी और जैसे ही वह धीमे से अपने भौतिक शरीर में गया, उसके चेहरे पर एक दिव्य खुशी, साफ उभरी। बूढ़ा लामा और मैं, उठे और तिब्बत में वापिस आ गये।

नीले, बादल रहित आकाश में, सूर्य चमक रहा था। मेरे बगल में, ज्यों ही मैं अपने भौतिक शरीर में लौटा, बूढ़े लामा का खाली आवरण, जीवन रहित हो कर फर्श पर गिर गया। मैंने सोचा कि, वह एक लम्बे और आदरणीय जीवन के बाद, अपनी शांति के लिये चला गया। मैं – बुद्ध के पवित्र दॉत की कसम – मैं, अपने संबधं में, क्यों यहॉ था ?

मेरी लिखित सहमति के साथ, कि मैं उस निवेदित कार्य को करूॅगा, संदेशवाहक, नये गृह की ओर, ऊॅचे पर्वतीय देशों में गये। संदेशवाहक, उन भारतीय टिक्कियों (cakes) में से कुछ को, जो बहुधा मेरी कमजोरी रहीं थीं, जब मैं चाकपोरी में था, मित्रता का भव्यता पूर्ण संकेत दिखाते हुए, मेरे पास आये। सभी उद्देश्यों के लिये, मैं अपने पर्वतीय घर में एक बंदी था। मेरी प्रार्थना कि, मुझे चोरी छिपे, छद्मवेश में, अपने प्रिय चाकपोरी की ओर यात्रा करने की आज्ञा दी जाये, मुझे मना कर दी गई थी। ''तुम घुसपेठियों के शिकार हो सकते हो मेरे भाई,'' उन्होंने मुझे बताया, ''क्योंकि यदि वे कोई संदेहजनक चीज देखते हैं, तो वे अपने बन्दूक के घोड़े दबाने में खास तौर से तेज हैं।''

''तुम बीमार हो, आदरणीय मठाध्यक्ष,'' दूसरे ने कहा। ''यदि तुम पर्वत के बगल से नीचे की तरफ उतरे तो तुम्हारा स्वास्थ्य तुम्हें वापिस आने की इजाजत नहीं देगा। यदि तुम्हारी रजत तन्तु काट दी जाये, तो कार्य पूरा नहीं होगा।''

कार्य! ये, जो कुल मिला कर ''कार्य'' ही था, जो मेरे लिये इतना आश्चर्य पैदा करने वाला था। मुनष्य के प्रभामण्डल को देखना मेरे लिये, एक ठीक नजर वाले आदमी के लिये, उसके सामने कुछ फुट दूर खड़े हुए को देखने जैसा, आसान कार्य था। मैंने पूर्व और पश्चिम के अंतर के ऊपर, यह सोचते हुए विचार किया कि, किसी पश्चिमी आदमी को श्रम बचाने वाले नये खाद्य के संबंध में समझाना, कितना आसान होगा और किसी पूर्व के आदमी को, मन के इस राज्य में कुछ नई चीज समझाना, कितना आसान होगा।

समय गुजरता गया। मैंने जम कर (extensively) विश्राम किया, इतना जम कर, जितना कि, अपने जीवन में इससे पहले कभी नहीं किया था। तब एक महीना पूरा होने से पहले, मेरे इग्लेण्ड वापिस आने से कुछ पहले, मुझे स्वर्णिम प्रकाश के देश में जाने के लिये, एक अविलम्ब (urgent) बुलावा आया। उन सभी उच्च व्यक्तियों के सामने बैठे हुए, मुझे कुछ श्रद्धाहीन विचार आये, ये युद्ध के दिनों में छोटी विवरण बैठक (briefing) जैसा था। मेरा विचार, दूसरों के द्वारा पकड़ लिया गया और उनमें से एक मुस्कराया और उसने कहा, ''हॉ यह एक छोटी विवरण बैठक है और शत्रु ? बुराई की शक्ति, जो हमारे कार्य को पूरा होने से रोकेगी।'' ''तुम्हें काफी विरोध और काफी मिथ्या आरोप झेलने पड़ेंगे,'' एक ने कहा। ''इस शरीर बदलने के दौरान, तुम्हारी अमूर्तभौतिकी (metaphysical) शक्तियॉ, न तो बदलेंगी और न हीं खत्म होगीं'' दूसरे ने कहा।

''ये तुम्हारा अंतिम जन्म है,'' मेरे प्रिय शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा। ''जब तुम इस

जीवन को, जिसको लेने जा रहे हो, समाप्त करोगे, तो तुम हमारे पास वापिस घर लौटोगे।'' मेरे शिक्षक के समान कैसे, मैंने, इसे प्रसन्नता के उल्लेख के साथ समाप्त करने के लिये सोचा। जो होने वाला था, वे मुझे कहते गये। आकाशीय यात्राओं में चलने वाले तीन लामा, मेरे साथ जायेंगे और किसी का, उसके अपने जीवन से, रजत तन्तु को काट कर, और दूसरे के साथ – मेरे साथ जोड़ते हुए, वास्तविक ऑपरेशन करेंगे। परेशानी मेरे खुद के शरीर की थी, जिसे अभी भी तिब्बत में बने रहना था, जिसके साथ, अभी भी, मुझे जुड़े रहना था, क्योंकि मैं अपने खुद के मांस (flesh) के अणुओं को, अंतिम रूप से स्वयं में हस्तांतरित करना चाहता था। इसलिये मैं दुनियाँ में वापिस लौटा और तीन अन्य साथियों के साथ, सूक्ष्मशरीर से इंग्लेण्ड में यात्रा की।

आदमी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं इसके साथ जाने के लिये पक्का निश्चय कर चुका हूँ,'' उसने कहा।

मेरे साथ का एक लामा उस आदमी की ओर बढ़ा और उसने कहा, ''तुमको, खुद को तेजी से, हिंसक रूप से (violently), उस पेड़ के पास, वैसे ही गिराना चाहिये, जैसे कि जब हम तुम्हें पहली बार मिले थे, तब तुमने किया था। तुमको एक बहुत बड़ा झटका देना चाहिये, क्योंकि तुम्हारा तन्तु बहुत कड़ाई के साथ तुमसे जुड़ा हुआ है।''

आदमी ने अपने आप को, जमीन से कुछ फुट ऊपर खींचा और तब, एक संतुष्टिपूर्ण झटके के साथ जमीन में गिरते हुए, गिरने दिया। एक क्षण के लिये ऐसा लगा, मानो कि समय खुद रुक गया है। एक कार, जो तेजी से आ रही थी तुरन्त ही रुक गई, एक पूरी उड़ान में उड़ती हुई एक चिड़िया, गतिहीन हो कर रुक गई – और हवा में ठहर गई। एक घोड़ा, गाड़ी को खींचते हुए, अपने दोनों पैरों को ऊपर उठाते हुए, रुक गया और जमीन में नहीं गिरा। तब गति फिर से, वापिस हमारे देखने में आई। लगभग पैंतीस मील प्रति घण्टा की चाल से चलती हुई, कार तेजी से कूदी। घोड़े ने अपनी चाल को शुरू कर दिया, और चिड़िया मांस के ऊपर उछलती हुई, अपनी पूरी उड़ान में आ गई। पत्तियॉ सरसराईं और उसके चारों तरफ बहती हुई हवा की लहरदार तरंगों के कारण, घास मुड़ गई।

सामने, स्थानीय कुटीर अस्पताल (cottage hospital) पर, एक एम्बुलेंस रुकी। दो कर्मचारी उतरे, पीछे की तरफ टहले, और उन्होंने एक स्ट्रेचर, जिसके ऊपर एक बूढ़ी औरत लेटी थी, को खींचा। आदमियों ने, आलसी ढंग से, इस स्थिति में प्रयास किया और उसे अस्पताल में ले गये। ''आह!'' आदमी ने कहा, ''वह अस्पताल जा रही है, मैं स्वतंत्रता की ओर जा रहा हूँ।'' उसने सड़क पर देखा, नीचे सड़क पर, और तब कहा,'' मेरी पत्नी इस सब को जानती है। मैंने उसे सब समझा दिया था और वह भी सहमत थी।'' उसने मकान के ऊपर निगाह डाली और इशारा किया। ''ये उसका कमरा है, और तुम्हारा वहॉ है। अब मैं तैयार से अधिक हूँ।

लामाओं में से एक ने, उस आदमी के सूक्ष्मशरीर को पकड़ा और रजत तन्तु के साथ–साथ अपना हाथ फिसलाया। वह ऐसे प्रयास करते हुए लगा, जैसे कि, कोई किसी बच्चे को, उसके जन्म के बाद, उसके बंधे हुए गर्भ नाल के साथ प्रयास करता है। ''तैयार'' पुजारियों में से एक ने कहा। आदमी को उसकी जोड़ने वाले तन्तु से स्वतंत्र कर दिया गया और वह उस पुजारी की संगत में उड़ कर बहता हुआ चला गया, जो उसकी मदद कर रहा था। मैंने एक झुलसा देने वाला दर्द अनुभव किया और तीव्र पीड़ा, जिसे मैं दुबारा फिर अनुभव नहीं करना चाहता, और तब वरिष्ठ लामा ने कहा, ''लोबसांग, क्या तुम उस शरीर में प्रवेश कर सकते हो ? हम तुम्हारी सहायता करेंगे।''

दुनियाँ अंधेरी हो गई। काले लाल रंग जैसी एक तेज चिपचिपी महसूस हुई। दम घुटने का एक अहसास। मैंने महसूस किया कि, मुझे रोका जा रहा है, किसी चीज में दबाया जा रहा है, जो मेरे लिये बहुत छोटी है। एक अंधे विमान चालक की तरह महसूस करते हुए, एक बड़े जटिल हवाई जहाज में आश्चर्य करते हुए कि, मैं इस शरीर से कैसे काम करूँगा, मैंने शरीर के अन्दर जॉच पड़ताल की। ''क्या

होगा यदि मैं अब असफल हुआ ?'' मैंने अपने प्रति दुर्बलता के साथ सोचा। निराशा के साथ, मैं लड़खड़ाया और गड़बड़ाया। अंत में मैंने लाल रंग की और तब कुछ हरी चमक देखी। दुबारा से आश्वासन पाते हुए, मैंने अपने प्रयासों को तेज किया, और अब मैं एक अंधे की तरह था, जो बगल से खींचा जा रहा था। मैं देख सकता था। मेरी नजर शुद्ध रूप से पहले की तरह थी, मैं सड़क के लोगों के प्रभामण्डलों को देख सकता था। परन्तु मैं हिल नहीं सका।

दोनों लामा मेरे बगल से खड़े हुए। अब से आगे, जैसा कि मुझे पता करना था, मैं हमेशा ही सूक्ष्मशरीर की आकृतियों को, और भौतिक शरीर की आकृतियों को, देख सकता था। मैं तिब्बत में, अपने साथियों के साथ भी अधिक अच्छी तरह से सम्पर्क में रह सकता था। ''एक सांत्वना पुरस्कार,'' मैं अक्सर स्वयं को कहता था, ''पश्चिम में रहने के लिये मजबूर किया जाने के लिये।''

दो लामा मेरी अकड़न के ऊपर, मेरी हलचल करने की असमर्थता के ऊपर, संबद्ध हो कर देख रहे थे। पूर्व और पश्चिमी शरीरों के अंतर के पता नहीं कर पाने के लिये, अपने आप पर कटुता पूर्ण तरीके से दोषारोपित करते हुए, मैंने निराशा के साथ, अपने ऊपर जोर डाला, और जोर डाला। ''लोबसांग! तुम्हारी आकृतियॉ फड़क रहीं हैं!'' लामाओं में से एक ने कहा। अत्यावश्यक रूप से मैंने तलाश किया और प्रयोग किया। एक गलत हलचल ने मुझे अस्थायीरूप से अंधा बना दिया। लामाओं की मदद से, मैंने एक बार शरीर को खाली किया, उसका अध्ययन किया, और सावधानीपूर्वक, उसमें पुनः प्रविष्ट हुआ। मैं देख सकता था कि, इस बार ये अधिक सफल था। मैं अपनी बाँह को, एक टॉग को हिला सकता था। अत्यधिक प्रयास करने के साथ, मैं अपने घुटनों पर उठा, काँपा और लड़खड़ाया और फिर गिरने को हुआ। मानो कि, मैं पूरी दुनियाँ का वजन अपने ऊपर उठा रहा था। मैं कांपता हुआ, अपने पैरों पर कांपता हुआ, खड़ा हुआ।

घर में से एक औरत दौड़ती हुई, कहती हुई आयी, ''ओह अब तुमने यह क्या कर लिया ? तुम अन्दर आओ और लेट जाओ।'' उसने मुझे देखा और उसके चेहरे पर एक भौंचक्का प्रभाव आया और एक क्षण के लिये मैंने सोचा कि, वह दौरे (Hysteria) में चीखने वाली है। उसने स्वयं को नियंत्रित किया और अपनी बॉह मेरे कंधों पर रखी और घास के ऊपर, थोड़ी बजरी वाले रास्ते पर, पत्थर की सीढ़ी के ऊपर, और लकड़ी के दरवाजे में हो कर, और एक छोटे हॉल के रास्ते में मेरी मदद की। वास्तव में, ये वहॉ से मुश्किल था, क्योंकि वहॉ चढ़ने के लिये काफी सीढ़ियॉ थीं और मैं अभी भी अपने चलने के प्रति बहुत अनिश्चित था।

घर, वास्तव में, दो फ्लैटों से मिल कर बना था और एक वह, जिसमें मैं रहने वाला था, ऊपर था। एक अंग्रेज के घर में इस ढंग से प्रवेश करना, कुछ तीखी सीढ़ियों के ऊपर, अपने आप को गिरने से बचाने के लिये, रोकने के लिये, पीछे सहारे के ऊपर, लटकते हुए ऊपर चढ़ना, ये इतना अनजान लगा। मेरी भुजाऐं, रबर के समान, शक्तिहीन हो गईं मानो मैंने उनके ऊपर पूरा नियंत्रण खो दिया – मैं वास्तव में, इस अवस्था में था कि, इस अनजान नये शरीर के ऊपर, पूर्ण स्वामित्व पाने के लिये, कुछ दिन लगे। दोंनों लामा, काफी दुख प्रदर्शित करते हुए मेरे आसपास मड़राते रहे, परन्तु वहॉ ऐसा कुछ नहीं था, जो वे कर पाते। जल्दी ही, उन्होंने मुझे, रात के कुछ घण्टों में वापिस आने का वायदा करते हुए छोड़ दिया।

धीमे धीमे, मैंने नींद में चलने वाले आदमी की तरह लड़खड़ाते हुए, अपने शयनकक्ष में प्रवेश किया, जो मेरा था। यांत्रिक आदमी की तरह से झटके खाते हुए, आभार सहित मैं एक बिस्तर के ऊपर लुढ़क गया। कम से कम, मैंनें स्वयं को सांत्वना दी कि, अब मैं इससे नहीं गिर सकता। मेरी खिड़कियॉ घर के सामने और पीछे दोनों ओर खुलतीं थी। अपना सिर दांई ओर घुमाते हुए, मैं अपने सामने के छोटे बगीचे को देख सकता था। सड़क पर, छोटे कुटीर अस्पताल के पास एक दृष्टि, जो मैंने अपनी वर्तमान अवस्था में आरामदायक नहीं समझी, नहीं पायी।

कमरे के दूसरी तरफ खिड़की थी, जिसमें हो कर मैं अपने सिर को बांई ओर घुमा कर देख सकता था। मैं अपने बड़े बगीचे की लम्बाई की तरफ देख सकता था। ये गंदा था, मोटी घास झुरमुट में, घास के मैदानों की तरह से उग रही थी। झाड़ियों ने बगीचे को, एक घर से अगले घर तक, अलग किया हुआ था। घास के मैदान के अंत में, चिथड़े हुए पेड़ों की पंक्ति थी और एक कटीले तारों की बाढ़। इसके बाद मैं, खेतों की, भवनों की, और पड़ोस में चरती हुई गायों के झुण्ड की, रूप रेखा (outline) देख सकता था।

अपनी खिड़कियों के बाहर, मैं आवाजों को सुन सकता था, वे ऐसी 'अंग्रेजित (english)' की आवाजें थी कि, मैंने इसे समझने के लिये लगभग असंभव समझा, कि क्या कहा जा रहा था। अंग्रेजी, जो मैंने पहले सुनी थी, अधिकांशतः अमेरिकी और कनाडा की थी, और यहॉ अनजान रूप से, पुराने पाठों के तरीके से, टुकड़ों में बोली गई अंग्रेजी ने मुझे चकरा दिया। मैंने पाया, मेरी खुद की बोली कठिन थी। जब मैंने बोलने का प्रयास किया तो मैंने, मात्र एक फटी हुई आवाज निकाल पायी। मेरे स्वर तन्तु (vocal cord) अनजान और मोटे प्रतीत हुए, और जो मैं कहने जा रहा था, उसे पहले अपने मन में देखना और धीमे बोलना सीखा। मैं जा के बदले में चा कहता था, जोन के बदले में चोन कहता था और इसी प्रकार की गलतियॉ करता था। कई बार मैं बहुत मुश्किल से समझ पाता था कि, मुझसे क्या कहा जा रहा है।

उस रात को आकाशीय यात्रा करने वाले लामा दुबारा आये और उन्होंने ये बताते हुए कि, अब मेरे लिये आकाशीय यात्राऐं और अधिक आसान हो जायेंगी, मेरे अवसाद को, प्रसन्नता बनाने की कोशिश की। उन्होंने मुझे बतलाया, मेरी अकेली पड़ी हुई तिब्बती लाश, तीन भिक्षुओं की, कभी समाप्त न होने वाली देखभाल के अन्तर्गत, एक पत्थर के कफन में सावधानी पूर्वक भण्डारित की गई है। उन्होंने मुझे बताया, पुराने साहित्य में किये गये मेरे शोधकार्य, ये बताते थे कि, मेरे लिये अपने खुद के शरीर को प्राप्त करना आसान होगा परन्तु पूरा–पूरा हस्तान्तरण, थोड़ा समय लेगा।

तीन दिन के लिये, आराम करते हुए, हलचल का अभ्यास करते हुए, और नई परिस्थितियों में बदले हुए जीवन का अभ्यस्त होते हुए, मैं अपने कमरे में रुका रहा। मैं तीसरे दिन शाम को, अंधेरे के आवरण में, कांपता हुआ, बगीचे में गया। अब मैंने पाया कि, मैंने अपने शरीर के ऊपर स्वामित्व प्राप्त करना शुरू कर दिया था, यद्यपि असंख्य क्षण आये जब मेरे हाथ या पैरों ने, मेरे आदेशों को मानने में असमर्थता जताई।

अगली सुबह महिला, जो मेरी पत्नी के रूप में जानी जाती थी, ने कहा, ''आज ये देखने के लिये कि, अभी तुम्हारे लिये कोई काम है, तुम्हें रोजगार दफ्तर जाना चाहिये। ''रोजगार दफ्तर ? कुछ समय के लिये, इसने मुझे कुछ नहीं सुझाया, जब तक कि उसने, ''श्रम मंत्रालय'' शब्द नहीं कहा। तब ये मेरी खोपड़ी में घुसा। मैं ऐसे किसी स्थान पर नहीं गया था और मेरे विचार में भी नहीं था कि, कैसे व्यवहार किया जाये अथवा वहॉ क्या किया जाये। बातचीत से मैं जानता था कि, ये स्थान हेंप्टन कोर्ट (Hampton Court) के करीब है परन्तु नाम मोलेसे (Molesey) था।

किसी कारण से, जिसको मैं तब नहीं समझा, मैं बेरोजगारी के किसी लाभ का, कोई दावा प्रस्तुत करने के लिए, पात्र ही नहीं था। बाद में मुझे पता लगा कि, यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपने रोजगार को छोड़ता है, भले ही वह रोजगार, कितना असुखद अथवा असंगत क्यों न हो, वह किसी प्रकार के दावा लाभों को पाने का हकदार नहीं था, भले ही उसने बीस साल तक, निधि में अपना अंश दान क्यों न दिया हो।

रोजगार दफ्तर; मैंने कहा, ''मुझे साइकिल प्राप्त करने में सहायता प्रदान करो और मैं चला जाऊँगा।'' हम साथ–साथ सीढ़ियों से नीचे उतरे, बाईं ओर गैरिज में मुड़े, जो पुराने फर्नीचर से भरा हुआ था और वहाँ एक पुरानी साइकिल थी, प्रताड़ना का एक उपकरण, जिसका मैंने चुंगकिंग में, पहले

केवल एक बार ही उपयोग किया था,, जहाँ इससे पहले कि, मैं ब्रेकों का पता लगा पाता, मैं पहाड़ी से सीधा नीचे गिर चुका था। डरते–डरते, मैं मशीन पर चढ़ा और सड़क के सहारे–सहारे, लड़खड़ाते हुए, बंटी हुई सड़क पर बाई ओर मुड़ते हुए, रेल के पुल की ओर आगे चढ़ा। एक आदमी ने प्रसन्नता से हाथ हिलाये, और वापसी में हाथ हिलाते हुए, मैं लगभग गिर गया। ''तुम एकदम ठीक नहीं लगते हो,'' उसने कहा। ''सावधानी से जाओ।''

टॉगों में भयानक दर्द होते हुए, मैंने पैडल चलाये। आगे मैं, दाईं तरफ मुड़ा, जैसा मुझे पहले बता दिया था, हेम्पटन कोर्ट की ओर जाने वाली चौड़ी सड़क पर, ज्यों ही, मैं आगे चढ़ा, मेरी टाँगों ने, सहसा मेरे निर्देशों को मानने से मना कर दिया, और मैं सड़क पर, मुक्त पहिये के साथ चलने की व्यवस्था कर सका और एक ढेर पर अचानक लुढ़क गया। सड़क के किनारे, घास की एक पट्टी के ऊपर, साइकिल मेरे ऊपर थी। एक क्षण के लिए बुरी तरह कांपते हुए, मैं वहाँ पड़ा रहा, तब एक औरत, जो अपने साथियों के साथ, अपने दरवाजे के सामने कुछ कर रही थी, रास्ते पर चीखते हुए, दौड़ती हुई आई, ''तुम्हें खुद के ऊपर शर्म आनी चाहिए, दिन में इस वक्त, तुम शराब पिये हुए हो। मैंने तुम्हें देखा। मेरा विचार, पुलिस को फोन करने का था।'' उसने मेरी ओर त्यौरी चढ़ा कर देखा, तब वह मुड़ी और जल्दी से अपने घर में वापस घुस गई, गलीचों को उठाया और अपने पीछे के दरवाजे को झटके से बंद कर दिया।

''ये कितना कम जानती हैं'' मैंने सोचा। ''ये कितना कम जानती हैं''

शायद लगभग बीस मिनट तक, अपने स्वास्थ्य को फिर से प्राप्त करते हुए, मैं वहाँ लेटा रहा। लोग अपने दरवाजों तक आते और बाहर घूर कर देखते। लोग अपनी खिड़कियों पर आये और परदों के पीछे से झाँक कर देखा। दो औरतें अपने बगीचों के सिरों तक आईं और उन्होंने कर्कश ध्वनियों में, मेरे बारे में, जोर से विचार–विमर्श किया। कहीं भी, एक थोड़ा सा भी विचार, कि मैं बीमार हो सकता था अथवा वास्तव में, असावधान हो सकता था, मैं नहीं पहचान सका।

अंत में, अत्यधिक प्रयासों के साथ, मैं अपने पैरों पर लड़खड़ाता हुआ चढ़ा, साइकिल पर बैठा, और हेम्पटन कोर्ट की दिशा में सवार होकर चल दिया।

अध्याय नौ

रोजगार दफ्तर, बगल की गली में, एक गिरा हुआ सा मकान था। मैं चढ़ा, उतरा, और प्रवेश द्व ार में चलना प्रारंभ किया। ''क्या अपनी साइकिल की चोरी कराना चाहते हो?'' मेरे पीछे एक स्वर ने पूछा। मैं कहने वाले की ओर मुड़ा। ''निश्चितरूप से, बेरोजगार एक–दूसरे की चोरी नहीं करते?'' मैंने कहा।

''तुम यहॉ आसपास के लिए नये होगे; साइकिल में चेन लगाओ और उसमें एक ताला लगाओ अथवा तुम्हें पैदल ही घर को जाना होगा।'' इसके साथ, कहने वाले ने अपने कंधों को उचकाया और इमारत में चला गया। मैं वापस मुड़ा और मशीन (साइकिल) की जेब में देखा। हॉ, उसमें एक ताला और जंजीर (चेन) थी। जैसा मैंने औरों को करते देखा था, मैं पहिये में हो कर जंजीर डालने ही जा रहा था कि, तभी एक भयानक विचार मुझमें कौंधा– चाबी कहॉ थी ? मैंने उन अपरिचित जेबों में खोजा और मुझे चाबियों का एक गुच्छा मिल गया। एक के बाद, दूसरी से कोशिश करते हुए अंत में, मुझे सही चाबी मिल गई।

मैं घर में अंदर, रास्ते पर ऊपर चला। काली स्याही से, कार्ड बोर्ड पर बने तीर के निशानों ने, रास्ते का संकेत दिया। मैं दाईं तरफ मुड़ा और एक कमरे में प्रविष्ट हुआ, जहॉ कड़ी लकड़ी की कुर्सियों का एक समूह, एक दूसरे के साथ, भिड़ा–भिड़ा कर रखा था।

''हैलो प्रोफ! एक आवाज ने कहा। ''आओ, और मेरे पास बैठो और अपनी बारी की प्रतीक्षा करो।''

मैं कहने वाले की तरफ चला और उसके बगल से, एक कुर्सी को धक्का देते हुए, अपनी जगह बनाई। ''तुम आज सुबह कुछ अलग दिखाई दे रहे हो,'' उसने कहना जारी रखा। ''तुम खुद क्या करते रहे थे ?''

हल्की–फुल्की छोटी–छोटी सूचनाओं को चुनते हुए, मैंने उसे बोलने दिया। क्लर्क ने नाम पुकारे, और लोग उसकी मेज की तरफ चलते गऐ और उसके सामने बैठे। एक नाम पुकारा गया, जो अस्पष्ट रूप से परिचित लगता था। ''कोई, जिसे मैं जानता हूँ ?'' मैंने आश्चर्य किया। कोई नहीं हिला। नाम दुबारा पुकारा गया। ''जाओ ये तुम हो'' मेरे नये मित्र ने कहा। जैसा कि, मैंने दूसरों को करते हुए देखा था, मैं उठा और मेज की तरफ चला और बैठ गया।

''आज सुबह, तुम्हारे साथ क्या परेशानी है ?'' क्लर्क ने पूछा। ''मैंने तुम्हें अंदर आते हुए देखा, तब तुम मेरी नजर से चूक गए और मैंने सोचा कि, तुम घर चले गए होगे।'' उसने मेरी तरफ सावधानी से देखा। ''कैसे भी, तुम आज सुबह, कुछ अलग से दिख रहे हो। ये तुम्हारा बाल संवारने का ढंग नहीं हो सकता, क्योंकि तुम्हारे कोई बाल ही नहीं हैं।'' तब वह सीधा खड़ा हुआ और उसने कहा, ''नहीं, तुम्हारे लिए कुछ नहीं, मैं डरा हुआ हूँ। अच्छा है, अगली बार अपना भाग्य आजमाओ। कृपया, अगला आदमी, आइए।''

निराश अनुभव करते हुए, मैं बाहर चला गया, और साइकिल चलाते हुए, हैम्पटन कोर्ट में वापस आया। वहॉ मैंने एक अखबार खरीदा और टैम्स (Thames) नदी के किनारों पर चल दिया। ये एक सुन्दर स्थान था, जहॉ लंदनवासी छुट्टी मनाने के लिए आते थे। मैं, अखबार में, रिक्त स्थान वाले कॉलम में, परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए, अपनी पीठ पेड़ पर टिकाते हुए, घास वाले किनारे पर बैठा।

''तुम्हें कभी रोजगार दफ्तर के माध्यम से काम नहीं मिलेगा'' एक आवाज ने कहा, एक आदमी रास्ते से हट कर, मेरे पास आया और एक लंबी घास की पत्ती को तोड़ते हुए, अपने मुँह के अंदर एक बगल से दूसरे बगल घूमाते हुए, उसे अनिच्छा पूर्वक चबाते हुए, मेरे बगल से, घास पर, धम से बैठ

गया। ''वे तुम्हें कोई बेकारी भत्ता नहीं देंगे समझे ? इसलिए वे तुम्हें यहाँ रुकने भी नहीं देंगे। वे उन लोगों को काम दिलाते हैं जो उन्हें कुछ देते हैं। तब वे पैसा बनाते हैं, समझे ? यदि वे तुम्हें काम देंगे, तो उन्हें किसी दूसरे को बेरोजगारी भत्ते पर रखना पड़ेगा और इस पर सरकार ऐतराज करती है, समझे ?''

मैंने इसके ऊपर विचार किया। ये मेरी समझ में आया, यद्यपि आदमी के व्याकरण ने मेरे सिर को लगभग घुमा दिया था। ''ठीक हैं, तुम क्या करोगे ?'' मैंने पूछा।

''हे भगवान ! अरे ! मैं कोई काम नहीं चाहता, मैं केवल बेरोजगारी भत्ता पाने के लिए आता हूँ, ये मुझे (जिन्दा) बना कर रखता है, और ऐसे, इसके साथ–साथ, थोड़ा सा मैं भी कमा लेता हूँ। ठीक है, गुव। यदि तुम वास्तव में, कोई काम चाहते हो, तो तुम इनमें से किसी दफ्तर में जाओ– यहाँ– उस तरफ देखो।'' वह मुझ तक पहुँचा और मुझे खाली छोड़ते हुए, ये आश्चर्य करते हुए कि, दफ्तर क्या कर सकता था, उसने मेरे कागजों को लिया। वहाँ सीखने के लिए क्या कुछ था, मैंने सोचा। कितना ज्ञान। मुझे हर चीज, पश्चिमी विश्व के हिसाब से करनी थी। अपनी उंगलियों को चाटते हुए, और वर्णमाला के अक्षरों को मन हीं मन बड़बड़ाते हुए, आदमी ने पेजों में खोजा। ''तुम यहॉ हो; ''जिसमें से वह विजयी भाव से बोला।'' तुम खुद अपनी नजर से देखो, काम दिलाऊ दफ्तर यहाँ है।''

शीघ्रता से, मैंने उसके एकदम गंदे अंगूठों के निशान से संकेतित किये गये उस स्तम्भ पर, पर्याप्त स्पष्ट रूप से नजर मारी। रोजगार दफ्तर, रोजगार की ऐजेन्सियाँ। रोजगार। ''परंतु ये औरतों के लिए है,'' मैंने चिढ़ कर कहा।

''गार्न! उसने जवाब दिया, ''तुम पढ़ नहीं सकते, यहॉ पर इसमें लिखा है, आदमी और औरतें। अब तुम साथ आओ और देखो किसी पुराने पेशे को उनमें से लो। ओह! वे तुम्हें खिलायेगें, यदि तुम उन्हें करने दोगे। उन्हें बता दो कि तुम एक रोजगार चाहते हो अथवा कुछ और!''

उस शाम को, मैं जल्दी से, लंदन के हृदय स्थल पर, एक पुराने जर्जर कार्यालय में, जो सोहो[88] की गली के पीछे था, गया और उसकी गंदी सीढ़ियाँ चढ़ीं। एक रंगी–पुती औरत, कृत्रिम रूप से अपने बालों को भूरा और अपने नाखूनों को सिंदूरी लाल किये हुए, एक कमरे में, जो इतना छोटा था कि, कभी वह अलमारी रहा होगा, धातु की एक मेज के पास बैठी थी।

''मैं एक काम चाहता हूँ,'' मैंने कहा।

वह पीछे झुकी और उसने ठंडे पन से मेरा परिवेक्षण किया। लंबी जम्हाई लेते हुए, उसने अपने पूरे गिरे हुए दांतों और रोमदार जीभ को दिखा दिया। ''आप कौन हैं ?'' उसने पूछा। मैं खालीपन से उसको घूरता रहा। ''आप कौन हैं ? उसने दुहराया।

''मुझे खेद है,'' मैंने कहा, ''परंतु मैं तुम्हारे प्रश्न को नहीं समझा।''

''ओह समझी,'' उसने दुखी हो कर आह भरी। ''तुम अंग्रेजी नहीं बोलते। फॉर्म को भर दो।'' उसने एक प्रश्नावली मेरी तरफ फेंकी, अपना पेन, घड़ी, एक किताब और अपना हैंड बैग उठाया और एक अंधरे कक्ष (dark room) में गायब हो गई। मैं बैठा और मैंने प्रश्नों के साथ संघर्ष किया। काफी देर बाद, वह दुबारा प्रकट हुई और अपने अंगूठे को, जहॉ से वह आई थी, उस दिशा में झटका। ''अंदर जाओ,'' उसने आदेश दिया। मैं अपने स्थान से उठा, लड़खड़ाया और थोड़े बड़े कमरे में गया। एक आदमी अव्यवस्थित ढंग से, कूड़े–करकट के बीच, टूटी–फूटी मेज पर बैठा था। वह एक सस्ती और बदबूदार सिगार के ठूंठ को चबा रहा था, एक धब्बेदार, ऊनी नम्दे का टोप (Trilby hat), जिस पर दांतेदार मुकट लगा था, उसके सिर के पीछे खोंसा हुआ था। उसने मुझे अपने सामने बैठने

88 अनुवादक की टिप्पिणी : सोहो, वेस्टर मेस्टर शहर का, लगभग 2.5 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र है, जो लन्दन के पश्चिमी हिस्से में है। बींसवी शताब्दी में सोहो, अपने रात्रि के जीवन और यौन उद्योग और फिल्म निर्माता कंपनियों की उपस्थिति के कारण जाना जाता था। 1980 के बाद से, सोहो गुण्डों के कारण बदनाम है। आजकल ये फेशनेबल शहर और रेस्तरा और मीडिया के कार्यालयों के लिए जाना जाता है। सोहो लगभग 200 साल से लंदन की सेक्स उद्योग का केन्द्र रहा है। 1960 के आसपास यहां लगभग 100 के करीब नग्न क्लब थे। सोहो लन्दन का एक बदनाम क्षेत्र है, जो ड्रग्स, हैरोइन, कोकेन आदि की तस्करी और दूसरे अपराधों के लिये विश्वप्रसिद्ध है।

का संकेत किया।

''अपना पंजीकरण शुल्क लाओ ?'' उसने कहा। मैंने अपनी जेब में देखा और फॉर्म पर लिखी हुई रकम को, उसके सामने प्रस्तुत कर दिया। उस आदमी ने वह मुझसे ले लिया, दो बार गिना, और अपनी जेब में रख लिया। ''तुम कहॉ प्रतीक्षा कर रहे थे ?'' उसने पूछा।

''बाहर के दफ्तर में,'' मैंने भोलेपन से जवाब दिया। मेरे विस्मय के लिए, वह हंसी के ठहाके लगा कर फट पड़ा।

''हुर्रर्रर्र'' उसने आवाज निकाली। '' मैंने कहा, तुम कहाँ इंतजार कर रहे थे ? और ये कहता है कि, बाहर वाले दफ्तर में '' अपनी बहती हुई आँखों को पौंछते हुए, उसने एक दिखते हुए प्रयास के द्वारा, स्वयं को नियंत्रित किया और कहा, ''देखो, लड़के, तुम कोई मसखरे नहीं हो, और मेरे पास गँवाने के लिए समय नहीं है।'' क्या तुम कभी बैरा या इंका (Inca)[89] रहे हो ?''

''नहीं,'' मैंने उत्तर दिया। ''मैं इनमें से किसी भी प्रकार के कामों में रोजगार चाहता हूँ'' –उसे उन चीजों की पूरी सूची देते हुए मैंने कहा, मैं इन्हें कर सकता हूँ– ''क्या अब तुम मेरी मदद कर सकते हो या नहीं कर सकते हो ?''

जैसे ही उसने सूची को देखा, उसके तेबर चढ़ गये। ''ठीक है, उसने संदेहपूर्वक कहा, मैं नहीं जानता।'' तुम एक ड्यूक (duke)[90] की तरह बोलते हो। देखो, हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं। आज से एक हफ्ते बाद आना।'' इसके साथ ही, उसने अपनी बुझी हुई सिगार को दुबारा जलाया। जैसे ही उसने एक उड़ते हुए कागज को पकड़ा और पढ़ना शुरू किया, उसने अपने पैर मेज के ऊपर फैलाये। मैंने अपना भ्रम रहित रास्ता, उस रंगी–पुती औरत के पास से गुजरते हुए, बाहर की ओर बनाया, जिसने, ढीठ तरीके से ताक कर और नाक चढ़ा कर, चटकती हुई सीढ़ियों के नीचे और उस उदास गली में, मेरे जाने का अभिनंदन किया।

अधिक दूर नहीं, वहीं एक और ऐजेन्सी थी, और मैंने वहाँ पहुँचने के लिए अपना रास्ता पकड़ा। प्रवेशद्वार के दृश्य पर, मेरा दिल डूब गया। एक बगल का दरवाजा, प्रवेश की मात्र लकड़ी की सीढ़ियाँ, और गंदी दीवारें जिन से रंग–रोगन उखड़ रहा था। ऊपर, दूसरी मंजिल पर, मैंने ही दरवाजा खोला, जिस पर लिखा था ''प्रवेश''। अंदर, इमारत की पूरी चौड़ाई में फैला हुआ एक बड़ा कमरा था। जर्जर मेजें वहाँ रखीं थीं और उनमें से हर एक पर, एक आदमी या एक औरत बैठे हुए थे, जिनके सामने संदर्भ कार्डों का एक ढेर लगा था।

''हाँ ? मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?'' मेरे बगल से एक आवाज ने पूछा। मुड़ते हुए, मैंने एक औरत को देखा, जो सत्तर की रही होगी, यद्यपि वह बूढ़ी दिखती थी। मेरे कुछ कहने की प्रतीक्षा किए बिना, इस प्रार्थना के साथ कि, मैं इसे पूरा करूँ और मेज पर बैठी हुई लड़की को दे दूँ, उसने मुझे एक प्रश्नावली दे दी। मैंने जल्दी ही, बड़ी संख्या में पूछे गये व्यक्तिगत विबरण को भरा और जैसा बताया गया था, उस लड़की के पास ले गया। बिना उस पर नजर घुमाये हुए उसने कहा, ''अब तुम मुझे अपना पंजीकरण शुल्क दे सकते हो।'' मैंने ये सोचते हुए ऐसा किया कि, उन्हें पैसा बनाने का एक सरल तरीका मिल गया है। उसने सावधानी पूर्वक रकम को गिना और एक मोखले में से दूसरी औरत को दे दिया। उसने भी उसे गिना, और तब मुझे एक रसीद दी गई। लड़की खड़ी हुई और उसने कहा, ''क्या कोई खाली है ?'' दूर पर रखी एक मेज पर बैठे हुए आदमी ने, आलस के साथ अपना हाथ हिलाया। लड़की मेरी तरफ मुड़ी और उसने कहा, ''वहाँ पर, वह आदमी, आपके मामले को देखेगा।'' मैं, मेजों के बीच से अपना रास्ता खोजता हुआ, चल कर उसके पास गया। कुछ समय के लिए उसने मेरे ऊपर ध्यान नहीं दिया, परंतु लिखता रहा, और तब अपने हाथ को रोका। मैंने इसे लिया और उससे

89 अनुवादक की टिप्पिणी : महाराज (पेरू में रहनेवाली जनजाति के शासक),

90 अनुवादक की टिप्पिणी : यूरोपीय महाद्वीप में छोटे डच राज्यों के शासकों की उपाधि ड्यूक होती है, जैसे ड्यूक ऑफ एडिनबिरा, ड्यूक ऑफ वेल्स

मिलाया, परंतु गुस्से से यह कहते हुए, उसने झटक कर पीछे खींच लिया, ''नहीं, नहीं, मैं तुम्हारी रसीद देखना चाहता हूँ, तुम्हारी रसीद, तुम समझे।'' सावधानी पूर्वक उसकी जाँच करते हुए, उसने उसे पलटा, और उसके खाली हिस्से को जाँचा। सामने की तरफ को दुबारा पढ़ते हुए, उसने स्पष्टरूप से तय कर लिया कि, ये सही थी चूंकि, सबके बाद उसने कहा, ''क्या आप कुर्सी पर बैठेंगे ?''

मेरे आश्चर्य के लिए, उसने एक नया फॉर्म लिया, और मुझे सभी सवालों का जवाब देने के लिए कहा, जो मैं पहले ही लिख चुका था। मेरे भरे हुए फॉर्म को रद्दी की टोकरी में, और अपने को मेज की दराज में डालते हुए उसने कहा, ''एक हफ्ते बाद मुझे मिलो, तब हम देंखेगे कि, हम क्या कर सकते हैं।'' उसने अपना लिखना पुनः प्रारंभ किया, लिखाई, जिसको मैं देख सकता था कि, वह किसी औरत! को लिखा गया एक व्यक्तिगत पत्र था।

''अरे,'' मैंने जोर से कहा, ''अब मैं तुम्हारा ध्यान चाहता हूँ।''

''मेरे प्रिय मित्र!'' उसने समझाया, ''हम आम तौर से चीजों को इतनी जल्दी नहीं करते हैं, तुम समझे, हमारे पास व्यवस्था एक तरीका होना चाहिए, समझे, एक तरीका!''

''ठीक है,'' मैंने कहा, ''मुझे अभी एक काम, या अपना पैसा वापस चाहिए।''

''प्रिय, प्रिय!'' वह आह भर कर बोला। ''पूर्ण रूप से कितना भयानक है!'' मेरे निश्चय किये हुए चेहरे पर एक तेज निगाह डालते हुए, उसने दुबारा आह भरी, और अपने दराज में से कुछ निकालना शुरू किया, एक के बाद एक दराज। मानो, वह ये सोचने के लिए कि, आगे क्या करना है, देर कर रहा हो। उसने एक दराज को काफी दूर तक खींचा। एक टक्कर हुई और उसमें से उसका सारा व्यक्तिगत सामान, नीचे फर्श पर बिखर गया। कुछ हजार कागजों के क्लिप का डिब्बा खुल कर बिखर गया। हमने संतुलन बनाने के लिए, फर्श के आसपास से चीजों को उठाया और मेज पर उछाल दिया।

अंत में हर चीज उठा ली गई और दराज में डाल दी गई। ''वह उजड़ा हुआ दराज!'' उसने अनमने भाव से कहा, ''हमेशा अपनी जगह से, इसी तरह फिसल जाती है, दूसरे वाले इसके अभ्यस्त हैं।'' कुछ समय के लिए, वह, फाइल के कार्डो में देखते हुए वहाँ बैठा, और तब कागजों के बंडलों को देखते हुए, अपना सिर नकारात्मक रूप में हिलाते हुए, ज्यों ही उसने वापस उछाला और दूसरे बंडल को हटाया। ''आह!'' उसने अंत में कहा, और तब चुप पड़ गया। मिनटों के बाद, उसने कहा, ''हाँ, मेरे पास तुम्हारे लिए एक रोजगार है।''

उसने अपने कागजों की दोबारा तलाशी लेना शुरू किया, अपने चश्मे को बदला, और अंधेपन से, कार्डो के एक ढेर की तरफ पहुँचा, उनमें से सबसे ऊपर वाले को उठा कर, अपने सामने रखा और धीमे से लिखना शुरू किया। ''अब ये कहाँ है ? आह! क्लैफाम (Clapham), क्या तुम क्लैफाम को जानते हो ?'' उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना, उसने कहना जारी रखा, ''ये फोटो को प्रोसेस (process) करने का काम है। तुम्हें रात को काम करना होगा। पश्चिमी छोर के, गली के फोटोग्राफर अपने सामान को रात को लाते हैं और अगले दिन सुबह उनके प्रूफ (proof) को ले जाते हैं। हम, हाँ मुझे देखने दो।'' वह अनिश्चितता के साथ कागजों को देखता रहा, ''कई बार तुम्हें खुद, एक कैमरे के साथ, एक स्थानापन्न करने वाले आदमी (relief man) के रूप में, पश्चिमी सिरे में काम करना पड़ेगा। अब इस कार्ड को उस पते पर ले जाओ और उससे मिलो,'' एक नाम की तरफ, जो उसने पैंसिल से कार्ड पर लिखा था, इशारा करते हुए, उसने कहा।

क्लैफाम, लंदन के स्वास्थ्यकारक जिलों में से एक नहीं था; एक पतली पिछवाड़े की गली में, झुग्गी झोपड़ियों के बीच, रेलवे की साइडिंग के बगल से, उस पते पर, जहाँ मैं गया, वास्तव में, एक असहनीय स्थान था। मैंने एक दरवाजे के ऊपर थपकी दी, जिस पर से रंगरोगन (paint) उखड़ रहा था, और जिसकी एक खिड़की का काँच, एक मोटे कागज से सुधारा गया था। दरवाजा धीमे से खुला और एक फूहड़ औरत ने बाहर झांका उसके चेहरे पर बिखरे हुए अस्त–व्यस्त बाल थे।

ये ? ओह! तुम क्या चाहते हो ? ''मैंने उसे बताया, वह बिना कुछ कहे मुड़ी और झल्लाई, ''ऐरी (हेरी)! कोई तुम्हें मिलने आया है।'' मुड़ते हुए, उसने धक्का देकर दरवाजे को बंद कर दिया। मुझे बाहर करते हुए, दरवाजे पर छोड़ दिया। कुछ समय बाद, दरवाजा खुला और एक खराब सा दिखने वाला आदमी आ खड़ा हुआ। बिना दाढ़ी बनाये, कोई कॉलर नहीं, उसके निचले होंठ से सिगरेट झूलती हुई। उसकी नम्दे वाली चप्पलों में से, उसके पैरों की उंगलियॉ, बड़े–बड़े छेदों में से दिखाई दे रहीं थीं।

''तुम क्या चाहते हो, मुर्गे ?'' उसने कहा, मैने उसे रोजगार दफ्तर का कार्ड दिया, उसने वह लिया, और उसे सभी कोणों से देखा। कार्ड के बाद मुझे, और फिर वापस कार्ड को देखा, और तब कहा, ''विदेशी, ये ? क्लैफाम में ऐसे बहुत से हैं। हम ब्रिटिश लोगों की तरह से, उतने चुनाव करने वाले नहीं होते।''

''क्या आप मुझे काम के बारे में बतायेंगे ?''

''अभी नहीं'' उसने कहा, ''पहले मुझे तुम्हें देखना है। अंदर आओ, मैं तलघर (basement) में हूँ।''

इसके बाद वह मुड़ा और गायब हो गया। मैंने काफी सम्भ्रमित अवस्था में घर में प्रवेश किया। वह तलघर में कैसे हो सकता था, जबकि वह मेरे सामने खड़ा था, और कैसे भी, वह तलघर में था।

घर के हॉल में अंधेरा था। मैं वहाँ ये न जानते हुए कि, कहाँ जाना है, खड़ा रहा और जैसे ही मेरे पैरों पर महसूस होती हुई एक आवाज, मेरे बगल से चीखी, मैं उछल पड़ा, ''हाय मुर्गे, क्या तुम नीचे नहीं आ रहे हो ?'' पैरों की चलने की आवाज, और उस आदमी का सिर, जिस पर मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था, धुंधले से प्रकाशित तलघर के दरवाजे से दिखाई दिया। मैंने लकड़ी की कुछ जर्जर सीढ़ियों पर, इससे डरते हुए कि, किसी भी क्षण मैं गिर सकता हूँ.....नीचे की तरफ, उसका पीछा किया। ''वोइक्स (woiks)!'' आदमी ने गर्भ सहित कहा। उसके सिगरेट के धुंऐ की बाड़ में से हो कर, अंबर रंग का एक हल्का सा बल्ब चमक रहा था। वातावरण, दम घोंटू था। एक दीवार के साथ, उसकी लंबाई के साथ–साथ नाली बहते हुए, एक बैंच थी। इसके साथ, फोटोग्राफी की तश्तरियॉ, कुछ–कुछ अंतरालों पर, रखीं थीं। इससे बगल से कुछ हट कर, एक मेज पर एक सुधरा हुआ प्रवर्धक रखा था, जबकि एक दूसरी बैंच पर, सीसे की चादर से ढकीं हुईं, बड़ी संख्या में बोतलें रखीं थीं।

''मेरा नाम हेरी है,'' आदमी ने कहा, ''अपने विलियनों (solutions) को बनाओ, ताकि मुझे तुम्हारी स्थिति दिखाई दे।'' बाद के विचार के रूप में, उसने जोड़ा, ''हम हमेशा जोन्सन की विरोधी संगत (Johnson's Constrasty) का उपयोग करते हैं, जो उन्हें वास्तव में सुन्दर बना देती है।''

अपने पैंट के पिछले पुट्ठे पर, दियासलाई की तीली को रगड़ते हुए, ताकि वह सिगरेट को जला सके, हेरी बगल में खड़ा हुआ। जल्दी ही मैंने, विकसित करने वाले (Developers), रुक कर धोने वाले (stop-bath), और स्थाई बनाने वाले (fixers) बिलियन बना लिये।

''ठीक है,'' उसने कहा। ''अब उस फिल्म की रील को पकड़ो और उसमें से कुछ प्रूफ निकाल कर दिखाओ। मैं एक परीक्षण–पट्टी (test strip) बनाने के लिए गया, परंतु उसने कहा, ''नहीं, कागज वर्बाद मत करो, उन्हें पाँच सेंकेण्ड दो''

''हेरी मेरे कार्य से संतुष्ट हुआ। ''हम मासिक वेतन देते हैं, उसने अकड़ कर चलते हुए कहा। गांठें (nodes) मत बनाना। मैं सिपाही को परेशान नहीं करना चाहता। सभी नूड्स मुझे दे दो। लड़के कई बार, विचारों को पाल लेते हैं और कुछ खास ग्राहकों के लिए, खास नूड्स में फिसल जाते हैं। उन सबको मुझे देना, समझे ? अब तुम आज रात को दस बजे यहाँ काम शुरू करो और सुबह सात बजे, तुम्हारी छुट्टी होगी, ठीक हैं ? तब, यह व्यवहार पक्का हुआ।'

उस रात को दस बजे से ठीक पहले मैं, सर्वव्यापी अंधेरे में नम्बरों को देखने का प्रयास करते हुए, गंदी गली में चल कर गया। मैं घर पर पहुँचा और उस क्षतिग्रस्त और फफोले वाले दरवाजे के

सामने, बेतरतीब सीढ़ियों पर चढ़ा। थपकी देते हुए, मैं सीढ़ियों पर वापस लौटा और मैंने प्रतीक्षा की परंतु लंबे समय के लिए नहीं। दरवाजा एक झटके साथ, उन जंग खाये हुए कब्जों की चीख के साथ, फटाक से खुला। वही औरत वहाँ थी, जिसने पहले मेरी थपकियों का जवाब दिया था। वही औरत, परंतु, बदली हुई औरत। उसके चेहरे पर पाउडर लगा हुआ था और पोता हुआ था, उसके बाल सावधानीपूर्वक लहरा रहे थे और उसकी अधिकांश पारदर्शी पोशाक, उसके पीछे जलने वाली रोशनी में, स्पष्ट विस्तार के साथ, उसके मांसल उभारों को दिखा रही थी। उसने एक चौड़ी दंत पंक्ति युक्त मुस्कान दिखाते हुए, मुस्कान मेरी ओर फेंकी और कहा, ''अंदर आओ प्रिय। मेरा नाम मैरी है, तुम्हें यहाँ किसने भेजा है ?'' मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, अपनी नीचे गले की (low cut) पोशाक को, खतरे के साथ गिराती हुई, वह मेरे सामने की ओर झुक गई, और उसने कहना जारी रखा, ''आधे घंटे के तीस शिलिंग लगेंगे, अथवा पूरी रात के तीन पाउन्ड दस शिलिंग। मुझे मुद्रायें (tricks) आती हैं, प्रिय!''

ज्यों ही, वह मुझे अंदर घुसने के लिए इजाजत देती हुई घूमी, हॉल की रोशनी में, मेरा चेहरा चमक गया। उसने मेरी दाढ़ी देखी और मेरे ऊपर ऑखें तरेरीं। ''ओह ये तुम हो'' उसने रुखाई से कहा, और उसके चेहरे से मुस्कान ऐसे गायब हो गई, जैसे कि, गीले कपड़े से ब्लैक बोर्ड को पौंछ देने से चौक गायब हो जाती है। वह घरघराई, ''मेरा समय वर्बाद कर रहे हो, यहाँ इस सब का पर पूरा ख्याल है, तुम्हें'' वह चिल्लाई, ''तुम्हें एक चाभी लेनी पड़ेगी, सामान्यतः मैं रात्रि के इस समय, व्यस्त रहती हूँ।''

मैं मुड़ा, अपने पीछे के गली के दरवाजे को बंद किया, और अपना रास्ता उस भयानक तलघर की ओर नीचे लिया। वहाँ विकसित किए जाने वाले कैसिटों का अंबार लगा था, मुझे ऐसा लगा कि, लंदन के सभी फोटोग्राफरों ने अपनी फिल्मों को यहाँ फैंक दिया था। मैंने नारकीय अंधेरे में कैसिटों को, उनके एक सिरे पर क्लिप लगा कर, और उन्हें रकाबियों में डुबोते हुए, उतारने का काम किया। ''क्लैक–क्लैक–क्लैक'' समय बताने वाली घड़ी (timer) चलती गई। कुछ समय बाद, अचानक ही समय बताने वाली घंटी, मुझे ये बताने के लिए कि फिल्म विराम–टब (stop bath) में जाने के लिए तैयार थी, बंद हो गई। अप्रत्याशित आवाज ने मुझे अपने पैरों पर उछाल दिया और मेरा सिर एक नीचे वाले दंड (beam) से जा टकराया। सभी फिल्मों को समाप्त करके, उन्हें एक मिनट के लिए विराम–टब में रख कर, बाहर निकाल कर, दोबारा फिर बाहर और अब स्थाईकरण वाले टब (fixing bath) में एक चौथाई घंटे के लिए दूसरी डुबकी, इस बार हाइपो उन्मूलक (hypo eliminator) में, और अब फिल्म धोने के लिए तैयार थी। जब ये किया जा रहा था, मैंने अंबर–बत्ती (amber light) को जला दिया और कुछ प्रूफों को बड़ा कर दिया।

दो घंटे बाद, मेरी सारी फिल्में विकसित, स्थाई, हो गईं और धुल गईं और मेथलिकृत स्प्रिट (methylated sprit) से शीघ्र सुखा लीं गईं। मैं, चार घंटे काम के साथ, बहुत तेजी से प्रगति कर रहा था। मुझे भूख लग रही थी। अपने चारों तरफ देखते हुए, मुझे केतली के उबालने का कोई तरीका नहीं दिखाई दिया। वहाँ उबालने के लिए केतली भी नहीं थी, कैसे भी, मैं बैठा और मैंने अपनी सेंडविचों को खोला और पीने का पानी भरने के लिए, सावधानी से फोटोग्राफी के नपने गिलास को धोया। मैंने ये आश्चर्य करते हुए, ऊपर रहने वाली औरत के विषय में सोचा कि, वह सुन्दर, गर्म चाय पी रही होगी, और ये आशा करते हुए, इच्छा करते हुए कि, वह मेरे लिए एक कप चाय ले आयेगी।

तेज रोशनी को अन्दर आने देते हुए, तलघर का दरवाजा, सीढ़ियों के पास, झटके से, फटाक से, खुला। मैं, खुले हुए छपाई के कागज के एक पैकेट को ढकने के लिये, इससे पहले कि प्रकाश उसको खराब कर सके, जल्दी से उछल पड़ा। मुड़ने से पहले, चीं–चीं की एक आवाज आई, ''क्या तुम यहॉ हो, एक कप चाय चाहते हो ? आज रात का कामकाज खराब है और मैंने खुद ही, अपने लिये एक केतली चाय बनाई है। तुम मेरे दिमाग से बाहर नहीं निकल सके हो। ये शायद दुरानूभूति

होनी चाहिये।'' वह अपने मजाक पर खुद हँसी और खुनखुनाती हुई सीढ़ियों पर नीचे आयी। ट्रे को नीचे रखते हुए, आवाज करते हुए, सांस बाहर छोड़ते हुए, वह लकड़ी की सीट पर नीचे बैठी।''फ्यूयू!'' उसने कहा, ''क्या तुम यहॉ आधे थके हुए नहीं हो।'' उसने अपने पहने हुए झंगे का बेल्ट खोल दिया, नीचे खींच कर खोल दिया – और मेरे आंतक के लिये, वह इसके नीचे कुछ भी नहीं पहने थी! उसने मेरी नजर को देखा और कुड़कुड़ाई, ''मैं तुम्हारे लिये कोशिश नहीं कर रही हूँ, तुम्हारे पास हाथ में, आज रात को विकसित करने के लिये दूसरे काम हैं।'' जमीन पर गिरते हुए, उसका गाउन, सूखते हुए प्रिंट की परिधि पर पहुॅचा और वह खड़ी हुई। ''जी'' वह उनमें से देखते हुए, विस्मय से चीखी, ''क्या मग ? मैं नहीं समझती कि, ये बुढ्ढे–बुढ़िया चित्र क्यों खिचवाते हैं।'' स्पष्टरूप से, बिना खेद व्यक्त करते हुए अपने ड्रेंसिंग गाउन को छोड़ती हुई, वह फिर से नीचे बैठी – यहॉ गर्मी थी, और मुझे गर्मी लग रही थी।

''क्या तुम दुरानूभूति में विश्वास करते हो ?'' उसने पूछा।

''वास्तव में, मैं विश्वास करता हूँ'' मैंने जबाव दिया।

''ठीक है, मैंने किले में एक प्रदर्शन देखा था और वे वहॉ दूरानूभुति करते थे। मैंने कहा, यह असली है, परन्तु मेरे साथी ने, जो मुझे वहॉ ले गया था, कहा कि ये सब झूठ है.....''

विस्तृत गोबी मरूस्थल[91] के एक यात्री के संबंध में, पूर्व की एक लोकोक्ति है, उसका ऊॅट मर गया था और प्यास से लगभग मरा हुआ वह व्यक्ति, साथ–साथ रेंग रहा था। अचानक अपने आगे उसने देखा, तो उसे भेड़ की एक खाल से बनी, पानी से भरी हुई एक मसक, जिसे यात्री अपने साथ ले कर चलते हैं, दिखाई दी। निराशा से, जल्दी करते हुए, वह पानी पीने के लिये झुका और उसने पाया कि, इसमें मात्र बहुत बढ़िया प्रकार के हीरे भरे हुए हैं, जिन्हें किसी दूसरे प्यासे यात्री ने, अपना भार उतारने के लिये, फेंक दिया था। पश्चिम का यही तरीका है, लोग सांसारिक सम्पत्तियाँ चाहते हैं, तकनीकी प्रगति चाहते हैं, ज्यादा से ज्यादा, अच्छे से अच्छा, धमाका करने वाले रॉकेट, विमान, चालकहीन वायुयान, और अब अंतरिक्ष में खोज करने का प्रयास कर रहे हैं। वास्तविक मूल्य, आकाशीय यात्राऐं, अतीन्द्रियज्ञान और दूरानुभूति, इन्हें जाली अथवा कॉमिक के चरण में समझते हुए, बदले में ये उन्हें शंका की दृष्टि से देखते हैं।

जब अंग्रेज भारत में थे तो यह भलीभाँति ज्ञात था कि भारतीय, विद्रोह को बताने के लिये, आसान पहुॅचों के लिये और किसी भी चीज, जो नई दिलचस्पी की हो, से संबन्धित संदेश, लम्बी दूरी तक भेज सकते थे। ऐसे संदेश, देश भर में केवल कुछ घण्टों में फैल जाते थे। यही चीज, अफ्रीका में ध्यान में आई और इसे झाड़ियों का दूरसंचार (Bush Telegraph) कहा जाता था। प्रशिक्षण के साथ, इसके लिये किसी बेतार के तार की आवश्यकता नहीं होती। हमारी नसों को झनझनाने के लिये, किसी दूरभाष की आवश्यकता नहीं होती थी। लोग अपनी अंतर्जात (innate) क्षमताओं के साथ, अपने संदेशों को भेज सकते थे। पूर्व में इन मामलों में शताब्दियों से अध्ययन चल रहा है। पूर्वी देशों के लोग, इन विचारों के साथ सहानुभूति रखते हैं और प्रकृति से मिली इस भेंट को रोकने के लिये, उनके पास कोई निषेधात्मक विचार नहीं है।

''मैरी,'' मैंने कहा, ''मैं तुम्हें एक छोटी तरकीब बताऊॅगा, जो दूरानुभूति अथवा पदार्थ के ऊपर मन का प्रदर्शन करती है। मान लो, मैं मन हूँ और तुम पदार्थ हो।''

---

91 अनुवादक की टिप्पिणी : गोबी का अर्थ होता है अर्द्ध मरुस्थल। ये एशिया का एक बड़ा मरुस्थल क्षेत्र है जो उत्तरी पश्चिमी चीन के और दक्षिणी मंगालिया के क्षेत्रों तक विस्तृत है। इसका विस्तार अटाई पर्वतों और उत्तर में मंगोलिया के घास के मैदानों तक है और इसके पश्चिम में ताकला माकल मरुस्थल है। इतिहास में गोबी को रेशमी सड़क के साथ–साथ, अनेक महत्वपूर्ण नगरों की स्थिति के कारण, और महान मंगोल साम्राज्य के रूप में जाना जाता है।

गोबी वर्षा की छाया के क्षेत्र के कारण, जो हिमालय पर्वत श्रेणियों से बनती है, मरुस्थल है। ये पर्वत श्रेणियाँ, हिंद महासागर से आने वाले बादलों को गोबी क्षेत्र में जाने से रोक देती हैं, फलतः वहां वर्षा बहुत कम होती है और वार्षिक वर्षा लगभग 7.6 इंच है। गोबी का क्षेत्रफल लगभग पांच लाख वर्ग मील या बारह लाख पिन्चानवे हजार वर्ग किलोमीटर है। सर्दियों में औसत ताप, –40 डिग्री सेंन्टीग्रेड रहता है, जबकि गर्मियों में औसत ताप, लगभग 50 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता है। गोबी मरुस्थल में अनेक महत्वपूर्ण जीवाष्म पाए जाते हैं। डाइनासोर के अण्डों का पहला जीवाष्म यहीं प्राप्त हुआ था। तांबे और सोने की खदानें ओयू तोलगोई में हैं, जो मंगोलिया में चीनी सीमा से लगभग 80 किलोमीटर दूर हैं।

उसने मेरी तरफ संदेहात्मक रूप से देखा और एक क्षण के लिये ऑखें भी तरेरीं और तब उत्तर दिया, ''ठीक है, अमोदप्रमोद के लिये कोई भी चीज चलेगी।

मैंने उसकी गर्दन पर, पीछे पीठ पर, एक मच्छर से उसे कटवाने की कल्पना करते हुए, अपने विचारों को केन्द्रित किया। मैंने अपने विचारों में, उस मच्छर को काटते हुए देखा। अचानक ही मैरी ने, उस धावा करने वाले कीट का वर्णन करने के लिये, एक बहुत शरारती शब्द कहते हुए, अपनी गर्दन को पीछे के हिस्से से झटका। मैंने विचारों में सोचा कि, उसके काटने का जख्म गहरा हो रहा है, और तब उसने मेरी तरफ देखा और हंसी, ''उसने मुझसे कहा, यदि मैं ऐसा कर सकती तो मैं निश्चितरूप से अपने उन साथियों के साथ जो मुझे मिलने आते हैं, कुछ मौज करती।''

मैं, रात के बाद रातों में, उस गंदे मैले कुचैले घर में, पिछबाड़े की उस गंदी गली में गया। बहुधा, मैरी जब व्यस्त नहीं होती, तो वह चाय की केटली के साथ, बात करने और सुनने के लिये आ जाती। धीमे–धीमे मुझे यह जानकारी हुई कि, बाहरी आवरण के पीछे अपनी कोठरी में, जो जीवन वह जी रही थी, उसके बावजूद, वह वास्तव में, जो आवश्यकता में हों, उनके प्रति काफी दयालु औरत थी। उसने मुझे उस आदमी के बारे में बताया, जिसने मुझे काम दिया था और मुझे महीने के आखरी दिन, घर में रहने के लिये, सावधान कर दिया था।

रात के बाद रात, मैंने फिल्मों को विकसित किया और उनके प्रिंट उठाये और हर चीज को अगले दिन, सुबह जल्दी वापस ले जाने के लिये, तैयार रखा। पूरे महीने भर, मैंने मैरी को छोड़ अन्य किसी को, वहाँ नहीं देखा, तब इकत्तीस तारीख को, मैं देर तक वहॉ रुका। नौ बजे के करीब, एक धूर्त सा दिखने वाला व्यक्ति, शोर करता हुआ, बिना गलीचे वाली सीढ़ियों के ऊपर से चलता हुआ, नीचे आया। वह नीचे आकर रुका, और उसने खुले विरोध के साथ मुझे देखा। ''सोचो तुम अपना पहला भुगतान प्राप्त करने वाले हो, ए ?'' उसने जोर देते हुए, धमकी के साथ कहा। ''तुम रात को काम करने वाले आदमी हो, यहॉ से जाओ।''

''जब मैं तैयार होऊॅगा, तब मैं यहॉ से जाऊॅगा, इससे पहले नहीं,'' मैंने उत्तर दिया। ''तुम ***!" उसने कहा, ''मैं तुम्हें अपने होंठ बंद रखना सिखाऊॅगा''

उसने एक बोतल को छीना, दीवार से टकरा कर उसकी गर्दन तोड़ी, और उसे ले कर, नुकीले धारदार टुकड़े को सीधे मेरे चेहरे पर निशाना साधते हुए, मुझ पर झपटा। मैं थका हुआ, और थोड़ा चिड़चिड़ा भी था। मुझे, पूर्व के महान व्यक्तियों में से कुछ के द्वारा, लड़ाई लड़ना सिखाया गया था। मैंने उस दुर्बल से, नाटे आदमी को, अस्त्रविहीन कर दिया – एक साधारण सा कार्य – और उसकी जोरदार पिटाई करते हुए, जैसी इससे पहले शायद ही कभी हुई हो, उसे अपने घुटनों पर गिरा दिया। मैरी, चीखों को सुनते हुए, अपने बिस्तर से दौड़ती हुई आई और सीढ़ियों पर दृश्य का मजा लेते हुए बैठ गई। वह व्यक्ति, वास्तव में रो रहा था, इसलिये मैंने उसके सिर को फोटो धोने वाले टैंक में धकेल दिया, जिससे वह अपने आंसू धो सके और भद्दी भाषा के प्रवाह को रोके। जैसे ही मैंने उसे खड़ा होने दिया। मैंने कहा, ''उस कोने में खड़े हो जाओ और यदि तुम, जब तक मैं नहीं कहूॅ, उससे पहले हिले, तो मैं दुबारा यही सब शुरू कर दूगॉ।'' वह नहीं हिला।

''मेरे भगवान! ये उसकी सूजी हुई ऑखों में से निकली एक आह थी,'' मैरी ने कहा। ''ये नाटा सा, छोटा सा, मरियल सा, सोहो गिरोहों (soho gangs) में से एक का नेता है, तुमने उसे भयभीत कर दिया है, वह ये सोचता था कि, वह हमेशा से ही सबसे अच्छा लड़ाका है, वह था।

मैं बैठा और मैंने प्रतीक्षा की। लगभग एक घण्टे बाद, वह व्यक्ति, जिसने मुझे काम पर लगाया था, सीढ़ियों से नीचे आया, जैसे ही उसने मुझे और गुण्डे को देखा, वह पीला पड़ गया। ''मुझे अपना पैसा चाहिये,'' मैंने कहा। ''ये बहुत खराब महीना गुजरा है, मेरे पास कोई पैसा नहीं है, मुझे अपने बचाव के लिये, उसे भी देना होता है,'' उसने उस गुण्डे की ओर इशारा करते हुए कहा।

मैंने उसे देखा। ''क्या तुम समझते हो कि, मैं इस मजबूत खोली में कुछ न पाने के लिये, काम कर रहा हूँ ?'' मैंने पूछा।

''मुझे कुछ दिन दो और यदि मैं कुछ इकट्ठा कर सका, तो मैं देखूगॉ। ''वह''– गुण्डे की तरफ इशारा करते हुए बोला– मुझसे पूरा पैसा ले लेता है क्योंकि यदि मैं उसे नहीं दूँ, तो मेरे आदमी मुसीबत में फंस जाते हैं।''

कोई पैसा नहीं, कुछ पाने की कोई आशा नहीं, कुछ भी नहीं! मैंने आगे दो हफ्तों तक, ये जारी रखने के लिये, कहीं से भी पैसा लाने के लिये, बॉस को समय देने के लिये, अपनी सहमति दे दी। ये सोचते हुए कि, मैं कितना सौभाग्यशाली था कि, मैंने किराया बचाने के लिये, क्लैफाम जाने के लिये, साईकिल का प्रयोग किया था, दुख के साथ मैंने घर छोड़ दिया। जैसे ही मैंने अपनी साईकिल का ताला खोला, वह गुण्डा गुप्तरूप से मुझ तक, आड़े–तिरछे (छिपते–छिपाते) आया। ''कहो, गुव,'' वह भर्राई हुयी आवाज में फुसफुसाया, ''क्या तुम अच्छा काम चाहते हो ? मेरी तरफ देखो। एक हफ्ते के बीस क्विड (quid) मिलेंगे, सभी मिलेंगे।''

''नाक बहते हुए, नाक की छोटी पिचकारी मारते हुए तुम, यहॉ से भागो'' मैंने रूठ कर जबाव दिया।

''एक हफ्ते के पच्चीस क्विड!''

ज्यों ही मैं झुंझलाहट में उसकी तरफ मुड़ा, वह भुनभुनाता हुआ, फुर्ती से फुसफुसाता हुआ, बाहर चला गया, ''मैं इसे तीस कर दूगाँ, और जितनी भी औरतें तुम चाहो, और जितनी भी शराब तुम पी सकते हो, सबसे अच्छा प्रस्ताव। यह एक खेल होगा''

मेरे चेहरे के भावों को पढ़ते हुए, वह रेलिंग के ऊपर तलघर के साथ दौड़ा और किसी के निजी कमरों में गायब हो गया। मैं मुड़ा, साईकिल पर चढ़ा, और चढ़ कर चला।

ये प्रक्रिया करते हुए और गलियों में चक्कर लगाते हुए और एक सड़क छाप फोटोग्राफर के रूप में, लगभग तीन महीने तक मैंने काम को जारी रखा परन्तु, न तो मुझे, न ही दूसरे आदमियों को, कुछ मिला। अंत में निराशा के साथ, हमने सब कुछ समाप्त कर दिया।

अब तक हम, बेजवाटर (Bayswater)[92] जिले में, उन संदेहपूर्ण प्रांगणों पर जा चुके थे, और काम पाने के प्रयास में, एक के बाद एक रोजगार दफ्तरों में घूमे। अंत में, शायद मुझसे छुटकारा पाने के लिये एक अधिकारी ने कहा, ''तुम उच्च नियुक्तियों की शाखाओं में क्यों नहीं जाते, जो टेविस्टॉक स्क्वायर (Tevistock Square) में हैं ? मैं तुम्हें एक कार्ड दूँगा। आशा से भरा हुआ मैं, टेविस्टॉक स्क्वायर में गया। मुझे सुन्दर–सुन्दर वायदे किये गये, उनमें से एक यहॉ है :

काम के लिहाज से, हॉ हम तुम्हें ठीक बैठ सकते हैं, हमें स्कॉटलेण्ड (Scotland)[93] में, केथनैस (Cathness)[94] में, अपने नये परमाणु शोध संस्थान के लिये एक आदमी चाहिये। क्या तुम साक्षात्कार के

---

92 अनुवादक की टिप्पिणी : बेजवाटर केन्द्रीय लंदन में, वेस्ट मिस्टर जिले में एक क्षेत्र है। यह लंदन के अत्याधुनिक क्षेत्रों में से एक है। मूल अंग्रेज लोगों के अलावा यहां अनेक राष्ट्रीयता के लोग भी रहते हैं। विशेषरूप से, यहाँ अरब आबादी बहुतायत से है, ग्रीक का समाज बहुत बड़ा है, और अनेक अमरीकी और लंदन की सबसे बड़ी ब्राजीलीय समुदाय के लोग यहाँ रहते हैं।

93 अनुवादक की टिप्पिणी : स्कॉटलेण्ड एक काउंटी है जो ब्रिटिश राज्य का भाग है और ग्रेट ब्रिटेन के उत्तरी एक तिहाई द्वीप को घेरता है। इसकी सीमा दक्षिण की ओर इग्लेण्ड से मिलती है, और बाकी सभी ओर एटलांटिक महासागर से, पूर्व में उत्तरी सागर से और उत्तरी चैनल और दक्षिण पूर्व में आयरलेण्ड के समुद्र से मिलती है। इसके साथ, इस काउंटी का मुख्य भाग, लगभग 790 छोटे–छोटे द्वीपों से मिल कर बना है जिसमें उत्तरी आईसेल और हेब्रीडेश भी शामिल हैं।

एडिनवर्ग, इस काउंटी की राजधानी और दूसरा सबसे बड़ा शहर और 18वीं शताब्दी में स्कॉटी बसाबट का सबसे बड़ा केन्द्र है, जिसने स्कॉटलैण्ड को इंग्लैण्ड के एक व्यापारिक, बौद्धिक और औद्योगिक शक्ति केन्द्र के रूप में विकसित किया। ग्लासगो, स्कॉटलेण्ड का सबसे बड़ा शहर, पहले कभी इग्लेण्ड के बड़े औद्योगिक नगरों में रहा है। अब स्कॉटलेण्ड का तीसरा सबसे बड़ा शहर आवर्डीन, जिसे ''यूरोप के तेल की राजधानी'' का खिताब दिया गया है।

स्कॉटलेण्ड ने, प्रथम विश्वयुद्ध में, न केवल मछलियाँ, मानव शक्ति, जलयान, मशीनें और धन दिया, वल्कि महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1911 में इसकी आबादी 48 लाख थी जिसमें से लगभग पचास हजार से अधिक लोग युद्ध में भेजे गए थे, जिनमें से एक चौथाई से अधिक मारे गए या बीमार हो गए और डेढ़ लाख लोग गंभीर रूप से घायल हुए। लुफ्तबाफे के शहर के ऊपर भयंकर बमबारी होने के बावजूद, द्वितीय विश्वयुद्ध ने इसमें, नए सिरे से खुशहाली पैदा की। रोबोट बाटसन बाट ने यहां राडार का आविष्कार किया जो ब्रिटेन के युद्ध के लिए अमूल्य सिद्ध हुआ। स्कॉटलेण्ड में पांच प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे ग्लासगो, एडीनवर्ग, आवर्डीन, प्रेस्टमिकी और इनवरनेस हैं।

94 अनुवादक की टिप्पिणी : कैथनेस स्कॉटलेण्ड का स्थानीय प्रशासन क्षेत्र है। कैथनेस सूतरलैण्ड के साथ दक्षिणी सीमा बनाता है अन्यथा उसकी पूरी सीमा समुद्री है। कैथनेस विक में एक हवाई अड्डा है। स्टोमा का पेन्टालैण्ड फर्थद्वीप कैथनेस में है। ये उत्तर दक्षिण में 30 मील और पूर्व पश्चिम में भी 30 मील, फैला हुआ है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 712 वर्गमील है।

लिये वहॉ पहुॅचोगे ?'' उसने मेहनत से, अपने कागजातों का ढेर लगाया।

मैंने उत्तर दिया, ''क्या आप यात्रा व्यय देते हैं ?''

''ओह! प्रिय, प्रिय नहीं'' उसका दमदार जबाव था, ''तुम्हें अपने खर्च पर वहॉ जाना होगा।''

दूसरे मौके पर, मैंने अपने खर्चे पर, व्हेल्स (¡les) में कार्डिगन (Cardigan)[95] की यात्रा की। सविल इंजीनियरिंग का जानकार, एक आदमी चाहिये था। पूरा इग्लेण्ड पार करके बेल्स में, मैं अपने खर्चे पर गया। स्टेशन, साक्षात्कार के स्थान से सदमा देने वाली दूरी पर था। मैं कार्डीगन की गलियों में पैदल चल कर गया और उसके दूसरे सिरे पर पहुॅचा। ''मेरे भगवान, मेरे भगवान, वास्तव में, ये अभी एक लम्बा रास्ता है, देखो'' एक औरत ने, जिससे मैंने रास्ता पूछा था, आनन्द के साथ कहा। मैं चलता गया, चलता गया, और अंत में पेड़ों के पीछे छिपे, एक घर के प्रवेशद्वार पर पहुॅचा। सड़क पर रखरखाव बहुत अच्छा था। यह बहुत लम्बी भी थी; पहाड़ पर ऊँची चढ़ाई। मैं अंत में घर पर पहुॅचा। नम्र व्यक्ति ने, जिसने मुझे देखा, मेरे कागजातों को देखा (जो मुझे से शंघाई से इग्लेण्ड भेजे गये थे)। उसने देखे और अनुमोदन में सिर हिलाया। ''ऐसे कागजातों के साथ, तुम्हें रोजगार प्राप्त करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये।'' उसने कहा। ''दुर्भाग्यवश, तुम्हें इग्लेण्ड में सिविल इंजीनियरिंग के ठेकों का कोई अनुभव नहीं है। इसलिये मैं तुम्हें कोई नियुक्ति नहीं दे सकता। लेकिन मुझको बताओ। ''उसने कहा, ''तुम एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर हो, तुमने सिविल इंजीनियरिंग का अध्ययन क्यों किया? मैं देख रहा हूॅ कि, तुम्हारे पास सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि भी है।''

''एक चिकित्सीय व्यक्ति के रूप में, मुझे दूरस्थ जिलों की यात्रा करनी पड़ती थी, और मैं खुद का अस्पताल बनने के योग्य होना चाहता था,'' मैंने कहा।

''हम्म्प.....'' वह भुनभुनाया, मैं चाहता था कि, मैं तुम्हारी मदद कर पाऊॅ परन्तु कर नहीं सकता।

बाद में, मैं कार्डीगन की गलियों में घूमता रहा और वापिस ड्रियरी (dreary) रेल्वे स्टेशन आया। एक ट्रेन के लिये दो घण्टे प्रतीक्षा करनी थी, परन्तु अंत में, मैं ये सब बताने के लिये घर पहुॅचा, एक बार फिर कोई काम नहीं मिला। अगले दिन, मैं वापस रोजगार कार्यालय गया। मेज पर बैठा हुआ आदमी – क्या वह कभी हिला ? मैंने आश्चर्य किया, कहा, ''मैं कहता हूॅ, बूढ़े लड़के, हम यहॉ बात नहीं कर सकते। मुझे बाहर लंच पर ले जाओ और मैं तुम्हे कुछ बताऊगॉ, क्या ?''

एक घण्टे से अधिक समय के लिये, मैं टालमटोल करते हुए, गली के बाहर खिड़कियों में देखते हुए, और ये आशा करते हुए कि, मेरे पैरों का दर्द खत्म हो जाये, घूमता रहा। लंदन की पुलिस के एक सिपाही ने मुझे कड़बेपन से देखा। गली के दूसरे सिरे से, स्पष्टरूप से वह यह तय करने में सक्षम नहीं था, कि क्या मैं एक हानि रहित व्यक्ति था अथवा एक भावी बैंक लुटेरा। शायद उसके पैरो में भी दर्द हो रहा था। अंत में, जीर्णशीर्ण सीढ़ियों पर से आवाज करता हुआ वह आदमी, मेज से उठा। ''नम्बर उन्यासी बूढ़े लड़के, तुम उन्यासी नम्बर की बस लोगे। मैं एक सुन्दर छोटा स्थान जानता हूॅ, जो सेवा वह देते है, उसके लिये काफी ठीक था।'' हम गली में चले, उन्यासी नम्बर की बस पकड़ी और शीघ्र ही अपने ठिकाने पर पहुचे। उन रेस्त्राओं में, बगल की गलियों में, मुख्य आम रास्ते से हट कर, जहॉ जितनी छोटी इमारत थी उतना ही बड़ा प्रभाव था। आदमी ने अपनी मेज पर और मैंने मेज के बिना अपना लंच लिया, मेरा लंच बहुत अल्पव्ययी था और उसका बहुत अधिक भव्य, खर्चीला, और तब एक संतोष की आह के साथ उसने कहा, ''तुम जानते हो, बूढ़े लड़के, तुम लोग अच्छा रोजगार पाने की आशा रखते हो, लेकिन, क्या तुमने सोचा है कि, यदि अच्छी नियुक्तियॉ उपलब्ध होतीं, इतनी अच्छी, तो

---

95 अनुवादक की टिप्पिणी : कार्डिगन मिड वेल्स में कार्डिगन काउंटी का एक शहर है ये टीफी नदी के ज्वार के पहुंच के पास बंसा हुआ है जहां क्रार्डिगन, पेनब्रोस के शायर से मिलती है। ये कार्डिगन शायर काउंटी का, एक ऐतिहासिक शहर था और वर्तमान में कार्डिगन काउंटी का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

कार्डिगन की बसाहट, नॉर्मन किले के आसपास विकसित हुई, जिसे 11वीं शताब्दी के बाद में और 12 वीं शताब्दी के प्रारंभ में, बनाया गया था। 18वीं शताब्दी में शहर एक प्रमुख बन्दरगाह बन गया, जो 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में पतन में चला गया। कार्डिगन की आबादी लगभग 4200 है। नया कार्डिगन एक छोटा सा और व्यस्त नगर है। जिसमें खुदरा व्यापार शिक्षा, स्वास्थ्य, पूजा और खेल की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। जब नॉर्मन की सेना ने कार्डिगन को विजित किया, रॉबोट मोंटगोमरी द्वारा, 1093 में एक किला बनाया गया। कार्डिगन की भाषा मुख्यरूप से वेल्श भाषा है। कार्डिगन का जलवायु खुशनुमा है, जहॉ गर्मियॉ आरामदायक और सर्दिया ठण्डी होती हैं।

पहले, स्टाफ में से हम ही लोगों ने, ले लीं होतीं ? हमारे अपने काम में, हम सुखी नहीं रह पाते, तुम जानते हो।''

''ठीक है,'' मैंने कहा, इस पिछड़े हुए शहर में या इसके बाहर, रोजगार पाने का कोई तो रास्ता होगा।''

''परेशानी ये है कि, तुम अलग दिखाई देते हो, तुम ध्यान आकर्षित करते हो, तुम बीमार भी दिखते हो, यदि तुम अपनी दाढ़ी मुड़ा लो तो, ये शायद तुम्हारी मदद कर सकती है।'' स्पष्टरूप से, ये आश्चर्य करते हुए कि, एक सुन्दर से बहाने से कैसे यहॉ से भागा जाये, उसने अनिश्चयपूर्वक मेरी ओर टकटकी लगा कर देखा। सहसा उसने अपनी घड़ी की ओर देखा और खतरे में अपने पैरों पर उछला; ''मैं कहता हूँ, बूढ़े लड़के, मुझे शीघ्र ही यहॉ से उड़ लेना चाहिये, तुम जानते हो, गुलामों का बूढ़ा स्वामी, मुझे देख रहा होगा।'' उसने मेरी भुजाओं को थपथपाया और कहा, ''टा टा, हमारे पास आने में अपना पैसा बर्बाद न करो, बैरों और ऐसे ही दूसरे कामों को छोड़ कर, हमारे पास सामान्यतः कोई नौकरियॉ नहीं।'' इसके साथ ही वह घूमा और अपने भारी भरकम बिल का भुगतान मेरे ऊपर छोड़ते हुए गायब हो गया।

मैं गली में घूमता रहा। कुछ अच्छा करने की इच्छा के साथ, मैंने एक दुकान की खिड़कियों में लगे हुए छोटे विज्ञापनों की ओर देखा। ''अपने छोटे बच्चे के साथ, नौजवान विधवा, काम करना चाहती है .....'' ''आदमी, कठिन नक्काशी के काम को करने वाला, कमीशन के आधार पर चाहिये,'' ''महिला मेसयूज (Lady Masseuse), अपने घर पर इलाज करती है।'' (मैं शर्त लगा सकता हूँ, यदि वह करती हो, मैंने सोचा) मैं ज्यों ही आगे चला, मैं एक प्रश्न के ऊपर चकित हुआ; यदि पुरातन पंथी एंजेसियॉ, ब्यूरो, एक्सचेंज आदि मेरी मदद नहीं सकते तो मैं दुकान की खिड़कियों में लगे विज्ञापनों का सहारा क्यों न लूँ। क्यों नहीं ?'' मेरे थके हुए पैरों ने कहा, चूंकि वह भारी हो रहे थे, मेहनत पर खोखले हो रहे थे और फुटपाथ पर असहानुभूतिपूर्ण हो रहे थे।

उस रात, घर पर मैंने, यह सुलझाने के लिये कि, जिंदा कैसे रहा जाये और प्रभामण्डल के शोध कार्यो को जारी रखने के लिये पर्याप्त धन कैसे प्राप्त किया जाये, अपने दिमाग को दौड़ाया। अंत में, मैंने छह पोस्टकार्ड, ये कहते हुए टाइप किये, ''चिकित्सा का डॉक्टर (ब्रिटेन में पंजीकृत नहीं) मनोचिकित्सीय मामलों में, अपनी सहायता का प्रस्ताव देता है। अन्दर पूछताछ करें।'' मैंने दूसरे छह भी तैयार किये, जिन पर लिखा था, ''व्यावसायिक व्यक्ति, अत्यधिक विस्तार के साथ घूमा हुआ, वैज्ञानिक योग्यताऐं, किसी भी असामान्य सेवा के लिये प्रस्तावित करता है। उत्कृष्ट संदर्भ। लिखें बॉक्स नं .....,'' अगले दिन लंदन की कुछ दुकानों की खिड़कियों में, विज्ञापनों के प्रमुख रूप से प्रदर्शित होने के बाद, मैं परिणामों की प्रतीक्षा के लिये वापिस आ कर बैठ गया। ये आये। मैंने अपना खर्च चलाने के लिये मनोवैज्ञानिक कार्य प्राप्त करने की पर्याप्त व्यवस्था की और मेरी आर्थिक व्यवस्था की आग, धीमे से कुछ सुधरी। अतिरिक्त कार्य के रूप में, मैंने मुक्त विज्ञापन करना शुरू किया, और इग्लेण्ड की सबसे बड़ी कम्पनियों में से एक दवाई बनाने वाली कम्पनी ने मुझे अंशकालीन काम दिया। इसका संचालक, एक डॉक्टर था, जो बहुत ही उत्पादक और मानवीय संचालक था, उससे मैं मिला, उसने मुझे ले लिया होता यदि स्टाफ की बीमा योजना, जो चालू थी वह नहीं होती। मैं बहुत ज्यादा बीमार और बहुत ज्यादा बूढ़ा था। शरीर को बदलने का भार अत्यधिक था। नये शरीर के सब अणुओं को बदलने का तनाव, मेरे लिये लगभग इतना अधिक था कि शायद, मैं ही उसे झेल पा रहा था, फिर भी, विज्ञान के हित में, मैं इस पर टूट पड़ा। अब मैं अधिक आवृति के साथ, यात्रा करने लगा। रात को सूक्ष्मशरीर से तिब्बत के लिये और सप्ताह के अंत में, जब मैं जानता था कि, मुझे परेशान नहीं किया जायेगा क्योंकि, जो आदमी सूक्ष्मशरीर से यात्रा कर रहा है, उसके शरीर को छेड़ना, सरलता से मारक हो सकता है। मुझे तसल्ली देने वाले, मेरे सहयोगी, वे उच्च लामा थे, जो मुझे सूक्ष्मशरीर में मिलते थे, और

मेरा इनाम, मेरे कार्यो के प्रति उनकी सराहना के रूप में था। ऐसी ही एक यात्रा पर, मैं अपने अत्यधिक प्रिय पालतू जानवर, एक बिल्ली जिसकी प्रखरता, अनेकों आदमियों को शर्मिदा कर दे, के गुजरने पर, शोक मना रहा था। एक बूढ़ा लामा, सूक्ष्मशरीर में, मेरे साथ सहानुभूति में मुस्कराया और उसने कहा, ''मेरे भाई! क्या सरसों के बीज की वह कहानी तुम्हें याद नहीं है ?'' सरसों का बीज, हॉ कितने अच्छी तरीके से ये मुझे याद है, हमारे धर्म की एक शिक्षा.....

बेचारी गरीब औरत का पहला पैदा हुआ बच्चा, गुजर गया था। दुख से लगभग बाबरी हुई, वह शहर की गलियों के बीच फिरती रही, किसी को अपने जीवन में अपने बच्चे को फिर से जीवित करने लिये, किसी की दुहाई देते हुए। कुछ लोग उसकी गिरी हुई हालत पर मुड़े, कुछ लोगों ने नाक भौं चढ़ाईं और उसको पागल कहते हुए, ये बताते हुए कि, उसको यह विश्वास करना चाहिये कि, उसके बच्चे को पुर्नजीवित नहीं किया जा सकता, उसका उपहास किया। परन्तु, उसे साँत्वना नहीं मिल सकी, और किसी से ऐसे शब्द नहीं मिले, जो उसके कष्ट को हल्का कर सकते। अंत में, एक बूढ़े पुजारी ने उसकी अत्यधिक निराशा को ध्यान में रखते हुए, उसको बुलाया और कहा, ''इस दुनियाँ में एक ही आदमी है, जो तुम्हारी मदद कर सकता है। वह पूर्ण है बुद्ध, जो पहाड़ की चोटी पर रहता है, जाओ और जा कर उससे मिलो।''

जवान शोक संतृप्त मॉ, अपने दुख के भार से, उसका खुद का शरीर भी दर्द कर रहा था, धीमे –धीमे, उस कठोर पहाड़ पर चढ़ी और अंत में, एक कोने की तरफ मुड़ी और देखा कि, बुद्ध एक चट्टान पर बैठे हैं। दण्डवत करते हुए वह चिल्लाई, '' ओ बुद्ध, मेरे बच्चे को वापस जीवित कर दो।'' और बुद्ध यह कहते हुए उठे, ''शहर में जाओ। घर–घर में जाओ और उस घर में से, जिसमें कभी किसी की मौत नहीं हुई हो, सरसों का एक दाना ला कर मुझे दे दो,'' उस बेचारी औरत को अपना नम्र स्पर्श दिया। वह जवान औरत, ज्यों ही अपने पैरों पर खड़ी हुई, उमंग में जय जय कार करने लगी और तेजी से पर्वत के बगल से नीचे उतरी। जल्दी से वह पहले घर में गई और उसने कहा, ''बुद्ध ने मुझे आश्वासन दिया है, और एक घर से, जो कभी मौत को ज्ञात नहीं हुआ हो, सरसों का एक दाना लाने के लिये आज्ञा दी है।''

''इस घर में,'' उसे ऐसा बताया गया, ''अनेक लोग मर चुके हैं।''

अगले घर में उसे बताया गया, ''ये कहना असंभव है कि, यहॉ कितने लोग मर चुके हैं, क्योंकि यह एक पुराना घर है।''

वह एक घर से दूसरे घर तक गई, पूरी गली में, अगली गली में, और एक के बाद एक। आराम के लिये या खाने के लिये मुश्किल से रुकते हुए, वह पूरे शहर में घर–घर गई और उसे एक भी ऐसा घर नहीं मिला, जिसमें कभी न कभी मौत का आगमन न हुआ हो।

धीमे से, उसने अपने कदम, पहाड़ी चढ़ाई की ओर बढ़ाये। बुद्ध पहले की तरह से, ध्यान में बैठे थे। ''क्या तुम सरसों का दाना लाई हो ?'' उन्होंने पूछा।

''नहीं और न मैं अब लाना चाहती हूँ,'' उसने कहा। मेरे दुःख ने मुझे अंधा बना दिया था, जिससे मैंने सोचा कि, केवल मुझे ही ये दुःख और यातना झेलनी पड़ी है।''

''तो तुम यहॉ दुबारा मेरे पास क्यों आई हो ?'' बुद्ध ने पूछा।

''ये कहने के लिये कि, क्या आप मुझे सत्य सिखायेंगे,'' उसने उत्तर दिया।

और तब बुद्ध ने उसे बतायाः ''मनुष्यों के इस पूरे विश्व में और देवताओं के सभी विश्वों में केवल यही नियम हैः सभी चीजें अस्थाई हैं।

हॉ, मैं सभी शिक्षाओं को जानता था, परन्तु एक प्रिय की हानि, अभी एक हानि ही है। बूढ़ा लामा, फिर से मुस्कराया और उसने कहा, '' तुम्हारे इस कठोर और मुश्किल जीवन में, तुमको विशेष रूप से आनन्दित करने के लिये, छोटा सा, सुन्दर सा एक व्यक्ति (प्राणी), तुम्हारे पास आयेगा।

प्रतीक्षा करो।''

कुछ समय बाद, कुछ महीनों के बाद, हम लेडी क्यूई (Lady Ku'ei) को अपने घर में लाये। ये सुन्दरता से युक्त और सबको मात देने वाली प्रखर बुद्धि की, एक सियामी बिल्ली (Siamese Kitten) थी। हमारे द्वारा पाली गई, जैसे कोई किसी मानव को पालता, उसने हमें ऐसे प्रत्युत्तर (responses) दिये जैसे कि, कोई अच्छा मानव देता। निश्चय ही, उसने हमारे दुखों को हल्का कर दिया और मानवीय बेईमानी के भार को कम दिया।

बिना किसी वैधानिक पायदान के, स्वतंत्र रूप से काम करना, वास्तव में कठिन था। मरीज अपना विचार, इस प्रकार बताते थे; शैतान बीमार था, शैतान भिक्षु होता है। शैतान ठीक हुआ, वह शैतान था। पैसा अदा न करने वाले मरीज, अपनी बात को छिपाने के लिये, जिस तरह की कहानियॉ सुनाते थे, उसने अनेकों पुस्तकें पट जायेंगी, और अलोचकों का जबाव देने के लिये, अत्यधिक समय तक, काम करने का कारण बनेंगीं। मैंने स्थाई कार्य के लिये तलाश जारी रखी।

''ओह,'' एक मित्र ने कहा, ''तुम स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य कर सकते हो, छद्मलेखन (Ghost Writing)। क्या तुमने इसके बारे में कभी सोचा है ? मेरे एक दोस्त ने कई किताबें लिखी है, मैं उसका तुमसे परिचय करा दूगॉ।'' बाद में, उस मित्र से मिलने के लिये, हम लंदन के अनेकों महान अजायबघरों में से एक में गए। एक कार्यालय में मुझे दिखा, और एक क्षण के लिये मैंने सोचा कि, मैं अजायबघर के भण्डार कक्ष में हूँ, यदि मैं अपने ऊपर किसी से टकरा जाऊँ, तो मुझे हिलने में भी डर लगता था, इसलिये मैं केवल बैठा और बैठने से दुखी हुआ। अंत में वह मित्र आया। ''पुस्तकें'' ? उसने कहा। ''स्वतंत्र लेखन ? मैं तुम्हें अपने एजेंट के साथ मिला दूगॉ। वह तुम्हें तय करा देगा।'' और तब उसने मुझे परिश्रम से लिखा हुआ एक कागज दिया, जिस पर एक पता लिखा था। लगभग इससे पहले कि, मैं जान सकूँ, कि क्या हुआ था, मैं कार्यालय के बाहर था। ''ठीक है'' मैंने सोचा, ''क्या ये भी बेवकूफी की दूसरी दौड़ होगी ?''

मैंने अपने हाथ में, कागज के टुकड़े को देखा। रीजेन्ट स्ट्रीट (Regent Street) ? अब, गली के किस सिरे पर होगा ? मैं ट्रेन से ऑक्सफोर्ड सर्कस (Oxford Circus)[96] पर उतरा, और सामान्य भाग्य से, मैंने पाया कि, मैं गलत सिरे पर था। रीजेन्ट स्ट्रीट भीड़भाड़ वाली थी, बड़ी–बड़ी दुकानों के सामने, लोग भीड़ में पिसते हुए दिखाई दे रहे थे। मैं नहीं जानता कि यह क्या था, लड़कों का एक बिग्रेड या मुक्तिसेना का बैण्ड, पतली सी गली (Condute Street) में शोर करता हुआ, नीचे की तरफ जा रहा था। सोने के काम करने वाली और चॉदी के काम करने वाली कम्पनियों को पीछे छोड़ते हुए, और ये सोचते हुए कि, उनके सामानों में से थोड़े से, मेरे शोधकार्य में काम में आ सकेंगे, मैं चलता गया। जहॉ स्ट्रीट, पिकाडिली सर्कस (Piccadilly Circus)[97] में प्रवेश करने के लिये मुड़ी। मैंने सड़क को पार किया और उस कम्बबख्त नम्बर को ढूंढ़ा। ट्रेवल एजेंसी, जूते की दुकान, परन्तु लेखकों का कोई एजेन्ट नहीं। तब मैंने दो दुकानों की बीच में घुसे हुए नम्बर को देखा। मैं एक छोटे गलियारे में हो कर, दूर के सिरे पर गया, जहॉ एक खुली लिफ्ट थी। वहॉ घण्टी का बटन (switch) था इसलिये मैंने उसका उपयोग किया। कुछ नहीं हुआ। मैंने शायद पॉच मिनट तक इंतजार किया और दुबारा से बटन को दबा दिया।

---

96 अनुवादक की टिप्पिणी : ऑक्सफोर्ड सर्कस, ऑक्स्फोर्ड स्ट्रीट और रीजन्ट स्ट्रीट का लंदन के पश्चिमी किनारे पर व्यस्ततम चौराहा है। यहॉं से विभिन्न मार्गों की अनेक बसें, ऑक्सफोर्ड नली रेलवे (Tube railway) गुजरती हैं, जिसका स्टेशन चौराहे के ठीक नीचे है। 2000 के अंत में, ऑक्सफोर्ड चौराहे पर पैदल गुजरनेवाले यात्रियां की संख्या, लंदन में कहीं की भी तुलना में सर्वाधिक थी। लंदन के भूमिगत स्टेशनों को भी प्राप्त करने वाले यात्रियों को जोड़ते हुए, व्यस्ततम समय में, प्रतिघंटे इस चौराहे पर 40 हजार लोग पैदल गुजरते हैं। जोन नेस के द्वारा, इस सर्कस को 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में बनाया गया था।

97 अनुवादक की टिप्पिणी : पिकाडिली सर्कस, बेस्टमिंस्टर जिले में, सड़क का चौराहा, और जन स्थान है, जो लन्दन के पश्चिमी सिरे पर है। इसे 1819 में, रीजेन्ट स्ट्रीट को पिकाडिली से जोड़ने के लिए, बनाया गया था। लेटिन (Letin) में सर्कस का अर्थ, वृत होता है। पश्चिमी सिरे पर, ये सर्कस, खरीदारी और मनोरंजन का एक प्रमुख स्थान है और पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण केन्द्र तथा मिलन स्थल। पिकाडिली सर्कस, का ट्यूब स्टेशन 10 मार्च 1906 को खोला गया था। सर्कस पर अनेक महत्वपूर्ण जनसभायें एवं प्रदर्शन होते रहते हैं, जिसमें 15 फरवरी 2003 का युद्ध के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन भी शामिल है। किसी स्थान को पिकाडिली जैसा कहने का अर्थ, इंग्लैण्ड में एक अत्यधिक स्थान या व्यस्त स्थिति को अथवा लोगों को बताने के लिये किया जाता है।

पैरों के चलने की आवाज, ''तुम मुझे कोल 'ओले (coal 'ole)! से ऊपर लाये हो'' एक आवाज ने कहा। ''मैं अभी एक चाय पी रहा था। तुम किस तल पर जाना चाहते हो ?''

''मिस्टर बी –,'' मैंने कहा, ''मैं नहीं जानता, कौन सा तल।''

''ओह, तीसरा तल,'' आदमी ने कहा। ''वह अन्दर है, मैं उसे ऊपर ले गया था। ऐसा है,'' लोहे के खिसकने वाले दरवाजे को खोलते हुए उसने कहा। ''दांई और मुड़ो, उस दरवाजे में।'' इसके साथ ही वह, अपनी ठण्डी होती हुई चाय के साथ, गायब हो गया।

मैंने धक्का दे कर, बताये गये दरवाजे को खोला और उस छोटे काउंटर की ओर चला। ''श्रीमान् बी –?'' मैंने कहा। ''मुझे उनसे मिलना है।'' काले बालों वाली लड़की, मिस्टर बी को तलाशने के लिये गई और मैंने अपने आसपास देखा। काउंटर के दूसरे बगल में, लड़कियॉ चाय पी रहीं थीं। एक प्रौढ़ से लगने वाले व्यक्ति को, कुछ पार्सल बांटने के लिये निर्देश दिये जा रहे थे। मेरे पीछे एक मेज थी, जिसके ऊपर, दंत चिकित्सक के प्रतीक्षा कक्ष की भाँति, कुछ पत्रिकाऐं रखीं थीं – मैंने सोचा – और दीवार पर कुछ प्रकाशकों का एक विज्ञापन था। कार्यालय का स्थान, किताबों के पार्सलों से, कूड़ेघर की तरह से भरा दिखाई दिया और टाइप की हुईं पाण्डुलिपियॉ, जो अभी खोली गईं थीं, सफाई से, दूर की एक दीवार के पास, पंक्तियों में जमाईं गईं थीं।

''मिस्टर बी – एक पल में आपके पास होंगे,'' एक स्वर ने कहा, और मैं उस काले बालों वाली लड़की को, मुस्कान सहित धन्यवाद, देने के लिये मुड़ा। उसी क्षण, बगल का एक दरवाजा खुला, और मिस्टर बी, अन्दर आये। मैंने उनको दिलचस्पी के साथ देखा क्योंकि, वह लेखकों का पहला एजेन्ट था, जो मैंने कभी देखा – या सुना हो। उसके दाढ़ी थी, और मैं उसे एक बूढ़े चीनी अधिकारी की तरह समझ सका। यद्यपि, वह एक अंग्रेज था, उसमें एक वृद्ध, शिक्षित, चीनी की सी शिष्टता और सौहार्द्रता थी, जिसका पश्चिम में कोई मुकाबला नहीं है।

मिस्टर बी – आये, मुझे अभिवादन किया और हाथ बढ़ाया, और एक बगल के दरवाजे में हो कर मुझे एक छोटे कमरे में ले गये, जिसने मुझे, बिना जंगले की जेल की कोठरी, की याद दिला दी। ''और अब मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ ?'' उसने पूछा।

''मैं एक काम चाहता हूँ,'' मैंने कहा।

उसने मेरे विषय में प्रश्न पूछे, परन्तु मैं उसके प्रभामण्डल से देख सका कि, उसके पास मुझे देने के लिये, किसी काम का प्रस्ताव नहीं था, कि वह, जिस आदमी ने मेरा उससे परिचय कराया था, केवल उसके कारण, सौहार्द्रपूर्ण हो रहा था। मैंने उसे चीनी कागजात दिखाये, और उसका प्रभामण्डल दिलचस्पी के साथ भड़क उठा। उसने उन्हें उठाया, बहुत सावधानी के साथ उनको जॉचा और कहा, ''आपको एक पुस्तक लिखनी चाहिए। मेरा ख्याल है, मैं आपके लिए, किसी एक को अधिकृत (commission) कर सकता हूँ।'' ये एक झटका था, जिसने मुझे लगभग हिला दिया; मैं पुस्तक लिखूँ, मैं ? अपने बारे में ? मैंने, उसके प्रभामण्डल की ओर, ये देखने के लिये कि, क्या वास्तव में, उसका वही मतलब था अथवा एक सभ्य तरीके से पीछा छुड़ाना मात्र, सावधानी से देखा। उसके प्रभामण्डल ने कहा कि, उसका यही मतलब था परन्तु, उसको मेरी लेखन क्षमता के ऊपर शक था। जब मैं वहॉ से उठा, तब उसके अंतिम शब्द थे, ''आपको, वास्तव में, एक पुस्तक लिखनी चाहिये।''

ओह इतना उदास मत दिखो, लिफ्टमैन ने कहा। ''बाहर सूर्य चमक रहा है। क्या उसे तुम्हारी किताब की चाह नहीं है ?''

''यही तो परेशानी है,'' जैसे ही वह लिफ्ट के बाहर गया, मैंने जबाव दिया, ''हॉ उसने स्वीकार कर लिया।''

मैं ये सोचते हुए रीजेन्ट स्ट्रीट की तरफ चला कि, हर कोई पागल था। मैं एक किताब लिखूँ ? सनकी! कुल मिला कर, मैं एक रोजगार चाहता था, जिससे मुझे जिन्दा रहने के लिये पर्याप्त धन मिल

जाये और थोड़ा अधिक, ताकि मैं प्रभामण्डल के शोध कार्य को कर सकूँ, और प्रस्ताव, जो मुझे मिला, वह था, अपने बारे में एक बेवकूफी भरी पुस्तक के संबंध में।

कुछ समय पहले, मैंने विमान से संबंधित, एक निर्देश पुस्तिका के लिये, तकनीकी लेखक के लिये, एक विज्ञापन का उत्तर दिया था। शाम की डाक में मुझे, कल सुबह साक्षात्कार में उपस्थित होने के लिये, एक पत्र मिला। ''आह'' मैंने सोचा, ''कुल मिला कर, मैं क्रोले (Crawley)[98] में ये काम तो पा ही सकता हूँ।''

अगली सुबह, जल्दी ही, जब मैं क्रोले जाने से पहले, नाश्ता कर रहा था डिब्बे में एक पत्र मिला। ये मिस्टर बी का था। ''आपको एक पुस्तक लिखनी चाहिये,'' पत्र में कहा गया था। ''ध्यान से इस पर विचार करो और आ कर मुझसे दुबारा मिलो।''

''पाह!'', मैंने स्वयं से कहा, ''मुझे पुस्तक लिखने से घृणा करनी चाहिये।'' बाद में, मैं क्रोले जाने वाली रेल पकड़ने के लिये, क्लैफाम स्टेशन की ओर चला।

मेरे दिमाग में, यह सबसे मंदी रेल थी.....। वह हर स्टेशन पर रुकती और बीच–बीच के फैले हुए स्थानों में, पीसती सी हुई लगी, मानो कि, इंजन अथवा ड्राइवर, उसे जबरदस्ती खींच रहा हो। अंत में, मैं क्रोले पहुँचा। दिन तपता हुआ, गर्म था और अब बस मेरे हाथ से ठीक चूक गई। अगली वाली बहुत ज्यादा विलम्बित होगी। एक के बाद एक आदमियों को पूछते हुए, और उसने गलत निर्देशन पाते हुए, क्योंकि वह फर्म, जिसमें मैं मिलने जा रहा था, बहुत ही अंधेरे और अस्पष्ट क्षेत्र में थी, मैं, पैर घसीटते हुए गलियों में चला। काफी देर बाद, अंत में, लगभग इतना थका हुआ कि, परेशान भी नहीं हो सकता था, मैं एक लम्बी अप्रसिद्ध गली में पहुँचा। उसके सहारे चलते हुए मैं, अंत में, एक नष्ट प्रायः मकान में, जो मानो कि, सिपाहियों की एक छावनी दिखता था, उसके ठिकाने की जगह थी।

''तुमने एक बहुत ही बढ़िया पत्र लिखा है,'' उस व्यक्ति ने कहा, जिसने मेरा साक्षात्कार लिया। ''हम ये देखना चाहते थे कि, किस प्रकार का व्यक्ति, इस तरह का पत्र लिख सकता है।''

मैं इस विचार के ऊपर धक रह गया कि, उसने मुझे यहाँ केवल अपनी निष्क्रिय उत्सुकता को शांत करने के लिये बुलाया था। ''परन्तु आपने एक तकनीकी लेखक के लिये विज्ञापन दिया था,'' मैंने कहा, ''और मैं किसी भी परीक्षा के लिये प्रस्तुत हूँ।''

''आह हाँ,'' उस आदमी ने कहा, ''परन्तु जब से हमने यह विज्ञापन दिया, हम काफी परेशानी में हैं। हम अपने आप को पुर्नव्यवस्थित कर रहे हैं और कम से कम अगले छह महीनों तक, किसी को नहीं लेंगे परन्तु हमने सोचा कि, तुम आना चाहोगे और हमारे प्रतिष्ठान को देखना चाहोगे।''

''मेरा ख्याल है, आपको, मुझे किराया देना चाहिये,'' मैंने कड़ा उत्तर दिया, क्योंकि आपने, बेबकूफी का संदेश छपवा कर, मुझे यहाँ बुलवाया है।

''ओह हम ऐसा नहीं कर सकते है,'' उसने कहा। ''तुमने साक्षात्कार के लिये आने का प्रस्ताव दिया था; हमने तो मात्र तुम्हारे प्रस्ताव को स्वीकार किया है।''

मैं इतना उदास था कि, स्टेशन तक वापसी का सफर पैदल चलना और भी लम्बा प्रतीत हुआ। रेल के लिये अपरिहार्य प्रतीक्षा, और क्लैफाम के लिये वापस धीमी यात्रा। मेरे नीचे रेल के पहिये कहते हुए लगे : ''तुमको एक पुस्तक लिखनी चाहिये, तुमको एक पुस्तक लिखनी चाहिये, तुमको एक पुस्तक लिखनी चाहिये। फ्रांस में, पेरिस में, एक कोई दूसरा तिब्बती लामा है, जो किसी एक खास उद्देश्य से पश्चिम में आया था। मेरे तरह से नहीं, परिस्थितियों ने उससे माँग की कि, वह प्रकाशन से पूरी तरह

98 अनुवादक की टिप्पिणी : क्रोले, इंग्लेण्ड का पश्चिमी सतह से एक बरो (Borough) और शहर है। यह चेयरिंग क्रॉस (charing cross) लन्दन से 28 मील दूर, दक्षिण की तरफ, ब्राइटन (Brighton) और होव (Hove) से 18 मील दूर उत्तर की तरफ, और चिचेस्टर (Chichester) काउंटी शहर के 32 मील उत्तर पूर्व में है, जिसका क्षेत्रफल 17 वर्गमील और आबादी लगभग 1 लाख 7 हजार है।

यह क्षेत्र पाषाणकाल से बसाया गया है और पहिले रोम के समय में लोहे के काम का एक केन्द्र था। तेरहवीं शताब्दी से क्रोले, धीमे–धीमे, नजदीकी गांवों को आपूर्ति करते हुए, एक बाजारू शहर के रूप में विकसित हुआ। इसे 1840 के दशक में रेल के जाल से जोड़ा गया। गेटविक हवाई अड्डा (Gatwick Airport), अब ब्रिटेन का सबसे अधिक व्यस्त अंतर्राष्ट्रीय हवाई हड्डा है, जो 1940 के दशक में, नगर के एक किनारे पर खोला गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, ब्रिटेन की सरकार ने, यहां से अधिकांश लोगों को और उनकी नौकरियों को, लंदन के बाहर भेजने की योजना बनाई और दक्षिण पूर्व इंग्लेण्ड में अनेक नए शहर बसाए गए, जिसमें क्रोले भी एक था।

बच कर रहे। वह अपना कार्य करता है और बहुत ही कम लोग जानते हैं कि, वह तिब्बत के एक लामा मठ में, पोटाला के चरणों के नीचे, एक लामा था। मैंने उसे, उसकी राय पूछते हुए और ये आशा करते हुए, लिखा था। वह इस प्रभाव का था कि, मैं लेखन कार्य करके गलती करूँगा।

क्लैफाम स्टेशन, मेरे मन की अप्रसन्न अवस्था में, छोटी नाव जैसा, और हमेशा की तुलना में और अधिक गंदा दिखाई दिया। मैं रेंप पर गली की तरफ चला और घर गया। मेरी पत्नी ने मेरे चेहरे के ऊपर एक नजर डाली और कोई प्रश्न नहीं पूछा। खाना खाने के बाद, य़द्यपि मैंने खाने को अनुभव नहीं किया, उसने कहाः ''मैंने मिस्टर बी को आज सुबह फोन किया था। उसने कहा कि, तुमको एक संक्षेपिका (synopsis) लिखनी चाहिये और उसे दिखाने के लिये, उसके पास ले जाना चाहिये।'' संक्षेपिका! इसका विचार ही मुझे बीमार कर गया। तब मैंने आई हुई डाक को पढ़ा। दो पत्र ये कहते हुए कि, ''रिक्त स्थान भर लिये गये हैं, आपको आवेदन करने के लिये धन्यवाद,'' और एक पत्र, फ्रांस के मेरे लामा मित्र से था।

मैं, अपने मरम्मत किये हुए, पुराने टाइपराइटर को ले कर बैठा, जो मुझे अपने पूर्ववर्ती से विरासत में मिला था, और मैंने लिखना शुरू किया। लिखना मेरे लिये असुखद, दुष्कर है। उसमें कोई प्रेरणा नहीं है, और न हीं, मेरे लिये कोई उपहार, मैं एक विषय के ऊपर, केवल कड़ी मेहनत करता हूँ और मैं उसे जितना ज्यादा नापसंद करता हूँ, उतना ही मेहनत और तेजी से, मैं काम करता हूँ, जिससे कि यह जल्दी से पूरा हो जाये।

थकाने वाला दिन, अंत में समाप्त हुआ और शाम की छायाओं ने गलियों को भर दिया और जैसे ही घरों के ऊपर, गली के लेंप जले उन्हें दूर भगा दिया, और लोगों के ऊपर गर्द भरी छायाऐं आयीं। मेरी पत्नी ने रोशनी जलाई और पर्दे खींच दिये। मैं टाइप करता गया और अंत में, कड़ी और दुखती उंगुलियों के साथ मैं रुका। मेरे सामने पेजों का गट्ठर था, उनमें से तीस, सभी घने टाइप किये हुए। ''वहाँ'' मैं विस्मय से चिल्लाया ''यदि ये उसको अच्छा नहीं लगा, तो मैं पूरी चीज को छोड़ दूँगा और मैं आशा करता हूँ कि, यह उसे अच्छा नहीं लगे।''

अगले दिन, दोपहर में, मैं मिस्टर बी से दुबारा मिला। उसने मेरे कागजातों की तरफ एक बार और देखा, तब संक्षेपिका को लिया और उसे पढ़ने के लिये व्यवस्थित हुआ। यदा कदा अनुमोदन में, उसने अपने सिर को हिलाया, और जब उसने इसको समाप्त किया, बहुत सावधानी के साथ कहा, ''मेरा ख्याल है, हम इसे रखने के योग्य होंगे। इसे मेरे पास छोड़ दो और इस बीच प्रथम अध्याय को लिखो।''

मैं नहीं जान पाया कि, क्या मुझे खुश होना चाहिये या दुःख मनाना चाहिये। जब मैं रीजेण्ट स्ट्रीट (regent street) से पिकाडिली सर्कस की ओर पैदल आया, अर्थ व्यवस्था खतरनाक ढंग से निचले बिन्दु पर पहुँच चुकी थी, फिर भी अपने संबंध में पुस्तक लिखने के ख्याल मात्र से, मैं घृणा करता था।

दो दिन बाद, मुझे मिस्टर बी से, मुझे मिलने आने के लिये बुलाते हुए और यह बताते हुए कि, उसके पास, मेरे लिये शुभ समाचार है, एक पत्र मिला। मेरा दिल इस ख्याल पर बैठ गया, और इस प्रकार, कुल मिलाकर, मैं एक पुस्तक लिखने वाला था। मिस्टर बी ने शुभेच्छा के साथ मुझे देखा। ''मेरे पास तुम्हारे लिये एक ठेका (contract) है,'' उसने कहा, ''परन्तु पहले मैं, तुम्हें प्रकाशक से मिलाना चाहूँगा।'' हम दोनों साथ–साथ, लंदन के दूसरे सिरे पर गये और एक गली में घुसे, जो ऊँचे–ऊँचे घरों के साथ, फैशन का जिला हुआ करता था। अब मकान, कार्यालयों के रूप में उपयोग में आ रहे थे, और उनमें रहने वाले लोग, कहीं दूर जिलों में चले गये थे। हम गलियों में चले और एक मामूली से दिखने वाले घर में घुसे। ''ये हैं,'' मिस्टर बी ने कहा। हम अंधेरे हॉल की तरफ घुसे और एक घूमते हुए पखुड़ियों वाले झीने से प्रथम तल की ओर चढ़े। अंत में, हम प्रकाशक महोदय को दिखे, जो पहली

नजर में, केवल धीमे–धीमे गर्म होते हुए, थोड़े सनकी दिखाई दिये। साक्षात्कार, लघु अवधि का था और हम गली में वापिस आ गये।

''मेरे कार्यालय में वापिस आओ –मेरे प्रिय। मेरा चश्मा कहॉ गया ?'' उत्तेजित अवस्था में, अपने खोये हुए चश्मे की तलाश में, अपने बण्डल की ओर देखते हुए, मिस्टर बी ने कहा। जब उसे वह मिल गया, उसने राहत की सांस ली। जारी रखते हुए उसने कहा, ''मेरे दफ्तर में वापस आओ, मेरे पास तुमसे हस्ताक्षर कराने के लिये, अनुबंध तैयार है।''

अंत में, पुस्तक लिखने का एक अनुबंध, एक कुछ निश्चित चीज थी। मैंने तय किया कि, मैं अपनी भूमिका करूॅगा, और आशा की कि, प्रकाशक अपनी भूमिका करेगा। निश्चित रूप से, ''तीसरी ऑख'' ने प्रकाशक महोदय को उसके ऊपर, ''थोड़ी जेम लगाने के योग्य बना दिया है।''

पुस्तक ने तरक्की की, मैंने एक समय में एक अध्याय पूरा किया और मिस्टर बी को दिया। अनेक अवसरों पर, मैं श्रीमान् और श्रीमती बी से, उनके सुन्दर से घर में मिला, और मैं यहॉ विशेष रूप से, श्रीमती बी को अपने श्रृद्धासुमन अर्पित करना चाहूॅगा। उसने मेरा स्वागत किया, जो कि बहुत कम अंग्रेज लोग करते हैं। उसने मुझे साहस बंधाया, और ऐसा करने वाली वह पहली अंग्रेज महिला थी। उसने हर समय, मेरा स्वागत किया। इसलिये श्रीमती बी, आपको धन्यवाद।

लंदन के वातावरण में, मेरा स्वास्थ्य तेजी से गिरता जा रहा था, पुस्तक को समाप्त करने से पहले, उसे रोकने के लिये, अपने सारे प्रशिक्षण का उपयोग करते हुए, थोड़े समय के लिये अपनी बीमारी पर से ध्यान हटाते हुए, मैंने उसे रोकने का संघर्ष किया। अंत में पुस्तक पूरी हुई। मुझे हृदयाघात, कोरोनरी थ्रोबोसिस (coronary thrombosis) का पहला आक्रमण हुआ और मैं लगभग मर गया। मेरे संबंध में, अनेक चीजों के बारे में, लंदन के एक अत्यधिक प्रसिद्ध अस्पताल के चिकित्सीय स्टाफ के लोग, वास्तव में, समस्या में थे परन्तु, मैंने उनका भार हल्का नहीं किया; शायद यह पुस्तक करेगी।

''आपको लंदन छोड़ देना चाहिये,'' विशेषज्ञ ने कहा। '' यहॉ आपका जीवन खतरे में है। किसी दूसरी आबोहवा में जायें।''

''लंदन छोड़ें ? मैंने सोचा, ''परन्तु हम कहॉ जायेंगे ? रहने के दूसरे ढंग और स्थान और माध्यमों के ऊपर, हमने घर में विचार–विमर्श किया। कई दिनों के बाद, मुझे अंतिम जॉच के लिये अस्पताल जाना पड़ा। ''तुम कब जा रहे हो ?'' विशेषज्ञ ने पूछा, '' कई चीजों के ऊपर विचार करना है।''

''केवल एक चीज विचार करनी है,'' उसने अधीरता पूर्वक कहा,'' यहॉ रहो और तुम मर जाओगे। चले जाओ और तुम थोड़ा और जी सकते हो। क्या तुम नहीं समझते कि, तुम्हारी हालत गंभीर है ?''

एक बार फिर मुझे गंभीर समस्या का सामना करना था।

अध्याय दस

''लोबसांग! लोबसांग!'' मैं बेचेनी से अपनी नींद से उठा। मेरी छाती में तेज दर्द था, उस थक्के का दर्द। हॉफते हुए, मैं अपनी चेतना में वापिस लौटा। एक बार फिर से सुनने के लिये वापिस, ''लोबसांग!''

''मेरे भगवान्!'' मैंने सोचा ''मुझे भयानक अनुभव हो रहा है।''

''लोबसांग'' आवाज चलती गई। ''मेरी बात सुनो, लेट जाओ और मेरी बात सुनो।''

मैं मरियल सा लेट गया। मेरा दिल धड़क रहा था और मेरी छाती सहानुभूति में स्पदंन कर रही थी। धीमे–धीमे, मेरे एकांत कमरे के अंधेरे में, पहले, पीले में बदलती हुई एक नीली आभा, और तब मेरी खुद की आयु की आकृति के अनुसार घनीभूत होती हुई, एक आकृति स्वयं प्रकट हुई। ''मैं आज रात को सूक्ष्मशरीर से यात्रा नहीं कर सकता,'' मैंने कहा, ''या मेरा दिल निश्चित रूप से धड़कना बंद कर देगा और मेरे काम अभी समाप्त नहीं हुए हैं।''

''भाई! हमें तुम्हारी हालत अच्छी तरह मालूम है, इसीलिये हम तुम्हारे पास आये हैं। सुनो, तुम्हें बात करने की जरूरत नहीं है।''

मैं सिरहाने की तरफ, पीछे की तरफ झुका, मेरी सांस सिसकियों की तरह से मेरे अंदर आ रही थी। सामान्य सांस लेना कष्टमय था, फिर भी मुझे जिन्दा रहने के क्रम में सांस लेनी थी।

''हम तुम्हारी समस्या पर आपस में विचार–विमर्श कर चुके हैं,'' घनीभूत लामा ने कहा। ''इंग्लिश समुद्र तट से थोड़ी दूर एक प्रायद्वीप (island) है, एक प्रायद्वीप, जो कभी गुमे हुए एटलाटिंस (Atlantis) महाद्वीप का हिस्सा था। वहॉ जाओ, जितना शीघ्र हो सकता है, वहॉ जाओ। उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप के लिये यात्रा करने से पहले, उस मित्रता पूर्ण देश में, कुछ समय के लिये विश्राम करो। पश्चिमी समुद्रतट पर, जिसका समुद्रतट, अशांत (turbulent) महासागर द्वारा धोया जाता है, मत जाना। हरित नगर (green city) में और उसके आगे जाओ।''

आयरलेण्ड (Ireland) ? हॉ! एक आदर्श स्थान। मैंने हमेशा आयरलेण्ड के लोगों को ठीक ही पाया है। हरा नगर ? तब मेरे सामने उत्तर आया; डुबलिन (Dublin)[99], फोनिक्स (Phoenix)[100] पार्क की वजह से और जीवन्त नदी के बहने के कारण, पहाड़ों से नीचे समुद्र तक, ऊॅचाई से हरा दिखता है। लामा, अनुमोदन करते हुए मुस्कराया। ''तुम्हें अपने स्वास्थ्य का कुछ अंश, पुनः प्राप्त करना चाहिये, क्योंकि, इस पर अभी एक और आक्रमण होगा। तुमको जिन्दा रहना होगा ताकि, काम को आगे बढ़ाया जा सके, ताकि, प्रभामण्डल का विज्ञान फलदायी स्थिति के समीप आ सके। अब मैं चलूॅगा परन्तु जब तुम थोड़े ठीक हो जाओ, ये उम्मीद की जाती है कि, तुम स्वर्णिम प्रकाश के देशों को दुबारा यात्रा

---

99 अनुवादक की टिप्पिणी : डुबलिन, आयरलैण्ड (Ireland) का सबसे बड़ा शहर और राजधानी है। डुबलिन लाइन्स्टर (Leinster) राज्य में आयरलैण्ड के पूर्वी समुद्र तट पर, लिफी (Liffey) नदी के मुहाने पर, स्थित है। डुबलिन शहर की आबादी 12 लाख 800 के लगभग है, जबकि ग्रेटर डुबलिन की आबादी 1 लाख 80 हजार के लगभग है। 17वीं शताब्दी से शहर का विकास तेजी से प्रारंभ हुआ और यह 1800 में उसमें मिलाये जाने के पहले ब्रिटिश साम्राज्य में दूसरा सबसे बड़ा शहर बना। विभाजन के बाद 1922 में डुबलिन आयरिश फ्री स्टेट (Irish free state) की राजधानी बना, जिसका नाम बदल कर बाद में आयरलैण्ड कर दिया गया। डुबलिन का जलवायु खुशनुमा है। गर्मियॉं (जुलाई में लगभग तापक्रम 20 डिग्री सेन्टीग्रेड) ठण्डी ही रहती हैं, सर्दियॉं (जनवरी में लगभग 9 डिग्री सेन्टीग्रेड) भी हल्की रहती हैं और तापक्रम के उतार चढ़ाव, लगभग नहीं होते। प्राचीन डुबलिन का किला, अंग्रेज राजा किंगजोन (King John of England) द्वारा, नॉर्मन अतिक्रमण 1169 के तुरंत बाद, 1204 में बनबाया गया था। अभी नए बने हुए स्मारकों में से एक स्मारक को 'प्रकाश का स्मारक (Monument of light)' कहा जाता है। ये 398 फुट ऊँचे शंक्वाकार, तकुए जैसा है, जो स्टेनलेस स्टील से बना है। ये नेल्सन के स्तम्भ को विस्थापित करता है और डुबलिन को, 21वीं शताब्दी में अपना स्थान दिलाने के उद्देश्य से बनाया गया है। डुबलिन में किसी भी यूरोपीय राजधानी शहर की तुलना में प्रतिवर्ग किलोमीटर में हरियाली वाले क्षेत्रों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है। उदाहरण के लिए, यहॉं फोनिक्स पार्क (Phoenix Park), हर्बर्ट पार्क (Herbert Park) और सेन्ट स्टीफेन्स हरियाली (St. Stephens Greenary), प्रसिद्ध हैं। सेन्ट ऐनी पार्क (St. Annie Park) एक सार्वजनिक पार्क है, जिसमें मनोरंजन की सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

100 अनुवादक की टिप्पिणी : फोनिक्स, एरीजोना राज्य की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। इसमें लगभग 15 लाख लोग रहते हैं और ये संयुक्त राज्य की सबसे अधिक घनी राज्य की राजधानी है और सम्पूर्ण राज्य में आबादी के हिसाब से यह छठवां नगर है। फोनिक्स, अमेरिका के दक्षिण पूर्वी भाग में है। फोनिक्स के मेट्रोपोलिटन क्षेत्र को 'सूर्य की घाटी (Valley of the Sun)' कहा जाता है, जो साल्ट रिवर घाटी (Salt river valley) का एक भाग है। इसे साल्ट (Salt) और गीला (Gila) नदियों के संगम पर, 1867 में कृषकों के समाज द्वारा स्थापित किया गया था। इसे 1881 में नगर का दर्जा प्राप्त हुआ। फोनिक्स की जलवायु लगभग रेगिस्तानीय है। पूर्व राष्ट्रप्रति केल्विन कूलिज (Kelvin Coolidge) द्वारा 1930 में गीला नदी के ऊपर एक बांध बनवाया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, फोनिक्स की अर्थव्यवस्था तेजी से बदलते हुए, वितरण केन्द्र के रूप में बदल गई, जो बाद में, अधिकांशतः सैनिक साजोसामान बनाने के कारण, औद्योगिक नगर के रूप में विकसित हुआ। इसमें तीन सैनिक हवाई अड्डे हैं; ल्यूक फील्ड (Lue field), बिलियम फील्ड (William field), और फाल्कन फील्ड (Falcon field) और दो बड़े–बड़े चालक प्रशिक्षण केन्द्र हैं।

करोगे।''

दृश्य मेरी नजर से हल्का पड़ गया और मेरा कमरा इससे पहले की तुलना में और अधिक एकांत हो गया। मेरे दुख महान थे, मेरी पीड़ा अधिकांश लोगों की सहन शक्ति अथवा समझने की क्षमता के परे थी। बिना देखते हुए, खिड़की में हो कर टकटकी लगाते हुए, मैं वापस झुका। उन्होंने ल्हासा की ताजी आकाशीय यात्रा के संबंध में क्या कहा था ? ओह, हाँ ''तुम्हें ये रोजगार पाने में कठिनाईयाँ होंगीं ? वास्तव में, तुम करो मेरे भाई, क्योंकि तुम पश्चिमी विश्व का हिस्सा नहीं हो, तुम उधार के समय पर जीवित हो। जिसके जीवन का स्थान तुमने ले लिया है, वह अब तक किसी भी अवस्था में मर चुका होता। तुम्हारी आवश्यकता, (इस शरीर को अस्थाई रूप से लेने का, और उसके रहने के स्थान को अधिक स्थाई रूप से लेने का), का अर्थ ये हुआ कि, वह पृथ्वी को सम्मान सहित और लाभ के साथ छोड़ सका, ये कर्म नहीं है मेरे भाई, परंतु ये कार्य, जो तुम इस समय कर रहे हो, पृथ्वी पर तुम्हारा अंतिम जीवन है।'' एक बहुत कठिन जीवन भी, मैंने स्वयं से कहा।

सुबह मैं कुछ घबड़ाहट पैदा करने के लिए या आश्चर्य सहित ये घोषणा करने के लिए, योग्य हुआ, ''हम आयरलैंण्ड में रहने के लिये जाने वाले हैं, पहले डबलिन में, तब डबलिन के बाहर।''

मुझे चीजों को तैयार करने में, अधिक मदद नहीं मिली, मैं बहुत बीमार था, और लगभग उत्तेजित करने वाले हृदय आघात के डर से, स्थान परिवर्तन से डरा हुआ था। पेटियाँ पैक कीं गईं, टिकिट प्राप्त किए गए, और अंत में हमने यात्रा शुरू की। हवा में दुबारा रहना (हवाई यात्रा करना) अच्छा हुआ, और मैंने पाया कि, श्वसन अब काफी आसान था। हवाई सेवा ने, ''हृदय के मरीज'' यात्री के साथ, कोई जोखिम नहीं ली। वहाँ उनके पास, मेरे सिर के ऊपर रैक में, एक ऑक्सीजन सिलिंडर रखा हुआ था।

(उतरते समय) जहाज नीचे उड़ा और उसने सफेद झागों के ऊपर धारियाँ पड़े हुए, जीवंत हरित देश के ऊपर, चक्कर लगाये, और भी नीचे उतरा, और वहाँ निचले ढाँचे (under carriage), को नीचे करने की गड़गड़ाहट हुई, उसके बाद, जहाज के हवाई पट्टी पर उतरते समय, शीघ्र ही टायरों की चीख उभरीं।

मेरे विचार, इंग्लैंण्ड में प्रथम प्रवेश के अवसर पर, और सीमा कर अधिकारियों के व्यवहार के ऊपर घूम गए। ''ये किस तरह का होगा ?'' मैंने विचार किया। हम हवाई अड्डे के भवनों की ओर टैक्सी से गए और मैंने एक पहियेदार कुर्सी (wheel chair) को प्राप्त करने की प्रतीक्षा में, थोड़ा अपमानित सा महसूस किया। सीमा अधिकारियों ने मेरी तरफ कठोरता से देखा और कहा, ''तुम कितने समय के लिए रुकने वाले हो ?''

''यहाँ हम हमेशा के लिए रहने आये हैं,'' मैंने उत्तर दिया। यहाँ कोई कष्ट नहीं था, उन्होंने हमारे सामान की भी जाँच नहीं की। लेडी कुई (Lady Ku' ei), ने उन सबको मोहित कर रखा था, चुपचाप और शांत, वह हमारे सामान के ऊपर, प्रहरी की तरह से बैठी रही। ये स्यामी बिल्लियाँ, जब ठीक से प्रशिक्षित की गईं हों, और उनके साथ प्राणियों की तरह से व्यवहार किया गया हो, केवल जानवरों की तरह से नहीं, उच्चतम सीमा तक बुद्धि को धारित करती हैं। निश्चित रूप से, मैं लेडी कुई की मित्रता और उसकी बफादारी को, मानवों की तुलना में प्राथमिकता देता हूँ! रात को वह मेरे पास बैठती है और मेरे बीमार होने पर मेरी पत्नी को जगा देती है।

मेरा सामान टैक्सी पर लादा गया, और हम को डबलिन शहर ले जाया गया। मित्रता का वातावरण, अत्यधिक रूप से देखने योग्य था। कुछ भी अधिक परेशानी नहीं दिखी। मैं ट्रिनिटी (Trinity)[101] कॉलेज के मैदानों के ऊपर देखता हुआ, अपने कमरे में एक विस्तर पर लेटा। मेरी खिड़की

101 अनुवादक की टिप्पिणी : ट्रिनिटी महाविद्यालय, हार्टफोर्ड (Hartford) में निजी क्षेत्र का उदारवादी (liberal) कला महाविद्यालय है। इसे कनेक्टीकट (Connecticut) में 1823 में स्थापित किया गया, जो कनेक्टीकट में, येल यूनीवर्सिटी (Yale University) के बाद, दूसरा महाविद्यालय है। 1969 से इसमें सहशिक्षा प्रारंभ हुई। महाविद्यालय में लगभग 2300 विद्यार्थी है, जिसमें सें आधी महिलाएं हैं। ट्रिनिटी महाविद्यालय, विद्यार्थियों को 38 मुख्य और 26 वैकल्पिक विषयों को अध्ययन हेतु उपलब्ध कराता है। विद्यार्थी शिक्षक का

के नीचे की सड़क पर, यातायात शांत गति से चल रहा था।

मुझे यात्रा से उबरने में थोड़ा समय लगा, परंतु जब मैं ठीक होने लगा, ट्रिनिटी कॉलेज के मित्रता पूर्ण अधिकारियों ने मुझे एक पास (Pass) दिया, जिसने मुझे उनके मैदानों का और उनके भव्य पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए पात्र बनाया। डबलिन, आश्चर्यों का नगर था! वहाँ कोई भी, लगभग हर चीज खरीद सकता था। कैनेडा के विन्डसर की तुलना में, अथवा डेट्रोइट, यू. एस. ए. की तुलना में, वहाँ माल की अधिक किस्में थीं, जब मैं ''ल्हासा का डाक्टर (Doctor from Lhasa)'' लिख रहा था, तब हमने, लगभग बीस मील दूर, एक बड़े सुन्दर मछुआरे गाँव में रहने का निश्चय किया। हम एक घर, जहाँ से मैं, बालस्केडन खाड़ी (Balscadden Bay) को देख सकता था, को पाने में भाग्यशाली रहे, एक घर, जो वास्तव में, आश्चर्य चकित करने वाले दृश्य वाला था।

मुझे एक बड़े कार्य को अंजाम देने के लिए रुकना पड़ा, और काँच के दिक्कत कर देने वाले प्रभाव के कारण, खिड़कियों में से, द्विनेत्री (Binocular) से देखना असम्भव लगा। एक स्थानीय भवन निर्माता, ब्रूड कैंपबैल (Brud Campbell), जिनके साथ, मैं अच्छा मित्र बन गया था, ने प्लेट काँच का सुझाव दिया। उसके लग जाने के बाद, मैं अपने विस्तर पर आराम कर सकता था और मछलीमार नौकाओं को खाड़ी में देख सकता था। बंदरगाह का पूरा फैलाव, मेरे परिदृश्य में था, याच क्लव (Yatch Club) के साथ, बंदरगाह के अधिकारी और प्रकाश स्तम्भ (Light house), वहाँ के स्थाई चरित्र थे। एक साफ दिन को, मैं ब्रिटेन द्वारा कब्जा किये गए आयरलैण्ड में कुछ दूर, मोर्न के पर्वतों (Mountains of Mourn)[102] को देख सका, जबकि, हाउथ हैड (Howth Head) से मैं, आयरलैंण्ड के समुद्र के पार, काफी दूर, बेल्स के पर्वतों (Mountains of ¡les) को मंद रूप से देख सकता था।

हमने एक पुरानी कार खरीदी और शुद्ध हवा और सुन्दर दृश्यों का का आनंद लेते हुए, अक्सर, डबलिन पर्वतों में यात्राऐं कीं। ऐसी ही एक यात्रा में, हमने एक प्रौढ़ स्यामी बिल्ली, जो तीव्र आंतरिक गठान के कारण मर रही थी, के बारे में सुना। काफी दबाव के बाद, हम उसे अपने घर में शामिल करने की व्यवस्था कर सके। पूरे आयरलैंण्ड के सबसे अच्छे पशु चिकित्सक ने उसकी परीक्षा की, लेकिन ये सोच कर कि, उसके पास जीने के लिए, केवल कुछ घंटे शेष हैं, मैंने उसे, गाँठ को हटाने की शल्य चिकित्सा करने के लिए मना लिया, जो उपेक्षा के कारण पैदा हुई थी और (घर की) अनेक बिल्लियों के साथ के कारण, उसने स्वास्थ्य लाभ किया और मनुष्य अथवा प्राणियों में, जिनको मैं इससे पहले कभी मिला था, सबसे अधिक मधुर स्वभाव की सिद्ध हुई। अब, जब मैं लिखता हूँ, एक सभ्य वृद्ध महिला की तरह से, जो वह है, वह मेरे आसपास घूमती रहती है। एक दम अंधी, उसकी सुन्दर नीली आँखें, उसकी बुद्धि और भलाई को प्रदर्शित करतीं हैं। उसके साथ लेडी कुई चलती है, अथवा उसे दूरानुभूति से दिशा निर्देश करती है ताकि, वह चीजों से टकराये नहीं अथवा अपने आपको घायल न कर ले। चूंकि वह आसपास घूमते हुए, शाम को अपने जीवन का आनंद लेते हुए, तमाम परिवारों को पालते पोसते हुए, एक बूढ़ी ग्रेनी से इतना अधिक मिलती है कि, हम उसे ग्रेनी ग्रेव्हिस्कर (Granny

---

अनुपात 10 : 1 है। गर्मी के महीनों में जब सत्र नहीं चल रहा होता है, कॉलेज अपने द्वार, समाज के लिए खोल देता है और तब इसमें प्लंब मैमोरियल कैरीलोन संगीत समारोह (Plumb Memorial Carillon Concerts) आयोजित किये जाते हैं, जो बुधवार की रात को होते हैं।

ट्रिनिटी महाविद्यालय, ''ट्रिनिटी इंटरनेशनल हिप–होप फेस्टीवल (Trinity International Hip-Hop Festival)' की भी मेजबानी करता है। अंतर्राष्ट्रीय हिप–होप संस्कृति का तीन दिवसीय उत्सव होता है, जिसमें व्याख्यान (lectures), सामूहिक विचार विमर्श (panel discussions), कार्यशालाएं (workshops) और जीवन्त अभिव्यक्तियाँ (live performances) होती हैं। ट्रिनिटी महाविद्यालय को हार्ट फोर्ट शहर के साथ जोड़ने के उद्देश्य से, इस उत्सव की शुरूआत 2006 में की गई थी। ट्रिनिटी महाविद्यालय में ललित कला (Fine Arts) का शिक्षक वर्ग अत्यधिक प्रभावशाली है, जिसमें पिकासो स्कॉलर (Picasso scholar) और कला के इतिहास विद माइकल सी फ्रिट्ज गेराल्ड (Michel C. Fitz Gerald) सम्मिलित हैं।

102 अनुवादक की टिप्पिणी : माउंटेन ऑफ मोन को मोन माउंटेन तथा मोर्नेस भी कहा जाता है ये उत्तरी आयरलैंड के दक्षिणी पूर्वी भाग में ग्रेनाइट की पर्वत श्रेणियां हैं। इसमें उत्तर ऑयरलैंड के सबसे ऊंचे पर्वत शामिल है और उस्टर राज्य के। इनमें से सबसे ऊंचा स्लीव डोनाल्ड है जो 2790 फुट ऊंचा है। मोर्नेस एक सर्वोत्कृष्ट असाधारण प्राकृतिक सुन्दरता का क्षेत्र है और इसे उत्तरी आयरलैंड में पहले राष्ट्रीय उद्यान के रूप में प्रस्तावित किया गया इस क्षेत्र को आंशिक रूप से राष्ट्रीय ट्रस्ट स्वामित्व रखता है और प्रतिवर्ष एक बहुत बड़ी संख्या में पर्यटक इसे देखने आते हैं।

मोर्नेस के एक अत्यंत प्रसिद्ध गुणों में से एक उसकी पर्वतीय दीवाल है जो उसके साथ–साथ पैंतीस किलोमीटर लम्बाई तक जाती है जो पन्द्रह चोटियों को अपने में समेटती है नवासी सौ एकड़ के क्षेत्र की परिभाषा करते हुए जिसे बैलफास्ट वॉटर कमिश्नर ने 1800 में खरीदा था। मोर्नेस दीवार का बनना 1904 में प्रारंभ हुआ और 1922 में प्रारंभ हुआ इसमें प्रसिद्ध कुछ पहाड़ियों के नाम हैं स्लीव डोनाल्ड, स्लीव लोमागेन और स्लीव म्यूक। मेन का आयशर, माउंटेन्स आफ द लेक और स्नो डालनाइव इन व्हेलस कई बार आयरलैण्ड के समुद्र के पार देखे जा सकते हैं जब मौसम साफ हो मोर्नेस पर्वत के ऊपर से। साफ दिनों में इसको डुबलिन के कुछ हिस्सों से भी देखा जा सकता है।

Graywhiskers) कहते हैं।

हाउथ, मेरे लिए प्रसन्नताऐं लाया, प्रसन्नताऐं, जिन्हें मैं पहले से नहीं, जानता था। श्रीमान् लोफ्टस (Mr. Loftus) पुलिस के सिपाही, अथवा प्रहरी (Guard), जो वे आयरलैंण्ड में कहलाते हैं, जल्दी–जल्दी, बार–बार, बातचीत करने के लिये रुक जाते थे। वह हमेशा ही स्वागत किए जाने वाले आगंतुक थे। एक बड़ा आदमी, इतना अधिक चुस्त, जितना कि, बकिंघम पैलेस (Buckingham Palace)[103] के सुरक्षा गार्ड को होना चाहिए, उसकी ख्याति, उसकी बहुत अच्छी स्पष्टता और बहुत अच्छी निडरता के लिए थी। जब कर्तव्य से मुक्त हो जाता, वह अंदर आता और काफी दूर के स्थानों की चर्चा करता। उसका ''मेरे भगवान!, डॉक्टर, तुम्हें अपने दिमाग को बाहर फैंक देना चाहिए!'' सुनने में बहुत अच्छा लगता था। मेरे साथ, अनेक देशों की पुलिस ने, बुरी तरह व्यवहार किया था, और हाउथ के आयरलैण्ड के लोफ्टस प्रहरी ने मुझे बताया कि, कई अच्छे पुलिस मैन भी हैं और उनके साथ–साथ, बुरे भी हैं, जिन्हें मैं जानता हूँ।

मेरा हृदय फिर से, दवाब के लक्षण प्रदर्शित कर रहा था, और मेरी पत्नी टेलीफोन लगवाना चाहती थी। दुर्भाग्य से, ''पहाड़ी की'' सभी लाइनें उपयोग में आ रहीं थीं, इसलिए हमें नहीं मिल सकी। एक दिन शाम को दरवाजे पर दस्तक हुई, और एक पड़ौसी श्रीमती ओ'ग्रेडी (Mrs. O'Grady) ने कहा, ''मैंने सुना है कि, आप एक टेलीफोन चाहते हैं, लेकिन मिल नहीं पा रहा है। आप जब चाहें, हमारे टेलीफोन का उपयोग कर सकते है– ये हमारे घर की चाभी है।'' आयरलैण्ड के लोगों ने, हमें अच्छी तरह से रखा। श्री और श्रीमती ओ ग्रेडी, हमको आयरलैण्ड में और अधिक आराम के साथ रहने देने के लिए, हमारे लिए हमेशा कुछ करने का प्रयत्न करते थे। श्री और श्रीमती ओ ग्रेडी को, उनके अत्यंत संक्षिप्त प्रवास के लिए, कैनेडा लाना, ये हमारा आनंद था और विशेषाधिकार भी।

सहसा धक्के के साथ, मैं गंभीर रूप से बीमार हुआ। जेलों से शिविरों में वर्षों तक, मैंने अत्यधिक तनाव झेले थे, और असमान्य अनुभवों ने उनके साथ जुड़ कर, मेरे दिल की हालत को, वास्तव में, और गंभीर बना दिया था। मेरी पत्नी, ओ'ग्रेडी के घर की तरफ दौड़ी और टेलीफोन पर एक डॉक्टर को जल्दी से आने के लिए कहा। आश्चर्यजनक रूप से थोड़े ही समय में, डॉक्टर चैपमैन (Dr. Chapman) मेरे शयन कक्ष मे आये और दक्षता के साथ, जो केवल लंबे वर्षो के अनुभव से आती है, अपनी सुई के साथ व्यस्त हुए। डॉक्टर चैपमैन, डॉक्टरों के ''पुराने स्कूल'' के विद्यार्थी थे, ''पारिवारिक डाक्टर'' जिनकी छंगुली में, आज के सरकारी सहायता प्राप्त ''कारखानों में पैदा किये गए डाक्टरों'' के लगभग आधे दर्जन प्रसिद्ध नमूनों की तुलना में अधिक ज्ञान होता था। डॉक्टर चैपमैन और मेरे साथ, ये ''पहली नजर में दोस्ती'' का मामला था! धीमे–धीमे, उनके इलाज से, मैं बिस्तर से उठने लायक, पर्याप्त ठीक हो गया। तब डबलिन के विशेषज्ञ डॉक्टरों का आना शुरू हुआ। किसी ने मुझे इंग्लैण्ड में कहा था कि, मै आयरलैंण्ड के किसी डॉक्टर पर भरोसा न करूँ। मैंने स्वयं पर भरोसा किया और विश्व के किसी भी दूसरे अन्य देश की तुलना में, अधिक अच्छा इलाज पाया। व्यक्तिगत, मानवीय स्पर्श वहाँ थे, और ये

---

103 अनुवादक की टिप्पिणी : बकिंघम पैलेस (Buckingham Palace) लंदन में राज्य करने वाले सम्राट का प्रमुख निवास और कार्य का मुख्य स्थल है। बेस्टमिंस्टर (Westminster) शहर में स्थित ये महल, विभिन्न अफसरों पर और राजकीय भोज आदि के समय, प्रायः राज्य के केन्द्र में होता है। प्रारंभ में इसे बकिंघम गृह कहा जाता था भवन जो वर्तमान महल के प्रमुख भाग है एक बड़ा नगर का गृह था, जो बकिंघम के ड्यूक के लिए 1703 में बनाया गया था और जो पिछले 150 वर्षों तक राज परिवार की निजी संपत्ति रही। बाद में किंग जार्ज III द्वारा, 1761 में महारानी चार्लोटे के निजी महल के रूप में बनाया गया था, जो बाद में 1837 में महारानी विक्टोरिया के ब्रिटेन में राजगद्दी ग्रहण करने के अवसर पर अंतिम रूप से महल को औपचारिक शााही निवास घोषित कर दिया गया। तथापि द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मन बमबारी के दौरान महल का मुख्य मंदिर नष्ट हो गया था; रानी के गलियारे को उस स्थान पर बनाया गया और सामान्य जनता के लिए 1962 में खोल दिया गया, जिसमें कलाकृतियों की शाही परिवार की प्रदर्शनियां लगी रहती हैं। महल में 775 कमरे (जिसमें राज्य के 19 कमरे शामिल हैं), 52 प्रमुख शयनकक्ष, 188 अधिनस्थों के शयनकक्ष, स्नानागार आदि हैं और यहां का उद्यान लंदन के निजी उद्यानों में सबसे बड़ा है इसमें 92 कार्यालय और 78 बाथरूम हैं।

राज्य के कमरे जो अधिकारिक रूप से और राज्य के उपयोग में लाए जाते हैं प्रतिवर्ष जनता के लिए अधिकांश अगस्त और सितम्बर के महीनों में खुले रहते हैं महल की वार्षिक ग्रीष्म प्रदर्शन के लिए।

ये महल, वास्तव में, रूस के शाही महलों, जो सेंट पीटर्सबर्ग (St. Petersburg) और सार्स्को (Tsarskoe) में है, रोम में पोप के महल, मेड्रिड में शाही महल, स्टॉक होम महल, और वास्तव में, पेले व्हाईट हॉल के महलों से छोटा है। ये पोटाला के महल की तुलना में, जो तिब्बत में ल्हासा के वर्जित शहर में है, एकदम बच्चा है। वर्जित शहर में, एक चीनी शाही महल है, जो बीजिंग के केन्द्र में स्थित है।

उस सभी यांत्रिक शीत (mechanical coldness) के, जवान डॉक्टरों की तुलना में बहुत अच्छे थे।

ब्रूड केम्पबैल (Brud Capmbell) ने हमारे प्रांगणों के पास, टूटी हुई (दीवार) को विस्थापित करते हुए, पत्थर की अच्छी दीवार उठवाई थी क्योंकि, इंग्लैण्ड से आने वाले कपटी यात्रियों से, हम बुरी तरह से परेशान थे। लोग लिवरपूल (Liverpool)[104] से मौज मस्ती के लिए आते, और लोगों के यहाँ, हाउथ के बगीचों में, शिविर करते। हमें एक ऐसा ही यात्री मिला, जिसने हमें परेशानी में डाल दिया। एक दिन सुबह, हमारे दरवाजे पर जोर की दस्तक हुई। मेरी पत्नी ने इसका उत्तर दिया, और दरवाजे के बाहर, एक जर्मन औरत को पाया। उसने जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश की परंतु असफल रही। तब उसने घोषणा की कि, वह हमारे दरवाजे पर, सीढ़ियों पर ही शिविर करेगी, जब तक कि, उसे ''लोबसांग रंपा के चरणों में'' बैठने की इजाजत न मिल जाये। चूंकि, मैं बिस्तर में था और निश्चित रूप से किसी को अपने चरणों में नहीं बैठाना चाहता था, उसे जाने के लिए कहा गया। शाम तक वह, वहीं बनी रही। मिस्टर लोफ्टस तीखे दिखते हुए, और दक्षता के साथ, आये और उस औरत का पीछा करते हुए, उसे पहाड़ी के नीचे तक ले गए, जहाँ से उसे डुबलिन के लिए एक बस मिली, और वह वापस नहीं आई।

ये व्यस्त दिन थे, मेरे साथ, मेरी शक्ति के साथ, अधिक भार डालने के नहीं। ''ल्हासा का डॉक्टर'' अब पूरी हो चुकी थी, परंतु पत्र पूरे विश्व से आते जा रहे थे। पालतू डाकिया, पहाड़ी पर लंबी चढ़ाई चढ़ते हुए, हाँफता हुआ दरवाजे तक आता, जो कोई भी उस दस्तक का जवाब देता, उसको वह ''आह! आपको सुप्रभात'' कहता, ''और आज आप कैसे हैं ? आह, निश्चित रूप से मुझे ये पत्र तोड़े दे रहे हैं।''

एक रात को, जैसे ही मैं पोर्टमारनोक (Portmarnock)[105] की और उन जहाजों की, जो समुद्र में काफी दूरी पर थे, झिलमिलाती हुई रोशनियों को देखते हुए, अपने बिस्तर पर गया, मैंने अचानक ही, एक बूढ़े आदमी को, अपनी ओर टकटकी लगा कर देखते हुए देखा। जैसे ही मैं उसकी दिशा में मुड़ा और वह मुस्कुराया, ''मैं आ गया हूँ,'' उसने कहा, ''तुम्हारी प्रगति देखने के लिए, क्योंकि, ये चाहा गया है कि, तुम फिर से स्वर्णिम प्रकाश के लोक को जाओ। तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है ?''

''मुझे लगता है, थोड़े प्रयास के साथ, मैं व्यवस्था कर सकता हूँ'' मैने जवाब दिया। ''क्या तुम मेरे साथ आ रहे हो ?''

''नहीं,'' उसने उत्तर दिया, ''क्योंकि, तुम्हारा शरीर पहले कभी की तुलना में, अब अधिक मूल्यवान हैं, और मैं यहाँ रुक कर इसकी सुरक्षा करूँगा।''

पिछले कुछ महीनों की अवधि में, मैं अत्यधिक रूप से पीड़ित था। मेरे कष्टों में से एक मामला था, जो पश्चिमी लोगों को अविश्वास में वापसी के लिए प्रेरित कर रहा था! मेरे मूल शरीर का, पूरा का

---

104 अनुवादक की टिप्पिणी : लिवरपूल इंग्लेंड में मर्सीसाईड में एक शहर है। जिसे 1207 से बरोश का दर्जा और 1980 से शहर का दर्जा प्रदान किया गया है। 2014 में शहर की आबादी 471000 के करीब थी। लिवरपूल, इंग्लेंड के पूर्वोत्तर में ऐतिहासिक लंकाशायर (Lancashire) काउंटी, के दक्षिण पश्चिम में, तथा मर्सी एक्चुअरी (Mersey Estuaty) के पूर्वी तरफ है। इसका एक बड़ा बंदरगाह है, जो पूर्व में एटलांटिक महासागर में विशेषरूप से गुलामों के व्यापार में संलिप्त रहा है। लिवरपूल, आर.एम.एस. टाइटन का, चूनार्ड और व्हाइल्ड स्टार, आर.एम.एस. लूसी तानिया, क्वीन मैरी और ओलम्पिक जैसे बड़े–बड़े जलयानों का, महासागर के रजिस्ट्री का बंदरगाह था। लिवरपूल ने बंदरगाह के शहर के रूप में, वहां की आबादी की विविधता में योगदान दिया है जिसे, दुनियॉ के विभिन्न स्थानों के धर्मों, सभ्यताओं के व्यक्तियों के द्वारा बसाया गया, और इनमें से आयरलैण्ड विशेष था। शहर काले अफ्रीकी समाज के लिए और यूरोप में सबसे बड़े चीनी समाज के लिये भी गृह स्वरूप सिद्ध हुआ।

शहर की आधुनिक अर्थव्यवस्था में पर्यटन का एक महत्वपूर्ण योगदान है। शहर ने 2007 में अपनी 800वीं वर्षगांठ मनाई और इसने स्टेबेंगर (Stravanger), नार्वे के साथ–साथ 2008 में ''यूरोपीय सांस्कृतिक राजधानी (European capital of culture)'' का खिताब जीता। गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड की पुस्तक में इस पर ''विश्व की पोप के शहर की राजधानी होने का लेबल लगा। 2004 में, लिवरपूल शहर के क्षेत्र को, ''विश्व की विरासत स्थल'' के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्य किया गया। लिवरपूल में, दो प्रीमियर लीग फुटबाल क्लब हैं, जो लिवरपूल और एवरटन में हैं। इन दोनों के बीच मैचों को मर्सीसाईड डर्बी (merseyside Derby) के नाम से जाना जाता है। वार्षिक आधार पर, विश्वप्रसिद्ध, भव्य राष्ट्रीय (grand nationals) भी शहर के बाहरी हिस्सों में, एन्ट्री रेसकोर्स पर होते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में मर्सीसाईड पर 80 बार बमबारी हुई, जिसमें ढाई हजार लोगों की जानें गईं और और महानगरी क्षेत्र की लगभग आधी इमारतें ढह गई अथवा उनको नुकसान पहुंचा। 1952 से इसे जर्मनी के कोलन (Cologne) शहर के साथ, जिसनें भी अनेक हवाई बमबारियां झेली हैं, जुड़वॉ बना दिया गया है।

लिवरपूल में, जान लेनन (John Lennon) हवाई अड्डा, शहर के दक्षिण में स्थित है, जो सभी दिशाओं में पूरे ब्रिटेन और यूरोप में हवाई उड़ानें संचालित करता है। लिवरपूल बीटल्स (Beattles) का जन्मस्थान था।

105 अनुवादक की टिप्पिणी : आयरलैण्ड के डर्बिन शहर की काउंटी में, पोर्टमार्नोक (Portmarnock) एक समुद्रतटीय उपनगर है। ये डबलिन के बाहर, रेलवे लाईन के साथ, माला हाईड और वाल्डोयर के समुद्र तटों के बीच में स्थित है। 2002 में इसकी आबादी लगभग 8400 थी जो 2011 में बढ़ कर लगभग 9300 हो गई। इसका नाम सेंट मोनार्क के नाम से व्युत्पन्न हुआ है, जो पांचवी शताब्दी में था। ये अपने विश्वस्तरीय गोल्फ के मैदान के लिए प्रसिद्ध है, जो 28 दिसम्बर 1894 को प्रारंभ किया गया था।

पूरा, नये शरीर में, प्रत्यारोपण हो चुका था। विस्थापित शरीर को कहीं और, भेज दिया गया था और उसे गिर कर धूल में मिलने के लिए फैंक दिया था। उन लोगों के लिए, जो गंभीर रूप से दिलचस्पी रखते हैं, ये एक पुरानी पूर्वी कला है और इसके बारे में पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है।

मैं कुछ क्षणों के लिए, अपनी शक्ति को इकट्ठा करता हुआ, लेटा रहा। खिड़की के बाहर, देर रात को आने वाली मछलीमार नौका, फुट–फुट करती हुई पास से गुजरी। तारे चमक रहे थे, और आयरलैण्ड की आँखें चाँदनी में नहा रहीं थीं। बूढ़ा आदमी मुस्कुराया, ''एक सुखद परिदृश्य, तुम्हारे यहाँ है।'' मैंने शांति से सिर हिलाया, अपनी रीढ़ को सीधा किया, अपनी टॉगों को अपने नीचे मोड़ा और धुंए के बादल की तरह से ऊपर उठ गया। थोड़े समय के लिए, नीचे चॉदनी से प्रकाशित देहात के ऊपर टकटकी लगाये हुए, समुद्रतट से थोड़ा ही आगे, आयरलैण्ड की ऑख, लेंम्बे (Lambay) के प्रायद्वीप से थोड़ा आगे, मैं सिर के ऊपर नाचता रहा। पीछे, वास्तव में, एक आधुनिक, अच्छी तरह से प्रकाशित शहर, डबलिन की चमकीली रोशनियाँ झलकीं। जैसे–जैसे, मैं धीमे से थोड़ा ऊँचे उठा, मैं क्लेनयर (Killenyer) खाड़ी की गोलाई को, इतने स्मरणशील नापेल्स (Naples), और उसके आगे भी ग्रेस्टोर्स (Greystores) और बिकलो (Wicklow) की, भव्य गोलाई को देख सकता था। इस त्रिविमीय विश्व की भाषा में, इस विश्व के बाहर, इस ब्रह्माण्ड और समय के बाहर, अस्तित्व के दूसरे लोक में, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, मैं और ऊपर गया।

ये अंधेरे से धूप में जाने जैसा था। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। तुमने इतना अच्छा किया है, लोबसांग, और इतना अधिक झेला है,'' उसने कहा। ''थोड़े समय में, तुम वापस नहीं जाने के लिए, यहॉ लौटोगे। तुम्हारा संघर्ष लाभप्रद रहा है।'' हम, भव्य देहात में हो कर, साथ–साथ चले, स्मृतियों के हॉल में गए, जहाँ अभी बहुत कुछ सीखने को था।

कुछ समय के लिए, हम बैठे और हम, मेरे शिक्षक, अगस्त समूह और मैं, साथ–साथ चले। ''शीघ्र ही,'' एक ने कहा, ''तुम लाल भारतीयों (Red Indians) के देश को जाओगे और वहाँ तुम्हारे करने के लिए, हमारे पास एक कार्य है। थोड़े कुछ घंटों के लिए, यहाँ अपने आपको तरोताजा करो, क्योंकि, तुम्हारे बाद के काम ने तुम्हारी शक्ति को बुरी तरह से भारित (Taxed) किया है।''

''हॉ,'' दूसरे ने टिप्पणी की ''और उन लोगों से परेशान मत हो, जो तुम्हारी आलोचना करेंगे क्योंकि, वे नहीं जानते कि वे, स्वयं ओढ़े हुए पश्चिमी अज्ञान से अंधे हो कर, किसके बारे में कह रहे हैं। जब मृत्यु उनकी ऑखों को बंद कर देगी और वे महान जीवन में उत्पन्न होंगे, तब वे, वास्तव में, इन दुखों और कष्टों के ऊपर, जो उन्होंने तुम्हें अनावश्यक रूप से दिए हैं, खेद व्यक्त करेंगे।''

जब मैं आयरलैण्ड को वापस लौटा, तो थोड़ी सी हल्की सुबह के आकाश से निकलती हुई मंद धारियों के बावजूद, देश अभी भी अंधकार में था। क्लोंटार्फ (Clontarf) में, बालू के लंबे फैलाव के साथ, दुख के साथ कहराती हुईं लहरें टूट रही थीं। भोर के पहले के अंधेरे में, काली आकृति के साथ, हाउथ का सिर (Head) दिखाई दिया। ज्यों ही मैं नीचे तैरा, मैंने अपनी छत को देखा। ''प्रिय मैं!'' मैंने स्वयं पर टिप्पणी की। ''सीगलों (Seagulls) ने, मेरे ऐरियल की छड़ों को मोड़ दिया था। मुझे इन्हें सीधा कराने के लिए, ब्रूड केम्पबेल को बुलाना पड़ेगा।'' बूढ़ा आदमी, अभी भी मेरे बिस्तर के बगल में बैठा था। श्रीमती फीफी ग्रेविस्कर्स, मेरे बिस्तर के सिरे पर, मानो मेरी सुरक्षा में बैठीं थीं। ज्यों ही, मैं अपने शरीर में प्रविष्ट हुआ और उसे फिर से जीवित किया, वह मेरे पास आई, खुद को मुझसे रगड़ा और प्यार किया। उसने धीमी आवाज निकाली और लेडी कुई, अंदर आई, बिस्तर पर कूदी और उसने मेरी गोदी में अपनी जगह पा ली। बूढ़ा आदमी, विशिष्ट प्रेम के साथ, उन पर टकटकी लगा कर देखता रहा और उसने टिप्पणी की, ''ये उच्च श्रेणी के, वास्तविक अस्तित्व हैं। मुझे जाना चाहिए, मेरे भाई।''

सुबह की डाक में, आयरलैण्ड के आयकर कार्यालय से, बहुत अधिक कर निर्धारण (assessment) आया। केवल उन आइरिस लोगों को, जो टैक्स कार्यालय से जुड़े हैं, मैं नापसंद

करता हूँ! अधिकारी, मुझे अनावश्यकरूप से, इतने अधिक मदद न करने वाले लगे, क्योंकि आयरलैण्ड में लेखकों की आय के ऊपर, कराधान, बहुत कड़ा, दंड स्वरूप है और ये दुःख पूर्ण है, क्योंकि जो लोग पैसा खर्च करते हैं, उनके साथ, आयरलैण्ड अच्छी तरह काम चला सकता है। टैक्स लगे या कोई टैक्स नहीं लगे, तिब्बत को छोड़ कर, दुनियाँ के किसी भी हिस्से को छोड़ कर, मैं आयरलैण्ड में ही रहूँगा।

''हम कैनेडा जाऐंगे,'' मैंने कहा। उदास नजरों ने उस कथन का स्वागत किया। ''हम बिल्लियों को कैसे ले जायेगे?'' मुझसे पूछा गया।

''वास्तव में, हवाई जहाज से, वे हमारे साथ ही यात्रा करेंगी'' मैंने जवाब दिया।

औपचारिकताऐं काफी थीं, इन्होंने काफी विलंब किया। आयरलैण्ड के अधिकारी पराकाष्ठा तक सहायक हुए, कैनेडा के (अधिकारी) बिल्कुल सहायक नहीं थे। अमेरिकी दूतावास ने, कनाडा की तुलना में अधिक सहायता की। हमारी उंगलियों की छापें लीं गईं और जाँच की गई, तब हम अपनी चिकित्सकीय परीक्षा के लिए गए। मैं फेल हुआ। ''हद से ज्यादा गूँथें (scars),'' डॉक्टर ने कहा ''तुम्हें एक्स–रे कराना पड़ेगा।'' आयरलैण्ड के डॉक्टर ने, जिसने मेरा एक्स–रे किया था, मुझे करुणा के साथ देखा। ''तुम्हें बहुत कठोर जीवन मिला होगा।'' उसने कहा। ''ये चिन्ह..... मुझे अपने परिणामों को, कैनेडा के स्वास्थ्य मंडल को बताना पड़ेगा। आपकी उम्र को ध्यान में रखते हुए, मैं आशा करता हूँ कि, कुछ निश्चित शर्तों के साथ, वे आपको कैनेडा में दाखिल कर लेंगे।''

लेडी कुई और श्रीमती ग्रेविस्कर्स की, एक पशु चिकित्सक के द्वारा जाँच की गई और दोनों को स्वस्थ घोषित किया गया। मेरे मामले में निर्णय की प्रतीक्षा करते हुए, हमने हवाई जहाज में, अपने साथ बिल्लियों को ले जाने के संबंध में, पूछताछ की। केवल स्विस एयर (swiss air) सहमत हुई, इसलिए हमने तात्कालिक रूप से उनसे, बुकिंग करा ली।

कुछ दिनों के बाद, मुझे कैनेडा के दूतावास में बुलाया गया। एक आदमी ने मेरी तरफ कटुता से देखा। ''आप बीमार हैं,'' उसने कहा। ''मुझे ये निश्चित करना पड़ेगा कि, आप हमारे देश के ऊपर भार नहीं बनने वाले हैं।'' उसने कागजों के साथ, फिर देखभाल की और तब मानो कि, अत्यधिक प्रयास के साथ उसने कहा, ''मोनट्रियल (Montreal), ने आपके प्रवेश को अधिकृत कर दिया है, वशर्ते आप पहुँचने के तुरंत बाद, स्वास्थ्य मंडल को सूचित करें और जो कुछ भी इलाज आपको चाहिए, उसे लें। यदि आप सहमत नहीं होते हैं, तो आप नहीं जा सकते,'' आशान्वित हो कर उसने कहा। ये मुझे बहुत अनजान लगा कि, इतने सारे दूतावास के अधिकारी, दूसरे देशों में, अनावश्यक रूप से इतने आक्रामक होते हैं। कुल मिला कर, वे किराये पर लिए गए नौकर ही हैं, कोई उन्हें हमेशा, ''लोक सेवक (civil servants)'' नहीं कह सकता।

हमने अपने मंतव्यों (intentions) को निजी बना कर रखा! केवल हमारे नजदीकी मित्र जानते थे कि, हम जा रहे थे और ये भी कि, हम कहाँ जा रहे थे, क्योंकि हम अपनी कीमत पर जानते थे कि, यदि हम छीकें भी, तो अखबार का संवाददाता, दरवाजे पर ठकठक करता हुआ ये पूछने के लिए आयेगा कि, क्यों ? अंतिम बार हमने डबलिन और हाउथ के सौंदर्य स्थलों के आसपास, गाड़ी चलाई। वास्तव में, छोड़ने के बारे में सोचना भी एक सदमा था, परंतु हम में से कोई भी यहाँ (पृथ्वी पर) आनंद के लिए नहीं है। डबलिन के एक बहुत दक्ष प्रतिष्ठान ने, हमें, बिल्लियाँ और अपना सामान, शेनन (Shannon)[106] तक, बस से ले जाने के लिए सहमति दी थी।

क्रिसमिस से कुछ दिन पहले, हम जाने के लिए तैयार थे। हमारे पुराने मित्र मिस्टर लोफ्टस, हमको बिदाई देने और अंतिम नमस्कार कहने के लिए आए। यदि उनकी ऑखों में आँसू नहीं होते तो, मैं बहुत गलत होता। निश्चय ही मैंने महसूस किया कि, मैं एक अत्यंत प्रिय मित्र से बिदा हो रहा था।

106 अनुवादक की टिप्पिणी : शेनन अमरीका के ईओवा की यूनियन और रिंग गोल्ड काउंटियों में से एक छोटा सा गांव है इसकी आबादी 2010 में 71 थी। कुल क्षेत्रफल .4 वर्गमील है, जो कि पूरा का पूरा स्थल है।

श्री और श्रीमती ओ'ग्रेडी हमें मिलने आये, श्री ओ'ग्रेडी ने इस उद्देश्य के लिए, अपने काम से छुट्टी ले ली थी। वे ''ओ'जी'' खुले दिल से परेशान थे, पैडी (Paddy) अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित करते हुए, अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहा था, जिसने किसी को भी धोखा नहीं दिया। मैंने दरवाजे का ताला लगाया, चाबियाँ मिस्टर ओ'ग्रेडी को, अपने वकील को डाक से भेजने के लिए, दे दीं बस में बैठा और जब से मैंने तिब्बत छोड़ा, तब से अधिक सुख के समय से, मैं दूर चला। मैं सबसे अच्छे लोगों के समूह से दूर चला, जिन्हें मैं लम्बे–लम्बे वर्षों में मिला था।

बस, चक्कर लगाती हुई, शहर के सौहार्द्रपूर्ण यातायात में से गुजरती हुई, चिकने राष्ट्रीय राजमार्ग पर, खुले देश के पहाड़ों को घेरती हुई, उनमें अंदर और उनके ऊपर, डबलिन के लिए दौड़ी। हम, अपने काम में माहिर, मित्रवत् ड्रायवर, जो मशहूर जगहों को बताता हुआ और हमारे भले और सुख की चिंता करता हुआ रहा था, के साथ घण्टों तक चलते रहे। हम आधी दूरी पर जा कर चाय के लिए रुके। लेडी कुई, जो कोई भी उसे ड्राइव करके ले जा रहा हो, उसको हिम्मत बंधाती हुई, ऊँचा बैठना और यातायात को देखना, पसंद करती है, और मिसेज फीफी ग्रेव्हिस्कर, शांत बैठ कर सोचना पसंद करती है। बस, एक चाय के लिए रुकी, काफी घबराहट हुई। हम क्यों रुके हैं ? क्या सभी चीजें ठीक हैं ?

हम चलते गए क्योंकि, सड़क लंबी थी और शेनिन बहुत दूरी पर था। हमारे सिर पर अंधेरा घिर आया और हमारी चाल कुछ हद तक मंदी हुई। देर शाम को, हम शेनिन हवाई हड्डे पर पहुँचे। अपने खास सामान को छोड़ा, और रहने की उस जगह पर गए, जो हमने रात को और अगले दिन सुबह, रुकने के लिए बुक की थी। मेरे स्वास्थ्य के और दोनों बिल्लियों के कारण, हम रात को और एक दिन, अगले दिन छोड़ते हुए, शेनन में रुके। हम में से हरेक के पास एक कमरा था, सौभाग्यवश, उनके बीच में, आने–जाने के दरवाजे थे, क्योंकि बिल्लियाँ ये नहीं जानती थीं कि, वे कहाँ रहना चाहती हैं। कुछ समय के लिए वे, निर्वात स्वच्छक (vacuum cleaner) की तरह से लोगों को पढ़ती हुईं, सूंघती हुईं, जिन्होंने इससे पहले कमरों का उपयोग किया था, हर तरफ घूमती फिरीं, तब वे चुप हो गईं और शीघ्र ही सो गईं।

मैंने अगले दिन विश्राम किया और हवाई जहाज के आस पास देखा। ''आयात शुल्क मुक्त (duty free)" दुकान ने मुझे आकर्षित किया, परंतु मुझे वहाँ उपयोग की कोई चीज नहीं मिली; यदि कुछ सामान खरीदता तो कहीं उसकी घोषणा करनी पड़ती और तब आयात शुल्क चुकाना पड़ता, इस तरह क्या फायदा था ?

स्विस एयर के अधिकारी, मददगार और दक्ष थे, औपचारिकतायें शीघ्र ही पूरी कर दीं गईं और हमने जहाज का इंतजार किया। आधी रात आई और गई, 1 बजे। 1.30 बजे हमें स्विस एयर के बड़े जहाज पर ले जाया गया, हम और हमारी दो बिल्लियाँ। लोग अधिकांशतः उनसे, उनके आत्मनियंत्रण से और आत्मसंयम से, प्रभावित थे। इंजन की आवाजों ने भी उनको विक्षुब्ध नहीं किया। शीघ्र ही हम, तेजी से, और तेजी से, हवाई पट्टी पर दौड़ने लगे। जमीन पीछे छूट गई। शेनन नदी, एक पंख के नीचे, छोटी से बह रही थी और गायब हो गई। हमारे सामने, आयरलेंड के समुद्रतट के साथ–साथ सफेद धार छोड़ते हुए, विस्तृत एटलांटिक महासागर उभरा। इंजन की आवाज बदली, चमकते हुए निकास (exhaust) पाइपों से, लंबी पूंछ वाली लपटें निकलीं। (जहाज की) नाक, थोड़ी घूमी। दोनों बिल्लियों ने शांति से मेरी तरफ देखा; क्या कोई चिंता करने लायक बात थी, उन्होंने आश्चर्य किया। ये मेरा, सातवीं बार एटलांटिक महासागर को पार करना था, और मैं आश्वासन देता हुआ उनके ऊपर मुस्कुराया। जल्दी ही वे सिमट गईं और सो गईं।

लंबी रात्रि, चलती गई। हम अंधेरे के साथ यात्रा कर रहे थे, हमारे लिए रात्रि, बारह घण्टे का अंधेरा होता। हमें नीली रोशनी में छोड़ते हुए और नींद के एक मंद से भविष्य के लिए, केबिन की

बत्तियॉ, मंदी कर दीं गईं और पैंतीस हजार फुट ऊँचाई पर, अशांत महासागर में भूरी (पृष्ठभूमि) के ऊपर, शोर करते हुए इंजन आगे बढ़ते गए। धीमे–धीमे, तारों (stars) का नमूना (pattern) बदल गया। धीमे–धीमे, दूर के आकाश में, पृथ्वी के वक्र के सिरे पर, बिजली की एक हल्की चमक दिखाई दी। जहाज की रसोई (galley) में हलचल, प्लेटों की टकराहट, तब धीमे–धीमे, एक पेड़ के बढ़ने की तरह से प्रकाश आया। जहाज का नम्र सेवक चलता हुआ आया, जो हमेशा ही अपने यात्रियों की सुविधा के लिए सावधान था। केबिन के दक्ष चालक, नाश्ते के करीब आए। दक्षता में, यात्रियों का ध्यान रखने में, उनकी इच्छाओं में और उनको वाकई बहुत अच्छा खाना देने में, स्विस एयर की तुलना, किसी भी राष्ट्र की हवाई सेवा से नहीं की जा सकती। बिल्लियॉ उठ बैठीं और उनका पूरा ध्यान, दुबारा खाने की तरफ था।

दांई तरफ, काफी दूर, बाड़ की एक भूरी रेखा उभरी और तेजी से बड़ी हो गई। न्यूयार्क! अपरिहार्यरूप से मैंने पहली बार सोचा, अपने रास्ते पर, पानी के जहाज के इंजीनियर के रूप में, मैं अमरीका आ चुका हूँ। तब की मेनहट्टन की गगनचुंबी इमारतें, अब कहॉ थीं ? अब वे, अपने आकार को प्रभावित करते हुए, स्वर्ग की तरफ ऊँची हो गई थीं, निश्चितरूप से ये छोटे–छोटे बिन्दु नहीं हो सकते ? बड़े जहाज ने चक्कर लगाया, और उसका एक पंख डूबा। इंजनों ने अपनी आवाजें बदलीं। धीमे–धीमे, हम नीचे, और नीचे, उतरते गए। धीमे–धीमे, जमीन पर इमारतों ने आकार लेना शुरू किया, जो अलग–थलग बेकार भूमि के रूप में दिख रहा था, उसने अपने आपको, आइडियलवाइल्ड (Idlewild) अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के रूप में, प्रकट किया। कुशल स्विस विमान चालकों ने, विमान को टायरों की हल्की सी आवाज के साथ आसानी से नीचे उतारा। धीमे से, हमने हवाईपट्टी से हवाईअड्डे की इमारतों के लिए टैक्सी ली। ''कृपया अपनी जगह बना कर रखें,'' जहाज के सेवकों ने कहा। एक हल्का सा झटका, जैसे ही चलती हुई सीढ़ियाँ, उस जहाज के प्रबंध के साथ विराम में आईं, धातु के खरोंचने जैसी थोड़ी सी आवाज हुई और केबिन का दरवाजा भड़ाक से खुल गया। गुड बाई, निकास द्वार पर लाइन बना कर खड़े हुए केबिन क्रू ने कहा, ''हमारे साथ दुबारा फिर यात्रा करें''। धीमे से हम सीढ़ियों पर नीचे उतरे और प्रशासनिक भवन में गए।

आइडियलवाइल्ड (Idlewild), एक रेल्वे स्टेशन की तरह से पगलाया हुआ था। लोग, जो भी रास्ते में पड़ता उसको धक्का देते हुए, हर जगह दौड़ रहे थे। एक सेवक बढ़ कर आगे आया, ''इस तरफ, पहले कस्टम से निकासी।'' हम, चलते हुए प्लेटफार्म के बगल से, लाइन बना कर खड़े हो गए। प्रवेशद्वार से कस्टम अधिकारी तक फैले हुए, हमारे सामान के बड़े–बड़े पिंड, प्लेटफार्म के सहारे चलते हुए, अचानक ही प्रकट हुए। अधिकारी लोग, खुली पेटियों में उथल पुथल मचाते हुए, साथ–साथ चले। ''आप, कहाँ से हैं आप लोग ?'' एक अधिकारी ने मुझ से कहा।

''डबलिन, आयरलैंड'' मैंने जवाब दिया।

''आप कहाँ जा रहे हैं ?''

''विंडसर, कनाडा'' मैंने कहा।

''ठीक है, क्या कुछ अश्लील तस्वीरें हैं ?'' उसने सहसा पूछा। उसके साथ व्यवस्थित होते हुए, हमने अपना पासपोर्ट और वीसा उसे दिखाया। जिस तरह से आदमियों को निपटाया जा रहा था, इसने मुझे शिकागो की मांस पैक करने वाली फैक्ट्री को ध्यान में ला दिया।

आयरलैंड छोड़ने से पहले, हमने एक अमरीकी विमान में, डेट्रॉइट (Detroit) हवाई यात्रा के लिए अपने स्थान बुक कर दिए थे। उन्होंने बिल्लियों को हमारे साथ हवाई जहाज में ले जाने के लिए अपनी सहमति दी थी। अब हवाई सेवा के अधिकारी, हमारे टिकटों पर थोड़े दुखी प्रतीत हुए, और हमारी बिल्लियों को, जो एटलांटिक महासागर को बिना किसी कष्ट या विवाद के पार कर चुकी थीं, ले जाने से मना किया। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि, हम न्यूयार्क में फंस गए हैं, हवाई सेवा दूर–दूर

तक, इसमें दिलचस्पी लेते हुए नहीं दिख रही थी। मैंने एक विज्ञापन देखा, ला ग्वार्डिया (La Guardia) हवाईअड्डे से, ''कहीं के लिए भी हवाई टैक्सी''। हवाई अड्डे की चमक को देखते हुए, हम एक मोटल (motel) में गए, जो ला ग्वार्डिया के ठीक बाहर था। ''क्या हम अपनी बिल्लियों को अंदर ला सकते हैं ?'' हमने पंजीकरण मेज के ऊपर बैठे हुए आदमी से पूछा। उसने उन्हें, दो छोटी महिलाओं जैसी, देखा और कहा, निश्चित–निश्चित, उनका स्वागत है।'' दो और, कमरों में घूमने फिरने और उनकी जाँच करने का अवसर पा कर, लेडी कुई और मिसेज फीफी ग्रेव्हिस्कर, वास्तव में, बहुत खुश थीं।

यात्रा का तनाव, अब मेरे ऊपर बोलने लगा था। मैं बिस्तर पर जा कर लेट गया। मेरी पत्नी ने, ये पता करने का प्रयास करते हुए कि, हवाई टैक्सी कितने की पड़ेगी, और हम, कब तक उसे ले पायेंगे, ला ग्वार्डिया की सड़क को पार किया। अंत में वह चिंतित दिखती हुई वापस लौटी। ''ये बहुत कीमती पड़ने जा रही है,'' उसने कहा।

''ठीक है, अभी हम, यहाँ नहीं रह सकते, हमें जाना ही है,'' मैंने जवाब दिया। उसने टेलीफोन उठाया और शीघ्र ही, एयर टैक्सी से, कल कनाडा जाने के लिए, व्यवस्था की।

हम उस रात को ठीक से सोए। बिल्लियाँ काफी बेखबर थीं, ऐसा लगा कि, वे भी अपने आप में मस्त थीं। सुबह, नाश्ते के बाद, हम सड़क पार करके हवाई अड्डे की तरफ ले जाए गए। ला ग्वार्डिया एक बड़ा हवाई अड्डा है, जहाँ दिन के हर मिनिट पर, एक हवाई जहाज उड़ता हुआ या उतरता हुआ होता है। अंत में, हमें वह स्थान मिल गया, जहाँ से हमें जाना था, और हम, हमारी बिल्लियाँ, और हमारा सामान, एक छोटे, दो इंजन वाले, हवाई जहाज पर लादा गया। विमान चालक, एक छोटे से आदमी ने, जो सिर से, पूरी तरह से हजामत बनाए हुए था, हमें सभ्यतापूर्वक इशारा किया; और हमने हवाई पट्टी तक जाने के लिए एक टैक्सी ली। कुछ लगभग दो मील तक, हमने टैक्सी में यात्रा की और तब उसे, उड़ान की हमारी बारी आने तक प्रतीक्षा करने के लिए, खाड़ी में छोड़ दिया। एक बड़े अंतर्राष्ट्रीय हवाई जहाज के चालक ने, हाथ हिला कर हमारा स्वागत किया, और अपने माइक्रोफोन में जल्दी से कुछ बोला। हमारे विमान चालक ने कुछ शब्द कहे, जिन्हें मैं दोहराना नहीं चाहता, और कहा, ''हमारे पास..... फूटा हुआ है।''

हवा, पुलिस के चीखते हुए सायरन से भरी हुई थी। पुलिस का एक पोत, पागलपन से, एक सेवा सड़क (service lane) की ओर दौड़ा और पागलपन से चीखते हुए टायरों की आवाज के साथ खिंच कर, हमारे बगल से खड़ा हो गया। ''पुलिस ? अब हमने क्या कर दिया ?'' मैंने स्वयं से पूछा और तभी सायरन बजे और आग बुझाने वाली गाड़ी आ पहुंची। जैसे ही उसकी चाल धीमी हुई, अनेक आदमी उसमें से टूट पड़े। पुलिस के सिपाही, पार कर के आए और उन्होंने हमारे पायलट से कुछ पूछा। वे आग बुझाने वाले इंजन की तरफ गए, और अंत में, पुलिस के आग बुझाने वाले सिपाही, चले गए। सुधारने वाली एक कार दौड़ कर वहाँ आई, हवाई जहाज, जिसमें हम बैठे थे को जैक लगा कर उठाया, खराब हुए पहिये को हटाया और दौड़ती हुई वापस लौट गई। दो घण्टे तक, पहिया वापस पाने की प्रतीक्षा में, हम वहाँ प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहे। अंत में पहिया चढ़ाया गया, विमान चालक ने इंजन को फिर से शुरू किया, और हमने उड़ान भरी। पहले पिट्सबर्ग (Pittsberg) की ओर रुख करते हुए, हम जैसे–जैसे, एलघैनी (Alleghany) पहाड़ियों के ऊपर दूर उड़ते गए, पहाड़ियों के ठीक ऊपर ईंधन बताने वाला, नापने वाला मीटर, जो मेरे ठीक सामने था, गिर कर शून्य तक आ गया और रुक गया। विमान चालक, नीरस भाव से, इसके प्रति बेखबर था। मैंने उसे बताया और उसने एक फुसफुसाहट के साथ कहा, ''आह, निश्चित ही, हम हमेशा नीचे जा सकते हैं।'' मिनटों बाद, हम पहाड़ों के बीच समतल जगह में आ गए, एक स्थान जहाँ अनेक हल्के जहाज खड़े हुए थे। पायलट ने एक बार चक्कर लगाया, और पैट्रोल पंप तक चलाते हुए उतर गया। हम हवाई जहाज में ईंधन भरवाने के लिए, और फिर बर्फ से ढकी हुई चोटियों से ऊपर, जमी हुई हवाई पट्टी पर, काफी लंबे चले। बर्फ के गहरे किनारे, बगल से

रेखांकित हो गए, घाटी में बड़ी चहल पहल थी। एक छोटी उड़ान, और हम पिट्सबर्ग के ऊपर थे। हम यात्रा करने से थक गए थे, कड़े और मरियल से हो गए थे। केवल लेडी कुई सजग थी, वह बैठी हुई थी और खिड़की के बाहर देख रही थी और हर चीज से प्रसन्न होती हुई लग रही थी।

क्लीवलैंड (Cleveland)[107] हमारे नीचे रहते हुए, हमने सामने दाहिनी ओर ऐरी (Erie) झील को देखा। बर्फ के बड़े–बड़े ढेर लगा दिए गए थे, जबकि जमी हुई पूरी झील के आरपार, बड़ी–बड़ी दरारें और गड्ढे थे। विमान चालक ने, कोई जोखिम न उठाते हुए, अपना रास्ता पेली (Pelee) प्रायद्वीप की ओर लिया, जो उस झील से लगभग आधी दूरी पर था। वहाँ से वह आम्हर्स्टबर्ग (Amherstburg)[108] के लिए, और विंडसर (Windsor) हवाई अड्डे के लिए उड़ा। हवाई अड्डा अजीब तरह से शांत था। वहाँ सक्रियता की कोई दौड़ धूप नहीं थी। हम सीमा शुल्क के भवन तक गए, हवाई जहाज से उतरे, और अन्दर गए। एक अकेला, सीमाशुल्क अधिकारी, अपनी ड्यूटी को खत्म करके जा रहा था – अभी ये छैः बजे रात से अधिक समय हो चुका था। दुःखपूर्वक उसने हमारे सामान पर ध्यान दिया। ''यहाँ कोई आप्रवर्जन अधिकारी (immigration officer) उपस्थित नहीं है।'' ''तुमको तब तक इंतजार करना पड़ेगा जब तक कि, दूसरा कोई नहीं आ जाता।'' हम बैठे और हमने प्रतीक्षा की। मिनिट, धीमे–धीमे कर के रैंगे। आधा घण्टा, समय खुद रुका हुआ दिखाई दिया, हमें उस दिन सुबह आठ बजे से अब तक कोई खाना या पानी नहीं मिला था। घड़ी में सात बज गए। कस्टम का एक आदमी आया और आसपड़ौस में घूम कर समय नष्ट करने लगा। ''मैं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि, आप्रवर्जन अधिकारी आपको न जाने दें,'' उसने कहा। समय धीमे–धीमे गुजरता हुआ लगा, सात बज कर तीस मिनिट। एक लंबा आदमी आया और प्रवासी अधिकारी के कार्यालय में गया। परेशान सा दिखाई पड़ने वाला और एक छोटा लाल चेहरे वाला वह, कस्टम के आदमी के पास आया। ''हम मेज को खुलवा नहीं सकते।'' ''उसने कहा। कुछ समय के लिए वे आपस में बुदबुदाते रहे, चाभियॉ घुमाते रहे, बतियाते रहे, अंत में, निराशा में, उन्होंने एक पेचकस लिया और मेज के ताले को धक्का देकर खोला। ये गलत मेज थी, ये पूरी तरह खाली थी।

अंत में फार्म मिल गए। थकान के साथ हमने उन्हें भरा, यहाँ–वहाँ हस्ताक्षर किए। प्रवासी अधिकारी ने हमारे पारपत्र के ऊपर मोहर लगाई ''बाहर से आए हुए प्रवासी।''

''अब आप कस्टम अधिकारी के पास जा सकते हैं,'' उसने, पेटियाँ खोलने के लिए, डिब्बे का ताला खोलने के लिए, फार्म दिखाने के लिए, ''स्थाईरूप से बसने वाले'' लोगों में होने से, हर चीज विस्तार से बताते हुए, अपने सामान का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के लिए कहा– और अधिक मोहरें लगीं और अंत में, हम कनाडा में, ओंटारियो में, विंडसर में जाने के लिए स्वतंत्र थे। जब वह जान पाए कि, हम आयरलैंड से आए हैं, कस्टम के अधिकारी ने काफी गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया। वह खुद आयरलैंड की पैदाइश था, उसके माता पिता, जो अभी जिंदा थे, आयरिश थे। उसने तमाम सवाल पूछे और आश्चर्यों का आश्चर्य, –सामान को प्रतीक्षारत कार में लाने के लिए, उसने हमारी मदद की।

---

107 अनुवादक की टिप्पिणी : क्लीवलेंड अमेरिका को ओहियो राज्य का एक शहर है और काइया होबा काउंटी का मुख्यालय, जो राज्य में सर्वाधिक आबादी वाली काउंटी है। शहर ओहियो के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। ए.बी. की झील के दक्षिणी किनारे पर लगभग पेनसिलवानिया के 60 मील दूर सीमा से। इसे 1796 में कोयाहोवा नदी के मुहाने पर बसाया गया था, और ये अपनी स्थिति के कारण निर्माण का प्रमुख केन्द्र बन गया इसके साथ ही ये अनेक नहरों, रेल और सड़कों द्वारा आपस में जुड़ा हुआ है, शहर की आबादी 390000 के करीब है जो अमरीका का 48वां सबसे अधिक आबादी वाला शहर है और ओहियो में कोलंबस के बाद दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला। शहर के दूसरे अन्य नाम ''फोरेस्ट सिटी'', ''मेट्रोपालिस ऑफ द वेस्टन रिजर्व'', ''द रॉक एंड रोल कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड'', ''सी–टाउन'' एंड मोर हिस्टोरिकली ''सिक्स सिटी'' हैं। ''क्लीवलेंड क्लीनिक'' शहर का सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है जो 37000 लोगों को काम उपलब्ध कराता है और जो अमरीका के सर्वोच्च अस्पतालों में अपना स्थान रखता है। यूनवर्सिटी हॉस्पीटल आफ क्लीवलेंड को केंसर के इलाज के लिए जाना जाता है क्लीवलेंड का होपकिन एयरपोर्ट शहर का बड़ा हवाई अड्डा है। क्लीवलेंड का बंदरगाह जो चूगाहोगा नदी के मुहाने पर है एक बहुत बड़ा मालवाही जहाजों का अंतिम स्थान है लेकऐली के ऊपर।

108 अनुवादक की टिप्पिणी : आर्मस्ट बर्ग की आबादी लगभग 22000 है जो उंटारियो राज्य में एफएक्स काउंटी में डेट्रोइट नदी के मुहाने पर बसा हुआ एक कनेडाइ शहर है। इसे राष्ट्रीय ऐतिहासिक स्थल के रूप में घोषित किया गया है। शहर मिशीगन डेट्राइट के अमरीकी लगभग 16 मील दूर दक्षिण में है। शहर को 1796 में अंग्रेजी सैनिक किले के रूप में स्थापित किया गया था शहर में फोर्ट मार्टेन और नार्थ अमेरिकन ब्लेक हिस्टोरिकल म्यूजियम भी हैं। गिबसन गैलरी जो वर्ष में हर समय अपनी प्रदर्शनियां को लगाती है चलती रहती है स्थानीय कलाकारों की और विंडसर की आर्टगैलरी के स्थाई नमूनों की। पर्यटन प्रदर्शनी ओंटारियो संग्रहालय से और उनके गलियारों से और स्टूडेंट आर्ट/फोटोग्राफी प्रदर्शनियां। एफएक्स टर्मिनल रेल्वे को दुबारा बनाया गया है जो केबूस में है और रेलवे संग्रहालय के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। पुनः स्थापित गार्डन हाउस एक दूसरा ऐतिहासिक आकर्षण है एमहर्ष्ट बर्ग का।
एमहर्ष्ट बर्ग प्रतिवर्ष एक जुलाई को केनेडा दिवस का उत्सव मनाता है जिसमें आतिशबाजी दिखाई जाती है और पारिवारिक प्रदर्शन का दिन होता है।

हवाईअड्डे के बाहर कटु शीत था, जमीन के ऊपर मोटी बर्फ जमी थी। डेट्रोइट नदी के पार गगनचुंबी इमारतें हवा में खड़ीं थीं। सभी कार्यालयों और कमरों की रोशनियाँ जल रहीं थीं, क्योंकि क्रिसमस समीप था।

हम गाड़ी से विंडसर की प्रमुख सड़क, विस्तृत ओलेट एवेन्यू (Ouellette Avenue) की तरफ नीचे उतरे। नदी दिख नहीं रही थी, और ऐसा दिखाई दे रहा था, मानो हम सीधे अमरीका जाने के लिए ड्राईव कर रहे हों। वह आदमी, जो हमको ड्राइव करके ले जा रहा था, निश्चित रूप से अपने रास्तों के बारे में अपरिचित ही दिखा; एक मुख्य चौराहे को चूकते हुए, उसने विशेष उल्लेखनीय कौशल किया, जिसने हमारे रोंगटे खड़े कर दिए। अंत में हम अपने किराये पर लिए हुए मकान में पहुँचे और वहॉ उतर कर वास्तव में, प्रसन्न हुए।

शीघ्र ही मुझे, मेरी उपस्थिति की मांग करता हुआ, और यदि हम वहाँ उपस्थित नहीं हुए तो, देश निकाले सहित, भयंकर धमकी देता हुआ,–स्वास्थ्य मंडल का एक संदेश प्राप्त हुआ। दुर्भाग्यवश, धमकियाँ देना, ओंटारियों अधिकारियों का विशेष शौक दिखाई दिया। यही कारण है कि हम फिर, एक अधिक मित्रता पूर्ण राज्य की ओर, आगे जाने के लिए तैयार हैं।

स्वास्थ्य मंडल में मेरा एक्सरे किया गया, और अधिक, जानकारियाँ लीं गईं, और मुझे फिर से घर जाने दिया गया। विंडसर का वातावरण भयानक है, और उसके अधिकारियों के रवैये ने भी जल्दी ही हमको, जितनी जल्दी ये किताब पूरी हो जाए, वहाँ से ठेलने के लिए तय करा दिया।

अब ''रम्पा की कहानी'' खत्म हो चुकी है। मेरी दो पहली पुस्तकों की तरह से, सत्य बता दिया गया है। मेरे पास पश्चिमी विश्व के बारे में, आकाशीय यात्राओं के बारे में, काफी कुछ है, जो मैं कह सकता था। मैंने वास्तव में, केवल चीजों के उन किनारों को ही छुआ है, जो संभव हैं। यदि कोई आदमी, सूक्ष्मशरीर से यात्रा कर सकता है और परिषद के चैम्बर में अंदर क्या हो रहा है, ये देख सकता है तो, जासूसी जहाजों को, उनके सेवकों को खतरे में डाल कर, क्यों भेजा जाए ? कोई देख सकता है और याद भी कर सकता है। यदि ये पूर्णरूप से जनहित में हों तो कोई, निश्चित परिस्थितियों के अंतर्गत, वहाँ से चीजों को ला भी सकता है परंतु, पश्चिमी लोग ऐसी चीजों के ऊपर हँसते हैं, अवज्ञा करते हैं। वे इन्हें नहीं समझते, उन लोगों के विषय में, जिनके पास ये योग्यतायें हैं, जो स्वयं उनके पास नहीं हैं, मिथ्या शोर मचाते हैं और स्वयं उन लोगों के विरूद्ध, जो उनके रास्ते से अलग दिखाई पड़ते हों, अपशब्दों के साथ, पागलपन में होते हैं।

प्रसन्नता के साथ, मैंने अपने टायपराइटर को एक तरफ रख दिया और लेडी कुई और अंधी मिसेज फीफी ग्रेविस्कर, जो दोनों धैर्यपूर्वक मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं, के साथ खेलने के लिए, शांति से बैठ गया।

उस रात, दूरानुभूति से, एक संदेश फिर आया। ''लोबसांग! तुमने अभी तक अपनी पुस्तक पूरी नहीं की है'' मेरा दिल डूब गया, ये जानते हुए कि, बहुत कम ही लोग सत्य को बूझने की सामर्थ्य रखते हैं, मैं लेखन से घृणा करता था। मैं उन चीजों के संबंध में लिखता हूँ, जिन्हें मनुष्य का मन प्राप्त कर सकता है। यदि किसी को ये बता दिया जाए कि, रूसी लोगों ने एक आदमी को मंगल पर भेज दिया है, तो उस पर विश्वास कर लिया जाएगा, परन्तु इस पुस्तक में बताई गई प्रारंभिक अवस्था पर भी अविश्वास किया जाएगा। आदमी, मनुष्य के मन की शक्तियों से डरा हुआ है, और केवल फालतू की चीजों जैसे रॉकेट, अंतरिक्षयान का चिंतन कर सकता है। मानसिक प्रक्रियाओं के द्वारा अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

''लोबसांग! सत्य ? क्या तुम्हें हिब्रू की वह कहानी याद है ? इसे लिखो, लोबसांग, और जो तिब्बत में हो सकता है, उसे भी लिखो।''

रब्बी, एक आदमी, जो अपनी बुद्धि और अपने हास्य के लिए प्रसिद्ध था, से एक बार पूछा गया

कि, वह अक्सर महान सत्य को, एक छोटी साधारण कहानी के रूप में चित्रित करते हुए, क्यों कहता है। ''उस,'' विद्वान रब्बी ने कहा, ''क्या इसे किसी दृष्टांत (parable) के द्वारा अच्छी तरह से समझाया जा सकता है। दृष्टांत के सम्बंध में एक दृष्टांत। एक समय था, जब सत्य, नंगा सत्य, लोगों के बीच में घूमता था। जिसने भी सत्य को देखा, उसने शर्म के मारे या डर से, अपना मुँह फेर लिया क्योंकि, वे सत्य को देख नहीं सके और अवांछित सत्य, पृथ्वी के लोगों के बीच घूमता फिरा, किसी ने उसका स्वागत नहीं किया, हर एक ने झिड़क दिया। मित्रहीन और अकेला वह, एक दिन, सुंदर और बहुरंगी कपड़ों में, प्रसन्नता पूर्वक घूमते हुए एक दृष्टांत को मिला। एक प्रसन्नता भरी मुस्कान के साथ दृष्टांत ने पूछा, ''सत्य, तुम इतने दुखी, इतने निराश क्यों हो ?'' ''क्योंकि मैं इतना पुराना और इतना भद्दा हूँ कि, लोग मुझसे पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं,'' सत्य ने रूठ कर कहा। ''बेवकूफ! दृष्टांत हँसा, इस कारण से लोग तुमको अनदेखा नहीं करते हैं। मुझ से कुछ कपड़े उधार ले लो, लोगों के बीच में जाओ और देखो कि, क्या होता है।'' इसलिए, सत्य ने पेराबल के सुंदर वस्त्रों में से कुछ, ग्रहण कर लिए, और जब कभी वह लोगों के बीच गया, उसका स्वागत किया गया।'' बुद्धिमान, बूढ़ा रब्बी, मुस्कराया और उसने कहा, ''मनुष्य नग्न–सत्य का सामना नहीं कर सकते। वे उसे दृष्टांत के कपड़ों में, वेश छिपा कर देखना ही, पहले पसंद करते हैं।''

''हॉ, हॉ लोबसांग, ये हमारे विचारों का अच्छा अनुवाद है, अब कहानी।''

बिल्लियॉ अपने बिस्तर में बैठने के लिये, इधर उधर घूमती फिरी और उन्होंने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि मैंने, वास्तव में, समाप्त नहीं कर लिया। मैंने टाइपराइटर दोबारा उठाया, कागज लगाया और चालू हो गया.....

दूर से भूत की तरह से नीले चमकते हुए प्रहरी ने अपनी गति बढ़ाई, जैसे वह सूर्य से प्रकाशित पृथ्वी के भाग को अंधेरा करने के लिये, महाद्वीपों और महासागरों में चमकता है। अपनी इस सूक्ष्मशरीरी अवस्था में, यह केवल उन लोगों को दिख सकता था, जो अतीन्द्रियज्ञानी होते, फिर भी वह सब कुछ देख सका, और बाद में अपने शरीर में वापस लौटते हुए, उसे सब कुछ याद रहा। वह सर्दी के प्रति निष्प्रभावी हो गया था, हवा के विरलेपन से उसे कोई कष्ट नहीं हुआ, ऊँची चोटी की शरण में, उसने और प्रतीक्षा की।

चट्टान की सर्वोच्च पराकाष्ठा पर, सुबह के सूर्य की पहली किरणें, उन्हें सुनहरी रंग में बदलते हुए, दरारों में जमी वर्फ से बड़ी संख्या में रंगों का परावर्तन करते हुए, संक्षेप में झलकीं। प्रकाश की अदृश्य किरणें, प्रकाशित आकाश से, धीमे–धीमे सब तरफ फैलीं। सूर्य बहुत दूर के क्षितिज से झांका।

नीचे घाटी में कुछ अजीब चीजें हो रहीं थीं। सावधानी से ढकी गई पोटलियॉ मानो कि, गाड़ियों के पीछे लगे ट्रेलरों पर चल रही थीं। प्रकाश के धब्बों को परावर्तित करते हुए, प्रसन्नता की नदी का रजत–तन्तु, मंद–मंद सा शोभित हो रहा था। वहॉ अत्यधिक सक्रियता थी, अजनबी, छिपाई गई सभ्यता। कानून से बंधे हुए ल्हासा के निवासी, अपने घर में छिपे हुए थे, अथवा प्रहरियों की सुरक्षा में, बंधुआ मजदूरों की बैरक में लेटे हुए थे।

धीमे–धीमे, सूर्य अपने पथ पर आगे बढ़ा। शीघ्र ही, नीचे की तरफ देखती हुई उसकी पहली किरणें, अजनबी आकृति पर, जो घाटी के फर्श पर बुनी गयी थी, पड़ीं। ज्यों ही सूर्य का प्रकाश अधिक चमकदार हुआ, देखने वाले ने उस बड़ी आकृति को अधिक स्पष्टता के साथ देखा। ये काफी बड़ी, और बेलनाकार थी, और उसके नुकीले सिरे पर, आकाश की ओर ऊपर दिखती हुईं, ऑखों को और मुँह में से चीरा लगा कर निकाले हुए दॉत को चित्रित किया गया था। शताब्दियों से चीनी नाविकों ने, ऑखों को अपने जहाजों पर चित्रित किया था। अब ये ऑखें, इस अजीब प्राणी पर घृणा से चमचमा रहीं थीं।

सूर्य चलता गया। शीघ्र ही पूरी घाटी प्रकाश में नहा गई। अब केवल आंशिकरूप से छिपे हुए धातु के अनजाने ढांचे, अपने क्रेडल में, इस अजनबी प्राणी से दूर खींचे जा रहे थे। उसके गलफड़ों

पर खींचे जाते हुए बड़े–बड़े रॉकेट, भयानक रूप से पापी जैसे दिख रहे थे। इसके आधार पर तकनीशियन अपने हेडफोनों (head phones) को चालू रखते हुए, परेशान की गई चीटिंयों की एक नगरी की तरह से, सब तरफ दौड़ रहे थे। एक सायरन तेजी से बजा, और उसकी गूंज, चट्टान–चट्टान से, पर्वतीय दीवारों से पर्वतीय दीवारों तक टकरा कर, एक भयानक रूप में मिश्रित होते हुए, उत्पन्न हुई तेज, और तेज, होती जा रही भयानक ध्वनि की कर्णकटुता, वापिस लौटी। सैनिक, संतरी, श्रमिक, उसी क्षण वापिस लौटे और दूर पहाड़ियों में शरण लेने के लिये, जितना तेज वे दौड़ सकते थे वे उतना तेज दौड़े। पहाड़ पर, ऊपर की तरफ, आधा दूरी पर, आदमियों के एक छोटे समूह के ऊपर, जो उस रेडियो उपकरण के आसपास इकट्ठे थे, प्रकाश पड़ा। एक आदमी ने माइक्रोफोन उठाया और एक रॉकेट से करीब एक मील दूर छिपे हुए, कंक्रीट और स्टील के बड़े शरण स्थलों के निवासियों को झूठ बोलते हुए कुछ कहा। भिनभिनाती हुई आवाज, कुछ सेकेण्डों तक चली और तब रुक गई।

वहॉ शांति थी, बहुत ही कम पलों के लिए कुछ नहीं हुआ। रॉकेट से निकलने वाली वाष्प की अलसायी हुई जुल्फें, केवल मात्र चीजें, थीं जो चल रही थीं। छोटे–छोटे चट्टानी झरनों के साथ, धारा का प्रवाह, और उसकी गर्जना तेज, और तेज, हो गई। पृथ्वी स्वयं कांपती हुई और शोक मनाती हुई दिखाई दी। जब तक ऐसा नहीं लगा कि, कान के पर्दे इस तेजी से फट जाऐंगे, आवाज तेज, और तेज, होती गई। एकदम नीचे विलक्षण रूप से, लपटों का एक बड़ा समूह और रॉकेट के आधार से निकली हुई भाप दिखाई दी। धीमे से, मानो कि, अत्यधिक विस्मयकारक प्रयास। रॉकेट ऊपर उठा। एक समय ऐसा लगा कि, अपनी आग की पूँछ के ऊपर, ये लगभग स्थिर खड़ा हुआ। तब इसने गति पाई और गर्जना करते हुए, और धूम मचाते हुए, मानव जाति की अवहेलना करते हुए, कांपता हुआ ये, आकाश पर चढ़ गया। ये, भाप और धूएं की किरणों को लम्बी दूरी तक छोड़ता हुआ, ऊपर, और ऊपर, गया। काफी बाद में, जब यह पूरा दृश्य समाप्त हो गया, पहाड़ियों की चोटियों पर चीख ने कंपन किया।

पर्वत की बगल से तकनीशियनों का एक समूह, अपने माइक्रोफोनों में व्यग्ररूप से बड़बड़ाते हुए अथवा आकाश में उच्च क्षमता वाले द्विनेत्रियों से देखते हुए, अपने राडार के पर्दों को देख रहा था। जैसे ही शक्तिशाली रॉकेट मुड़ा और अपने रास्ते पर व्यवस्थित हुआ, प्रकाश की एक खानाबदोश चमक, सिर से काफी से दूर, चमकी।

चट्टानों के पीछे से भयभीत चेहरे प्रकट हुए। प्रहरी और गुलाम श्रमिकों के बीच भेद को अस्थाई रूप से भुलाते हुए, लोगों के छोटे–छोटे समूह इकट्ठे हो गए। मिनिट गुजरते गए। तकनीशियनों ने अपने राडार के उपकरणों को बंद कर दिया, क्योंकि रॉकेट उनकी सीमा के बाहर जा चुका था। मिनिट टिक–टिक करते गये।

पागलपन से इशारा करते हुए, अपने माइक्रोफोनों को उत्तेजना में चालू करना भूलते हुए, अचानक तकनीशियन अपने पैरों पर झुके। रॉकेट, एक परमाणु मुखास्त्र (war head) के साथ, शांतिप्रिय देश में, बहुत दूरी पर एक स्थान पर उतरा। टूटे फूटे नगरों के साथ, देश कसाईखाना था और लोग चमकदार गैसों के रूप में भाप बन चुके थे। चीनी साम्यवादी, अपने लाउडस्पीकरों को पूरा चालू किये हुए, अपने आनन्द को, अपनी सभी बातों को भूलते हुए, इस मारक प्राप्ति के ऊपर आनन्द के साथ चीखे और चिल्लाये। युद्ध का प्रथम चरण समाप्त हो गया था, दूसरा शुरू होने वाला था। आनन्दित तकनीशियन, दूसरा रॉकेट तैयार करने के लिये तेजी से दौड़े।

क्या ये कपोल कल्पना है ? ये सही भी हो सकता था। रॉकेट छोड़ने का स्थान, जितना ऊॅचा होता है, वातावरण उसको उतना ही कम अवरोध डालता है और यह अधिक दूरी तक जा सकता है, कम ईधन के लिये अधिक दूरी। समुद्र तल से सत्रह हजार फुट ऊपर, तिब्बत के सपाट स्थानों से प्रक्षेपित किया गया रॉकेट, किसी नीचे स्थान से प्रक्षेपित किये गये रॉकेट की तुलना में, अधिक दक्ष

होगा। इसलिये साम्यवादियों को, शेष दुनियाँ की तुलना में अग्रणीय लाभ और अनेकों दक्ष प्रक्षेपण स्थल, प्राप्त होंगे, जहॉ से रॉकेटों को अंतरिक्ष में या कहीं भी, दूसरे देशों में प्रक्षेपित करना आसान होगा।

चीन ने तिब्बत के ऊपर आक्रमण किया है – उसे जीता नहीं है – ताकि वह पश्चिमी शक्तियों के ऊपर अधिक लाभ की स्थिति में रहे। चीन ने तिब्बत के ऊपर आक्रमण किया है ताकि, जब वह तैयार हो, वह भारत को अपने घेरे में ले ले, और शायद भारत के माध्यम से, यूरोप में घुस जाए। ये भी हो सकता है कि, अपनी चिमटी की पकड़ बनाने के लिये, चीन और रूस एक साथ मिल जाऐं और जो भी उसकी राह में रोड़ा बनें, उन दूसरे स्वतंत्र देशों के जीवन को कुचल डालें। ये हो सकता है – जब तक कि इस दिशा में जल्दी कुछ नहीं किया गया। पौलेण्ड ? पर्ल हार्बर ? तिब्बत ? ''विशेषज्ञ ही यह कह पायेंगे कि, ये अत्याचार नहीं होना चाहिये। वे गलत थे क्या वे दुबारा गलत होने वाले हैं ?

प्रकाशकों के विभाग की दयालुता

जब से ''तीसरी ऑख'' सबसे पहले प्रकाशित हुई है, वर्षो तक मुझे भारी मात्रा में डाक मिली है, और वर्तमान समय तक मैंने उसका हमेशा उत्तर दिया है। अब मुझे कहना है कि, मैं यहॉ से आगे किसी भी डाक का जबाव देने में सक्षम नहीं हो सकूॅगा, जब तक कि उसके साथ, पूरा–पूरा वापिसी डाक खर्चा नहीं भेजा गया हो। इसलिये कृपया मेरे प्रकाशक को, मुझे अग्रेषित करने के लिये पत्र न भेंजें क्योंकि, मैंने अपने प्रकाशक को, मुझे कोई पत्र अग्रेषित नहीं करने को कहा है।

लोग ये भूल जाते हैं कि, उन्होंने किताब के लिये पैसा दिया है, किसी जीवनपर्यंत्, मुफ्त डाक सलाहकार सेवा, के लिये नहीं। प्रकाशक, आखिर प्रकाशक ही है – कोई पत्रों को अग्रेषण करनी वाली सेवा नहीं।

मुझे पूरे संसार से, पर्दे के पीछे से भी, पत्र मिले, परन्तु हजारों लोगों में से एक ने भी, वापिसी का खर्चा नहीं भेजा, और लागत इतनी ज्यादा है कि, मैं उत्तरों का खर्चा, अब और नहीं झेल सकता। लोग ऐसी बेतुकी चीजों को भी पूछते हैं। उनमें से कुछ यहॉ हैं :

जब मैं आयरलेण्ड में था, ऑस्ट्रेलिया से एक अत्यन्त निराशाजनक पत्र था, जो मुझ तक पहुॅचा। मामला वास्तव में, अत्यावश्यक था, इसलिये मैंने अपने खर्चे पर ऑस्ट्रेलिया को समुद्री तार (cable) भेजा, और मुझे धन्यवाद ज्ञापन तक नहीं मिला।

संयुक्तराज्य अमेरिका में, ये मांग करते हुए कि, मुझे उनके लिये एक थीसिस लिखनी चाहिये और उन्हें वापिसी हवाई जहाज से भेजनी चाहिये, किसी महानुभाव ने मुझे पत्र लिखा। वह इसे पूर्वी दर्शनशास्त्र (oriental pholosophy) में डॉक्टेरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिये उपयोग करना चाहते थे। वास्तव में उन्होंने कोई डाक खर्च नहीं भेजा। ये मात्र, एक धमकी भरी मांग थी।

एक अंग्रेज आदमी ने, बहुत ही अंहकारी भाव से, मेरे प्रमाणपत्रों की मांग करते हुए, अन्य पुरुष (third person) में पत्र लिखा और केवल यदि, वे उनके हिसाब से पूरी तरह संतोषजनक हुए तो, वह स्वयं को मेरे अन्तर्गत शिष्य के रूप में प्रस्तुत करेंगे, बशर्ते इसके लिये, मैं उससे कोई शुल्क न लूॅ। दूसरे शब्दों में, ये समझा गया था कि, मुझे सम्मानित किया जा रहा है। ''मैं नहीं समझता कि, उन्हें मेरा जबाव पंसद आयेगा।''

दूसरे किसी ने, मुझे लिखा और कहा कि, यदि, मैं ''और मेरे मित्र'' रात को सूक्ष्मशरीरी यात्रा में, तिब्बत से आयें और उसके बिस्तर के चारों तरफ जुड़ जाऐं तो, वह सूक्ष्मशरीरी यात्रा के संबंध में अधिक प्रसन्न अनुभव करेगा।

दूसरे किसी ने मुझे लिखा और मुझसे उच्च, शाश्वत, चीजों के बारे में से हर एक के बारे में,

(यदि मैं चाहूँ तो इसका उत्तर दे सकता हूँ) ये बताने के लिये कि, मुर्गियों और किसी के पति (hens and ones husband) को कैसे एक साथ रखा जाये। लोगों ने ये भी समझा कि, जो कुछ उनके मन में आये, वे मुझे लिख सकते हैं और यदि मैं जबावी हवाई जहाज से उनको उत्तर न दूँ तो वे आक्रामक भी हो सकते हैं।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि, मेरे प्रकाशकों को परेशान न करें, वास्तव में, मैंने उन्हें, कोई भी पत्र मुझे भेजने के लिये, मना किया है क्योंकि, वे प्रकाशक के रूप में व्यापार में हैं। उन लोगों के लिये, जो वास्तव में, उत्तर पाना चाहते हैं (यद्यपि मैं पत्रों को आमंत्रित नहीं करता) मेरे घर का पता है :

Dr. T Lobsang Rampa,
BM/LTR,
London W.C.I.,England

मैं किसी जबाव की गारंटी नहीं देता, और यदि आप इस पते का उपयोग करते हैं तो आपको उचित डाकखर्च भेजना पड़ेगा क्योंकि, पत्र मेरे पास अग्रेषित किये जायेंगे और मुझे भुगतान करना पड़ेगा, इसलिये मैं उत्तर देने के लिये पर्याप्त मधुर विचार में नहीं होऊँगा, जब तक कि, आप मेरे खर्चे को अपना खर्चा न बना लें। उहारण के लिये, जब तक कि, अग्रेषण प्रभारों का भुगतान किया जाये, ये कम से कम मुझे एक डॉलर की लागत पड़ेगी।